बाँसरी बज रही

[रुतु सड़ितन]

मुण्डा-लोकगीत

(संशोधित और परिवर्द्धित)

श्रीजगदीश त्रिगुणायत

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वक्तव्य

'बाँसरी बज रही' मुण्डा-लोकगीतों का सानुवाद संग्रह है। अतः, इस पुस्तक से मुण्डा-जाति के रागात्मक पक्ष तथा उसके आनन्द-विह्वल हृदयहारी भावों की सुन्दर झलक मिलती है। हमारे यहाँ के आदिवासियों में मुण्डा-जाति का महत्त्वपूर्ण स्थान माना जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि हमारी कुल आबादी में आदिवासियों का एक महत्त्वपूर्ण प्रतिशत है और इन आदिवासियों ने अपनी अकृत्रिम संस्कृति के योग से हमारे सम्पूर्ण सांस्कृतिक वैभव को अधिक रंगमय बना दिया है। 'द एबोरिजिनल रेसेस ऑव इण्डिया' जैसी पुस्तकों में इस तथ्य का सप्रमाण अंकन मिलता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में नृतत्त्वशास्त्रियों और लोकवार्त्ता-साहित्य के अध्येताओं द्वारा अद्यपर्यन्त सर्वाधिक उपेक्षित विषय—आदिवासियों के गीतों का रसोत्तीर्ण अध्ययन एक सहृदय ने विशुद्ध मानवीय दृष्टिकोण से आनन्द-तरंगित होकर किया है। इस अध्येता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि केवल अनुवाद करते समय ही नहीं, बल्कि विवेचन-विश्लेषण के गम्भीर क्षणों में भी उसकी उच्छ्वसित और रचनात्मक रागवृत्ति पीछे नहीं रही है। यह विशेषता इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि जब राग चिन्तन की रीढ़ बन जाता है, तभी लोक-साहित्य के अध्ययन को प्राणों की स्पन्दित ऊष्मा मिल पाती है, अन्यथा लोक-साहित्य का कठोर 'एकेडेमिक डिसिप्लिन' में बँधा हुआ निष्प्राण अध्ययन केवल शास्त्रीय महत्त्व रखता है।

'बाँसरी बज रही' संग्रह, अनुवाद और विश्लेषण तीनों ही दृष्टियों से सन्तुलित एवं परिपूर्ण है। यह परिपूर्णता बँगला-लोकसाहित्य के अध्ययन के क्षेत्र में आरम्भिक क्रोश-शिला मानी जानेवाली (**डॉ० डी० सी० सेन** द्वारा सम्पादित) 'मेमन्सिग गीतिका' या 'पूर्वबंग गीतिका' में भी नहीं है। विश्लेषण की परिपूर्णता इस ग्रन्थ के भूमिका-भाग में मिलती है, जिसके अन्तर्गत लेखक ने लोकवार्त्ता के अध्ययन के विकास पर बहुत ही सारगर्भ टिप्पणियाँ प्रस्तुत की हैं। **जैकब ग्रिम** नामक जर्मन-विद्वान् के काल से वर्त्तमान दशक तक लोकवार्त्ता के अध्ययन की जो भी प्रमुख प्रवृत्तियाँ रही हैं, उनका समाकलन लेखक ने अवधानतापूर्वक किया है। मेरी दृष्टि में 'लोकवार्त्ता' शब्द का निर्माण या चलन स्वयं अपने-आप में अध्ययन का एक रोचक विषय है। हिन्दी में 'लोकवार्त्ता' अँगरेजी-शब्द 'फोक्लोर' के लिए प्रचलित है। कहा जाता है कि 'फोक्लोर' शब्द का इस अर्थ में प्रयोग सबसे पहले **डब्ल्यू० जे० थॉम्स** ने 'Athenaeum' में प्रकाशित अपने एक निबन्ध में किया था। अतः, अँगरेजी-साहित्य के अध्येता 'फोक्लोर' शब्द को इस अर्थ में प्रचलित करने का श्रेय उक्त विद्वान् को देते हैं। किन्तु, वास्तविकता यह है कि अँगरेजी 'फोक्लोर' जर्मन शब्द 'Volk-skunde' का अनुवाद-मात्र है। अँगरेजी-माध्यम से पाश्चात्य अध्ययन-चिन्तन के साथ गाढ़ परिचय स्थापित कर बंगाल

के विद्वान् जब 'फोक्लोर' के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुए, तब उन्होंने 'फोक्लोर' के लिए 'लोकायन' और 'लोकवृत्त' शब्दों का प्रयोग किया। इसी तरह 'फोक्लोर' के लिए अन्य अनेक शब्द प्रयुक्त होते रहे, जैसे—रूपकथा, लोककथा, लोकविद्या, लोकविज्ञान, लोकचर्या, लोकश्रुति, लोकगाथा, जनसाहित्य इत्यादि। किन्तु, अब इसमें सन्देह नहीं कि अपने अर्थ-सामर्थ्य एवं प्रचलन के कारण 'लोकवार्त्ता' शब्द ही 'फोक्लोर' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। वर्त्तमान दशक तक आते-आते लोकवार्त्ता के अध्ययन की कई निकाय-विशिष्ट प्रणालियाँ स्थापित हो चुकी हैं, जिनमें 'इण्डिक स्कूल', 'एन्थ्रोपॉलॉजिकल स्कूल', 'कॅम्पेरेटिव स्कूल', 'लिंग्विस्टिक स्कूल' और 'साइकोऐनेलिटिकल स्कूल' के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

अधिकांश मुण्डागीत नृत्य-गीत हैं। इसलिए, ये यतिगतियुक्त और लयभरित होने के साथ ही तालाश्रित हैं। इनकी मर्मस्पर्शिता का दूसरा कारण यह है कि इनमें अधिकतर वार्त्तालाप और कथनोपकथन का प्रयोग मिलता है। अतः, यह शैली इन गीतों को एकालापवाले गीतों की एकरसता से बचा लेती है। इस प्रसंग में यह भी ध्यातव्य है कि इन मुण्डा-गीतों में चाक्षुष बिम्ब अधिक मिलते हैं और इनमें योजित अधिकांश अप्रस्तुत वनस्पति-जगत् से लिये गये हैं। फलस्वरूप, पहाड़ी जंगल-झाड़ की बौराई हरीतिमा में बल खाते इन वन गीतों में नागर मन को मोहने की अद्भुत क्षमता है। सचमुच, यह 'भ्रूविलासानभिज्ञा' वन्यगीति-कला अपनी अकृत्रिमता, ताजगी, भोलेपन और पुष्टता से सहृदयचित्त को कला-गीतियों की अपेक्षा अधिक आकृष्ट करती है। 'बाँसरी बज रही' में संकलित गीत ही यह बतलाते हैं कि सूरज की गुलफाम धूप में या 'मदुकम' की छाँव में जब तरुणों की अलमस्त टोली 'डुलिकताल' पर नाचती है और जब तरुणियाँ 'रुतु' की 'तिरि-रिरि' टेर सुनकर अथवा माँदर, ढोल या नगाड़े की आवाज से गहगहाते नृत्य के अखाड़ों पर 'जदुर गीत' सुनकर मन-ही-मन भींग जाती हैं, तब अकृत्रिम आदिम कला-चेतना का सारा स्वारस्य, मानों, मुण्डा-समुदाय में प्रवाहित हो उठता है। स्वभावतः, इस मुण्डा-गीत-संग्रह में अधिकतर रोमाण्टिक तासीर के गीत संकलित हैं। इसके जदुर गीत' वाले खण्ड में तो एक ऐसी कुँवारी है, जो रात में उल्लू की तरह चरने निकलती है और दिन में 'हापू' पक्षी की तरह सोया करती है।

इन मुण्डागीतों में योजित वन्य उपकरणों के बीच तरह-तरह के पक्षियों, फूलों, और वृक्षों के नाम विशेष ध्यानाकर्षक हैं। पक्षियों में लिटिया, दोवा, हापू, डुण्डी किकिर, केरकेटा, कङ्कि, आसकल्, डिंचुअ आदि के नाम बारम्बार आये हैं। इस तरह इन गीतों में आये हुए अनेक फूलों के नाम—ईचा, हुन्दी, सारखू, लुदम, अटल, अलाटी, पलाटी, बुङ्जु, बगड़ी, बाँगुर, बराँगू, तड़ए, पिन्दर इत्यादि पादप-पुष्प के विशेषज्ञों को अध्ययन के लिए नया आमन्त्रण देते हैं। वृक्षों के बीच मदुकम, सारजोम्, मुरुद, बरु आदि के नाम इन गीतों में अक्सर आये हैं। ऐसे गीत-सन्दर्भों का सुन्दर अध्ययन वृक्ष-प्रतीक की दृष्टि से किया जा सकता है। **शंकर सेन गुप्त** द्वारा सम्पादित

'ट्री सिम्बल वर्शिप इन इण्डिया' नामक ग्रन्थ के 'ट्री-कल्ट इन ट्राइबल कल्चर' शीर्षक निबन्ध में इस ओर सार्थक संकेत किया गया है। आदिवासियों में प्रचलित सरहुल और करमा मूलतः वृक्ष-पूजा से ही सम्बद्ध पर्व-त्योहार हैं। 'सरहुल' तो वन-देवता की साक्षात् अभ्यर्थना है और इससे सम्बद्ध जदुर गीत, मानों, वन्य प्रकृति की सस्वर गन्ध-वीथियाँ हैं। इसी तरह करमा-गीतों में यद्यपि प्रीत-पला और रामायण का प्रासंगिक समावेश मिलता है, तथापि करमा का नामकरण 'करम वृक्ष' (Nauclea parvifolia) के आधार पर ही हुआ है, जो वृक्ष-पूजा का प्रकारान्तर-संकेतक है। इस प्रकार, मुण्डा-लोकगीतों में प्राप्त वनदुर्गा के शाकम्भरि सौन्दर्य का भी गहन अध्ययन अपेक्षित है।

यह प्रसन्नता की बात है कि **फादर हाफमान** और **डब्ल्यू० जी० आर्चर** जैसे लोककला-प्रेमी विद्वानों ने मुण्डा-लोकगीतों का छिटपुट संग्रह कर इस उर्वर अध्ययन-क्षेत्र में जो छोटा-सा पौधा लगाया था, उसे श्रीत्रिगुणायत ने अपनी प्रतिभा, व्युत्पन्नता और आलोचनात्मक प्रज्ञा से सिंचित कर एक गझिन वृक्ष का रूप दे दिया है।

आशा है, परिषद् की प्रकीर्णक पुस्तक-माला के प्रथम पुष्प का यह संशोधित द्वितीय संस्करण जिज्ञासु पाठकों को अधिक सन्तोष देगा।

(डॉ०) कुमार विमल
निदेशक

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना
मकर-संक्रान्ति, २०२७ वि०

वक्तव्य

(प्रथम संस्करण)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की ओर से प्रकाशित होनेवाली प्रकीर्णक पुस्तक-माला का यह प्रथम पुष्प है। लोक-साहित्य के विकासशील क्षेत्र में इसका नवीन रंग और सौरभ विशेष आकर्षक सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए बिहार-सरकार के जन-कल्याण विभाग से परिषद् को अतिरिक्त धनराशि मिली थी। अतः, प्रकीर्णक पुस्तक-माला में यह गुम्फित हुई। इस पुस्तक-माला को आगे और भी पुस्तक-स्तवक सुशोभित करेंगे।

इसमें आदिवासी-क्षेत्र के विशेषतः मुण्डा-लोकगीतों का सानुवाद संग्रह है। साथ ही, अनुसन्धान-परायण लेखक ने अपने व्यापक अनुशीलन के आधार पर, मुण्डा-भाषा और उसके साहित्य का जो अध्ययन उपस्थित किया है, वह हिन्दी-पाठकों के लिए एक नई दिशा का संकेत देता है।

'बाँसरी बज रही' के रचयिता पण्डित जगदीश त्रिगुणायत, साहित्यरत्न उत्तर-प्रदेश के देवरिया-जिले के निवासी हैं। आप बहुत दिनों से बिहार-राज्य के राँची-जिले में हाइस्कूल के अध्यापक हैं। राँची-जिला-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रचार-मन्त्री के रूप में आप वहाँ साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजनों के सफल बनाने में निरन्तर तत्पर रहे हैं। आदिवासी-क्षेत्र के लोक-साहित्य-संकलन और उसके स्वाध्याय में लीन रहकर अपने समय का सदुपयोग करने में ही आपकी अभिरुचि रही। आपकी लगन सार्थक भी हुई। मुण्डा-लोकगीतों पर आपने जो पुस्तक लिखी, उसपर बिहार-सरकार ने आपको ढाई हजार रुपये से पुरस्कृत भी किया।

आदिवासी-क्षेत्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार और उस जनपद के लोक-साहित्य का उद्धार ही आपके जीवन का मुख्य व्रत एवं दृढ़ संकल्प है। आप हिन्दी के कवि भी हैं, तथा अँगरेजी और बँगला की कविताओं का हिन्दी-पद्यानुवाद भी किया है। 'अरुणोदय' और 'छायागान' नामक पुस्तकों में मौलिक और अनूदित कविताएँ प्रकाशित हैं। आदिवासी-लोकसाहित्य-सम्बन्धी आपकी रचनाएँ प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं और तद्विषयक कई पुस्तकें भी आपने तैयार की हैं, जो प्रकाशित होने पर हिन्दी के लोक-साहित्य को समृद्ध करेंगी।

सन्तोष का विषय है कि आप बरसों से वही काम कर रहे हैं, जो पहले विदेशी विद्वान् किया करते थे। ऐसी प्रवृत्ति के लेखक ही हिन्दी के अभावों की पूर्त्ति कर सकते हैं। आपके उत्साह और अध्यवसाय को भगवान् सफल करें।

रंगभरी एकादशी
फाल्गुन, संवत् २०१३ वि०

शिवपूजन सहाय
(परिषद्-संचालक)

पूर्वाभास
(प्रथम संस्करण)

भारत के विशाल जन-समुदाय में आदिवासियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने भारत के जंगलों और पहाड़ों में जितनी बड़ी संख्या में अपने मूल अस्तित्व की रक्षा की है, उससे भी बड़ी संख्या में, हिन्दू-वर्ण-व्यवस्था में सम्मिलित होकर उसे, प्राग्वैदिक युग से लेकर आजतक अनेक रूपों में प्रभावित किया है। कृषि, आविष्कार, वस्तुओं के नाम, देव-कल्पना, भावना, विचार आदि सभी क्षेत्रों में, भारतीय संस्कृति पर आदिवासियों के प्रभाव की खोज हो चुकी है। वे मान्यताएँ कल्पना के आकाश से अब धरती पर उतरती आ रही हैं, जिनकी धारणा है कि भारत का महान् अभिजात-साहित्य जिस लोक-साहित्य का विकसित, संस्कृत और परिष्कृत रूप है, उसके सर्जन में निस्सन्देह उन-लोगों का भी हाथ है, जो मूलरूप में आदिम परिवार के हैं और जिनकी धाराएँ कालान्तर में भारत के विशाल जन-महासागर में समाकर विलीन हो चुकी हैं।

आदिवासियों की जिन शाखाओं ने राजगद्दी के लिए लड़ने की अपेक्षा वनवास पसन्द किया, उन्होंने जंगलों और पहाड़ों की पंचवटी में अपनी पर्णकुटी बसा ली। उनके जीवन में सरलता और निश्छलता थी। उनका जीवन विकेन्द्रित और स्वावलम्बी था और उसमें एक प्रकार का प्रारम्भिक साम्ययोग था। सीमित साधनों के भीतर आवश्यकताएँ भी सीमित थीं और उनमें थोड़ा-सा खा-पीकर अधिक सन्तुष्ट रहने की वृत्ति थी। आदिवासी अपनी उसी सांस्कृतिक परम्परा का आजतक निरन्तर निर्वाह करते आ रहे हैं। गीत और नृत्य उनकी संस्कृति के मूल तत्त्व हैं।

इस वनवासी शाखा के ढाई करोड़ आदिवासियों में मुण्डा-जाति का महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान है। इस जाति के शक्ति-सामर्थ्य और सांस्कृतिक महत्ता का एक प्रमाण यह है कि विश्व-भाषाओं के विशाल 'आस्ट्रिक' परिवार की जो भाषाएँ भारत की विभिन्न आदिम जातियों द्वारा बोली जाती हैं, वे सब-की-सब 'मुण्डा-भाषाएँ' कहलाती हैं।

उस बहादुर और जीवन्त जाति के लोकगीतों के इस प्रारम्भिक अध्ययन को अपने पाठकों के सम्मुख रखते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इस संग्रह के द्वारा मुण्डा-जीवन के सौन्दर्य और आनन्द को समझने का प्रयास किया गया है।

यह पुस्तक यदि जन-जीवन के अध्येताओं को मुण्डाओं के जीवन से कुछ भी परिचित करा सकी और शिक्षा तथा विभिन्न सम्पर्कों से प्रभावित हो रहे मुण्डा युवकों के हृदय में अपनी कला, कविता और संस्कृति के प्रति तनिक भी अभिरुचि पैदा कर सकी, तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

यह संग्रह केवल प्रारम्भिक प्रयत्न है। मैं अपने साधनों की कमी को भली भाँति जानता हूँ और अनुमान कर सकता हूँ कि इस कार्य के लिए कितनी कठिन साधना और आस्था की आवश्यकता है। युग आ रहा है, जब उपेक्षा के दिन समाप्त होंगे। आदिम

जातियों के जीवन और उनकी आकांक्षाओं को भली भाँति समझने के लिए विद्वानों द्वारा बड़े-बड़े शोध किये जायेंगे। भ्रमात्मक मतवाद बदलेंगे और जो दृष्टिकोण ठीक होंगे, उनके भी विश्लेषण (Interpretation) की सीमाएँ अधिक व्यापक और विस्तृत बनेंगी।

लोकवार्त्ता-शास्त्र के महान् विद्वान् जेम्स फ्रेज़र ने एक जगह लिखा है कि "एक प्रमाण के विरुद्ध दूसरे प्रमाण के मिलने पर मैंने सदैव अपनी सम्मतियों को बदला है और भविष्य में भी ऐसा ही करने का निश्चय कर लिया है।"

जन-जीवन के शोधकार्य में लगा हुआ प्रत्येक व्यक्ति इस विकासोन्मुख लोक-वार्त्ता-शास्त्र के बारे में, उस महान् लेखक के उपर्युक्त कथन में, जिस सचाई का अनुभव करेगा, उसके प्रति मैं भी अपना हार्दिक विश्वास प्रकट करता हूँ।

गीतों के संग्रह के सिलसिले में, मुझे अनेक बार मुण्डा-क्षेत्र के, जंगलों के झुरमुट में छिपे और पहाड़ों की छाया में बसे हुए गाँवों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैं इस विषय में भाग्यशाली रहा हूँ कि इन गीत-पुष्पों को प्रकृत रूप में जीवन की डालों पर झूमते हुए देख सका हूँ। इस क्षेत्र के प्रायः सभी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता मेरे मित्र हैं। अपने कार्यक्षेत्र में पारिवारिकता का इतना प्रसार होना किसी भी अध्येता के लिए सौभाग्य की बात है।

इस स्थिति के कारण मेरे अध्ययन-क्रम में एक विशेष बात उपस्थित होती रही है, मेरे लिए यह सम्भव नहीं रहा है कि इस क्षेत्र से केवल गीतों को लेकर और जीवन की अन्य समस्याओं से अपने को अप्रभावित रखकर अपने अध्ययन-कक्ष में वापस आ जाऊँ।

इससे मैं एक विशेष खतरे से भी बचा हूँ। सभ्यता और शिक्षा की बाढ़ में बह जाने से बचाने के लिए आदिवासियों के सांस्कृतिक उपकरणों—गीतों, कहानियों आदि—को ले भागने की प्रवृत्ति मेरे मन में कभी नहीं आई। मुझे लगता है कि यदि आदिवासियों के हृदय में अपने सांस्कृतिक उपकरणों के प्रति मिटती हुई आस्था को बचाया नहीं जा सका, तो केवल उन उपकरणों को मृतक की भाँति स्पिरिट की बोतलों में बन्द कर रखने का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। इसलिए, केवल 'अनुलेखन' की अपेक्षा उन्हें समुचित ढंग से प्रस्तुत कर सकने की प्रवृत्ति ने मुझे अधिक प्रेरित किया है। अनेक नृतत्त्वशास्त्रियों का यह मनोभाव कि जो हो रहा है, वह होकर रहेगा, सशक्तता का चिह्न नहीं है। कठिनाइयों के साथ समझौता करके मानव-विज्ञान की विद्याएँ मानवता का अधिक उपकार नहीं कर पायेंगी। यदि इन विद्याओं का काम वस्तुओं की यथातथ्य विवेचना-मात्र कर देना है, तो फिर मानव के उज्ज्वल भविष्य के प्रति विश्वास और बेचैनी लेकर जीवन के उन मूलभूत तत्त्वों की रक्षा करना किसका काम है, जिनके जीवित रहने पर जंगलों में फूल खिलते हैं, डालों पर कोयल कूकती है, बाँसरी से स्वर फूटता है, मनुष्यों में प्रेम जगता है और जिसके मिट जाने पर धरती बाँझ हो जाती है तथा उसके स्तनों का दूध सूख जाता है।

पुस्तक के अन्त में गीतों में सामान्यतः व्यवहृत विभिन्न प्रकार के मुण्डा-शब्दों की एक सूची भी दे दी गई है, जिससे भाषा-शास्त्र आदि की दृष्टि से अध्ययन करनेवाले भी कुछ लाभ उठा सकें।

बिहार-राज्य के महामहिम राज्यपाल श्रीरंगनाथ रामचन्द्र दिवाकरजी ने मुझे आज्ञा दी थी कि इसमें संगृहीत गीतों की स्वर-लिपि मैं बना दूँ। यही सम्मति प्रसिद्ध नृतत्त्व-शास्त्री श्रीनिर्मलकुमार बोस की भी थी। किन्तु खेद है, संगीत-शास्त्र की अनभिज्ञता के कारण यह आवश्यक काम मैं नहीं कर सका। उन अमूल्य सुझावों को मैं अपने से अधिक समर्थ अध्येता बन्धुओं की ओर नम्रता के साथ बढ़ा दे रहा हूँ।

इसके संग्रह, अनुवाद आदि में जिन मित्रों का सहयोग मिला है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मेरे अनन्य मित्र श्रीभइयाराम मुण्डा ने अपनी सहृदयता और जागरूक प्रतिभा से इसे तैयार करने में मुझे हर प्रकार की सहायता दी है। उनके अतिरिक्त वैसे ही स्नेही श्रीमुन्चिराय मुण्डा, बी० ए०, बी० एल्०, श्रीमानकी सिंह राज सिंह, श्रीबिरसा मुण्डा, श्रीबलदेव सिंह मुण्डा आदि मित्रों तथा श्रीचमरा मुण्डा, बी० ए०, श्रीसोहराई भगत, श्रीलेमसा टुटी, श्रीलोहर सिंह टुटी, श्रीलेदो नाग, श्रीविनय सिंह मुण्डा, श्रीकुंजल सिंह टुटी, श्रीचन्दा मुण्डा, श्रीबिसू लकड़ा, श्रीकरम सिंह सोय, श्रीबड़ाय नाग, श्रीलखन सिंह मुण्डा, श्रीबालीनाग, श्रीनेहमिया मुण्डू, श्रीजोन सुरीन, श्रीमदनलाल कुण्डू, श्रीमहेन्द्र माझी, श्रीलक्ष्मीकान्त मिश्र आदि छात्रों ने संग्रह, अनुवाद और इस मोटी पुस्तक की तीन-तीन पाण्डुलिपियाँ तैयार करने में एवं श्रीरामदयाल मुण्डा और श्रीसाऊ मुण्डरी ने प्रूफ-संशोधन में जो सहायता प्रदान की है, उसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इस पुस्तक में प्रकाशित कुछ चित्र मुझे राँची-स्थित जैफिर स्टुडियो के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। मैं उनका भी अत्यन्त आभारी हूँ।

इस पुस्तक को तैयार करने में जिन महान् लेखकों की कृतियों से सहायता ली गई है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता-ज्ञापन करता हूँ।

अपनी अकिंचन कृतज्ञता का कोष खाली हो जाने पर क्या लेकर बिहार-सरकार के कल्याण-विभाग और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की सेवा में जाऊँ, जिनमें से प्रथम पारस के स्पर्श के विना मेरी मिट्टी सोना नहीं बनती और दूसरी की जादुई माया के विना उसमें सुगन्ध नहीं आती।

खूँटी
बसन्त-पंचमी, सं० २०१३ वि० }

जगदीश त्रिगुणायत

दो शब्द

(द्वितीय संस्करण)

आदिवासी साहित्य और संस्कृति के प्रेमियों तथा लोक-साहित्य के अध्ययन-कर्त्ताओं ने इस पुस्तक को जो सम्मान दिया, वह मेरे लिए बड़ा उत्साहवर्द्धक रहा।

मौखिक परम्परा के कोष से पहली बार कागज के पन्नों पर उतारी हुई सामग्री में कुछ त्रुटियों का होना स्वाभाविक था। मगर अब मुण्डा-भाषा को ध्वनि-विज्ञान की दृष्टि से लिपिबद्ध करने का प्रयत्न किया जा रहा है, इसके लिए सुनिश्चित संकेत, यद्यपि अन्तिम नहीं, निर्धारित कर लिये गये हैं। तदनुसार, इस पुस्तक में पर्याप्त संशोधन और परिवर्द्धन किये गये हैं। इसका सारा श्रेय मेरे प्रिय छात्र और आदिवासी की नई पीढ़ी के बड़े ही प्रतिभाशाली युवक श्रीरामदयाल मुण्डा (शिकागो-विश्वविद्यालय में आग्नेय भाषाओं के ध्वनिशास्त्र के शोधकर्त्ता पुनः डॉक्टर और अब वहीं प्राध्यापक) को है।

इस बार मूल और अनुवाद का ऊपर नीचे का क्रम बदलकर आमने-सामने कर दिया गया है। कृपालु पाठक तीसरे संस्करण में कुछ और भी संशोधनों की आशा कर सकते हैं।

जगन्नाथनगर (राँची) **जगदीश त्रिगुणायत**

१०-१-७१

अमूल्य सम्मतियाँ

मैंने जगदीश त्रिगुणायतजी का संग्रह राँची के इर्दगिर्द के आदिम निवासियों के गीतों को देखा। कुछ उनसे सुना। अनुवाद से भाषा समझ में आ जाती है। भाव बड़े हृदयहारी हैं। इतने परिश्रम का पुरस्कार पूर्वपर्वानुरूप होना चाहिए। पाठक-पाठिकाओं का बड़ा मनोरंजन होगा। मैं संग्राहक की श्रमसारिता से सन्तुष्ट हूँ। इसका हिन्दी में प्रचार और आदर हो, मैं हृदय से कामना करता हूँ।

—महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

श्रीत्रिगुणायतजी का मुण्डा-लोकगीतों का संग्रह और उनकी लिखी हुई उसकी विस्तृत भूमिका को मैंने ध्यानपूर्वक इधर-उधर पढ़ा है। श्रीत्रिगुणायतजी ने अत्यन्त अध्यवसाय के साथ इस कार्य का सम्पादन किया है। ऐसे प्रयत्नों का महत्त्व आज के युग में किसी से छिपा नहीं है। मैं लेखक को उनके इस सत्प्रयत्न के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। बिहार-सरकार या वहाँ की स्थानीय कोई साहित्यिक संस्था इस अमूल्य संकलन का प्रकाशन कर देश और साहित्य का बड़ा उपकार करेगी। इन लोकगीतों को पढ़ने से अवश्य ही एक नई प्रेरणा का स्रोत आज के काव्य-जगत् में प्रवाहित हो सकता है, जिससे हिन्दी की काव्य-चेतना में नवीन स्फूर्त्ति, हार्दिकता, माधुर्य तथा स्वाभाविकता आ जायगी। मुझे आशा है, त्रिगुणायतजी का यह संग्रह शीघ्र ही प्रकाश में आ सकेगा।

—महाकवि सुमित्रानन्दन पन्त

विषय-सूची

विषय-वस्तु **पृष्ठ**

प्रथम खण्ड

पृष्ठभूमि

द्वितीय खण्ड

(गीत-सानुवाद)

परिशिष्ट

भ्रम-संशोधन : पृ० २६६ से ३१३ तक फोलियो में भ्रमवश 'करमा' की जगह 'गेना' छप गया है। सुधी पाठक कृपया सुधारकर पढ़ें।

बाँसरी बज रही

प्रथम खण्ड

पृष्ठभूमि

विश्व-नृतत्त्वशास्त्र में लोकवार्त्ता

इतिहास के राजसिंहासन पर जन-देवता के बैठ जाने के बाद भी विज्ञान ने जितनी उसकी शव-परीक्षा की है, उतनी उसके जीवन की परीक्षा नहीं की। नृतत्त्वशास्त्र के विद्वानों ने जन-जीवन के खण्डहर को बहुत खोदा, उसके गड़े मुर्दों को बहुत उखाड़ा, मानुषमिति के पैमानों से उसकी बहुत नाप-जोख की, उसके रक्त की रासायनिक परीक्षा की, उसकी ध्वनियों, भाषाओं और साँसों का तास के पत्तों की तरह वर्गीकरण किया और अपने शिविर के पर्दे उठा-उठाकर मनुष्य की लाश के रंगमंच से विद्या-विलासी दर्शकों को अपने जादू के खेल दिखाते रहे। समाज ने चकित होकर इन खेलों को देखा, विस्मय-विमुग्ध होकर ताली बजाई और फिर सारे तमाशे जादूगरों की झोली में बन्द हो गये।

वास्तव में, नृतत्त्वशास्त्र की आत्मा अभी तक पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, डाकबँगलों और शिविरों के तरु-कोटर में भूत के कलेजे की तरह बन्द रही। उसने लोक-जीवन की साँसों को छूकर और उसके संगीत में अपना स्वर मिलाकर चलने का प्रयास नहीं किया। सत्यं-शिवं-सुन्दरम् की खोज की, ये विद्याएँ सरकारों की प्रेरणा से चलने लगीं तथा विशेषकर शासन की सुविधा के लिए नहीं, तो फिर विद्या-विलासी पाठकों के बुद्धि-विलास के लिए तटस्थ और नीरस 'अध्ययन' की सामग्री प्रस्तुत करने लगी।

इसीलिए, लोक-जीवन के कलात्मक और सरस पक्ष की ओर उतना ध्यान नहीं दिया गया। विश्वास और प्रेरणा के जिन रेशमी हिंडोलों पर लोक-जीवन झूलता है और मान्यता के जिन सावन-घनों की छाँव में जीवन की कजरी गाता है, उनसे जन-विज्ञान के विद्वान् बहुधा अनजान रहे। उन हिंडोलों पर बैठकर उन्होंने उस आनन्द को नहीं समझा और उन गीतों के स्वर में स्वर मिलाकर लोक-जीवन की धड़कनों को पहचानने का प्रयत्न नहीं किया।

यों तो लोकवार्त्ताओं के अध्ययन की नींव १८१२ ईसवी में ही 'जैकब ग्रिम' नामक एक जर्मन-विद्वान् ने डाल दी थी और यूरोप के सभी देशों में इस अध्ययन के लिए समितियाँ बन गई थीं, ऐण्ड्रयू लैंग, ग्राण्ड एलेन, मैक्समूलर, हर्बर्ट स्पेन्सर, वेस्टर मार्क, और गोमे जैसे विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण काम किये, तथा जे० जी० फ्रेजर ने अपनी वह प्रसिद्ध पुस्तक 'गोल्डेन-बाउ' बारह जिल्दों में प्रस्तुत की, जो लोकवार्त्ता-शास्त्र की बाइबिल समझी जाती है। फिर भी, नृशास्त्र समाजशास्त्र, भाषाशास्त्र, इतिहास, पुरातत्त्व-जैसे अन्य शास्त्रों की तुलना में लोक-साहित्य के अध्ययन का विकास यूरोप में भी अभी तक

बाल्यावस्था में ही रह गया। इसका कारण शायद यह है कि जहाँ अन्य शास्त्रों के अध्ययन के लिए सूक्ष्म बुद्धि, वैज्ञानिक दृष्टि और विश्लेषण-शक्ति की आवश्यकता है, वहाँ लोक-साहित्य के अध्ययन के लिए—विशेषकर लोकवार्त्ता के उस अंश के लिए जो जीवन की रागात्मक वृत्तियों से सम्बन्ध रखता है, सच्चे प्रेम और सहानुभूति की आवश्यकता है। यह अध्ययन का रस पीकर शान्त हो जानेवाली कौतूहल-वृत्ति नहीं, सदा प्रज्वलित रहनेवाली भक्तिवृत्ति है। यह धर्मवृत्ति मस्तिष्क से अधिक हृदय की वस्तु है। यद्यपि लोक-साहित्य के अध्ययन में सहृदय अध्येता के लिए वैज्ञानिक दृष्टि अपेक्षित है, तथापि कोरे बुद्धिवादी वैज्ञानिक की दृष्टि से यह काम नहीं हो सकता। मगर, कौतूहल और जिज्ञासा-वृत्तिवाले बुद्धि-विलासी विद्वानों की तुलना में जन-जीवन से सच्चा प्रेम रखनेवाले व्यक्ति दुर्भाग्यवश संसार में कम हैं।

नृतत्त्वशास्त्र के विद्वानों द्वारा लोकगीतों की उपेक्षा की चर्चा करते हुए 'आर्थर वेली' ने लिखा था[१] —"नृतत्त्वशास्त्र-सम्बन्धी अध्ययन की अभिरुचि लहरों में प्रकट होती है। कभी खोपड़ी, तो कभी पारिवारिक शब्दावली, तो कभी विशिष्ट आकृति-वाले मनुष्यों के अध्ययन की धूम रहती है। पर, अभी तक गीतों के अध्ययन की परम्परा नहीं चली। इस धारणा को प्रमाणित करना सहज है। उदाहरणतः, अभी हाल में बोआस ने आदिम जीवन पर जो अपना व्यापक अध्ययन 'जनरल-इन्थ्रोपोलॉजी' द्वारा प्रस्तुत किया है, उसमें गीतों पर केवल चार-पाँच पृष्ठ ही हैं, जबकि आर्थिक व्यवस्था पर एक सौ पृष्ठ। विश्व के विभिन्न भागों में प्रचलित काव्य-प्रणाली का या तो वर्णन ही नहीं किया गया है या फिर गलत किया गया है। इसी तरह लोकगीतों की उपेक्षा का दूसरा प्रमाण सन् १९३४ ई० में लन्दन में होनेवाले नृतत्त्वशास्त्र के अन्तरराष्ट्रीय काँगरेस के अधिवेशन में वर्त्तमान है, जिसमें लगभग १०० निबन्ध पढ़े गये; किन्तु उनमें से एक भी गीत के सम्बन्ध में नहीं था। यह अवश्य कहा जा सकता है कि गीत स्वयमेव पृथक् और स्वतन्त्र सत्ता नहीं रखते और संगीत नृत्य तथा अन्य क्रियाओं से सम्बद्ध हैं; किन्तु उस काँगरेस में ऐसे बीसों निबन्ध पढ़े गये थे, जिनमें उससे भी सीमित विषयों का विवेचन था। यथा—'दाँत उठने-सम्बन्धी विचारों के विभिन्न पहलू'।

"एक तीसरा प्रमाण लीजिए—मेरे पास नृतत्त्वशास्त्र पर प्रायः डेढ़ सौ पुस्तकें हैं, उनमें से केवल तीन या चार में ही गीतों की कुछ चर्चा है; किन्तु एक भी ऐसी नहीं, जिसमें गीतों की पूर्ण विवेचना की गई हो।"

भारत में लोकवार्त्ता के अध्ययन की गतिविधि

जब यूरोप के स्वतन्त्र और उन्नत देशों का यह हाल था, तब भारत जैसे परतन्त्र देश में यह उपेक्षा स्वाभाविक ही थी। यहाँ तो सारे ज्ञान-विज्ञान शासन के ही साधन बने रहे और शासकों की सुविधा के लिए गजेटियर छापते रहे। टेम्पेल महोदय ने सन् १८८४ ई० में अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'लीजेण्डस ऑव दि पंजाब' में लिखा था[२] —"किन्तु,

गत पचास वर्षों में, अर्थात् जबसे कि टॉड ने अबतक प्रामाणिक माना जानेवाला ग्रन्थ राजस्थान पर लिखा, स्लेवों के गीतों और लोकवार्त्ताओं के बृहत् अनुलेखन लेखकों के बाद लेखकों ने कर डाले हैं। रूसी, पोली, श्वेत, क्रोशीय, सर्वी, मोरावो, वैडी, रूथेनी तथा अन्यों पर पूरा-पूरा काम हुआ है। भारत में—जहाँ के शासक अपनी ऊँची बुद्धि पर, अपने भेजे हुए प्रतिनिधियों की ऊँची शिक्षा पर तथा शासन के ऊँचे लक्ष्यों पर गर्व करते हैं, वहाँ—यह कार्य अभी आरम्भ ही हुआ है।"—यों तो भारतीय लोकवार्त्ता के संग्रह का आरम्भ कर्नल टॉड का 'एनल्स ऐण्ड एण्टिक्विटीज ऑव राजस्थान' से ही होता है।........किन्तु, सच पूछिए, तो टेम्पेल महोदय ने ही लोकसाहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन की नींव भारत में डाली। पीछे वह काम बढ़ा। विद्वानों ने यहाँ शास्त्रीय और वार्त्ता-विषयक खोज और अनुसन्धान के बहुत काम किये; फिर भी उनमें लोकगीतों की उपेक्षा ही रही। वेरियर एलविन ने आर्चर के नाम एक अपील में लिखा था[१]—"पुरानी कविता में एक भी लोकगीत का विश्लेषण नहीं किया गया। मैंने थर्स्टन, रिज़ले, इन्थोमेन, अनन्तकृष्ण ऐयर, रसल और हीरालाल की समाजशास्त्र-सम्बन्धी बड़ी-बड़ी पुस्तकों के हजारों पृष्ठ उलट डाले। ये कृष्णपक्ष के अन्धकार की पुस्तकें हैं। इनके द्वारा छन्द और लय की चाँदनी उद्भासित नहीं होती।"

वास्तव में, इन विद्वानों की साधना का पानी अँगरेजी राज की जड़ों के पोषण के लिए था, लोकजीवन को हरा-भरा बनाने के लिए नहीं था। यद्यपि भारतवासियों की सेवा के लिए इन विद्वानों के भी आदर्श उतने ही ऊँचे थे, जितने अँगरेजी राज के आदर्श!

तो भी यहाँ लोकवार्त्ताओं और लोकगीतों का जो अध्ययन हुआ है, उसे हमें महत्त्व देना चाहिए। इससे कम-से-कम भविष्य का मार्ग प्रशस्त हो चुका है। भारत के विभिन्न भागों में लोकगीतों के क्षेत्र में जी० सी० गोवर की 'फॉक सांग्स ऑव सदर्न इण्डिया'; टेम्पेल की 'लीजेण्ड्स ऑव दि पंजाब'; सन्तराम बी०ए० की 'पंजाबी लोकगीत'; क्षितिमोहन सेन की 'दारामणि'; झवेरचन्द्र मेघाणी की 'रढ़ियाली रात' आदि के अतिरिक्त मारवाड़ी, राजस्थानी, कश्मीरी आदि में भी बहुत-से गीत-संग्रह निकल चुके हैं। अब तो भारतीय भाषाओं में बहुत-से लेखक इस विषय पर काम कर रहे हैं।

हिन्दी में लोक-साहित्य के संग्रह का आरम्भ श्रीमन्नन द्विवेदी ने ही सन् १९१३ ई० में किया था। किन्तु, श्रीरामनरेश त्रिपाठी ने सबसे महत्त्वपूर्ण काम किया है। उनकी 'कविताकौमुदी' (पाँचवाँ भाग) और 'ग्राम-साहित्य'; श्रीरामइकबाल सिंह 'राकेश' के 'मैथिली-लोकगीत'; श्रीश्यामाचरण दूबे के 'छत्तीसगढ़ी-लोकगीत' आदि के अतिरिक्त अन्य जनपदीय लोकगीतों का अध्ययन भी अब राष्ट्रभाषा में आरम्भ हो चुका है। डॉक्टर सत्येन्द्र को 'ब्रजलोक-साहित्य का अध्ययन' नामक खोज और विवेचनापूर्ण पुस्तक पर आगरा-विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की उपाधि दी है। हिन्दी में आज लोकगीतों के सबसे बड़े साधक श्रीदेवेन्द्र सत्यार्थी हैं, जिन्होंने भारत-भर में घूम-घूमकर इसी साधना में

अलख जगाया है। और, हिन्दी-संसार को न केवल अनेक जातियों के मानस से परिचित कराया है, वरन् नये लेखकों के लिए सजीव प्रेरणा-प्रदान की है।

आदिवासी लोकगीतों का अध्ययन

यों तो सारे भारत में नृतत्त्वशास्त्र की इस शाखा का, जिसे लोकवार्त्ता कहते हैं, उतना विकास नहीं हुआ ; किन्तु आदिवासियों में यह विषय और भी उपेक्षित रहा। जहाँ आदिवासियों के खण्डहर को पुराना और जंगल-झाड़ से ढका हुआ पाकर नृतत्त्व-शास्त्रियों ने इसपर सबसे अधिक धावा बोला, वहीं इनकी अशिक्षा पिछड़ेपन और विकट परिस्थितियों के कारण इनकी वार्त्ताएँ अपेक्षाकृत अधिक रहस्यमयी बनी रहीं।

आदिवासी कविता—जब आदिवासियों के क्षेत्र में जाति, परिवार, रक्त, भाषा, स्वभाव आदि बहुत-से रहस्यों का उद्घाटन हो चुका था, तब भी उनकी अन्य वार्त्ताओं की तरह आदिवासी कविता भी रहस्यमय और अछूती ही बनी रही। श्री डब्ल्यू० जी० आर्चर ने सन् १९४३ ई० में लिखा था[1] —"दस वर्ष पहले तक भारतीय जन-जातियों की कविता सभी जिज्ञासुओं के लिए एक वर्जित प्रदेश थी। 'बौडिंग' बहुत-सी सन्थाल-कविताओं को खालिस बकवास समझता था। 'ब्राउन' को विश्वास था कि तांगखुल (आसाम) की नागा-जाति अपने अधिकांश उन गीतों को, जिन्हें वह गाती थी, समझती नहीं थी और 'ग्रिनार्ड' ने उराँव-गीतों के सम्बन्ध में अपनी धारणा प्रकट की थी कि किसी भी उराँव-गीत के विभिन्न पदों में जो विचार चलते हैं, उनको पकड़ सकना कठिन है। प्रथम दर्शन में ही आँख प्रकाशों एवं रंगों के प्रदर्शनों से चौंधिया-सी जाती है, कान वार्त्तालाप के असम्बद्ध टुकड़ों का वस्तुतः सिर-पैर नहीं ढूँढ़ पाता। पाश्चात्य पाठक कुछ क्षुब्ध हो जाता है।"

और, हेमण्डोर्फ[2] ने आसाम के 'कोयोंक-नागाओं' के गीतों के सम्बन्ध में लिखा था—"बहुत-से गीत एक अत्यन्त सीमित क्षेत्र में ही पूर्णतया समझे जाते हैं। यहाँतक कि गायक भी बहुधा प्रत्येक शब्द का अर्थ नहीं बता पाता। गायक कहता है कि हम यों ही गाते हैं ; किन्तु साधारण बातचीत में इन शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करते और न ही कह सकते कि इनका ठीक-ठीक अर्थ क्या है ?"

वास्तव में, जहाँ मनुष्य ने मनुष्य को ही नहीं समझा, और संसार के बहुत-से देशों में आदिवासी जब सामान्य मानव की जगह 'अलिफलैला' की कहानी समझे गये, विचित्र लोक के जीव माने गये, जिनके सिर नीचे और पैर ऊपर हैं, जो हवा में उड़ते और आग खाते हैं, ऐसी दुनिया में उनके गीतों के सम्बन्ध में उपर्युक्त धारणाएँ कोई आश्चर्य की बात नहीं हैं।

लेकिन, अध्ययन और सम्पर्क से इन धारणाओं में परिवर्त्तन हुआ। श्रीवैरियर एलविन और शामराव हिवाले के सम्मिलित प्रयत्नों ने मध्यप्रदेश की जन-जातियों के मानस में प्रवेश करके उनकी कलाओं और गीतों के विस्तृत अध्ययन का द्वार पहली बार खोला।

---

१. श्री डब्ल्यू० जी० आर्चर : बैगा पोयट्री (मैन इन इण्डिया, जिल्द २३, मार्च १९४३, पृ० ४७)।
२. फ्यूरर हेमण्डोर्फ : 'दि रूल ऑव साँग्स इन कोयोंक कल्चर' (मैन इन इण्डिया, जिल्द २३, मार्च १९४३, सं० १)।

आदिवासी गीतों के सम्बन्ध में इस महत्त्वपूर्ण युग-परिवर्त्तन की चर्चा करते हुए आर्चर ने लिखा है[1]—"लेकिन सन् १६३५ ई० में 'साँग्स ऑव दि फारेस्ट'[2] के प्रकाशन ने स्थिति को बिलकुल बदल दिया ; क्योंकि उसमें गोंड कविताओं को पारदर्शी और भावमूलक बताया गया था। चार वर्षों के बाद 'दि बैगा'[3] ने अन्तिम रूप से रहस्यात्मक तत्त्वों को पूर्णतया हटा डाला ; क्योंकि इसमें न केवल आदिवासी कविता को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया था, वरन् उसमें जातीय जीवन के आधारभूत तत्त्वों को भी प्रकट किया गया था। जहाँ आदिवासी कविता आदिवासी जीवन की सारी मनोवृत्तियों और विचारों की कुंजी के रूप में दिखाई गई, वहीं उनके जीवन से इनकी सारी कविताओं का समाधान और उत्तर मिल गया। 'दि बैगा' के प्रकाशन के बाद ही यह समझना सम्भव हो सका कि एक जाति को कविता से क्या लाभ है एवं कविता के प्रति उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति क्या है ?"

जन-जातियों की कविता के अध्येताओं में एलविन के समान ही शामराव हिवाले, डब्ल्यू० जी० आर्चर और फ्यूरर हेमण्डोर्फ के नाम भी महत्त्वपूर्ण हैं। 'साँग्स ऑव, दि फारेस्ट' एलविन और हिवाले की सम्मिलित रचना है। उराँव-गीतों पर 'दि ब्लू ग्रोव' 'दि डफ ऐण्ड दि लेपर्ड', एवं 'एमंग्स दि ग्रीन लीव्स' आर्चर की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं। और 'साँग्स ऑव दि फारेस्ट' तथा 'दि बैगा' के विषय में आर्चर की जो सम्मति है, वह स्वयं उनकी पुस्तकों पर भी उतनी ही चरितार्थ होती है। आर्चर ने मुण्डा, उराँव, खड़िया, हो, सन्थाल आदि जातियों के हजारों-हजार गीतों का मोटी-मोटी जिल्दों में संग्रह भी किया है, यद्यपि वह कोरा संग्रह ही है।

अध्ययन के भिन्न-भिन्न उद्देश्य

लेकिन, आदिवासी लोकगीतों के अध्ययन के दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न रहे हैं। बहुधा इनमें विशुद्ध मानवीय दृष्टिकोण का प्रयोग कम किया गया है और वैसा ही परिणाम भी कम निकला है। जैसे बहुत-से नृतत्त्वशास्त्री जन-जातियों को अपनी उसी आरम्भिक दशा में इसलिए रहने देना चाहते हैं, जिससे वे उनके और उनके उत्तराधिकारियों के अध्ययन और शोध की सामग्री बनी रहें।[4] वैसे ही बहुत-से लेखक इनकी लोकवार्त्ताओं का केवल मनोरंजन के लिए उपयोग करते रहे हैं। उन्होंने इनकी सारी कलाओं और गीतों को म्यूजियम की सामग्री समझा है, जिन्हें पढ़-सुनकर विद्या-विलासी पाठकों को कौतूहल हो और फ़ुरसत की घड़ियों में उनका मन बहले। आर्चर ने आदिवासियों के समाज से कई हजार गीतों को बटोरकर रख लेना इसलिए आवश्यक समझा ; जिससे वे सभ्यता और शिक्षा की बाढ़ में बह न जायँ और नृवंश तथा पुरातत्त्व की विद्याएँ अपने अध्ययन के लिए इस महत्त्वपूर्ण सामग्री से वंचित न हो जायँ। हालाँकि, आर्चर के आदर्श ऊँचे थे और उसके पास ऐसी उच्च कोटि की प्रतिभा थी कि यदि उसने इन

---

१. डब्ल्यू० जी० आर्चर : बैगा पोयट्री (मैन इन इण्डिया, जिल्द २३, १ मार्च, १९४३)।

२. प्रस्तुतकर्त्ता : वेरियर एलविन और शामराव हिवाले।

३. लेखक एलविन।

४. यह ग्रियर्सन और हट्टन का विचार है।

संगृहीत गीतों का अध्ययन भी प्रस्तुत कर दिया होता, तो लोकगीतों के क्षेत्र में उसके पदचिह्न बहुत महत्त्वपूर्ण हुए होते।

दूसरा दृष्टिकोण सुधारवादी था। इनमें से एक वर्ग-विशेष ने, इसका भेद-बुद्धि द्वारा, सुधार की दृष्टि से अध्ययन किया। इन्साइक्लोपिडिया की खोज है —

"वर्त्तमानकाल में ही, मुण्डा, उराँव, भूमिज आदि कई जातियाँ ही कोल कहलाती हैं। उनमें 'हो' या 'लड़का कोल' प्रकृति-कोल जैसे जान पड़ते हैं।

× × ×

"सम्भवतः, अतिपूर्व काल में मुण्डा, उराँव और हो ये तीन श्रेणियाँ एकत्र और एक परिवार युक्त होकर रहती थीं।................

"मालूम पड़ता है, छोटानागपुर में कोलों के संस्कृत 'मुण्डा' नाम ग्रहण करने से पहले ही 'हो' लोग पृथक् हो गये। मुण्डा आदि श्रेणियों का आचार-विचार कितना भ्रष्ट होते हुए भी 'लड़का कोल' प्राचीन रीति-नीति बराबर समान भाव से पालन करते आ रहे हैं।"

स्पष्टतः ही मुण्डाओं पर इस नाराजी का कारण उनके "संस्कृत 'मुण्डा' नाम ग्रहण करने" के अतिरिक्त अन्य कोई तथ्य नहीं है।

फिर इन्साइक्लोपीडिया ऐसे ही किसी 'सुधारक' द्वारा प्रस्तुत की हुई एक लोककथा का उद्घाटन करती है।

"लड़का कोलों का कहना है कि सिंगवोंगा ने एक बालक और एक बालिका को बनाया। उनमें काम की प्रवृत्ति न देखकर धान की शराब बनाना सिखाया। कामेच्छा हुई और वंशवृद्धि होने लगी। प्रथम नर-नारी में बारह पुत्रों और बारह कन्याओं ने जन्म लिया। सिगवोंगा ने तरह-तरह के मांस और शाक-भाजी पकाकर उन्हें भोज दिया। एक-एक भाई-बहन को मिथुन कराकर एक-एक चीज खिलाई थी। प्रथम और द्वितीय भाई-बहन ने बैल और महिष का मांस लिया। उन्हीं से कोल और भूमिज जाति की उत्पत्ति है। शाक-भाजी खानेवालों से ब्राह्मण-क्षत्रिय और छाग-मांसाहारियों से शूद्र जाति की उत्पत्ति है। उसी समय एक जोड़ा सूअर-मांस खाने से सन्थाल हो गया। कोल अपनी ही भाँति यूरोपियनों को भी प्रथम मिथुन से उत्पन्न बताते हैं।"[१]

यूरोपियनों से इनका अलौकिक सम्बन्ध स्थापित करना ही इस अभिनव कथा का उद्देश्य है।

उपर्युक्त मनोवृत्तियों को छोड़ देने से जो शुद्ध मानवीय समवेदना की दृष्टि शेष रह जाती है, उस दृष्टि से आदिवासियों के लोक-साहित्य के लिए काम लगभग नहीं हुआ है। लेकिन, वैरियर एलविन का नाम इसका अपवाद है। उसने मानवीय समवेदना की आत्मीय दृष्टि से मध्यप्रदेश के आदिवासियों की जीवन-कलाओं के समझने का सच्चा प्रयत्न किया है और गोंड, बैगा आदि जातियों के साहित्य-संगीत आदि के बारे में अपने महत्त्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किये हैं। हाँ, एलविन का यह मानवतावाद कुछ पृथक्करण की ओर झुका हुआ है। ठीक वैसे ही, जैसे बहुत-से भारतीय सेवकों और सुधारकों का मानवतावाद

१. इन्साइक्लोपीडिया इण्डिका, ५। ४५७।

अन्धाधुन्ध सम्पर्क का समर्थक है। भीलों, सन्थालों, सवारियों आदि में और भी कुछ सच्चे कार्यकर्त्ता छिटपुट प्रयत्न कर रहे हैं; किन्तु उनका परिणाम सामने आना अभी शेष है।

भारतीय लोकगीतों की अध्ययन-प्रणाली

लोकगीतों के अध्ययन के सम्बन्ध में एक प्रकार की और भी कठिनाई रही और यह अध्ययन बहुत दिनों तक प्रयोग की भूलभूलैयों में चक्कर काटता रहा। विद्वानों की अपनी सीमाओं और मर्यादाओं ने लोकगीतों की समुचित मर्यादाओं का निर्धारण नहीं होने दिया। संग्रह, लिपि, अनुवाद सभी बहुत दिनों तक विवाद के विषय बने रहे।

बहुत-से विद्वानों ने मौलिक गीतों के संग्रह की उपयोगिता पर सन्देह प्रकट किया और उनके अनुवादों का ही संग्रह सम्पूर्ण अध्ययन के लिए पर्याप्त समझा। जी० सी० गोवर ने 'फॉक-साँग्स ऑव सदर्न इण्डिया' (सन् १८७१ ई० में प्रकाशित) में मौलिक गीतों को छोड़ दिया। उसका कहना था कि बहुत कम पाठक इन्हें समझ सकते हैं और इससे बहुत अधिक कागज बरबाद होता है। और, एक मुख्य साहित्य को थोड़े से उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत करने की जगह अच्छा यही होगा कि उसके पूरे गीतों को ही उपस्थित किया जाय। अगर इस हालत में गीतों का मूल भी उपस्थित किया जाय, तब तो इससे कागज की बरबादी और बढ़ जायगी।[1]

स्पष्ट है कि यह प्रयत्न पाश्चात्य तथा अँगरेजी पढ़े-लिखे पाठकों की ही दृष्टि से किया गया था। इस कारण इसका यह अर्थ हुआ कि यदि अपनी सीमाओं में बँधे हुए विद्वान् उन्हें समझ न सकें, तो एक जाति के हृदय की सारी भावनाओं की और कोई उपयोगिता ही नहीं है!

अनुवाद के विषय में कुछ पूर्ववर्त्ती विद्वानों का आग्रह रहा कि छन्द का अनुवाद छन्द में ही होना चाहिए, वह भी अँगरेजी के छन्द में। इसमें भी गीतों की ठीक अभि-व्यक्ति से अधिक पाठकों का ही खयाल था। अँगरेजी-छन्द : प्रणाली में कहीं संकुचित और कहीं विस्तृत होकर भारत के लोकगीत न केवल अपना सरल सौन्दर्य खोते रहे, वरन् अपने भाव और अर्थ भी खोते रहे। ऐसे प्रयत्नों में भारतीय लोकगीत कहीं विकृत हो गये और कहीं अनुवादकों के अपने संस्कारों के आवरण में संस्कृत होकर अपना प्रकृत रूप खो बैठे। रूप और अर्थ दोनों में लोकगीत या तो कम हो गये या अधिक हो गये; किन्तु कम-से-कम वैसे नहीं रह पाये, जैसे पहले थे। ऐसे अनुवादक दुर्भाग्यवश इस तथ्य को भूल गये कि लोकगीतों का सौन्दर्य उनकी सरल अभिव्यक्ति में है, उनकी निरीह निःसंकोचता में है, और उनके भोलेपन में है। किन्तु, महान् अनर्थ तो तब हुआ, जब उन्होंने अपनी विद्वत्ता पर लांछन लगने के डर से, जिनमें रुखड़ापन मिला, उनपर पॉलिश लगाई और गीतों के (अपनी समझ में) रिक्त कलेवर को नवीन अर्थों से जबरदस्ती भर दिया। श्रीशरत्चन्द्र राय ने 'मुण्डाज ऐण्ड देयर कण्ट्री' के एथनाग्रॉफी खण्ड में लगभग बीस-बाईस मूल और छन्दोबद्ध गीत अनुवाद-सहित प्रस्तुत किये हैं। उनमें से केवल दो-तीन को छोड़कर प्रायः

---

१. वैरियर एलविन : अपीलग—टू डब्ल्यू० जी० आर्चर (मैन इन इण्डिया, जिल्द २३, मार्च, ४३, नं० १)।

सभी उपर्युक्त कथन के ज्वलन्त प्रमाण हैं। एक उदाहरण पर्याप्त होगा—

वो ओः तमः रिस रिस
सुपिद् केदम् रङ्ग नच
निद सिङ्गि बागेम् गुतुतन
नमः नङ्गेन् जीगे लो-तन !
अन्दु तदम्, सकोम् तदम्,
होटोः रेदो हिसिर् मेनः,
पोल तम् दो चिलक सड़ितन,
नमः नङ्गेन् जोगे लो-तन।

अनुवाद :

How lovely thy head with wealth of waving hair,
It looks with red twine tied in round knot fair!
O! day and night, thou wreathes of flowers dost, weave,
For thee my heart doth burn and bosom heave,
How bracelets and armlets those fair arms bedeck,
And necklace bright adorns thy beauteous neck!
Sweet sounds the jingling pola on thy feet,
For thee my heart, doth burn and anxious beat.

मूल का अर्थ—तुम्हारे सिर के बाल रुखड़े बिखरे हैं। लाल फीते से तुमने चोटी बनाई है। तुम रात-दिन फूल गूँथा करती हो। तुम्हारे लिए (हमारा) हृदय जल रहा है। तुम्हारे (पैर में) पैरी और (हाथ में) पहुँची है (और) गले में माला है। तुम्हारी (पैर की) अंगूठी कैसी बज रही है। तुम्हारे लिए हृदय जल रहा है।

अनुवाद का अर्थ :

"घुँघराले बालों से भरा हुआ तुम्हारा सिर कितना सुन्दर है! उसका खोंपा लाल सुतली से बँधा हुआ बड़ा सुन्दर है। तुम रात-दिन फूलों की माला गूँथा करती हो। तुम्हारे लिए मेरा हृदय जलता है और गहरी साँस लेता है। चूड़ियों से और भुजबन्दों (बाज़ू) से तुम्हारा हाथ कितना सुशोभित लगता है। तुम्हारे सुन्दर गले में तुम्हारा 'नेकलेस' चमकता हुआ सुशोभित हो रहा है। तुम्हारे पैरों में बजती हुई 'पोल' (पैर की अंगूठी) कितनी मधुर आवाज कर रही है। तुम्हारे लिए मेरा हृदय जल रहा है और दुःख से धड़क रहा है।

मूल और अनुवाद दोनों पाठकों के सामने हैं। रुखड़े-बिखरे बालों की जगह घुँघराले लहराते बाल लाये गये हैं। हृदय जलने के साथ 'गहरी साँस लेना' ऊपर से लाया गया है। पैरी (पैर में पायल के स्थान पर पहना जानेवाला गहना) की जगह चूड़ियाँ और पहुँची की जगह (कलाई में) बाज़ू (बाँह का गहना) पहनाया गया है। गले और माला दोनों शब्दों के लिए ऊपर से विशेषण लगाये हैं और मुण्डा-प्रेमी की सरल अभिव्यक्ति को कृत्रिम मनुहारों में परिवर्त्तित कर दिया गया है। और, अन्तिम

---

१. श्रीशरतचन्द्र राय : मुण्डाज़ ऐण्ड देयर कण्ट्री, पृ० ५११-५१२।

पंक्ति में जहाँ मुण्डा का हृदय केवल जलता है, वहाँ शरत् राय के अनुसार हृदय धड़कता भी है।

लेकिन, प्रयोगों ने पीछे सिद्ध कर दिया कि यह प्रणाली दोषपूर्ण है और प्रत्येक पंक्ति के अलग-अलग गद्यात्मक और सरल अनुवाद की वैज्ञानिक प्रणाली प्रचलित हुई।

संग्रहकर्त्ताओं ने उस समय हद कर दी, जिस समय गीतों के विषयों का सूँघ-सूँघकर चुनाव किया। एलविन लिखता है कि "वैज्ञानिकों और साहित्यिकों के द्वारा भारतीय लोकगीतों की उपेक्षा आश्चर्य की बात है। बहुत दिनों तक उपदेशात्मक और धार्मिक गीतों का ही संग्रह होता रहा। 'गोवर' ने स्वीकार किया है कि उसे यौन-भावात्मक गीतों के अनुवाद का साहस नहीं हुआ; क्योंकि उसने एक प्रतिष्ठित और विद्वान् पादरी को सार्वजनिक रूप से बहिष्कृत होते देखा था, जिसपर एक गीत के—जिसमें नारी के स्तन की उपमा अनार से दी गई थी, सचाई और ईमानदारी से अनुवाद करने के लिए अभियोग लगाया गया था।"[1]

लिपि के सम्बन्ध में भी ऐसे ही विवाद रहे। अँगरेज-विद्वानों ने रोमन-लिपि में इनका संग्रह किया, जो भारतीय ध्वनियों की अभिव्यक्ति में स्वाभाविक रूप से असमर्थ रही। किन्तु, अँगरेजी-भाषा के कारण वे ऐसा करने को लाचार थे। उन्होंने रोमन-लिपियों की असमर्थता को समझा; किन्तु इसका सामाधान ढूँढ़ने के बदले मौलिक गीतों को पाठकों की समझ से परे होने के कारण अनुपयोगी कहकर प्रायः उन्हें छोड़ दिया और उनके अनुवादों से ही काम चला लिया। नागरी-लिपियों से वे या तो अपरिचित थे, या उसकी उन्होंने उपेक्षा की, इससे उसकी परीक्षा नहीं हो सकी और वे सम्भावनाएँ रहस्य ही बनी रह गईं, जो इन लिपियों में भारतीय लोक-कविता के लिपिबद्ध होने से प्रकट होतीं। और, अँगरेज-विद्वानों पर इसकी उपयोगिता के परदे नहीं खुल पाये। केवल इतना ही हुआ कि रोमन-लिपियों में भारतीय गीतों के लिपिबद्ध करने की कोशिश से उस लिपि की अशक्तता समझ में आ गई।

मगर अब भारत के अन्य लोक-गीतों का संकट भारतीय विद्वानों की जागरूकता से—देर से ही सही—दूर हो रहा है। फिर भी, आदिवासी लोकगीतों का भाग्य उलझन में ही है। जितना कुछ अध्ययन हुआ है, उससे बहुत अधिक अछूता पड़ा है। इस विषय के सबसे बड़े आचार्य एलविन और आर्चर भी निश्चित राह नहीं बना सके हैं। दोनों की विश्लेषण-प्रणाली अभी रास्ते में है। शुद्ध वैज्ञानिक पद्धति की मंजिल उनसे भी दूर है। सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात है कि वे आपस में भी बहुत बातों में भिन्न हैं। विशेषकर मौलिक गीतों के संग्रह, अनुवाद और विश्लेषण जहाँ तीनों के सन्तुलन की आवश्यकता है, इन विद्वानों का महान् प्रयत्न भी अधूरा ही रह जाता है। एलविन ने अपने संग्रहों में गीतों के अनुवादों को ही स्थान देना पर्याप्त समझा है और सिद्धान्ततः मौलिक गीतों के संग्रह की आवश्यकता स्वीकार करके भी उनका वैज्ञानिक पीछे पड़ गया है। उधर आर्चर ने मुण्डा, उराँव, हो, सन्थाल आदि के हजारों-हजार गीतों के मूल रूप का संग्रह किया

---

१. वेरियर एलविन : अपीलग—टू डब्ल्यू० जी० आर्चर (मैन इन इण्डिया, जिल्द २३, मार्च, ४३—अंक १)।

और नागरी-लिपियों में किया ; मगर अनुवाद और व्याख्या से उन मोटी जिल्दों को वंचित रखा। केवल उराँव-गीतों के लिए उनकी तीन अलग पुस्तकें 'दि ब्लू ग्रोव', 'दि डफ ऐएड दि लेपर्ड' और 'एमंग दि ग्रीन लीव्स' हैं, जिनमें थोड़े-थोड़े गीतों के अनुवाद हैं और सबमें सुन्दर विश्लेषण है ; मगर उनमें गीतों का मूल ही गायब है। आदिवासी गीतों के ये सबसे बड़े दो आचार्य राहु और केतु के समान दो टुकड़ों में बँटे हुए हैं और इनमें प्रत्येक इस प्रकार अधूरा है कि दोनों आपस में मिलकर भी पूर्ण नहीं हो सकते। आश्चर्य तो तब होता है, जब हम देखते हैं कि ये दोनों वैज्ञानिक भी हैं और कलाकार भी। मगर विदेशी होने के कारण इनके हृदय और मस्तिष्क का भारतीय लोक-मानस के साथ उचित सन्तुलन नहीं स्थापित हो पाता और उस दृष्टिकोण का अभाव रह जाता है, जिसके होने से एक अध्येता, गीत, अर्थ और जीवन—तीनों में समान सौन्दर्य देखता है और तीनों को समान महिमा प्रदान करता है।

फिर भी, ये आदिवासी गीतों के निश्चित रूप से सबसे बड़े आचार्य हैं और इनका पथ-प्रदर्शन अमूल्य है। हमें सच्चे हृदय से इनका कृतज्ञ होना चाहिए। यह तो भारतीय विद्वानों का काम है कि वे न केवल इनके अधूरे काम को पूरा करें, वरन् इनकी अपूर्ण प्रणाली को भी पूर्णता प्रदान कर उसे पूर्ण कलात्मक, वैज्ञानिक तथा जीवनानुकूल बनायें।

अध्ययन का शुद्ध उद्देश्य

वास्तव में, लोकजीवन को समझने के लिए लोकवार्त्ताओं का बड़ा महत्त्व है। विशेषकर आदिवासियों के विषय में तो सबसे पहली आवश्यकता यही है कि उन्हें ठीक से समझा जाय। अबतक आदिम जातियों की दुनिया में जो भी सेवक, सुधारक या लेखक गये, एक बँधी हुई धारणा लेकर गये और अपने-आपको कुछ भिन्न और कभी-कभी विकृत संस्कारों में लपेटकर गये और सबसे बड़ा अनर्थ तो तब हुआ, जब वे कोई अपना विशेष उद्देश्य लेकर गये। स्पष्ट है कि उन्होंने अपने रंगीन चश्मों से आदिवासी जीवन को देखा और यह दर्शन सत्य से कभी-कभी बहुत दूर रहा।

जन-जातियों के बीच जानेवालों को चाहे वे सेवा के लिए जायँ या अध्ययन के लिए, उनके प्रति प्रेम और सहानुभूति का भाव लेकर जाना चाहिए। मन में उनकी सभी बातों के प्रति आत्मीयता का भाव होना चाहिए। हमारी दृष्टि ऐसी हो कि हम शहरी संस्कारों के ऊँचे कोठे पर चढ़कर दूर से उनके जीवन की अवघट घाटियों पर दृष्टि न डालें, वरन् उनकी विशेष परिस्थितियों के निकट जाकर उन्हीं की परिस्थितियों में उनके जीवन का अध्ययन करें। आदिम जातियाँ समाज की अविकसित अवस्था में मानी जाती हैं। यदि यह बात सच है, तो भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शिशु का विकास धूल के घरौंदों और काठ के घोड़ों पर ही होता है। जो अभिभावक शिशु की अभिरुचियों और ममताओं को सहानुभूतिपूर्वक नहीं समझता और केवल अपनी ही इच्छाओं को सर्वदा शिशु के सिर पर लादा करता है, वह मूर्ख उसके साथ अत्याचार करता है। हमें अपने आदर्शों को उन्हें समझाने और उसी कसौटी पर उनके जीवन को कसने के बदले उनके आदर्शों को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। आदिम जातियों की बहुत-सी बातों

को बुरी, निरर्थक और हीन समझनेवाले बुद्धिमानों को इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि ये पिछड़े कहलानेवाले लोग भी वैसे ही उन सभ्यों की भी बहुत-सी बातों को हीन और निरर्थक समझते हैं, जो सब-की-सब केवल ऊँची और महत्त्वपूर्ण ही नहीं हैं।

लोकवार्त्ताओं में जनता के प्राण बसे रहते हैं। विशिष्ट वर्गों के साहित्य और कलाएँ अधिक संस्कृत होती हैं। उनमें आडम्बर, कृत्रिमता और सजावट होती है, इसलिए मनबहलाव और फैशन में ही उनकी अधिक उपयोगिता है। किन्तु, जनता और विशेषकर पिछड़ी जातियों की वार्त्ताएँ केवल मनबहलाव और फैशन की ही सामग्री नहीं होतीं ; वरन् वे साँसों की तरह महत्त्वपूर्ण होती हैं। उनके दुःखी और पिछड़े जीवन के सारे रस और आनन्द उन्हीं में बिखरे होते हैं।

लोकवार्त्ताएँ और लोक-कविताएँ आदिम जीवन के पंछी के लिए जंगल की डाल हैं, जिनके रसमय और उन्मुक्त वातावरण में उनके पंख स्पन्दित होते हैं और स्वर फूटते हैं। आदिम प्राणों की मछली के लिए निर्मल धारा है, जिसमें उसके प्राण गतिशील होते हैं। गीत और नृत्य उनके प्राणों की सूखती हुई खेती के लिए सावन की काली घटा हैं और उनकी मुरझाई हुई कलियों के लिए वसन्त की ठण्डी हवा हैं। जैसे पंछी की मस्ती को वन से हटाकर और मछली की जिन्दगी को पानी से अलग करके नहीं देखा जा सकता, वैसे ही गीत नृत्य से हटा लेने पर आदिवासी जीवन टूटी टहनी की तरह मुरझा जाता है। वन-पर्वत, नृत्य-संगीत तथा उमंग और मस्ती की पृष्ठभूमि के विना आदिवासी जीवन का चित्र भरपूर नहीं उभरता और सफेद दीवार पर उजली रेखाओं के समान निर्जीव जान पड़ता है।

प्रकृति से संस्कृति की ओर विकासशील आदिम जातियों के जीवन की हर अवस्था के लिए उनकी कलाओं और कविताओं का समान महत्त्व है। परिवर्त्तन की जिस अवस्था में उनका सम्बन्ध इन कलाओं से टूट जाता है, वह या तो उनके ह्रास की अवस्था है अथवा तथाकथित 'संस्कृति' के नाम पर उनमें विकृति आ रही है। प्रकृति को ही विकसित, संयत, मर्यादित और उपयोगी बनाने का नाम संस्कृति है। जो विकास प्रकृति को मिटाकर या उसका गला घोंटकर किया जाता है, उस पीछे हटी हुई ऋण-प्रकृति का नाम विकृति है। इनके सेवकों, शुभचिन्तकों और लेखकों को इस विषय में भी सावधान होना है और इस खतरे को समझना है। खतरा इसलिए, जैसा कि एलविन ने लिखा है—"सारी दुनिया में यह बात पाई गई है कि जब आदिम जातियाँ किसी दूसरी सभ्यता के सम्पर्क में आती हैं, तब वे इस नई सभ्यता की बुरी बातें अपना लेती हैं और अच्छी बातों की ओर ध्यान नहीं देतीं। इससे भी अधिक बुरी बात यह होती है कि ऐसे सम्पर्क से उनमें एक ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति पैदा हो जाती है कि वे अपनी पुरानी और सुन्दर बातों को छोड़ देती हैं। आज भारत के आदिवासियों में भी यही हो रहा है और इनमें अपनी कला और संस्कृति की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।"[1]

---

१. डॉ० वैरियर एलविन : 'आदिवासियों की कला' ('आजकल', आदिवासी-अंक, जून, १९५२ ई०, पृ० २१)।

एलविन इसी स्थिति के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हुए 'दि ट्राइबल आर्ट ऑव मिडिल इण्डिया' की भूमिका में कलात्मक वस्तुओं के अपने संग्रह के प्रसंग में लिखता है—"मुझे भय है कि अब संग्रह करने योग्य अधिक नहीं बचा है। हम बहुत देर से काम शुरू कर पाये। भारतीय आदिवासी का स्वर्णयुग बीत चुका है। अब तो हम मलवे में से प्रेरणा और सौन्दर्य-खण्डित अंश ही ढूँढ़ सकते हैं।"[1] और, आर्चर ने भी 'मुण्डा-साँग्स' की भूमिका में यही स्थिति स्पष्ट की है—"ट्राइबल समाज में ऐसी भी परिस्थिति उपस्थित होती है, जब उस जाति की मौखिक कविताओं का संग्रह आवश्यक हो जाता है। सबसे स्पष्ट परिस्थिति उस समय आती है, जब शिक्षा उनके जातीय जीवन को नष्ट कर रही हो तथा उनके विश्वास जातीय जीवन के स्तर को दुर्बल बना रहे हों।"[2]

वास्तव में, भारतीय आदिवासियों की विकास-प्रणाली में ऐसे विरोधाभास आये हैं और ऐसे मौलिक दोष रहे हैं, जिनसे विकृति के ही खतरे अधिक उपस्थित हुए हैं। सम्पर्क की जिस मनोवैज्ञानिक स्थिति की चर्चा एलविन ने की है, वह तो उसके लिए उत्तरदायी है ही ; किन्तु अपनी कला के प्रति उपेक्षा-भाव को प्रोत्साहन देनेवाले ईसाई मिशन और अपने शोषण के द्वारा इनके जीवन का ह्रास करनेवाले विभिन्न प्रकार के शोषक भी कम जिम्मेवार नहीं हैं।

लेखक, सेवक और सुधारक सभी प्रकार के शुभचिन्तकों को इस स्थिति को समझ लेना आवश्यक है। आदिवासियों का विकास इस ढंग से हो कि उनके प्राणों के फूल जिस मिट्टी की सोंधी गन्ध में विकसित हुए हैं, उनसे इन पृथ्वीपुत्रों का सम्पर्क न टूटे। कला और संगीत की अपनी प्राकृतिक अभिरुचियों को ये परिमार्जित करें, उनमें इनकी लगन और गहरी हो और मानव की नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ ही इनके विकास की आधारशिला बनी रहे। आदिवासियों के सेवकों और उनके गीतों के व्याख्याकारों की यह जिम्मेवारी है कि वे अपने सरल संस्कारों से दूर न होने पावें, उनके जीवन की वीणा के तारों में उनके चिर-परिचित संगीत बन्द न हों, उनके प्राणों की बाँसुरी अपने मधुर स्वरों को भूल न जाय और वे अपनी प्रकृति के कोमल प्रसूनों को विकृत सभ्यता के बाजार में कागजी फूलों से बदल लेने का प्रयास न करें।

इसके लिए ऐसा सहानुभूतिपूर्ण हृदय होना चाहिए, जिसकी आँखें इनकी कला की मनोहरता को देख सकें, जिसके कान इनकी कविता के रागों की मिठास सुन सकें और जिसके कण्ठ से आदिम गीतों की वह स्वर-लहरी उठे, जो वन-जीवन को झंकृत करती हुई इनके सूखे प्राणों पर बरसकर उन्हें नई हरियाली से लहलहा दे!

मुण्डा-भाषा और साहित्य

नृतत्त्वशास्त्रियों के मतानुसार मुण्डा-जाति प्रोटो-आस्ट्रेलाइड परिवार की भारतीय शाखा से सम्बद्ध है। डॉक्टर गुहा ने भारत के निवासियों को छह मानव-वंशों[3] में बाँटा है—

---

१. एलविन : ट्राइबल आर्ट ऑव मिडिल इण्डिया, भूमिका।

२. डब्ल्यू जी आर्चर : मुण्डा-साँग्स, भूमिका, पृ० १।

३. डाक्टर गुहा : रेस एलिमेण्टस इन दि इण्डियन पापुलेशन।

१. निग्रिटो, २. प्रोटो-आस्ट्रेलाइड, ३. मंगोलाइड, ४. भूमध्यसागरीय (मेडिटेरेनियन), ५. पश्चिमी वृत्त-कपालक (वेस्टर्न ब्रेसीशिफाल्स) और ६. नार्डिक।

इनमें भारत की आदिम जातियाँ निग्रिटो, प्रोटो-आस्ट्रेलाइड और मंगोलाइड, इन तीन बड़े आदिम परिवारों से सम्बन्ध रखती हैं, जिनमें सबसे प्राचीन 'निग्रिटो' जातियाँ अब भारत में बहुत कम रह गई हैं। त्रावणकोर की 'कादन' और 'पलियन' तथा राजमहल पहाड़ियों की 'वागड़ी' जातियाँ विशाल निग्रिटो-परिवार का समाप्तप्राय अवशेष हैं। दक्षिण भारत की कुछ अन्य जातियों में भी निग्रिटो-विशेषताएँ मिलती हैं। अण्डमन-नीकोबार के आदिवासियों का सम्बन्ध विद्वान् इसी वर्ग से जोड़ते हैं।

मंगोलाइड-वर्ग की जातियाँ भारत के उत्तरी-पूर्वी भागों में, विशेषकर आसाम में बसी हैं। वैसे तो मध्यभारत में भी उनके रक्त के कुछ अंश पाये जाते हैं।

शेष तीसरी प्रोटो-आस्ट्रेलाइड वर्ग की जातियाँ भारत में सबसे अधिक हैं। डॉक्टर गुहा ने लिखा है—"मध्य और दक्षिण भारत की सभी जन-जातियाँ निश्चित रूप से इसी परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। यद्यपि इनकी भाषाओं का विभिन्न भाषा-परिवारों से सम्बन्ध है। पच्छिम भारत की सभी जातियाँ; गंगा के मैदान की वे जातियाँ, जो हिन्दू-समाज का बाह्य अंग बन गई हैं, मध्यभारत के पहाड़ों में रहनेवाली भील, कोल, वडगा, कोरवा, खरवार, मुण्डा, भूमिज, माल पहाड़िया जातियाँ और दक्षिण भारत के चेंचू, कुरम्बा, मलय, येरू आदि भी इसी जाति की प्रतिनिधि समझी जा सकती हैं। यद्यपि उनमें अन्य परिवारों का सम्मिश्रण, विशेषतः निग्रिटों का, एक ही समान नहीं है, तथापि यह निश्चित है कि दक्षिण भारत की जातियों में मध्यभारत की अपेक्षा यह सम्मिश्रण अधिक है।"[1] यह वर्गीकरण जातिगत है।

भाषा की दृष्टि से भारत के इस परिवार के आदिवासियों ने विभिन्न आदिवासी भाषाओं के अतिरिक्त अन्य भाषा-परिवारों की भाषाओं को भी अपनाया है।

मुण्डा-भाषाएँ ऑस्ट्रिक-परिवार की भाषाएँ हैं। मुण्डाओं के लिए यह गौरव की बात है कि ऑस्ट्रिक-परिवार की जो भाषाएँ भारत की विभिन्न जातियों द्वारा बोली जाती हैं, वे सब-की-सब मुण्डा-भाषाएँ कहलाती हैं। भाषाओं का ऑस्ट्रिक-परिवार एक बहुत विशाल परिवार है, जो मध्यभारत से आस्ट्रेलिया तक फैला हुआ है। "मुण्डाओं की भाषा, छोटानागपुर पहाड़ियों की सन्थाल, हो तथा अन्य जातियों द्वारा बोली जानेवाली भाषाओं के साथ भाषाओं के उस परिवार से सम्बन्ध रखती हैं, जिसे आस्ट्रो-एशियाटिक कहते हैं और जिसमें मोन-ख्मेर, वा; पालंग, निकोवारी, खासी और मलक्का की आदिवासी भाषाएँ सम्मिलित हैं। भाषाओं का एक दूसरा परिवार भी है, जिसे आस्ट्रो-नेशियन कहते हैं, जिसमें इण्डोनेशियन, मालेनेशियन और पालेनेशियन सम्मिलित हैं। ये दोनों परिवार—आस्ट्रो-एशियाटिक और आस्ट्रो-नेशियन एक बड़े परिवार में सम्मिलित हो जाते हैं, जिसे ऑस्ट्रिक कहते हैं।[2]

---

१. डाक्टर बी० एस्० गुहा : ऐन आउट लाइन ऑव दि रेसियल एथ्नालॉजी ऑव इण्डिया, १३१।
२. ई० ए० गेट : इण्ट्रोडक्शन (मुण्डाज ऐण्ड देयर कण्ट्री) पृ० ४।

भारतीय विद्वानों ने इन दोनों परिवारों का नाम "आग्नेय-देशी और आग्नेय द्वीपी दिया है।"[१]

मुण्डा-भाषाओं के मूल और परिवार के बारे में श्रीशरत्चन्द्र राय लिखते हैं— "प्रसिद्ध पाश्चात्य भाषावैज्ञानिकों ने अनुसन्धान करके इस बात का पता लगाने में सफलता प्राप्त की है कि बृहत्तर भारत, कोचीन-चाइना, मलाया-प्रायद्वीप, निकोबार, फिलीपाइन-द्वीपसमूह, मलक्का और आस्ट्रेलिया में जो असभ्य जातियाँ (Rude Tribes) बसती हैं, उनकी भाषाओं में प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। क्या शब्दकोश, क्या व्याकरण के नियम, क्या भाषा की रचना के तत्त्व—सभी बातों में, भारत की कोलेरियन,, मुण्डारी, सन्थाली, भूमिज, हो, बिरहोर, कोडा, तूरी, असुरी, कोरवा, कुरकू खड़िया, जुवांग सबर, गड़वा आदि भाषाएँ, मलाया-प्रायद्वीप की सकई और सेमंग; अनामी बरसीसी, मोन-ख्मेर तथा खासी; मलक्का-द्वीपसमूह के आदिवासियों की भाषाएँ; आस्ट्रेलिया की दिप्पिल, तुरुवल, कमिलरोव, ओडी-ओडी, किंकी वैलुवन, तोंगुरोग तथा अन्य भाषाएँ और निकोबार की कार-निकोबार, चोवरा, तेरेसा, शोम्पेन आदि भाषाएँ आपस में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं।"[२]

प्रोटो-आस्ट्रेलाइड परिवार की कुछ जातियों ने अपने से अधिक उन्नत मेडिटेरेनियन (भूमध्यसागरीय) परिवार की द्राविड-जातियों के सम्पर्क में आने से अपनी मौलिक भाषाओं को भूलकर द्राविड-भाषाओं को ही अपना लिया है, जिसमें छोटानागपुर के उराँव प्रमुख हैं। इन बातों के कारण विद्वान् बहुत दिनों तक जातियों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में भ्रम में पड़े रहे; क्योंकि तबतक भाषाएँ ही वर्गीकरण का सबसे मुख्य आधार थीं। किन्तु, जब नृतत्त्ववेत्ताओं ने वैज्ञानिक मापदण्ड—१. मनुष्य के शरीर-वर्ण के भेद ; केशों के प्रकार, नेत्रों का रंग ; २. सिर का आकार-प्रकार ; ३. मानवशास्त्र की सहायता से विभिन्न समूहों की जातिगत योग्यता, स्वभाव का अध्ययन ; ४. रक्त-वर्गों का विश्लेषण आदि-निर्धारित कर लिये, तब भाषाओं का आधार महत्त्वपूर्ण नहीं रह गया और रक्तवर्गों का विश्लेषण सबसे प्रमुख बन गया।

उपर्युक्त भ्रम में पड़कर विद्वान् उराँव आदि जातियों को द्रविडियन मानते रहे। एक ही प्रोटो-आस्ट्रेलाइड जातियों को दो समझकर उनका 'कोलेरियन' और 'द्रविडियन' परिवारों में वर्गीकरण किया। श्रीशरत्चन्द्र राय का भी यही मत था ; किन्तु इससे भी आश्चर्यजनक भ्रम इन्साइक्लोपीडिया का था, जिसने, पता नहीं, किस आधार पर स्वयं मुण्डाओं को द्रविड-परिवार का माना है। उसने लिखा है—"मुण्डा = छोटानागपुर-अंचल में रहनेवाली द्रविड-असभ्य जाति-विशेष।"[३]

डॉक्टर गुहा ने इस महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त की स्थापना करके कि जब कोई जाति अपने से अपेक्षाकृत अधिक सभ्य जाति के सम्पर्क में बहुत दिनों तक रहती है, तब वह प्रायः अपनी भाषा को भूलकर सभ्य जाति की भाषा को अपना लेती है। इस भ्रम का निराकरण

१. श्यामसुन्दर दास : भाषाविज्ञान।

२. श्रीशरत्चन्द्र राय : मुण्डाज ऐण्ड देयर कण्ट्री, पृ० १८-२१।

३. इन्साक्लोपीडिया इण्डिका, भा० १८, पृ० १।

कर दिया है। दुनिया की बहुत-सी जातियों में यह बात हुई है। छोटानागपुर के उराँव और मुण्डा स्वयं इसके उदाहरण हैं। मुण्डा-क्षेत्र में जो दो-चार घर उराँव जहाँ-तहाँ आ बसे हैं, वे मुण्डा-भाषा और उराँव-क्षेत्र के मुण्डा-उराँव-भाषा बोलते हैं।

आॅस्ट्रिक-परिवार की जो भाषाएँ भारत के आदिवासियों द्वारा बोली जाती हैं, उनका नाम ग्रियर्सन ने कोलेरियन (या कोलभाषा-परिवार) दिया है।[1] ग्रियर्सन ने इस नाम को प्रचारित करना चाहा ; परन्तु पीछे चलकर फ्रेडरिक मिलर ने इन भाषाओं को 'मुण्डा-भाषाओं' की संज्ञा दी।[2] इन मुण्डा-भाषाओं का प्रचार भारत की आदिम जातियों में बहुत पहले से था और इन्हीं जातियों के द्वारा भारत में पाषाण-युग की सभ्यता का निर्माण हुआ था।

इन मुण्डा-भाषाभाषी जातियों के नाम बहुत दिनों से अलग-अलग हो गये हैं, रस्म-रिवाज बदल गये हैं और उनकी भाषाओं में काफी अन्तर पड़ गया है। उनमें कहीं-कहीं तो इतना अन्तर पड़ गया है कि भाषाशास्त्र की सूक्ष्म और वैज्ञानिक दृष्टि से देखे विना उनमें एकता नहीं मालूम हो सकती। हम इस अन्तर के कारणों को समझने का प्रयत्न करें। बहुत दिनों से ये जातियाँ काल की आँधियों में पड़कर बिखर गई हैं। और एक-दूसरी से इतनी दूर पड़ गई हैं कि उनमें आपस में कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। जैसे आज ज्ञान, विज्ञान और सम्पर्क बड़ी-बड़ी दूरियों को भी निकट बना रहे हैं, वैसे ही अज्ञानता और असम्पर्कता ने इनकी निकटता में भी लाखों कोस की दूरी भर दी है। पहले इनमें शिक्षा की वह सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी दृष्टि भी नहीं रही है, जिससे ये भूत काल में प्रवेश करके अपनी एकता को समझते। इसलिए, एक ही जाति की एक-एक-शाखा को अलग-अलग जाति मान लेना इनके लिए स्वाभाविक था।

दूसरी बात यह है कि जातियों का वर्गीकरण दो प्रकार से होता है। एक तो कोई जाति स्वयं अपना नाम रखती है, जिसमें औरों से अपनी विशेषता सूचित करती है। दूसरे, अन्य लोग किसी जाति का नाम रखते हैं, जिसमें इस जाति के बारे में अपने विचारों को ध्वनित करते हैं और उनके बारे में अपनी हीनता या उच्चता की भावना प्रकट करते हैं। बहुधा ऐसे नामों में जातीय घृणा और तिरस्कार के कारण हीनता की भावना ही प्रकट होती है। पीछे ये दोनों प्रकार के नाम रूढ बन जाते हैं। मुण्डा-जातियों ने बहुधा अपना नाम मनुष्यवाची रखा है। जैसे सन्थाल—'होड़', मुण्डा—'होड़ो को', हो—'हो' और यह स्पष्ट है कि वे जितनी बार बिखरी उतनी वार अपना नाम रखा। हर शाखा ने अपना और एक ने अपने निकट सम्पर्क की दूसरी शाखा का भी नाम रखा। बहुत-से पुराने नाम लुप्त हो गये और नये प्रकट हुए। सन्थाल, हो, जुवांग, खड़िया, आदि नाम हाल के रखे हुए हैं। मुण्डा का अर्थ है सिर या प्रमुख! गाँव के प्रधान को पहले मुण्डा कहा जाता था। पीछे और जातियों से अपनी प्रमुखता दिखाने के लिए यह जाति का नाम बन गया और फ्रेडरिक मिलर के द्वारा पूरे परिवार की भाषाओं के लिए अपनाया गया।

---

१. सर जार्ज ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे आॅव इण्डिया, भाग ४, पृ० ५।

२. डॉक्टर बी० एस्० गुहा : 'आजकल' (आदिवासी-अंक), पृ० ६।

शब्द साँप के केंचुल की तरह अपने पुराने अर्थ छोड़कर नये अर्थ ग्रहण कर लिया करते हैं। 'हो' जाति ने मुण्डाओं से अलग होने पर अपना नाम 'हो' रखा। 'हो' 'होड़ो' का संक्षिप्त रूप है जिसका अर्थ है मनुष्य। 'ड़्' का उच्चारण नहीं कर सकने के कारण 'हो' जातिवाले उसे छोड़ देते हैं। जैसे-'ओड़:' को 'ओअ:' (घर) 'पिड़ि' को 'पी' (मैदान) और 'कुड़ि' को 'कुइ' (स्त्री) कहते हैं। सन्थाल अपने को 'होड़ो-को' कहते हैं। दूसरे लोग उन्हें सन्थाल या सन्ताल कहते हैं।

इससे पहले इन जातियों का 'कोल' और 'शबर' नाम मिलता है। 'शबर' कोई घृणासूचक शब्द नहीं है। यह शब्द संस्कृत-ग्रन्थों में प्रायः वहाँ आया है, जहाँ इन जातियों से अच्छे सम्बन्ध के प्रसंग में चर्चा है। विन्ध्य-प्रदेश की 'सहरिया', बिहार की 'सौरिया' और उड़ीसा, मध्यप्रदेश, मद्रास तथा बिहार की 'सावरा' आदि जातियों के नाम इसी शब्द से सम्बद्ध हैं। इन्हीं शब्दों को संस्कृत में 'शबर' रूप प्रदान किया गया है।

इस प्रकार, 'मुण्डा' ऑस्ट्रिक-परिवार की सारी भारतीय भाषाओं का नाम होने के साथ ही अपनी एक स्वतन्त्र उपजाति और उसकी भाषा का नाम भी है। सारी मुण्डा-भाषाभाषी जातियों की कुल जनसंख्या चालीस लाख है। और, खास मुण्डा-जाति, जो मध्यप्रदेश, उड़ीसा, बिहार और बंगाल में बसी है; उसकी जनसंख्या सन् १९४१ ई० की जनगणना के अनुसार, बिहार—५,१९,७४३, बंगाल—१,०३,१४८, उड़ीसा—७,१५,४१, मध्यप्रदेश—६,३३८, कुल ७,००,७७० है।

प्रस्तुत पुस्तक का जिनसे सम्बन्ध है, वे बिहार के राँची जिले में बसे हुए 'मुण्डा' हैं, जो मुण्डा-भाषा बोलते हैं।

मुण्डा-जाति के बहुत दिनों से अन्य भारतीय जातियों के सम्पर्क में रहने कारण उनकी भाषा पर उच्चारण, शब्दों के आदान-प्रदान आदि के रूप में अन्य भारतीय भाषाओं का काफी प्रभाव पड़ा है। मुण्डा-भाषा में बहुत-से शब्द संस्कृत, प्राकृत तथा अरबी-फारसी के भी सम्मिलित हुए हैं। उन्होंने मुण्डा-उच्चारण के अनुरूप अपना रूप बदल लिया है। उदाहरणार्थ, कुछ शब्द यहाँ दिये जाते हैं—

संस्कृत	मुण्डा	हिन्दी
दारु	दरु	लकड़ी
तुला	तुल	तराजू
अंजली	अञ्जलि	अंजली
दात्रोम	दतरोम्	हँसुवा
पालंक	पलङ्क	पलंक
पाण्डुर	पण्डु	पीला
शर	सार्	तीर
कदली	कदल	केला
स्वर्ण	समड़ोम्	सोना
काष्ठफल	कण्टड़	कटहल

फारसी	मुण्डा	हिन्दी
कोम्पाट	कुम्पाट	श्रेष्ठ
जोर	जोर्	शक्ति
खूब	खूब्	पूरा
जुहार	जोहार	नमस्कार

मुण्डा-भाषा की मौलिक शब्दावली में वन-पर्वत-सम्बन्धी वस्तुओं के शब्दों की भरमार है। पशु-पालन, ग्राम-व्यवस्था तथा खेतीबारी-सम्बन्धी मौलिक शब्द इस जाति की मूल संस्कृति पर प्रकाश डालते हैं। धातु के बरतन, कपास के वस्त्र, वाणिज्य-व्यवसाय, कर्ज, सूद, महाजन आदि सम्बन्धी शब्द मुण्डा-भाषा के अपने नहीं हैं। मुण्डारी में इन बातों के लिए आर्यभाषाओं के शब्दों को देखकर पता चलता है कि मुण्डाओं की मूल संस्कृति में ये बातें विद्यमान नहीं थीं ; किन्तु नृत्य, गान, वाद्य, बाँसुरी आदि के उनके अपने शब्द हैं।

शिक्षा के प्रचार के साथ ये नई वस्तुओं, नये विचारों, नये भावों और नई विद्याओं के सम्पर्क में आते जा रहे हैं, जिससे मुण्डा-भाषा में बहुत-से नये शब्दों की वृद्धि होती जा रही है। पढ़े-लिखे लोग मुण्डा व्याकरण-क्रियापदों, प्रत्ययों और विभक्तियों आदि को छोड़कर अपनी बोलचाल में हजारों अन्य शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। और अपनी भाषा की शक्ति को बढ़ा रहे हैं। यह एक जीवित भाषा का लक्षण है। आज इस भाषा में हर प्रकार के भाव और विचार व्यक्त करने की शक्ति पैदा होती जा रही है। और सच पूछा जाय, तो किसी भाषा की मौलिकता उसके क्रियापदों, विभक्तियों और प्रत्ययों आदि में ही है। आप जिन नई वस्तुओं को अपनाते जा रहे हैं, उनके रूपक शब्दों को तो अपनाना ही पड़ेगा। जिस दिन साबुन की बट्टी आपके काम में आई, उस दिन 'साबुन' आपका शब्द हो गया और जिस दिन आपकी जाति ने लालटेन का व्यवहार करना प्रारम्भ किया, 'लालटेन' आपके शब्दकोश में सम्मिलित हो गया। क्या जिस लालटेन को आपने खरीदा है, उसे दूसरे की चीज समझते हैं ? यदि नहीं, तो फिर वह शब्द दूसरे का कैसे है ? लेकिन, मुण्डा-भाषा इस विषय में काफी उदार है, यह शुभ लक्षण है।

शब्दों की ही भाँति उच्चारण पर भी अन्य भाषाओं के उच्चारण का प्रभाव पड़ा है। पहले मुण्डा-परिवार की जातियों के मानुषमिति के सिद्धान्तों के अनुसार, स्वर-रन्ध्रों की बनावट में कुछ ऐसी विभिन्नता थी कि वे महाप्राण अक्षरों का उच्चारण नहीं करती थीं। धीरे-धीरे वह कठिनाई अब मिट रही है। 'हो' जाति के लोग अब भी सभी महाप्राण वर्णों के लिए अल्पप्राण वर्णों का ही प्रयोग करते हैं।

शब्द	हो-उच्चारण
दूध	दुद
छड़ी	चड़ी
मिठाई	मिट्टई
झगड़ा	जगड़ा
भात	बात—इत्यादि।

इस भाषा में विसर्गों की प्रधानता है; किन्तु शहरों के सम्पर्क में रहनेवाले मुण्डा विसर्गों को छोड़ते जा रहे हैं और उच्चारण को सीधा-सपाट बनाते जा रहे हैं। जैसे, 'दः' (पानी) को सीधे 'दा' कह देते हैं। 'सेतः' (विहान) को 'सेता' और 'कोतः' (कहाँ) को 'कोता' कह देते हैं। मुण्डा-भाषा पर बँगला के उच्चारण का भी प्रभाव पड़ा है। जैसे 'रोकोम-रोकोम' (तरह-तरह), 'ओनेक' (अनेक) इत्यादि।

मुण्डा-भाषा का व्याकरण बहुत महत्त्वपूर्ण है। संस्कृत-व्याकरण की ही भाँति इसके नियम इतने कठोर हैं कि कोई भी व्यक्ति व्याकरण के नियमों से एक इंच भी बाहर नहीं जा सकता। छोटे बच्चे भी शुद्ध भाषा ही बोलते हैं। विना किसी पाणिनि-पतंजलि के किसी भाषा का इतना नियमित और संयत होना आश्चर्य की बात है और उससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात यह है कि मुण्डारी का व्याकरण संस्कृत-व्याकरण से मिलता-जुलता है।

१. संस्कृत की ही भाँति मुण्डा में भी तीन वचन होते हैं : एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

अन्य भारोपीय भाषाओं की तरह मुण्डा में भी तीन (उत्तम, मध्यम और अन्य) पुरुष होते हैं; किन्तु मुण्डा में एक विशिष्टता यह है कि उत्तम पुरुष के द्विवचन और बहुवचन में श्रोता-सहित और श्रोता-रहित सर्वनामों के रूपों में अन्तर होता है। उदाहरणतः,

अलङ् 'हम दोनों' (श्रोता के साथ) अबु 'हमलोग' (श्रोता के साथ)
अलिङ् 'हम दोनों' (श्रोता को छोड़कर) अले 'हमलोग' (श्रोता को छोड़कर)

२. तीन लिंग होते हैं। प्राणीवाचक शब्दों के लिए पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग और अप्राणीवाचक शब्दों के लिए क्लीबलिंग व्यवहृत होता है।

३. लिंग और वचन के कारण क्रिया का रूप नहीं बदलता।

४. मुण्डा में भी समास होते हैं। जैसे—केचोः–ओड़, राजा–होन् (राज-पुत्र) मेरोम्-होन् (बकरी का बच्चा)।

५. कारक आठ होते हैं।

६. मुण्डा-भाषा की एक प्रधान विशेषता यह है कि जो सर्वनाम शब्द कर्त्ताकारक के रूप में आते हैं, वे प्रायः वाक्य के प्रधान शब्द क्रिया, कर्म, क्रियाविशेषण आदि शब्दों के अन्त में जोड़ दिये जाते हैं। बहुधा उनका रूप संक्षिप्त बना लिया जाता है। (कुछ अंश तक ऐसा संस्कृत में भी होता है।) जैसे—

(क) अञ् सेनोःतन—सेनोःतनञ्—(क्रिया में)

(ख) अञ् ओड़ः ते सेनोःतन—ओड़ःतेञ् सेनोःतन—(अपादान कारक में)

मुण्डा में शब्द-भाण्डार कम होने के कारण प्रत्यय लगाकर बहुत-से शब्द बना लिये जाते हैं। इस प्रकार, इस भाषा में एक धातु के सैकड़ों रूपों का व्यवहार होता है। और, संज्ञा शब्द भी प्रत्ययों की मदद से क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि के रूप में व्यवहृत होते हैं।

७, प्राणीवाचक और अप्राणीवाचक सर्वनामों के रूप में (पुरुषवाचक को

छोड़कर) अन्तर होता है—ओकोए (कौन) प्राणीवाचक, ओकोअ (क्या) अप्राणीवाचक।

८. प्राणीवाचक और अप्राणीवाचक के लिए क्रिया की मौलिक धातुएँ एक ही होती हैं। पर, उनके रूपान्तर में थोड़ा अन्तर हो जाता है।

फल गिरा है—जो उइउः—अकन।

बैल गिरा है—उरिः उइउः—अकन-एः।

६. 'मुण्डा' में आदर प्रकट करने के लिए बड़ों, बराबरवालों और छोटों के लिए सम्बोधन अलग-अलग होते हैं। बड़ों में स्त्री-पुरुष के लिए एक ही, किन्तु बराबरवालों और छोटों के लिए स्त्री और पुरुष के लिए भी अलग-अलग सम्बोधन होते हैं।

१. बड़ों के लिए—पुरुष स्त्री दोनों के लिए—दुबमेग—बैठिए

२. बराबरवालों के लिए—पुरुष के लिए—दुब्मेहो

दुब्मे-हले

स्त्री के लिए—दुब्मेगो

३. छोटों के लिए—पुरुष—दुब्मेगा

स्त्री—देबमेन

१०. श्रोता को अलग करके बोलने में सर्वनाम का रूप पृथक् और उसे सम्मिलित करके बोलने में रूप पृथक् होता है। जैसे—

द्विवचन—श्रोता को छोड़कर—अलिङ् सेनोः तन (हम दोनों जाते हैं)।

श्रोता को सम्मिलित करके—अल् सेनोः तन (हम दोनों जाते हैं)।

बहुवचन—श्रोता को छोड़कर—अले सेनोः तन

श्रोता को सम्मिलित करके—अबुः सेनोः तन

मुण्डा में खतरनाक या अशुभ चीजों के लिए कभी-कभी दूसरा नाम बोला जाता है। जैसे—जंगल में यदि कोई हाथी मौजूद हो, तो उसे 'हति' के बदले 'मरङ् होड़ो' बोलते हैं।

चित्रात्मक, गुणात्मक और अनुकरणात्मक शब्दों की मुण्डा-भाषा में भरमार है, जो इनकी अभिव्यक्तियों को सरल, सुबोध और प्रभावशाली बना देते हैं।

साहित्य

मुण्डा-भाषा में लिखित साहित्य बहुत कम हैं। इधर मिशनरियों के प्रयत्न से कुछ रचना हो रही है। आर० सी० मिशन की ओर से मुण्डा-भाषा का एक व्याकरण बनवाया गया है। बहुत-सी कमियों के होते हुए भी वह प्रयत्न सराहनीय है। आर० सी० मिशनवालों ने ही 'मुण्डारिका-इन्साइक्लोपिडिया' का प्रकाशन कराया है, जो एक बहुत बड़ा काम है।

श्री डब्ल्यू० जी० आर्चर ने १६४१ मुण्डा-गीतों का एक संग्रह किया है, जिसकी चर्चा—'गीत-संग्रह के प्रयत्न' शीर्षक के अन्तर्गत की जायगी। उसमें बहुत-से गीत खण्डित और अधूरे हैं, फिर भी यह महान् कार्य है। मौखिक परम्परा के कोष से हजारों गीतों को एकत्र कर लेना बहुत बड़ी बात है।

मुण्डा-भाषा में ईसाइयों की धर्मपुस्तक 'बाइबिल' का अनुवाद किया गया है, जिससे मिशनरियों को धर्मप्रचार में काफी सफलता मिली है। मिशनरियों ने नये राग और नई लय में बहुत-से धार्मिक और बाइबिलकल भजन मुण्डा-भाषा में तैयार कराये हैं।

सन् १९३६—३८ ई० की मिनिस्टरी में प्रोफेसर हेवर्ड द्वारा प्रौढ़-शिक्षा-समिति (एडल्ट एजुकेशन बोर्ड), बिहार को बहुत-से पैम्फलेट मुण्डा-भाषा में दिये गये थे।

इधर हाल में लूथरन मिशन द्वारा 'जगर-साड़ा' नामक एक मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही थी, जिसके सम्पादक श्री एस्० के० बागे थे।

सरकार की ओर से भी जंगल-कानून आदि की एक-आध पुस्तिकाएँ प्रकाशित कराई गई हैं। बिहार-सरकार के आदिमजाति-कल्याण-विभाग की ओर से विभिन्न आदिम जातियों के लिए सांस्कृतिक समितियाँ (कल्याण-बोर्ड्स) बनाई गई हैं, जिनका उद्देश्य उनके लोकगीतों, लोककथाओं, रस्म-रिवाजों, कला, साहित्य, संस्कृति आदि का संग्रह, शोध तथा प्रकाशन है। कुछ संग्रह हुए भी हैं; किन्तु उनके प्रकाशन की प्रतीक्षा की जा रही है।

समाज-शिक्षा-बोर्ड की ओर से भी आदिमजातियों के लोक-साहित्य के प्रकाशन तथा उनकी भाषाओं में बाल-साहित्य के निर्माण कराने का विचार किया जा रहा है। क्या ये योजनाएँ कार्यरूप में भी परिणत होंगी ?

मुण्डा-लोकसाहित्य के संग्रह और नये साहित्य के सर्जन के प्रसंग में सामाजिक और निजी प्रयत्न अधिक सराहनीय और उत्साहवर्द्धक हैं। एक लम्बी तन्द्रा के बाद यह समाज नई चेतना के प्रभात में जाग रहा है। इन्होंने सामाजिक जागरण के समान ही साहित्यिक जागरण के लिए एक समिति गठित की है। अनेक युवक अपने नये गीतों, कविताओं और नाटकों से समाज को जगा रहे हैं। श्रीदुलायचन्द्र मुण्डा के एक सौ गीतों का संग्रह 'सुड़ा-संगेन' (नव-पल्लव) नाम से हाल ही में कल्याण-विभाग द्वारा प्रकाशित हुआ है। श्रीबलदेव मुण्डा ने अपनी कविताओं का संग्रह 'चङ्ग दुरङ्' स्वयं प्रकाशित कराया है। मुण्डा की नई पीढ़ी के सर्वाधिक सुशिक्षित और प्रतिभाशाली युवक श्रीरामदयाल मुण्डा के गीतों का एक संग्रह 'हो लेद्' (विविधा) अभी-अभी प्रकाशित हुआ है। उन्होंने अपनी पीढ़ी के सहकर्मियों के भी गीतों का एक सुन्दर संग्रह 'हिसिर' (हार) नाम से प्रकाशित किया है।

तैयार तो इतनी रचनाएँ लेखक की नजरों से गुजर चुकी हैं, जिनके प्रकाश में आने पर मुण्डा-साहित्य की बूढ़ी डाल नये कली-कुसुमों से पुनः महक उठेगी। इस समाज के तपस्वी, सेवक और साधक श्रीभइयाराम मुण्डा ने अपने गीतों और 'गाँधी बाबा' नामक लम्बे काव्य के अतिरिक्त मुण्डा-भाषा का एक सुन्दर और शानदार व्याकरण तैयार किया है। श्रीकाण्डे मुण्डा के सैकड़ों मधुर-मनोहर गीत वर्षों से कुँवारे युवक की तरह अखाड़े और सभा-सम्मेलन से लेकर आकाशवाणी तक की खाक छान रहे हैं। श्रीसुखदेव वरदियार ने सामाजिक जीवन पर इतने सुन्दर नाटक तैयार किये हैं और इतनी सफलता से मंच पर उतारे हैं कि उनके प्रकाशित हो जाने पर हर समृद्ध अखाड़े को एक रंगमंच में परिणत करता हुआ एक अनमोल रतन हाथ लग जायगा।

श्रीनारायणजी ने मुण्डा-भाषा में महात्मा गान्धी की जीवनी प्रकाशित करके समर्थ युवकों के लिए एक नई दिशा की ओर संकेत किया है। इन पंक्तियों के लेखक की प्रस्तुत पुस्तक के अतिरिक्त 'मुण्डा-लोककथाएँ' भी शीघ्र ही प्रकाश में आ रही हैं। मुण्डा-पहेलियों पर भी एक पुस्तक तैयार है।

संग्रह की आवश्यकता

सचमुच, मुण्डा-भाषा के मौखिक परम्परा के कोश मे पड़े हुए सारे साहित्य के संग्रह और प्रकाशन की बड़ी आवश्यकता है। लोकवार्त्ताएँ जन-जीवन के वास्तविक रूप को प्रकट करनेवाली होती हैं। अभिजात साहित्य के समान चमक-दमक नहीं होने पर भी जीवन-शक्ति लोक-साहित्य में ही अधिक होती है। उसके द्वारा जन-जीवन का सच्चा रूप प्रकट होता है। इसलिए, आज सारे संसार में लोक-साहित्य और लोकवार्त्ताओं की ओर लोगों का ध्यान बड़ी तेजी से जा रहा है। और, उनके अध्ययन, प्रकाशन और उनके द्वारा निकाले हुए निष्कर्षों के माध्यम से लोक-जीवन के पुनर्निर्माण का काफी प्रयत्न किया जा रहा है।

किन्तु, आदिवासियों में जहाँ कोई विशिष्ट या अभिजात-वर्ग नहीं है, वहाँ तो लोकवार्त्ताओं का और भी महत्त्व है। उनके यहाँ तो जो कुछ है, मौखिक है। और, उसी में उनकी सारी अभिव्यक्तियाँ बिखरी हैं। ऐसी दशा में इनकी ओर ध्यान देना तो और भी आवश्यक है। इनके गीतों, कहानियों, लोकोक्तियों, पहेलियों, सामाजिक और धार्मिक कृत्यों, अनुष्ठानों आदि सभी बातों के संग्रह की आवश्यकता है। इनके संसार में पाये जानेवाले पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ इत्यादि सभी के शब्दों का संग्रह होना चाहिए। इससे इनके जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश पड़ेगा। इससे पता चलेगा कि इनके जीवन का आकाश कितना विस्तृत है। जगत्, जीवन और प्रकृति से इनका क्या सम्बन्ध है। इनकी कहानियों और वार्त्ताओं से पता चलेगा कि उनमें इनका क्या विश्वास है तथा किन विश्वासों, आस्थाओं तथा मान्यताओं पर ये अपना जीवन बिताते जा रहे हैं। इनके गीतों से पता चलेगा कि कौन-सी प्रेरणाएँ इनके प्राणों को जीवन की धारा में बहाती आ रही हैं। और, सब कुछ जान लेने पर पता चलेगा कि इनके विकास की इमारत किस धरती पर, किस आधारशिला पर और कौन-से उपादानों से खड़ी की जाय ?

इसी प्रकार, 'मुण्डा' में तथा इस प्रकार की सभी भाषाओं में इन जातियों के लिए सरल साहित्य के निर्माण की आवश्यकता है। समाज को शिक्षित करने के लिए जीवन-सम्बन्धी सारा साहित्य जन-भाषाओं में ही रचा जाना चाहिए। कृषि, जंगल, सहयोग-समिति, ग्राम-पंचायत, आदमी और जानवर की बीमारी, कथा-कहानी आदि के बारे में मुण्डा-भाषा में छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का प्रकाशन नितान्त आवश्यक है।

इसी सिलसिले में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न बच्चों की शिक्षा का और उनके लिए पाठ्यपुस्तकों का है। आज सारे संसार के शिक्षाशास्त्री यह स्वीकार कर रहे हैं कि छोटे बच्चों की शिक्षा उनकी मातृभाषा में ही होनी चाहिए। यदि शिक्षा को अनिवार्य

बनाना है और उसकी किरणों को जंगल, पहाड़, मैदान और रेगिस्तान के जन-जन तक पहुँचाना है, तो इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। बच्चे प्रारम्भिक ज्ञान की बातों को माँ की गोद में सीखी हुई तुतली बोली में जिस सरलता से सीख सकते हैं, वैसी किसी साहित्यिक भाषा में नहीं। अन्य साहित्यिक भाषा में तो उन्हें विषय और भाषा दोनों का दुहरा भार ढोना पड़ता है। निश्चय ही देश के प्रत्येक बच्चे के लिए राष्ट्रभाषा की शिक्षा भी आवश्यक है और उन्हें माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के साथ राष्ट्रभाषा भी सिखाई जानी चाहिए। किन्तु, प्रारम्भिक वर्गों में तो उन्हें अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा मिलनी चाहिए। कुछ आगे बढ़ने पर उन्हें राष्ट्रभाषा भी सिखाई जाय तथा और आगे जाने पर वही सारी शिक्षा का माध्यम बना दी जाय। इसलिए, आवश्यक है कि मुण्डा-भाषा में बाल-साहित्य की रचना हो। इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, स्वास्थ्य, सामान्य-विज्ञान, गणित, किस्से-कहानियों, रामायण, महाभारत की कहानियों, देश-प्रेम, सच्चरित्रता और नैतिकता की कहानियों आदि की मुण्डा-भाषा में रचना होनी चाहिए और इस विषय में मुण्डा-नवयुवकों को आगे आना चाहिए।

लिपि का प्रश्न

एक प्रश्न शेष रह जाता है कि मुण्डा-साहित्य की लिपि क्या हो? यह प्रश्न सभी आदिम भाषाओं के सम्बन्ध में है। आदिम भाषाओं के पास कोई लिपि नहीं और उनका कोई लिखित साहित्य नहीं है। यदि उनकी कोई लिपि होती, तब तो यह प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन जैसी परिस्थिति है, यह स्पष्ट बात है कि उनका सारा साहित्य राष्ट्रलिपि या उनके क्षेत्र की प्रान्तीय लिपियों में लिखा जाय। लेकिन, कुछ लोग सारी बातों की तरह इसमें भी झमेला खड़ा करते रहे हैं। कुछ लोग नागरी-लिपि से चिढ़ते हैं। और, इन भाषाओं के लिए रोमन-लिपि का सुझाव पेश करते हैं। अन्य आदिम जातियों की तरह ही मुण्डा लोगों को हिन्दी में अपनी सारी शिक्षा प्राप्त करनी है और राज्य के सारे कार्यों से जो सम्बन्ध स्थापित करना है, वह राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि के द्वारा ही करना है। यह कितनी उपयोगी बात होगी कि वे बालवर्गों में मुण्डा-भाषा में साहित्य पढ़ते हुए उस नागरी-लिपि को भी सीखते रहें, जिसके द्वारा आगे उन्हें बहुत दूर तक शिक्षा प्राप्त करनी है। जो लिपि-विहीन जातियाँ नागरी के अतिरिक्त अन्य—जैसे बँगला, गुजराती, तमिल, तेलुगु आदि लिपियों के क्षेत्र में रहती हैं, वे उन्हीं लिपियों में अपने साहित्य को लिपिबद्ध करें।

आदिवासी भाषाएँ भारत के उसी जलवायु में उच्चरित होती हैं, जिस जलवायु ने भारतीय उच्चारणों के अनुकूल वर्णमाला और स्वर-संकेतों की रचना की है। यद्यपि मुण्डा या अन्य भाषाओं के लिपिबद्ध नहीं होने से यह परीक्षा नहीं हो पाई है कि नागरी-वर्णमाला कहाँतक उनके लिए उपयुक्त है (हाँ, सन्थाली की कुछ पुस्तकें नागरी में प्रकाशित की गई हैं और उनके अच्छे नतीजे निकले हैं)। फिर भी, यह निश्चित है कि नागरी-लिपि हर प्रकार से उन उच्चारणों को लिखने के लिए उपयुक्त होगी। नागरी-लिपियों की वैज्ञानिकता सारे संसार ने स्वीकार की है। संसार में एकमात्र यही लिपि है,

जिसमें कोई भी भाषा यथा-उच्चारण लिखी जा सकती है और फिर वैसी ही पढ़ ली जा सकती है। वैदिक साहित्य से बढ़कर 'स्वराघात' संसार में और कहीं नहीं मिलेगा। मनुष्य के उच्चारण-अवयव जितनी कलाबाजी दिखा सकते हैं, नागरी-वर्णमाला सबसे परिचित है और मुण्डा-भाषा तो भारतभूमि की ही बेटी है। हिन्दी-ध्वनियों ने जिन आभूषणों को छोड़ दिया, वे कोष में सुरक्षित रखे गये हैं। उसी की बहन मुण्डारी यदि चाहे, तो उनका सहर्ष उपयोग कर सकती है। मुण्डारी के उच्चारण में कहीं-कहीं विशेषता है। नागरी-वर्णमाला में उसके लिए ह्रस्व-दीर्घ तथा प्लुत के संकेत निश्चित कर लिये जा सकते हैं। मुण्डारी में 'ए' और 'ओ' दीर्घ 'ए' और 'ओ' भी होते हैं। उनके लिए संकेत निश्चित करना कोई कठिन काम नहीं है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि मुण्डा-भाषा के लिए नागरी-लिपि हर प्रकार से उपयुक्त है। और, इसी में 'मुण्डा' का सारा साहित्य लिपिबद्ध होना चाहिए।

मुण्डा-भाषा और साहित्य भारतीय संस्कृति के महान् कोष की एक अमूल्य पेटिका है। नवीन जीवन और नवीन जागरण के लिए प्रयत्नशील इस प्राणमयी जाति की अमर भारती की रक्षा होनी चाहिए और उसे फूलने-फलने का अवसर दिया जाना चाहिए।

गीत-संग्रह के प्रयत्न

मुण्डाओं की सभी प्रकार की वार्त्ताओं में स्वभावतः ही गीतों की संख्या सबसे अधिक है, जो मौखिक परम्परा में पता नहीं, कबसे चले आ रहे हैं। किसी-किसी मुण्डा-युवक को सैकड़ों गीत याद हैं, और ऐसा कोई नहीं होगा, जो थोड़े-बहुत गीत नहीं जानता हो। फिल्मी गीतों के बड़े-बड़े शौकीनों और कॉलेजों के प्रतिभाशाली स्नातकों से भी अधिक गीतों की इनके द्वारा याद रखा जाना आश्चर्य की बात है।

किन्तु, गीतों के विषय में स्मृति के समान ही विस्मृति की भी परम्परा है। मुण्डा अपने गीतों को किसी पाठशाला में नहीं सीखते। नृत्य के अखाड़ों के मस्त वातावरण में ही नये-नये गीत सीखे जाते हैं। कभी-कभी अखाड़ों में विभिन्न गाँवों के नवयुवक सम्मिलित होते हैं। और, किसी के द्वारा यदि कोई नया गीत गाया जाता है, तो दूसरे नौजवान उसे तुरन्त सीख लेते हैं। फिर, मस्ती तथा नशे के वातावरण में वहाँ से अलग होने पर गीत के कुछ अंशों को भूल भी जाते हैं। किन्तु, इसकी उनको कोई चिन्ता नहीं।

आप यदि मुण्डा-युवक और मुण्डा-गीतों की प्रकृति को समझ जायेंगे, तो पता चल जायगा कि उन टूटी हुई कड़ियों को फिर से जोड़ लेना उनके लिए कितनी आसान बात है। एक तो यह जाति ही कवितामय है, प्रत्येक व्यक्ति भावुक और स्वर-पूर्ण है; दूसरे उनकी काव्यकला इतनी सरल और सुपरिचित है, जिसके संस्कार प्रत्येक व्यक्ति पर पड़े हुए हैं। ऐसी दशा में किसी नये गीत की सम्पूर्ण रूपरेखा की कल्पना भले ही प्रत्येक व्यक्ति न कर सके; किन्तु कुछ भूली हुई पंक्तियों को मिला लेना थोड़ी-सी भी प्रतिभावाले गायकों के लिए कठिन नहीं होता।

इस प्रकार, सारे गीत कुछ न्यूनाधिक रूपान्तर के साथ मुण्डा के कण्ठ में बिखरे

हुए हैं। कठिनाई से एक गीत भी ऐसा नहीं मिलेगा, जो अगर तीन-चार जगहों से लिया जाय, तो उसके रूप में कहीं-न-कहीं अन्तर न हो। गीत वही है, स्वर और लय वही है; किन्तु कहीं-कहीं दो-चार पंक्तियाँ बदल गई हैं।

मुण्डा-गीत साधारणतः तीन पदों के होते हैं।[1] तीन पदों में से कभी-कभी दो और कभी-कभी एक पद पूरे-के-पूरे बदल जाते हैं। ऐसे परिवर्त्तन बहुधा अर्थों में भी मोड़ पैदा कर देते हैं।

एक-आध पंक्तियाँ इतनी लोकप्रिय हो गई हैं, जिनका कई गीतों में प्रयोग हुआ है और वे श्रोता को कभी-कभी भ्रम में डाल देती हैं।

संग्रहकर्त्ता की समस्याओं को समझने के लिए मुण्डा-गीतों की इस प्रकृति को जान लेना आवश्यक है। वैसे भी मुण्डा-गीतों की संख्या बहुत अधिक है; किन्तु इस तथ्य को जान लेना चाहिए कि इस रूपान्तरित वेश में उनकी संख्या और भी अधिक हो गई है।

इनके संग्रह का प्रयत्न, जहाँतक पता है, सबसे पहले फादर हाफमैन ने किया। उन्होंने २०० गीतों का संग्रह किया था और 'दि मेमोरीज ऑव दि एशियाटिक सोसाइटी ऑव बंगाल' में मुण्डा-गीतों की विशेषताओं पर प्रकाश भी डाला था।

श्रीशरत्‌चन्द्र राय की पुस्तक 'दि मुण्डाज ऐण्ड देयर कण्ट्री' में यों तो प्रमाण और उद्धरण के लिए जगह-जगह बहुत-से गीत आये हैं; किन्तु गीतों की व्याख्या के लिए लगभग २०-२२ गीत प्रस्तुत किये हैं। विद्वान् लेखक ने उनका अँगरेजी-छन्दों में अनुवाद किया है, जहाँ अधिकांश मुण्डा-गीतों का कायाकल्प हो गया है। उनमें मुण्डा-गीतों के सरल सौन्दर्य से अधिक शरत् बाबू की विद्वत्ता प्रकट होती है। उन अनुवादों में शरत् बाबू ने अपनी ओर से नये भाव, नये प्रयोग और नये अर्थ जोड़े हैं और अँगरेजी के बड़े-बड़े कवियों—फ्रांसिस सैम्पेल, जेम्स रसल लावेल, टेनिसन, वर्ड्सवर्थ आदि की कविता से मुण्डा-गीतों की भावभूमि की तुलना की है।

विद्वान् लेखक ने उनके विश्लेषण का भी प्रयत्न किया है और जबरदस्ती खींच-तान कर उनमें ऐसे भोंड़े[2] अर्थ पैदा किये हैं, जिनका उन गीतों में कहीं भी अस्तित्व नहीं है।[3]

शरत् बाबू ने किस भावना से और कैसा अर्थ निकाला है, इसकी बानगी एक गीत में देखिए—

वे गीत का प्रसंग उपस्थित कर रहे हैं।

'जहाँ मुण्डा अपने सगे-सम्बन्धियों से मिलने पर उदार और सन्तुष्ट होता है, वहाँ अपने उत्पीडकों और शत्रुओं को देखकर अकथनीय घृणा और नफरत से आगबबूला हो जाता है। उसके गाँव में आनेवाले हिन्दू और मुसलमान व्यापारी, महाजन तथा बाहरी ठीकेदार, जागीरदार या नीलामदार मुण्डाओं की आँख में अत्यधिक खटकनेवाले हैं।

---

१. देखिए 'छन्द-विधान' शीर्षक।

२. श्रीशरत् राय : मुण्डाज ऐण्ड देयर कण्ट्री, पृ० ५३६।

३. व्याख्या के लिए देखिए इसी पुस्तक का प्रथम अध्याय (अध्ययन-प्रणाली)।

व्यापारी और साहू-महाजन अपने स्वार्थ के लिए उनका सिर मूँड़ा करते हैं और बाहरी 'दिकू' उनको अपने गाँव की जमीन की मिलकियत से पदच्युत करके उन्हें केवल लकड़हारा और पनभरा बना छोड़ते हैं। जैसा कि हम देख चुके हैं, मुण्डा-गीतकार घृणापूर्वक उनकी तुलना 'खून चूसनेवाले बाज', 'लोभी गृद्ध', 'अपशकुनी कौवे', 'हठी जिद्दी उल्लू' और 'छद्मवेशवाले मोर' से करते हैं।

मूल :

नकु नकु ज, नकु नकु ज
दरोम्दः कुड़िड् को लपलुडिअ ग
नकु नकु ज, नकु नकु ज
अगमरि को गेओन् गेओन्।
उदुबकोपे, उदुबकोपे
जीजोङ्के जुम्बुलए उदुब कोपेग।
चुण्डुलकोपे चुण्डुलकोपे
उलिओ अम्बरए चुण्डूल कोपेग।
ककी सुकु जन्, ककी सुकु जन्
जोजोको जुम्बुलए ककी सुकु जन्
ककी सुकु जन्, ककी सुकु जन्
उलि को अम्बरए ककी सुकु जन्।[1]

अनुवाद :

These kites have hither wing'd Their way
A thirst for water clear,
The greedy geese with graceful swing,
Thus wend there way up here
Oh ! take them where yon tam'rind tope
Doth stand—do take them there
Point out to them you mango grove.,
O let them there repair
The tam'rind tope they do not like
It does not please them so
Yon mango grove these geese mislike,
Ill-pleas'd are they, I trow.

मूल का अर्थ—देखो, देखो, पानी का स्वागत करनेवाली चीलें पंख हिला रही हैं। देखो, देखो, घाँटों के दल उड़े जा रहे हैं। इमली का झुण्ड बता दो (जहाँ जाकर बैठें)। आम का बाग दिखा दो (जहाँ जाकर उतरें)। उन्होंने पसन्द नहीं किया। इमली का झुण्ड उन्होंने पसन्द नहीं किया।

१. श्रीशरत् राय : मुण्डाज एण्ड देयर कण्ट्री, पृ० ५३६।

अनुवाद का अर्थ—ये चीलें यहाँ पर अपने रास्ते से उड़कर आई हैं। साफ है कि ये पानी के लिए प्यासी हैं। ये लोभी हंस सुन्दर उड़ान के साथ ऊपर चक्कर काट रहे हैं। उन्हें, वहाँ पर, जहाँ इमली का पेड़ खड़ा है, ले जाओ, वहाँ उन्हें पहुँचा दो। उन्हें उस अमराई को बता दो, जहाँ वे आश्रय प्राप्त करें। इमली का सिरा उन्हें पसन्द नहीं आया, वह उन्हें प्रसन्न नहीं कर सका। उस अमराई को इन हंसों ने नापसन्द किया। मुझे विश्वास है कि वे अप्रसन्न हैं।

वास्तविकता यह है कि इस गीत का शरत् बाबू की व्याख्या से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह एक साधारण प्रकृति का वर्णन-मात्र है, और है, उन पक्षियों के स्वभाव का चित्रण! चील के बारे में मुण्डाओं की कोई बुरी भावना नहीं और घाँटों तो सारी मानव-जाति की तरह उन्हें भी प्रसन्न करनेवाले पक्षी हैं।

पहली पंक्ति में 'दोरोम्-दः' का अर्थ है पानी की अगवानी करनेवाले। चील का उड़ना पानी आने की सूचना समझा जाता है। लेकिन, श्रीराय लिखते हैं—"साफ है कि वे पानी के लिए प्यासे हैं!" आगे की पंक्ति में सीधे घाँटों पक्षियों की सीधी उड़ान का वर्णन है; किन्तु श्रीराय घाँटों को हंस बनाते हैं, उनके साथ लोभी का विशेषण लगाते हैं और 'चक्कर काटने' की क्रिया प्रदान करते हैं। मजा यह कि 'हंस' मुण्डाओं की किसी नफरत का पक्षी नहीं है।

इन संकेतों के बाद पाठकों को अपना निर्णय करने में कठिनाई नहीं होगी।

कुछ पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने विशेषकर बुदू बाबू के गीतों और कुछ दूसरे गीतों को अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए संगृहीत कर रखा है।

सबसे बड़ा प्रयत्न डब्ल्यू० जी० आर्चर का है। उन्होंने सन् १९४३ ई० में मुण्डा-भाषा के १६४१ गीतों का संग्रह और प्रकाशन कराया। कलेवर के हिसाब से निस्सन्देह वह मोटी पुस्तक है और उन बहुसंख्य बिखरे हुए गीतों को बचाकर लिख रखने का प्रयत्न सराहनीय भी है; किन्तु इसके अतिरिक्त और किसी उद्देश्य की पूर्त्ति उससे नहीं होती। उस विद्वान् और प्रतिभाशाली लेखक के लिए दो पृष्ठ की छोटी-सी भूमिका पर सन्तोष कर लेना उचित नहीं प्रतीत होता।

अधिकांश गीत टूटे-फूटे हैं। बहुधा तीन पदों के ही गीतों की रचना करनेवाले मुण्डाओं के गीतों के एक या डेढ़ पद हरप्पा की खुदाई में मिले हुए ठीकरों के संग्रह के समान जान पड़ते हैं। निस्सन्देह, यह बड़ा काम हुआ; किन्तु यदि इतना महत्त्वपूर्ण काम केवल सरकारी लिपिकों, कर्मचारियों के भरोसे ही नहीं छोड़ दिया गया होता, तो सम्भवतः कुछ और अच्छे परिणाम सामने आये होते!

इन प्रयत्नों के सिवा मुण्डा-गीतों पर पत्र-पत्रिकाओं में कुछ छिटफुट लेख आदि निकलते रहे हैं, जो कभी तो केवल गीतों की बानगी पर ही सन्तोष करते थे और कभी-कभी थोड़ा-बहुत विश्लेषण भी प्रस्तुत कर दिया करते थे।

मुण्डाओं की संगीतप्रियता के रहस्य

मुण्डा-जाति बहादुर, परिश्रमी और स्वतन्त्रताप्रेमी तो है ही, साथ ही बहुत-सी आदिम जातियों की तरह इनके जीवन में हम कला, सुरुचि और सौन्दर्य का भाव ओत-

प्रोत पाते हैं। यह कलाप्रियता और मस्ती आदिवासियों को प्राकृतिक जीवन की देन है। इसी वरदान को पाकर वे जातियाँ अपने को दुःखों-अभावों की प्रखर धारा में बहाती और संघर्ष की भीषण ज्वाला में जलने से बचाती रही हैं। यह मस्ती वह काली घटा है, जिसने इनके विपत्तियों से झुलसे हुए मन को सींचा है और अपने प्यार की थपकी से इनके थके मन को शान्ति की गोद में सुलाया है। मुण्डाओं के सौन्दर्य-बोध और संगीत-प्रियता का रहस्य समझने के लिए उनके प्राकृतिक जीवन का तात्पर्य समझना आवश्यक है।

प्रकृति की रंगस्थली—सबसे पहली बात यह है कि ये प्रकृति की मनोहर रंगस्थली में निवास करते हैं। राँची जिले के जिस अंचल में ये निवास करते हैं, वह पहाड़ों और जंगलों से भरा हुआ है। इसी उन्मुक्त रंगीन और रसमय वातावरण में उनका जीवन व्यतीत होता है। हरियाली और फूलों से भरे हुए जंगल, रहस्यमय गुफाओं से भरे हुए पहाड़, कलकल गाते हुए निर्झर, प्राणों में उन्माद भरनेवाली हवाएँ और मधुर स्वरों से जंगल को गुंजित रखनेवाले पंछी, यही मनोहर चित्रसारी मुण्डाओं की दुनिया है।

किसान हल जोतने गया है और उसकी आँखों के सामने घाटी फैलती जा रही है। एक लड़की धान कि निकाई कर रही है और उधर पहाड़ों की ओट में मेघ की परियाँ अपना शृंगार कर रही हैं। एक छोकरा गाय चराने गया है और वहाँ साखू की मंजरियाँ अपने रूप और गन्ध से उसके मन को बेचैन कर देती हैं, और एक लड़की की माँ ने पत्तियाँ तोड़ लाने के लिए जंगल में भेजा है और वहाँ कोयल कूक-कूक कर उसके प्राणों में उन्माद भर देती है। इस आफत से कोई अपने को कैसे बचाये ? आदिवासी अपनी सारी इन्द्रियों से प्रकृति के इस मधुर सौन्दर्य का उपभोग करते हैं और उनकी चेतना इस अमर तृप्ति से सदा अभिभूत रहती है। इसीलिए वे सौन्दर्य और संगीत के प्रेमी हैं।

एकान्त और सूनापन—रूप और छवि के ये मनोहर दृश्य मुण्डाओं के सदा के संगी हैं। इन दृश्यों के साथ इनका आत्मीय-भाव स्थापित हो चुका है। जंगल के एकान्त और सूनापन में भी ये अपने को कभी अकेला नहीं पाते। उनके मन की लहरें कहीं भी किनारा पा जाती हैं। चाहे सुख हो या दुःख, किसी भी अवस्था में ये मनोहर दृश्य आकाश से वह शून्यता नहीं बरसने देते, जो जीवन को नीरस और निःस्पन्द कर देनेवाला विधाता का सबसे निष्ठुर अभिशाप है। सुख और दुःख, भाव और अभाव, क्रीडा और पीडा हर परिस्थिति इनके मन में हिलोर उठाती है और अपनी उँगलियों से छूकर इनके हृदय के तारों को झंकृत करती रहती है।

सच पूछिए तो, जो सूनापन जीवन का अभिशाप समझा जाता है, वह मुण्डाओं के लिए वरदान बन जाता है। उस एकान्त में दुश्चिन्ताओं के छिद्र उनके प्राणों के पात्र को जितना रिक्त करते हैं, छटाएँ उससे अधिक भर देती हैं। जंगल के वातावरण का सूना एकान्त मुण्डाओं के लिए भावों का उद्दीपक बन जाता है। जैसे एकान्त की सूनी राह में राही के लिए गीत ही सहारा बनते हैं, वैसे ही एकान्त मुण्डा के कण्ठों में स्वर का सर्जन करता है। निर्झर का किनारा, कोई सूनी चट्टान, एकान्त खेत, सुनसान रास्ता ये ऐसे वातावरण प्रस्तुत कर देते हैं, जिनसे गीतों का फूट पड़ना स्वाभाविक है।

स्वतन्त्रता—इनके कला और संगीत-प्रेम का तीसरा कारण इनकी स्वतन्त्रता है। ये अपने मन की प्रत्येक लहर के साथ बहने के लिए स्वतन्त्र हैं। अपने अन्तर्लोक में उठनेवाली किसी भी लहर को वे दम घोंटकर मार नहीं डालते। वे सुखी होने पर जी खोलकर हँसते हैं और दुःखी होने पर सारा भार हल्का होने तक रोते हैं। अपने ही बनाये माया-जाल में इन्होंने अपने पंखों को फाँस नहीं रखा और अपने पैरों में अपनी ही बनाई हुई गुलामी की बेड़ी नहीं डाल ली है। आज की सभ्यता का 'सभ्य' मनुष्य इस विषय में कितना लाचार है। 'ड्यूटी' और 'रूटीन' की जड़ मशीन का गुलाम होने के कारण उसे न तो किसी से प्यार करने का अवकाश है, न किसी की स्मृतियों से मन बहलाने की फ़ुरसत है। वह न जी खोलकर हँस सकता है, न भारी-से-भारी विपत्ति में आँसू बहा सकता है; किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह जितेन्द्रिय हो गया है और उसे वह आत्म-ज्ञान प्राप्त हो गया है, जिसे पाकर मनुष्य सुख-दुःख की अनुभूतियों से परे हो जाता है। इसका कारण तो सभ्यता की जड़ता और गुलामी है; किन्तु प्रकृति के ये पुत्र मानव-प्रकृति की इन आवश्यकताओं के लिए उन्मुक्त हैं। इसी स्वतन्त्रता के कारण ये मनुष्य के अन्तर्लोक के सौन्दर्य को पहचानते हैं, जी खोलकर उसका उपभोग करते हैं और इस अक्षय निधि को उन्मुक्त हाथों लुटाते हैं।

परिश्रम—इनकी मस्ती का चौथा कारण इनका सरल और सच्चा परिश्रम है। इनके कठोर परिश्रम में कोई छल-प्रपंच नहीं, वरन् ईमानदारी है। वह परिश्रम जीवन की स्वाभाविक आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए बड़े स्वाभाविक ढंग से किया जाता है। उनके परिश्रम में किसी को ठगने की धूर्त्तता नहीं, किसी के शोषण की दुर्वृत्ति नहीं और किसी का सर्वस्व हरण कर लेने की स्पृहा नहीं है। उनका परिश्रम सरल हृदय का वह उद्वेग है, जो प्रकृति की निर्झरी में अपनी अंजलि से दो चुल्लू जल पीकर तृप्त हो जाता है। वहाँ परिग्रह और अपहरण की वासना लेकर नरपशु परेशान नहीं रहता। उनका परिश्रम हवा में मिलकर उसे विषाक्त कर देनेवाला जहरीला और काला धुआँ नहीं, उसमें मिलकर उसे शीतल कर देनेवाला पवित्र स्वेदकण है। उस शीतल वायु की लहरें उन्हें भी छूती हैं और उनके समाज के दूसरे व्यक्तियों के प्राणों को भी छूकर आनन्द और मस्ती का एक वातावरण बनाती हैं। अवकाश और सद्भाव के यही स्रोत जंगल की ठण्डी हवाओं में मिलकर समाज के लिए, गीत और मस्ती की लहर बन जाते हैं।

विकास का शैशव—पाँचवीं बात यह है कि यह जाति विकास की शैशवावस्था में रही है। और, एक व्यक्ति तथा समाज के विकास की प्रक्रिया एक ही प्रकार की है। जिस प्रकार एक व्यक्ति की प्रौढावस्था में जब उसके ज्ञान और अनुभव परिपक्व हो जाते हैं, तब भावनाओं की लहर सूखने लगती है और कल्पना के पंख झड़ जाते हैं; किन्तु बचपन और जवानी ऐसी अवस्थाएँ हैं, जब उसके भाव प्रबल होते हैं, मन के आकाश में सतरंगी घटाएँ घिरती हैं और उमंगों की धारा में स्वप्नों के फूल खिलते हैं। यही दशा जातियों के विकास की भी है।

सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य की बुद्धि क्रमशः विकसित हुई है और उसकी अभिव्यक्ति अधिक रँगीली, चिन्तन और आडम्बरपूर्ण बनती गई है; किन्तु मनुष्य

की भावना की दशा इसके प्रतिकूल है। जब मनुष्य की सभ्यता का पूरा विकास नहीं हुआ था, तब उसका हृदय अधिक समवेदनशील था और उसमें स्पन्दन अधिक था। जीवन सुख-दुःख के पालने पर उसे अधिक झुलाता, जवानी उसके हृदयाकाश में स्वप्नों के अधिक फूल खिलाती और प्रकृति अपने सौन्दर्य की किरणों से उसके मन को अधिक रँगती थी। बाहर का रूप मानव के हृदय में आज से अधिक रागों का सर्जन करता और वे रागविह्वल स्वरों में फूट-फूटकर वायु की लहरों को आज से अधिक झंकृत किया करते थे।

आदिवासियों की प्रकृति को समझने के लिए मानस-विकास की उस प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। सभी आदिम जातियों की तरह मुण्डा-जाति भी ज्ञान-विज्ञान की प्रारम्भिक अवस्था में रही है, जिससे उसके जीवन की आवश्यकताएँ सरल और सीमित बनी रहीं। उसके कन्धे पर बड़े-बड़े उत्तरदायित्व नहीं आये और अपने प्रकृत भावों से उसके आदिम सम्बन्ध नहीं टूटे। अस्तु ; स्वभावतः ही उसके हृदय में बचपन की अल्हड़ भावनाओं और जवानी की उमंगों की अठखेलियाँ होती रहीं। मुण्डा-जाति की क्रीडा और संगीतप्रियता का सबसे बड़ा रहस्य यही है।

मुण्डाओं की प्रकृत भावना, सरलता, सौन्दर्यप्रियता और स्वतन्त्रता ने मिल-जुलकर उसके सारे जीवन को सुरुचिपूर्ण और कलापूर्ण बना दिया है। अस्तु ; वे अपने साधन और सामर्थ्य की सीमा में जीवन को सुन्दर-से-सुन्दर बनाकर जीना पसन्द करते हैं और पूरी तन्मयता के साथ जीवन का उपभोग करते हैं।

उनकी संगीतप्रियता इसी सुरुचि और तन्मयता की स्वरित अभिव्यक्ति है। इसे हम उनके शेष जीवन से अलग करके नहीं देख सकते। उनका सारा जीवन ही संगीत-मय है। वह संगीत जब मौन होता है, तब भी उनके प्राणों की गत बजाता है। वह उनके कर्मों में सुरुचि और लगन भरता है, उनके जीवन की प्रत्येक साँस को अपनी सुरभि से सँवारता है, और उनकी सन्तानों के लिए अनुराग बनकर उन्हें विह्वल बनाये रखता है। वह संगीत उनके मेलों और 'जतराओं' (यात्राओं) के लिए आतुर प्रतीक्षा बनकर उनके मन में उमंग भरता है, तन्मयता बनकर एक-एक अनुष्ठान को पूर्ण कराता है और वही संगीत ताल बनकर उनके नृत्यों की शिंजिनी बजाता है। और, जब मुखर होता है, तब आकाश में काली घटाएँ छा जाती हैं, वसन्त की ठण्डी हवा में पत्तियों के पायल बज उठते हैं, वृक्षों की सूखी डाल पर कलियाँ फूट पड़ती हैं और उसके स्वर की धारा में दुःखों के पहाड़ डूब जाते हैं। मुण्डा का संगीत उसका जीवन-संगीत है और उसकी जीवन-कला की डाल पर खिला हुआ सबसे मनोहर फूल है।

आदिवासी के प्राणों में स्वर भरने में पर्वों ने भी योग दिया है। पर्व आदिवासी के जीवन के कर्म-कोलाहल में रसमय क्षणों का नाम है। ये उसके जीवन के मरुस्थल में 'ओयसिस' की तरह होते हैं। आदिवासी बेचैन होकर पर्वों की प्रतीक्षा करते हैं और पर्व के आने पर अपने हृदय की सारी उमंग उसमें उड़ेल देते हैं। पर्व के अभिनन्दन में इनका रोम-रोम गा उठता है।

मुण्डाओं के विह्वल संगीत के सारे रहस्य 'हड़िया' की महिमा बताये बिना अधूरे

रह जायेंगे। 'हड़िया' इनका मादक पेय है, जिसे वे प्रत्येक पर्व, आनन्द और थकान के अवसर पर पीते हैं। कहा जाता है कि ये नशीले पदार्थ आदिवासियों के पिछड़ेपन के प्रधान कारण हैं। यह बात सच है। किन्तु, यह भी सच है कि इन्होंने इनके महान् विपत्तियों से झुलसे हुए मन को सदा सींचा है, और जीवन के भीषण संघर्षों में इन्हें अपने प्यार की मादक थपकी से सुलाकर सान्त्वना दी है। कौन कह सकता है कि इनके अभाव में इन्होंने सभ्यता की दौड़ में अपने को आगे बढ़ाया होता या इतिहास से मिट जानेवाली अनेक जातियों की तरह ये भी मिट गये होते ?

आदिवासियों के पैरों में गति तथा कण्ठों में लय भरने में हड़िया का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इसकी मादकता उस मस्ती को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योग देती है, जिसके विना मनुष्य जीवन-भर की सारी चिन्ताओं को क्षणभर में भूलकर नाचने नहीं लग जाता। आदिवासियों के नृत्य और संगीत एक दूसरे के परिपूरक, प्रेरक और उद्दीपक होते हैं। यह विह्वलता की एक ही लहर का पगों और कण्ठों के बीच कलापूर्ण विभाजन है।

आदिवासियों की संगीतप्रियता में उनकी सामाजिक व्यवस्था का भी हाथ है। पुरुष और नारी की, जीवन में सहयोगिता और कर्मक्षेत्र में समानता भी उनके मन में आकर्षण, अनुराग और मधुर भाव भरती रही है—जो गीतों के उद्दीपक बने हैं। नारी की स्वतन्त्रता और पुरुष के साथ नृत्य स्वभावतः ही दोनों के मन के तारों में झंकार पैदा करनेवाले हैं। इस अनुराग की विह्वल पुकारों से मुण्डा-गीत भरे पड़े हैं।

इस मस्ती और तन्मयता ने उनके जीवन की प्रत्येक साँस को ही कविता बना दिया है। यहाँतक कि बकरी चराने से लेकर पत्ती तोड़ने तक सभी इनके गाने के विषय हैं।

गीतों के भेद

मौसम के अनुसार मुण्डा-गीतों के बहुत-से भेद हो गये हैं। और, सबके लय, ताल आदि अलग-अलग हैं। सभी गीत अपने ही मौसम-विशेष में गाये जाते हैं। एक मौसम का गीत दूसरे मौसम में गाया जाना वर्जित है और मुण्डा इस नियम का पालन बड़े अनुशासन के साथ करते हैं। मौसम के अनुसार ही उन गीतों से सम्बद्ध बाजों के ताल और नृत्य भी अलग-अलग हो गये हैं। गीतों के ये भेद इस प्रकार हैं—१. जदुर, २. गेना, ३. ओर-जदुर, ४. करमा, ५. जरगा, ६. जापी, ७. जतरा और ८. शादी। और, प्रायः प्रत्येक प्रकार का गीत किसी-न-किसी प्रमुख पर्व से सम्बद्ध है।

जदुर—मुण्डाओं का सबसे प्रमुख और प्राचीन गीत जदुर है, जो वसन्त-गीत है और इनका सबसे प्रमुख पर्व सरहुल है, जो वसन्तोत्सव है। इनके जीवन की चिर-सहचरी प्रकृति जब अपना अभिनव शृंगार करती है और जब जंगलों में वसन्त की छटा छा जाती है, तब ये भी प्रकृति के स्वर में स्वर मिलाकर गा उठते हैं। इनके मस्ती-भरे मन पर छाया हुआ सारा वातावरण ही पर्व बन जाता है। ये एक-एक फूल के पास जाकर उसकी निराली मुसकान का रहस्य पूछते हैं, और पक्षियों के राग में अपने विह्वल मन की पुकार सुनते हैं। सरहुल वन-देवता के प्रति इनके कृतज्ञ हृदय का विनम्र अभिनन्दन है और इनके जदुर-गीत प्रकृति की अर्चना में इनके विह्वल प्राणों का मधुर संकीर्त्तन है।

जब पलाश के फूलों और कुसुम की नई कोपलों से सारा वन लाल हो जाता है और नये पल्लवों और फूलों से जंगल भर जाता है, उस मोहक वातावरण में आप जाकर जदुर के गीत सुनिए। जैसे कोयल की मीठी बोली वसन्त के सरस वातावरण में रसीली और मीठी हो जाती है, वैसे ही उस समय मुण्डा के स्वरों में भी एक दर्दभरी मधुर टेर समा जाती है। उसका हृदय आकुल आमन्त्रण से विह्वल हो जाता है और वाणी करुण पुकार से भर जाती है। वन में छाये हुए रूप, रस, गन्ध और ध्वनि के मधुर वातावरण मुण्डा-प्राणों को मिलन की बेचैनी से भर देते हैं और विरह की व्यवस्था को और भी गहरी बना देते हैं। ऐसे वातावरण में दूर से सुनाई देनेवाले जदुर के छोटे-छोटे बोल ऐसे जान पड़ते हैं, जैसे कोयल की दर्द-भरी टेर रह-रहकर टूट-टूट जाती हो या बरसात की काली घटाओं के नीचे पपीहे की पी-पी की रटन थककर हार-हार जाती हो। एकान्त में गाये हुए मुण्डाओं के इन 'जदुर गीतों' पर कविवर पन्त का यह कथन पूर्णरूप से चरितार्थ होता है—

बियोगी होगा पहला कवि,
आह से निकला होगा गान!
निकलकर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान!

या प्रसिद्ध अँगरेज-कवि शेली की यह उक्ति—

'Our sweetest songs are those that tell of saddest thought'.

यदि वन में आपका मन लग सके, तो आप अनुभव करेंगे कि इन सारे प्रकृति-पुत्रों, पक्षियों और मनुष्यों के स्वर एकान्त वातावरण में आपस में मिलकर और एक दूसरे के पूरक होकर इतने एकाकार हो जाते हैं, जैसें वे एक ही अर्थ के विभिन्न शब्द हों, एक ही भाव के विभिन्न छन्द हों, जैसे वे एक ही गीत की विभिन्न लय हो। दरअसल, फूलों से भरी हुई झाड़ियों में भौरों की गूँज का, वृक्षों की नई कोंपलों में कोयल की कूक का वसन्त की रंगीन छटाओं में मुण्डा की करुण पुकार का एक ही अर्थ है।

माघ में मनाये जानेवाले 'मागे' पर्व के बाद जदुर का मौसम प्रारम्भ होता है और वृक्षों की नई कोंपलों के साथ ही इस गीत की कलियाँ भी फूटने लगती हैं। और फिर, सरहुल मना लेने के बाद जदुर के भावमय गीत अगले वर्ष की प्रतीक्षा के लिए बन्द कर दिये जाते हैं।

इनके जदुर-गीतों की संख्या सबसे अधिक है और मौसम के विस्तार-भर में फैले होने पर भी इनका पर्व से अन्य सारे गीतों की अपेक्षा अधिक सम्बन्ध है।

गेना—गेना-गीत जदुर-गीतों के ही पूरक हैं, जो नृत्य की सुविधा के लिए बनाये गये हैं। बहुधा दो जदुर-गीतों के बाद गेना गाया जाता है, जो जदुर-नृत्य की ताल को थोड़ी देर के लिए बदल देता है।

जदुर के कठिन आरोह-अवरोह के बाद गेना के सरल नृत्य में थोड़ा आराम मिलता है और वातावरण की एकरूपता में थोड़ा परिवर्त्तन आ जाता है, जो रात-रात भर चलनेवाले इन नृत्यों के लिए आवश्यक है। गेना-गीतों की संख्या जदुर-गीतों की

अपेक्षा बहुत कम है और उनके आकार भी अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। नृत्य की लहरों को लघुतर बनाने के लिऐ गेना-गीतों की पंक्तियाँ भी छोटी-छोटी रखी गई हैं।

ओर-जदुर—ये भी जदुर के पूरक हैं और जदुर के विशाल वृक्ष की बाहर निकली हुई टहनी के समान जान पड़ते हैं। इनकी लय और छन्द जदुर से कुछ भिन्न होते हैं, किन्तु गाने का समय, मौसम और उपयोग वही है।

करमा—जदुर के बाद सबसे प्रमुख स्थान करमा-गीतों का है, जो भाव, लय और लोकप्रियता की दृष्टि से जदुर-गीतों से भी आगे बढ़े हुए हैं। सरहुल की समाप्ति से ही करमा-गीतों का प्रारम्भ होता है। मुण्डा लोग सरहुल की अन्तिम सन्ध्या आने के पहले ही, उसी दिन के धुँधले प्रभात में दो-चार करमा-गीत गाकर करमा के महान् मौसम का स्वागत करते हैं। और फिर, इन गीतों का क्रम नित्य बदलते रहनेवाले वातावरण में अपना रूप बदलता हुआ आश्विन के अन्त तक चलता है। भादो की शुक्ल एकादशी को करमा-पर्व मनाया जाता है और उस पर्व से भी सम्बद्ध बहुत-से गीत हैं; किन्तु दरअसल, करमा-गीत पर्व की सीमाओं में बँधे हुए नहीं हैं। अपने प्रकृत रूप में वे एकान्त-संगीत हैं, जो गरमी में वनवृक्षों की शीतल छाया में, आषाढ की काली घटाओं में, बरसात के एकान्त खेतों में और भादों की सूनी राहों में समान रूप से गाये जाते हैं। वास्तव में, वरसात के दृश्य इन पहाड़ी भागों में बड़े मोहक हो जाते हैं। पृथ्वी पर छाई हुई हरियाली, बादलों के गंगा-जल से धुले हुए जंगल, घास और झुरमुटों की चादर ओढ़े पहाड़, खेतों में झिलमिलाता हुआ पानी, रात की निःस्तब्धता, झींगुरों की झनकार, पक्षियों की चहचह, धरती से आकाशो तक के सारे दृश्य और क्षण-क्षण परिवर्त्तित प्रकृति के रूप बड़े प्रभावशाली होते हैं, जो मुण्डाओं के मस्त स्वभाव को छेड़े विना नहीं रह सकते। यह तो संयोग कहिए कि बरसात का दिन गरीबी, परिश्रम और कार्य में व्यस्त रहने का दिन होता है, नहीं तो प्रकृति की सार रंगीनियाँ इनकी मस्ती से क्या आँखें मिला पातीं ?

एकान्त के क्षणों में उन्हीं क्षणों के लिए बने होने के कारण करमा-गीतों का प्रभाव बड़ा गहरा होता है। और, उनके कम्पित स्वर तथा लय की लहरों का बड़ा मधुर विकास हुआ है। सूनेपन की टेर उनके स्वरों को ऊँचा उठाती है और दर्द उनमें कम्पन पैदा करता है। वन के किसी एकान्त से खुलकर गाये हुए करमा-गीत प्रकृति के चरणों में पुरुष की चिरन्तन पुकार के समान जान पड़ते हैं। मानो प्रणयातुर धरती, आकाश को अपने मिलन का विह्वल सन्देश सुना रही हो। करमा गीतों का अर्थ वही है, जो दूर क्षितिज के ऊपर उठती हुई काली घटाओं में बगुलों की पंक्ति का अर्थ है ; जो ठण्डी हवा के साथ खुली खिड़की से आकर बदन को सिहरा देनेवाली भाप की फुहारों का अर्थ है, जो आषाढ के पहले पानी को पाकर धरती से उठनेवाली सोंधी-सोंधी गन्ध का अर्थ है और जो सूनी रात के बेचैन कानों में दूर से आनेवाली बाँसुरी की करुण पुकार का अर्थ है।

करमा-पर्व मुण्डाओं का बहुत पुराना पर्व नहीं है। इसे उन्होंने दूसरों से सीखा है। किन्तु, उसमें अपना रंग मिलाकर उसे और भी रसमय बना लिया है। अस्तु; पर्व के लिए भी बहुत-से गीत बने हैं। करमा के अलग नृत्य हैं और बाजों के अलग लय-ताल हैं।

करमा-गीतों में कृष्ण-काव्य और रामायण की भी बहुत-सी कथाएँ गाई जाती हैं।

मुण्डा का कृष्ण-काव्य 'प्रीत-पला' के नाम से और रामकथा 'रामायण' के नाम से प्रसिद्ध हैं। ऐसे गीतों में पूर्णता है और भावों की अभिव्यंजना अधिक मार्मिक और कलापूर्ण। ये शिक्षित गीतकारों द्वारा सिरजे हुए हैं। इन्हें 'बुदू बाबू' नामक एक पाँच परगना[1]-निवासी कवि ने बनाया है। इनमें चैतन्य महाप्रभु के कीर्त्तनों का प्रभाव और बँगला-गीतों की रसमयता है।

इन गीतों मे जो 'लीरिक' (प्रगीत) हैं और जिनका एकान्त से अधिक सम्बन्ध है तथा असाढ़ तक गाये जाते हैं, 'चिटिद् करमा' कहलाते हैं। उनका नृत्य से सम्बन्ध प्रायः नहीं है। शेष करमा-गीतों का सम्बन्ध नृत्य से है, जिनमें झूमर, लहसुआ आदि प्रमुख हैं।

अधिकांश करमा-गीतों की पंक्तियाँ लम्बी होती हैं, जो गाते समय खींचकर और भी बढ़ा ली जाती हैं। उनके स्वरों का आरोह, अवरोह और कम्पन करमा-गीतों की सबसे बड़ी विशेषता है, जो इन्हें अन्य गीतों में प्रमुखता प्रदान करती हैं।

जरगा—करमा के बाद जरगा-गीतों का मौसम आता है, जो कार्त्तिक से 'मागे' पर्व की सीमा तक गाये जाते हैं। 'मागे' फसली पर्व है। यह खेतीबारी के सारे काम समाप्त हो जाने के बाद—जब अनाज घर में आ जाता है, और जब ये लोग काम-धाम से थोड़े दिनों के लिए छुट्टी पा जाते हैं, तब मनाया जाता है। मागे पर्व अन्न की प्रसन्नता में तृप्ति का पर्व है और जरगा-गीत अपने मौसम के अनुसार शान्त भावों के गीत हैं। उनकी लय, ताल और नृत्य में एक शान्ति और सन्तोष की भावना पाई जाती है। स्वभावतः, यह मुण्डा के जीवन की उमंगों का सबसे सुनहला समय है, पर दुर्भाग्यवश दर्द-भरे गीत ही मानव के सबसे मीठे गीत होते आये हैं और गीत के सबसे मनोहर फूल आँसू के खारे जल में ही खिला करते हैं, इसलिए जरगा-गीत दुःख-दर्द के अभाव में मिठास के सौभाग्य से वंचित हैं और सूने दिनों को काट ले जाने के सिवा इनका और कोई महत्त्व नहीं है। इनकी संख्या जदुर और करमा-गीतों से बहुत कम है।

जापी—ये शिकार के गीत हैं और मुण्डा-गीतों में इनको संख्या सबसे कम है। ये उन शिकार के आयोजनों में, जो होली और सरहुल पर्वों के उपलक्ष्य में होते हैं, गाये जाते हैं। इन थोड़े-से ही गीतों में प्रयाण की गतिशीलता, युद्ध की ललकार और सफलता की उमंगें तीनों भरी हुई हैं। इनके वाद्य और नृत्य भी तदनुकूल ललकार की ध्वनियों से भरे होते हैं। इन गीतों में अपनी कलाप्रियता को सम्मिलित करके मुण्डाओं ने शिकार को भी उत्सव बना लिया है। जापी-गीतों की पंक्तियाँ प्रायः लम्बी होती हैं। नृत्य जोरदार चक्र के कारण घुड़दौड़ के समान जान पड़ते हैं। लगता है, स्वर द्रुतगामी कदमों का पीछा कर रहे हों।

जतरा[2]—प्रत्येक पर्व और आनन्द के अवसर पर इन नृत्यप्रेमियों के बहुत-से

---

१. खूँटी सब-डिवीजन का पूर्वी भाग 'पाँच परगना' कहलाता है। बुदू बाबू का 'परिचय गीतकार' शीर्षक के अन्तर्गत दिया जायगा।

२. मेले या नृत्य के सम्मेलन 'जतरा' कहलाते हैं। इसका सम्बन्ध बँगला के 'यात्रा' शब्द से है। बंगाल में पचासों तरह के सांस्कृतिक आयोजन को 'यात्रा' कहा जाता है। 'इन्साइक्लोपीडिया इण्डिका' में उनको एक लम्बी सूची प्रस्तुत की गई है।

गाँवों का जो सम्मेलन हुआ करता है, उसे 'जतरा' कहते हैं। उन 'जतराओं' में ये बड़े उल्लास से दलबल के साथ—प्रायः अपनी नृत्य-मण्डलियों के साथ जाते हैं। मानों कर्म-कोलाहल के बन्धनों से छूटकर ये मुक्त उमंगों के राजमहल पर धावा बोल रहे हों। युवक-युवतियों के लिए ये जतरा महापर्व हैं। जतराओं के लिए भी गीत बने हुए हैं। इनमें कभी-कभी नृत्य-मण्डलियाँ बाजे-गाजे के साथ जाती हैं और कभी-कभी बिना बाजे के ही उनके दल मुक्त रागों की लय पर नाचते हुए प्रयाण करते हैं। जतराओं के गीत रास्ते की थकान को भुलाने के लिए और पैरों में उमंग भरने के लिए बनाये गये हैं। इनकी संख्या अधिक नहीं है।

और, अब तो इनकी संख्या और भी कम होती जा रही है। जतरा के अवसर के लिए भी—चाहे रास्ते में या मेले में मौसमी गीत ही अब प्रायः गाये जाने लगे हैं और जतरा के गीत स्वतन्त्र गीतों का स्थान लेने लगे हैं।

विवाह के गीत – विवाह के गीतों में सारे भारत में विवाह के अवसर पर गाये जानेवाले गीतों की तरह गाली भरी हुई है। दो कुटुम्बों के मधुर मिलन के अवसर पर यह व्यंग्य-विनोद मीठा ही जान पड़ता है। लेकिन, इन गीतों की संख्या बहुत कम है। कुछ गीत दूल्हा-दुलहिन के लिए आशीर्वाद-स्वरूप भी हैं और कुछ सम्बन्धियों के स्वागत के प्रसंग में भी!

गीतों के विषय

इनकी जिन्दगी को छूकर चलनेवाला कोई भी विषय इनके संगीत से अछूता नहीं है। जो भी बात इनकी भावना में तनिक भी लहर उठा देती है, उसी पर इनका कण्ठ फूट पड़ता है। मुण्डा भावुक होते हैं, इसलिए इनके मन की प्रत्येक बात इनकी मस्ती को छूकर गीत बन जाती है। इन्होंने विषयों का चुनाव करके तैयारी के साथ कविता की रचना नहीं की है। अपनी आँखों को खोदकर पानी नहीं बहाया है, वरन् इनकी अनुभूति के सारे विषय गीत बनकर ही इनके प्राणों में समाते हैं और फिर स्वर बनकर इनके कण्ठों से फूट पड़ते हैं।

प्रकृति-प्रेम—अपनी चिरसंगिनी प्रकृति की आत्मीयता इनके गीतों में सब जगह दिखाई देती है। फूल और पंछी, वृक्ष और लता, पहाड़ और घाटियाँ तथा नदी और निर्झर इनके रात-दिन के साथी हैं। इनके साथ मुण्डा का आत्मीय भाव है, ये उसके सहचर हैं। इन्हीं से हँस-बोलकर उसका जीवन विकसित होता है। इसलिए, उन्नत भाषाओं में प्रकृति-वर्णन का जो तात्पर्य समझा जाता है, वैसा प्रकृति-वर्णन आदिवासी कविता में नहीं है। दोनों में बड़ा स्पष्ट अन्तर है। उन्नत भाषाएँ बोलनेवालों का जीवन प्रकृति से दूर हो गया है। उनकी अपनी संस्कृति कहिए या विकृति, ह्रास कहिए या विकास, इस परिवर्त्तित दशा में उन्होंने अपने को प्राकृतिक जीवन से हटा लिया है। इसलिए, प्रकृति उनके लिए अपरिचिता हो गई है। वे कभी-कभी अपने वास्तविक जीवन से दूर हटकर प्रकृति को प्यार करने जाते हैं, उसकी छटाओं से मुग्ध होते हैं। किन्तु, इस

अभियान में उनके प्राण अपनी सभ्यता के ऊँचे कोठे पर ही छूट गये होते हैं। वे प्रकृति के साथ घुल-मिलकर एक नहीं हो पाते। इसलिए, वे प्रकृति के जिस रूप का चित्रण करते हैं, वह शहर के पार्क के बीच मन-बहलाव के लिए लगाई हुई जंगली झाड़ी के समान जान पड़ता है। अभिजात-वर्ग के कवियों का प्रकृति-प्रेम श्रीनगर के निशात-बाग का बनावटी निर्झर है; दिल्ली के बिड़ला-मन्दिर में बनी हुई मिट्टी की पहाड़ी है और जयपुर के कृत्रिम-नगर में चिड़ियाघर के लिए बना हुआ जंगल है। जो स्पष्टतः ही पाठकों के मनबहलाव की वस्तुएँ हैं। कालिदास चित्रकूट के पर्वत-शिखर पर से मेघ के द्वारा अलकापुरी सन्देश भेज चुकने के बाद फिर उज्जयिनी के राजमहलों में लौट जाता है। वड्सवर्थ पहाड़ी के नीचे धान के खेतों में गाती हुई लड़की की टेर से थोड़ी देर मन बहलाकर फिर क्लब की ओर चला जाता है। और, अन्धा सूर अपनी बन्द आँखों से वृन्दावन के करील-कुंजों में रासलीला के दृश्य देखकर फिर अपने तानपूरे के स्वरों में खो जाता है। किन्तु, मुण्डा प्रकृति के आँगन में कहीं से चलकर नहीं आता और वहाँ से चलकर उसे अन्यत्र कहीं जाना नहीं है।

मुण्डा का प्रकृति-प्रेम रेशम के परदे पर जरी के तारों से बनाया हुआ गुलाब का फूल नहीं है, इसलिए उसमें कोई फैशन नहीं। अभिजात कविताओं में जीवन के रंगमंच पर जो व्यापार दिखाये जाते हैं, उनकी पृष्ठभूमि में ऐसे परदे होने चाहिए, जिनमें प्रकृति के चित्र उतारे गये हों। नकली जंगल और पहाड़; रंगों से बने हुए नदी-निर्झर और रेखाओं से बने हुए फूल-पक्षी। किन्तु, मुण्डा-जीवन के रंगमंच पर इन छटाओं को कहीं से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। जिन छवियों के लिए अभिजात कलाकार परेशान होते रहते हैं, वे मुण्डा-जीवन की पृष्ठभूमि में नैसर्गिक रूप से विद्यमान हैं।

मुण्डा-कवि को प्रकृति के अंग-अंग के वर्णन की आवश्यकता नहीं। उसका फोटो खींचकर या चित्र बनाकर उसे कहीं ले नहीं जाना है। वह छवि तो उसके प्राणों में बसी हुई है। इसलिए, उसका नाम-भर ले लेना मुण्डा के सारे प्रकृति-प्रेम का परिचायक है। मुण्डा-कविता में फूल या पक्षी का नाम ही उनकी सारी मनोहरता का प्रतिनिधि और प्रतीक है। इसलिए, आदिवासी-कविता में प्रकृति की छटा देखने के लिए आपको यह रहस्य समझ लेना पड़ेगा।

कहीं-कहीं रंग में आकर मुण्डा-कवि ने प्रकृति के स्वतन्त्र रूप का वर्णन भी कर दिया है। निम्नांकित गीत वसन्त के स्वागत में गाया गया है—

खङ् तयोमेतेम्-हिजकन
राजा रानी लेकम् सम्पोड़कन
इसु दिनतेञ् उड़ुःकेन
मेन्दोम् मुलुः लेन बा चण्डुः।

पुरन पण्डु सकम् नोचोःकेते
नव सुड़ सड़िम् ओमेतद्,

बिर्ते दरुकोत्र् लेलउकेन
मोए-तन, बा-तन, जोतन ।
हरीयली अरः सुड़ पिड़िः लेक
चिकन् सुनुमेगोम् गोसोःअ कद्
बिर्कोरे बा-बुगिन्-सुगड़ सोअन्
कुड़म् बितारेरे गुमुरओ तन
बिर-दरु सुबरे राम् सोम्बोद् कन
सिरिमरे सिङ्बोङ्गएः जोअर् तन
बाएअले मेन्ते गोड़ेः रसिक तन
तर कोतो सरजोम्-बाएः असितन ।

"जाड़े के बीत जाने पर तुम आये हो। तुम राजा-रानी के समान सजे हो। मैं बहुत दिनों से (तुम्हारी) चिन्ता कर रहा था; मगर आज (जाकर) चैत का चाँद उगा।

"पुरानी पीली पत्तियाँ झाड़कर (तुमने) नई कोंपलों की साड़ी पहन ली। मैंने जंगल के वृक्ष को कली लगते, फूलते और फलते देखा।

"(तुम्हारी) हरी और लाल कोंपलें चमक रही हैं, तुमने कौन-सा तेल लगा लिया है? जंगल के सुन्दर फूलों की सुगन्ध—मेरी छाती में घूम रही है।

"राम वन-वृक्ष के नीचे झुका हुआ है (और) आकाश के प्रभु को प्रणाम कर रहा है। सरहुल मनायगा, यह सोचकर प्रसन्न हो रहा है (और) साखू के फूलों की एक डाली माँग रहा है।"

मुण्डा-गीतों में सैकड़ों प्रकार के फूल और पक्षी कभी उपमान, कभी उद्दीपन और कभी प्रतीक बनकर आये हैं, जिनका 'प्रतीक' शीर्षक के अन्तर्गत परिचय दिया गया है।

इनके अतिरिक्त, वन-भूमि के बहुत-से वृक्ष, लता-गुल्म, कोंपलें, चींटी, मधुमक्खी, पहाड़, नदी, झरना, कन्दरा, घाटी, बेड़ा, पीड़ी (टाँड़), जोवेला (दलदल), बादल, सूरज, चाँद, आँधी, कुहासा, घने जंगल, झाड़ी, बरसात, शीत, धूप, रात, सन्ध्या, प्रभात आदि मुण्डा के जीवन, यौवन और प्रेम के रंगमंच पर आकर उसकी कविता की शोभा बढ़ाते हैं।

प्रेम—सौन्दर्य और प्रेम ये दो मानव-मात्र के मौलिक भाव हैं, जो उसकी सारी कला के प्रेरक हैं। संसार की अन्य सारी कविताओं में जीवन की समस्याओं, चिन्ताओं और उलझनों ने स्थान बना लिया है; किन्तु मुण्डा-कविता अपने मौलिक भावों से दूर नहीं हो पाई है। मुण्डा-गीत, सच पूछिए तो प्रेम की ही साधना है। उसमें 'गतिम्' और 'संगम्' (प्रिया-प्रियतम) हैं; विरह की वेदना है, मिलन की उत्सुकता है। मुण्डा-गीतों में प्रेम की वह मधुर व्यंजना है, जो प्रकृति के उपादानों—वृक्षों, फूलों और पक्षियों

आदि—में भी इसी विरह-मिलन के भावों का आरोप करती चलती है। मुण्डा का हृदय अपने और प्रकृति के जीवन में इसी प्रेम के बिम्ब-प्रतिबिम्ब-भाव का दर्शन करता है। वहाँ निश्छल प्रेम नाना रूपों में अपनी छटा दिखाता है; किन्तु उस प्रेम का जीवन से सम्बन्ध है। मुण्डा-प्रेम की कोयल जीवन की ही डाल पर कूकती है। मुण्डा युवक की प्रेमिका बँगले में रहनेवाली वह फुलझरी नहीं, जो केवल बाल सँवारती है, उपन्यास पढ़ती है और प्रेम करती है; जवानी की बहारों से भरी वह लड़की है, जिसके सिर पर मिट्टी का घड़ा और होठों पर फूल की बहार है, जिसके हाथों में घास काटने का हँसुवा और कण्ठों में मिलन की पुकार है। मुण्डा-युवती का प्रेमी भी वह मजनू नहीं, जिसकी कमर नदारद है, जो सूखकर मृत्यु के बिस्तर से सटा जा रहा है और जो प्रेम के दर्द से पीड़ित होकर किसी सेनोटोरियम में स्वास्थ्य सुधार रहा है। वह जीवन-शक्तियों से भरा ऐसा आकर्षक जवान है, जिसके हाथों में बलुवा (फरसा) और अधरों पर वंशी की टेर है; पुष्ट कन्धों पर कुदाल और आँखों में, धान के खेतों की ओर, किसी की खोज है। मुण्डा-गीतों के इस प्रसंग को, जिसमें जीवन प्रेममय और प्रेम जीवन-युक्त होता है, समझे रहने के बाद ही उनके प्रेम की पुकारों की मनोहरता समझी जा सकती है। आदिवासियों की कविता में सब कुछ नहीं कहा जाता; किन्तु उस कथन की मौन पृष्ठभूमि को समझे रहने पर जो कुछ भी कहा जाता है, उसका बड़ा गहरा अर्थ निकलता है।

देशप्रेम—इनके गीतों में देशप्रेम की भावना भी है। यद्यपि ये राष्ट्रीयता की राजनीतिक और व्यापक परिभाषा जानकर गीत नहीं गाते; किन्तु देशप्रेम का जो मौलिक अर्थ है, वह इनके गीतों में बड़े सरल रूप में व्यंजित हुआ है। वह स्थान, जहाँ ये रहते हैं और जिसकी मिट्टी ने इन्हें पैदा किया है, इन्हें बहुत प्यारा है। उसकी एक-एक वस्तु के प्रति इनके मन में आत्मीय भाव है। इन्हें दूसरों की धन-दौलत और समृद्धि से कोई प्रयोजन नहीं; पर अपने अधिकारों का हरण इन्हें दुःखी बनाता है। उनकी यह सन्तुष्टि और उनका यह दर्द गीतों में स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है—

नेते दुड़ नेते जिमिलिलिअ
दिसुमेदो लेसे-लेसेअ
नेते दुड़ नेते जिलिमिलिअ
गमए दो जिर्पि जलङ

"यहाँ की धूल चमकीली है, यह देश बड़ा सुन्दर है। यहाँ की मिट्टी चमकीली है, यह इलाका बड़ा मनोहर है।"

सन्तान-प्रेम—मुण्डाओं का प्रेम व्यापक है, जो यौन-सम्बन्धों तक ही सीमित नहीं होता। उनकी कविता में सन्तान के प्रति बड़ा निर्मल प्रेम प्रकट हुआ है। इनके जीवन को निकट से जाननेवाले जानते हैं कि ये अपनी सन्तान को कितना प्यार करते हैं। विशेषकर बेटी, जो अपने बचपन की मधुर क्रीडाओं से इनके आँगन को रसमय बनाती है और फिर उसे सूना करके ससुराल चल देती है, इनकी भावनाओं का स्रोत है। पिता के घर

लड़की को बड़ा प्यार और बड़ी स्वतन्त्रता मिलती है। इसके अतिरिक्त, इनकी सामाजिक व्यवस्था में भी कुमारी लड़की को नाच-गान, मनोरंजन आदि की पूरी स्वतन्त्रता दी गई है; किन्तु विवाह के बाद ससुराल में उसके जीवन पर बड़े संयम हैं और ससुराल के उत्तरदायित्वों में उसे अपने को कठोर बना लेना पड़ता है। यह स्थिति अपनी कोमल सन्तान के प्रति माता-पिता की ममता को और भी बढ़ा देती है। ममता और स्नेह के इन मधुर भावों के चित्र मुण्डा-गीतों में आप सर्वत्र देखेंगे। मुण्डा-जीवन से अपरिचित पाठक भी, केवल गीतों में इनके जीवन के इस मनोहर पक्ष का दृश्य स्पष्ट रूप में देख सकता है। ससुराल के लिए विदा होनेवाली लड़की यों तो सारी दुनिया में करुणा का स्रोत है; किन्तु मुण्डा-गीतों की यह करुण ममता भूलने की वस्तु नहीं है।

छोटे-छोटे बालकों के प्रति भी इनके गीतों में ममता के भाव भरे हैं।

पर्व—मुण्डाओं के दुःख और अभाव-भरे जीवन में पर्व का बहुत महत्त्व है। समय-समय पर आनेवाले पर्व इनके जीवन के सूखते सोते को रसमय कर देते हैं। इनके अधिकांश गीत पर्वों से सम्बद्ध होते हैं और उनके केन्द्र में कोई-न-कोई पर्व होता है। इनके पर्व भी काल्पनिक और ऊपर से लदे हुए नहीं होते, वे जीवन को धरती में ही फूटते हैं। पर्वों के गीत भी जीवन के गीत होते हैं। मुण्डा-गीतों में पर्वों के उल्लासमय पक्ष प्रतिध्वनित हुए हैं। पर्व की आतुर जिज्ञासा, उसकी तैयारी, जीवन के मरुस्थल में पर्व की हरियाली, उल्लास के साथ पर्व का अभिनन्दन, गीत और नृत्य के रूप में पर्व के वरदान आदि विषयों में मुण्डा का स्वर मुखरित होता है, जैसा कि 'जदुर'-गीतों के वर्णन के प्रसंग में कहा गया है, जिसमें स्पष्ट रूप से पर्व का वर्णन नहीं होता, उन 'जदुर'-गीतों का अधिकांश भी पर्व के ही उपलक्ष्य में गाये हुए गीत हैं।

दुःख-विपत्ति—यद्यपि उल्लास और मस्ती ने इनके दुःखों को बहुत कुछ भुलाया है; किन्तु दुःखों को भूलने की भी एक सीमा है। • गीतों के प्यार की थपकी से जो दुःख सो नहीं सके, वे गीतों में ही फूट पड़े हैं। जैसे, पहाड़ी नदियों की उमड़ती हुई धारा में नदी के पेट के सारे पत्थर-टीले डूब जाते हैं; किन्तु बाढ़ उतर जाने पर वे उन धाराओं में दिखाई देने लगते हैं, वैसे ही मुण्डाओं के जीवन के दुःख-कष्ट जो उमंग की धाराओं में डूब जाते हैं—नशा उतरने पर अपना रूप प्रकट करते हैं।

ऐसे गीतों में गरीबी, भूख, ठण्ड आदि विकट परिस्थितियों का बड़ा करुण वर्णन है, जो थोड़े ही शब्दों में यह भीषण तथ्य कह जाता है कि ऐसी मस्त रहनेवाली और जीवन के जहर को पी-पीकर भी सदा मुसकाती रहनेवाली जाति के मुँह से 'आह' का निकल जाना साधारण बात नहीं है।

नृत्य-गान—पर्वों के उपलक्ष्य में या उन अवसरों पर गाये जानेवाले गीतों में नृत्यों की भी बड़ी चर्चा है। उनमें नृत्य की उमंग, साथी को नाचने का निमन्त्रण, अन्य गाँवों में चलने की तैयारी, वादकों और नाचनेवाले संगी-साथियों के व्यवहार, नृत्य की थकान और परेशानी, युवतियों के प्रति मधुर उपालम्भ आदि बहुत-सी बातों का वर्णन है।

बाँसुरी—बाँसुरी के प्रभाव की मधुर चर्चाएँ भी इनके गीतों में हैं। वन के एकान्त में सबसे अधिक प्रभाव डालनेवाली, और सोई हुई पीर को जगानेवाली इस रसीली

मोहिनी के जादू को भला मुण्डा-गीतकार कैसे भूल सकता है ? बाँसुरी की करुण टेर, बजानेवाले के हृदय की पुकार और सुननेवाले की तड़पन वंशी-गीतों के विषय हैं ।

बिरसा भगवान्—मुण्डा-गीतकार अपने अमर क्रान्तिकारी और पथ-प्रदर्शक नेता बिरसा भगवान् को कैसे भूल सकता है ? बिरसा भगवान् इनकी स्वतन्त्रता के उज्ज्वल प्रतीक हो गये हैं तथा उनके त्याग, संघर्ष और बलिदान की कहानी से सारी मुण्डा-जाति अपने को आज भी गौरवान्वित समझती है । बिरसा भगवान् के आन्दोलन, उनकी प्रचण्ड शक्ति, उनकी युद्धभूमि डुम्बारी पहाड़ और उनका अमर बलिदान इन गीतों के विषय हैं ।

गान्धीजी—कुछ गीतों में राष्ट्रपिता की याद में भी मुण्डा-गीतकारों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है और भारतमाता के मन्दिर में अपनी जाति की वन्दना भी स्वरित की है ।

इन महत्त्वपूर्ण विषयों के अतिरिक्त समय की महिमा, जीवन का आदर्श, अतिथि-सत्कार, घटनाओं में परोक्ष रूप से भाग लेनेवाले देवता, परदे के पीछे छिपा हुआ भाग्य, सिगबोंगा (सूर्य), माता, पृथ्वी आदि विषयों पर भी छिटफुट गीत हैं ।

कुछ गीत उन अन्य देशी-विदेशी लोगों के सम्बन्ध में भी हैं, जिनका सम्पर्क इनसे होता रहा है और जिनके कारण इनके शान्त जीवन में हलचल और परेशानी आती रही है ।

गीतों में प्रयुक्त वन्य उपकरण

मुण्डा-गीतों के भावों को ठीक से समझने के लिए प्रकृति के उन उपादानों का अर्थ समझ लेना आवश्यक है, जिनके झुरमुटों में उनके भाव-पुष्प खिला करते हैं ।

इन फूलों, पक्षियों और पर्वत-घाटियों के वातावरण से परिचित हुए विना हम गीत की भावना नहीं समझ सकते और गीतकार की अनुभूतियाँ हम से दूर रह जायेंगी होना तो यह चाहिए कि इन उपादानों से हमारा भी मुण्डा के सदृश ही घनिष्ठ परिचय और आत्मभाव हो ; किन्तु यदि यह अपने-आप सहज सम्पर्क से न हुआ हो, तो कागजी विवरण से इसका होना असम्भव है । फिर भी, आशा है, इस सूची से पाठको को इस वातावरण का कुछ अनुमान हो सकेगा ।

इनका प्रयोग मुण्डा-गीतों में कई तरह से किया गया है । कहीं-कहीं ये प्रतीक बनकर आये हैं । प्रेम के गुप्त संकेतों को खोलना जहाँ शिष्टता नहीं मालूम हुई, वहाँ इस रूप में इन्होंने गीतकार की सहायता की है । प्रकृति की मनोहर उपमाओं से तो मुण्डा-गीत भरे पड़े हैं । यत्र-तत्र ये प्रेम-विरह या मिलन के भावों के उद्दीपन-रूप में आकर गीत की पीर को बढ़ा देते हैं ।

फूल :

सारजोम्-बा (साखू)—लम्बा वृक्ष, आम की मंजरियों की तरह फूलों का गुच्छा होता है । वसन्त की बहारों में खिलकर बहार को बढ़ा देता है । धीमी-धीमी गन्धवाला यह फूल मुण्डा-जाति का प्रिय और पवित्र फूल है । 'सरहुल' में बनदेवता की पूजा इसी फूल से होती है ।

इचः-बा (धवई फूल)—छोटा झाड़ीदार पौधा, पतली लम्बी पत्तियाँ, लाल छोटा-छोटा फूल, फागुन में पौधा फूलों से लाल हो जाता है। फूल में मीठा रस, जिसे लोग चूसते हैं।

तोअ-बा (दुधी फूल)—मझले कद का वृक्ष, बड़ी लम्बी-लम्बी नुकीली पत्तियाँ, छोटे-छोटे सफेद फूलों का गुच्छा, जेठ में फूलता है, मीठी-मीठी गन्ध !

अटल्-बा—यह दो प्रकार का होता है, एक लता—चमेली जैसा। दूसरा बड़ा-बड़ा पौधा—सफेद गुलाब जैसा गन्धहीन फूल, पत्ती लम्बी थोड़ी नुकीली; सदा फूलनेवाला।

मुरुद्-बा—पलाश या टेसू का लाल फूल। गन्धहीन, वनस्थली को रंगीन बनानेवाला, वसन्त में खिलता है।

गुलश्चि-बा—गुलाइची का प्रसिद्ध फूल।

चम्पा-बा—चम्पक का प्रसिद्ध फूल।

केवड़ा-बा—केवड़ा का फूल।

सुकु-बा—कद्दू का फूल।

हुन्दी-बा—वृक्षों में लिपटी हुई लता, चमेली से जरा बड़ी पत्तियाँ, सफेद सुगन्धित फूल, गुच्छेदार फूलता है। पतझड़ के बाद चैत से जेठ तक फूलता है। गन्ध के लिए जंगल का प्रिय फूल।

जम्बिर—नींबू-विशेष।

हरि-बा—वृक्ष, छोटी-छोटी गोल नुकीली पत्तियाँ, फूल झब्बेदार लटकता हुआ, पीला, वृक्ष को ढके हुए। गन्धहीन, चैत से जेठ तक फूलता है। हिन्दी में इसे बन्दरलोरी और संस्कृत में अमलतास कहते हैं।

सिसि-बा—वृक्ष, २ × ३ लम्बी नुकीली पत्तियाँ, वसन्त में पत्रहीन, वृक्ष फूलों से भरा हुआ। फूल लाल, छोटे-छोटे गुच्छेदार, मीठी सुगन्ध, वृक्ष जंगल में दूर से ही दिखाई देता है।

गुड़्लु-बा—पेड़, लम्बी नुकीली पत्ती, फूल आम की मंजरी के समान झीना-झीना, थोड़ी-थोड़ी गन्ध, वसन्त में साखू के साथ ही फूलता है। सरहुल की पूजा के लिए साखू के साथ ही यह भी काम में लाया जाता है और उतना ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

बुड़ुजु-बा—(कचनार) वृक्ष, घनी हरी दो दलवाली पत्ती, फूल-किनारे-किनारे सफेद और बीच में बैंगनी, फागुन में फूलता है, कचनार का फूल साग के रूप में खाया जाता है। लोग बीज को भी खाते हैं।

बङ्कुर-बा—झाड़ीदार बड़ा-बड़ा पौधा, लम्बे-लम्बे काँटे, पीला, गोल-गोल रेशेदार फूल।

कुंटि-बा—वृक्ष, पत्ती लम्बी, नुकीली, फूल भूरा-भूरा गन्धहीन—मंजरी जैसा झब्बेदार।

लूदम्-बा—पौधा, पत्ती-तेजपात के समान, फूल—सफेद सुगन्ध-युक्त।

बाङ्कु—बबूल जाति का, छोटे-छोटे काँटोंवाला पौधा, पत्ती और फूल बबूल के समान।

अचल—कनेर की जाति का पौधा, जो पथरीली नदियों में पाया जाता है, लाल और सफेद फूल।

तुङ्गसि—तुलसी का प्रसिद्ध पौधा।

कड़े—कास नामक प्रसिद्ध घास, शरद् ऋतु में सफेद फूलों से धरती भर जाती है।

लताएँ :

सुकु—कद्दू।

तएअर्—खीरा

अटल्—चमेली

सङ्ग—शकरकन्द।

सेअड़ि—लम्बी लता, छोटी-छोटी पत्तियाँ।

पलण्डु—जंगली लता, बड़ी-बड़ी पलाश की पत्ती के समान पत्तियाँ।

लमः—वृक्ष में लिपटी हुई मोटी लता, पत्तियाँ मजबूत रेशोंवाली बड़ी-बड़ी। पत्तियों से आदिवासी अपनी प्रसिद्ध और उपयोगी कलाकृति गुंगू—(पत्तियों की ओढ़नी-छाता) बनाते हैं।

राजा-बा—लता, फूल छोटे-छोटे, अगहन में फूलती है। (राजा-बा नामक एक पक्षी भी होता है)।

कुन्दुरू—जंगली लता, काँटे, छोटी पत्तियाँ।

वृक्ष :

सारजोम्—साखू।

मुरुद्—पलाश।

कदल्—केला।

बड़े—बरगद।

हेसः—पीपल।

पपड़—एक उपयोगी लकड़ीवाला वृक्ष।

बरु—कुसुम का वृक्ष, जिसमें लाह लगती है, बड़ा सुन्दर वृक्ष।

पक्षी :

लङ्-चेगे—भुजंग पक्षी से जरा छोटा, लम्बी पूँछ, नर के पूँछ का रंग सफेद, रंग हरा, 'च्वोंय-च्वोंय' की रुक-रुककर बोली। पूँछ के लिए प्रसिद्ध, पइकी नाच नाचनेवाले इसके पूँछ को सिर पर खोंसते हैं।

बोचोः-चेगे—मैना से जरा छोटा, हल्का, पीला रंग, अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध।

लिपि—(लवा : Sky-lark) गोरैया के बराबर, भूरा-भूरा रंग, जमीन पर कुंबा (खलिहान की झोपड़ी) के समान खोंता बनाता है। 'लिप-लिप-लिप-लिप' की जल्दी जल्दी बोली। ऊपर उड़ने के बाद नीचे उतरते समय आवाज करता है।

पुतम्—पण्डुक।

मिरु—बड़ा सुग्गा, हरा रंग, ठोर लाल, चोंच और बोली के लिए प्रसिद्ध।

करें—मिरु का पर्यायवाची।

केश्रद्—(पतसुग्गी) सुग्गे की जाति का गौरैये के बराबर छोटा पत्ती।

लिटिश्र—छोटा भूरे रंग का पत्ती, 'टिक-टिक' की श्रावाज, इसके बारे में विश्वास है कि यह गिद्ध से बाजी जीत गया था।

श्रासकल्—तीतर से बड़ा, लम्बा पत्ती। बोली उसी के समान, अपनी जोरदार श्रावाज के लिए प्रसिद्ध। जाड़े मे जोर-जोर से सुबह-शाम बोलता है।

कुइलि—कोयल।

दिदि—गिद्ध।

मरः—मोर।

कोकोर्—उल्लू।

केर्केट—गौरैया से बड़ा लाल पत्ती, 'खिट-खिट' की श्रावाज में बोलता है।

डिंचुश्र—भुजंगा काला, कोयल से छोटा, बड़े पत्ती भी इससे घबराते हैं। 'ढंचू-ढंचू' की श्रावाज में बोलता है। बड़े सबेरे बोलना शुरू कर देता है।

जानवर :

जिकि—जिसे सेही कहते हैं, काँटोंवाला छोटा जानवर।

हरमु—रात को निकलनेवाला छोटा जानवर, कछुए जैसा कड़ा चमड़ा, इसे सूर्यमुखी भी कहते हैं।

अन्य प्राकृतिक तत्त्व :

जोबेल—(जोभी) जहाँ हरदम पानी रहता है।

जीर् या जिरकी—(दलदल) जहाँ हरदम कीचड़ रहे।

बेड़—(उपत्यका) पहाड़ के किनारे का ढालुश्रा या समतल स्थान।

पिड़ि—टाँड़—दोन के ऊपर के खेत या मैदान।

बुरु—पहाड़।

काव्य-कला

मुण्डा-गीतों की काव्य-कला की परीक्षा उन्नत कविताओं की मान्यताओं और निश्चित धारणाओं की कसौटी पर नहीं हो सकती। हमें अपने कृत्रिम आदर्शों के संस्कार से अलग हटकर प्रकृत भाव से इनमें कला की खोज करनी होगी। विशाल और विस्तृत लोक-मानस की अनुभूतियों को अगर आधार बनाया जाय और कला की कसौटी माना जाय, तो हमारी अभिजात कला की श्रेष्ठता स्वयं संकट में पड़ जायगी और उसे अपनी कृत्रिमता तथा जीवन-भिन्नता के लिए जवाब देना पड़ जायगा। कला का उद्देश्य अगर रूप-विधान के द्वारा आनन्द प्रदान करना है, तो लोक-कविता में जन-मानस श्रेष्ठ साहित्यों की अपेक्षा अधिक आनन्द प्राप्त करता है और अगर कला का सम्बन्ध जीवन से है, तब तो जीवन-शक्तियों से ओतप्रोत लोक-कविता अभिजात कविता को बहुत पीछे छोड़ देती है।

अभिजात कविताओं में रस, छन्द, अलंकार आदि की कृत्रिम मर्यादाएँ निश्चित

की गई हैं; किन्तु लोक-कविता में इनका सरल सौन्दर्य होते हुए भी कोई निर्धारित मर्यादा नहीं है, लोक-जीवन ही उसकी मर्यादा है। जैसे बच्चे की तुतली बोली में 'फार्म', शिष्टता और कृत्रिमता नहीं होने पर भी सरल हृदय का सहज आनन्द कम नहीं होता, वैसे ही लोक-कविता अपने सहज उद्गारों में रसमय और प्रभावपूर्ण होती है। और, जैसे कृत्रिम शिष्टाचार, आडम्बर आदि होने पर भी बड़े लोगो के वक्तव्यों में कभी-कभी हार्दिकता के अभाव में कोई प्रभाव नहीं होता, वैसे ही अभिजात कविता अपने कृत्रिम वेश-विन्यास में भी कभी-कभी कुरूप लगती है।

मुण्डा-गीतों में ऐसे सरल और स्वाभाविक उद्गार हैं, जो इनके हृदय के सारे रस और आनन्द को खोलकर रख देते हैं। कलाकार की अभिव्यक्तियाँ परिभाषाओं की घोड़ी पर चढ़ कर नहीं चलतीं, वे अपने-आप स्वाभाविक रूप में प्रकट होती हैं। अभिव्यक्तियों का कलामय होना किसी समाज के कलामय होने पर निर्भर है। जब जाति के जीवन से कला और शक्ति का ह्रास हो जाता है, तब उसकी अभिव्यक्तियाँ भी झूठी मर्यादाओं के ढाँचे में खोखली और निर्जीव बनकर रह जाती हैं।

मुण्डा-जाति का जीवन कलामय है। उसमें सौन्दर्य का प्रेम और रस की प्यास है। अस्तु; उसकी प्रत्येक अभिव्यक्ति के समान उसकी कविता भी कलामय है। मुण्डा की सुकुमार अभिरुचियों ने अपनी कविता के लिए छन्द, अलंकार, रस, ध्वनि आदि के ऐसे अलिखित विधानों के संस्कार लोक-मानस में बैठा दिये हैं, जिनकी सहायता से गीतकार रस की सृष्टि करता है, गायक और श्रोता रस का आस्वादन करते हैं, और पाठक तथा समीक्षक के लिए भी जिनको समझ लेना उतना ही आवश्यक है।

मुण्डा-गीतों में प्रतीकों, उपमाओं और आलम्बनों-उद्दीपनों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बहुत-से फूलों और पक्षियों का प्रतीक के रूप में प्रयोग हुआ है। मुण्डाओं के ये चिरसहचर जो कभी इनसे अलग नहीं होते, कविताओं में भी इनके पास आकर इनकी सहायता करते हैं। 'हरि-बा' और 'सिसि-बा' (दो फूल) जदुर खेलने जाते हैं। 'कारे' और 'मिरु' (दो पक्षी) पुरानी कोंपलों के सूख जाने पर बिलख-बिलखकर रोते हैं—दो मित्र अपनी हमजोलियों से बिछुड़ जाने पर रो रहे हैं। 'सालू' और सुग्गा (दो पक्षी—दो मित्र) नाचने जाते हैं। तराई और टाँड़ के रहनेवाले 'दोवा' और 'आसकल्' पक्षी लासा लगाकर पकड़े जाते हैं—दो युवतियाँ प्रलोभनों से फँसा ली जाती हैं। मनुष्यों की एक कुरूप लगनेवाली जोड़ी एक बच्चे के लिए 'बण्डा कुत्ता' और 'नटरी सूअर' बन जाती है। 'निशी' और 'चाड्ड' नाच देखने जाते हैं। लेकिन, घर के पीछे 'बाज' और 'सिकरा' बैठे हुए हैं—दो लड़कियाँ नाचने जाना चाहती हैं; पर घर के पीछे माँ-बाप बैठे हुए हैं।

उपमा और रूपक :

मुण्डा-गीतों में बड़ी सुन्दर उपमाओं का प्रयोग किया गया है और वैसे ही मनोहर रूपकों का भी, जो दृश्य के रूप-विधान में चार चाँद लगा देते हैं।

१. आला।कन-बा लेक डियडा-सोमय।

जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है।

२. मरङ्-गाड़ चिरपी लेक मइनम् बिजिर-बिजिर ।
बड़ी नदी की चिरपी (मछली-विशेष) के समान बेटी, तुम फुदकती फिरती हो ।

३. पुतम् लेक होलङ् जुड़ि-जन ।
पण्डुक के समान हमारी जोड़ी हुई ।

४. हेसः-सकम् लेक सलु बिउरेन् में हो ।
हे सालू (सुग्गा), पीपल की पत्ती की तरह घूम-घूमकर नाचो ।

५. हाय गतिञ् सोना हुन्दि-बा........।
हे प्रिय (यह) सोना के समान हुन्दी फूल ।

६. समड़ोम् लेक गेको जोगाओ लेद् मेश्र ।
तुमको सोना के समान जुगाकर रखा ।

७. मएनो लेकगे बाबुरे कजि इतुन् मे ।
हे बाबू, मैना के समान (बोल-बोलकर) बोली सीख लो ।

८. चिलक कड़े-बा बातन एनूका पुँजी हिजुःतन ।
चिलक कड़े-बा उरुड़तन एनूक पुँजो सेनोःतन ।
जिस प्रकार कास फूलता है, उसी प्रकार धन आता है और जिस प्रकार कास झड़ जाता है, उसी प्रकार धन चला जाता है ।

९. सुगड़ मिरु-मोचरेञ् चोःलेम ।
(आओ) तुम्हारे मिरु के समान सुन्दर मुख को चूम लूँ ।

आलम्बन और उद्दीपन :

वसन्त और प्रकृति के शृंगारों का वर्णन आलम्बन और उद्दीपन के रूप में किया गया है, जो विरह-मिलन की अनुभूतियों को बढ़ाते हैं, रात-दिन नाचने को प्रोत्साहित करते हैं और अपने आकर्षक वातावरण में अटल प्रेम की सौगन्ध दिलाते हैं ।

चित्र-विधान :

कुछ गीतों में मधुर उपमाओं की सहायता से सुन्दर दृश्य अंकित किये गये हैं और समूचा गीत ही एक मधुर चित्र के समान जान पड़ता है ।

एक युवक पानी भरने जाती हुई एक लड़की की छवि पर मुग्ध हो रहा है—

डिण्ड सोमए तइकेन
फूलइ तेगेम् चवबजन
पोलतम् दो न
मइन निरल् सड़ितन्
मइनम् लन्दतने - गे ।
बोओः-रेदो सुतम् बिण्ड,
बिण्ड चेतन् हस-चट्ठु,

सेन् तदम् न—
मइन जिड़िब् जिड़िबतन्
मइनम् लन्दतने - गे।

मपअङ् रेदो नीले साड़ी
साड़ी तदम् ओरे तन्गे
लेलोः तनम् न,
मइन कदल् दरु लेक,
मइनम् लन्दतने - गे।

(तुम्हारा) कुँवारा समय है।
तुम (रूप के) घमण्ड में फूल रही हो,
तुम्हारे पैर की अंगूठी बज रही है,
लड़की, तुम मुसकरा रही हो,
(तुम्हारे) सिर पर सूत का विण्डा है
और विण्डे पर मिट्टी का घड़ा
तुम चली जा रही हो।
(तुम्हारे पैर की अंगूठी) 'जिड़िब-जिड़िब' बज रही है। लड़की तुम मुसकरा रही हो।
तुम्हारी कमर में नीली साड़ी है,
तुम केले के वृक्ष के समान दिखाई दे रही हो,
हे लड़की, तुम मुसकरा रही हो।

अत्युक्ति :

मुण्डा-गीतकार ने कहीं-कहीं व्यंग्य-विनोदवश सुन्दर अत्युक्तियों का प्रयोग किया है। एक 'गेना-गीत' में एक लड़की ने इतना बड़ा खोंपा बनाया है, जिसको फाड़कर हल बनाया जा सकता है। और, इतना बड़ा आँचल फहरा रखा है, जिसमें गाड़ी-भर लकड़ी बाँधी जा सकती है।

अमगः सुपिड़ दोन मइ
दण्ड नपअलो पड़गोअ
अमगः पपल दोन मइ
सगिड़ि सान थोलोअ।

हे लड़की, तुमने इतना बड़ा खोंपा बनाया है, जिसे फाड़कर हल बनाया जा सकता है। और, इतना बड़ा आँचल फहराया है, जिसमें गाड़ी-भर लकड़ी बाँधी जा सकती है। लेकिन, साधारणतः ऐसी कृत्रिम योजनाएँ मुण्डा-गीतकार के स्वभाव के अनुकूल नहीं है।

अभिव्यंजना—मुण्डा-गीतों में बड़ी सुन्दर व्यंजनाओं का प्रयोग किया गया है। लेकिन, उनमें उन्नत भाषाओं के अभिव्यंजनावादी कवियों की कविता की तरह उलझन और रहस्यमयता नहीं है, सरल सौन्दर्य है।

एक प्रेमी अपनी प्रेमिका से जीवन की मझधार में सम्बन्ध तोड़ रहा है और उसे कठिन विपत्तियों में डाल रहा है। वह जवानी के रंगीन दिनों की याद दिलाती है। फिर, युवक उत्तर देता है।

युवती—जीवन की कठिनाइयाँ और विपत्तियाँ।

अट मट बिर्को तलरे
अलोहोम् निरड़् वगिञ
रमकन् मरेच रे
अलोहोम् निर्ज रड़्इञ।

इस घने जंगल में तुम मुझे छोड़कर मत भागो। इस कंटक-भर मैदान में तुम मुझे छोड़कर मत भागो।

जवानी के रंगीन दिनों की याद :

कचिहोम् लेलेलेदिञ
सेङ्गेल् लेकञ् जुलेतन् रे
कचिहोम् चिन लेदिञ्
दः—लेकञ् लिङ्गतन् रे।

क्या तुमने मुझे नहीं देखा था, जब मैं आग के समान चमक रही थी ?
क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना था, जब मैं पानी की तरह उमड़ रही थी ?

युवक—प्रेम अन्धा होता है।

कगे चोअञ् लेलेलेदेम
दिसुमदो दुडुगर् जन्
कगे चोअञ् चिन लेदेम
गमए दो कोअंसि जन्।

मैंने नहीं देखा था, (क्योंकि) दुनिया आँधी की धूल से भरी थी।
मैंने नहीं पहचाना था, (क्योंकि) दुनिया में कुहासा छाया हुआ था।

× × ×

एक लड़की किसी युवक द्वारा ठगी गई है।

होड़ो को तला-अते
इदि कीञम् गड़ते
अतु कीञम् गतिञ

अतु कोञम् गतिञ्
इकिर् दः तल रे।

तुम मुझे लोगों के बीच से नदी में ले गये।
हे प्रिय, तुमने मुझे बहा दिया!
तुमने मुझे गहरे पानी में बहा दिया!

× × ×

एक लड़की प्रेम के उन्माद में माँ-बाप की मर्यादा को बरबाद कर रही है। माँ चेतावनी दे रही है :

बुरु रे-दो सेङ्गेल् मइन
निरे मइन निरेमे
कञ्चि गड् होएओ दुदुगर्
नोजोर् मइन नोजोरे मे।

निरे मइन निरे मे
नेङ्गम् ओड़ः लो तन,
नोजोर् मइन नोजोरे मे
नपुम् रोसोम् बले तन।

नेङ्गम् ओड़ः लो तन् रे
नोर-नोरम् नकी सुपिद्
नपुम् होसोम् बलेतन् रे
डरे-डरेम् नुदुम पएल।

पहाड़ पर आग है। भागो बेटी, भागो! काँची नदी में आँधी आ रही है, भागो बेटी, भागो! भागो बेटी, भागो! तुम्हारी माँ का घर जल रहा है! भागो बेटी, भागो! तुम्हारे बाप का घर उड़ा जा रहा है!

तुम्हारी माँ का घर जल रहा है (और) तुम रास्ते-रास्ते बाल सँवारती फिरती हो! तुम्हारे बाप का घर उड़ रहा है (और) तुम रास्ते-रास्ते आँचल फहराती फिरती हो।

बिम्बग्राहिता या गुणात्मकता :

मुण्डा-गीतों की एक बड़ी विशेषता जो उन्हें अन्य साहित्यों से अलग कर देती है, उनका बिम्ब-ग्रहण है। यह प्रकृति के साथ इनकी निकटता और तादात्म्य-सम्बन्ध का ज्वलन्त प्रमाण है। यह विशेषता प्रकट करती है कि बाह्य प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य के

साथ इनकी इन्द्रियों का कितना सहज सम्बन्ध है। और, इनकी ज्ञानेन्द्रियों के 'लेंस' पर बाह्य प्रकृति का कैसा स्पष्ट चित्र उभरता है। आज की सभ्य भाषाएँ रूप, रस, गन्ध आदि के प्राकृतिक स्वाद को भूल चुकी हैं और जिस प्रकार अपने अप्राकृतिक आहार से स्वाद की शक्तियों को खोकर मनुष्य जीभ को छलने के लिए मिर्च-मसाला का प्रयोग बढ़ाता जा रहा है, उसी प्रकार सरल अनुभूतियों के अभाव में अभिव्यक्ति को प्राणवान् बनाने के लिए सभ्यता ने कृत्रिम विशेषणों और अलंकारों का प्रयोग किया है।

मुण्डा-गीतों में वस्तुओं का यथातथ्य गुणात्मक चित्रण बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। यदि अपनी आदत से लाचार होकर हम उनके इन गुणों का नामकरण करें, तो उन्हें दृश्यात्मकता, ध्वन्यात्मकता, रसात्मकता, गन्धात्मकता, स्पर्शात्मकता, क्रियात्मकता, स्वभावात्मकता आदि नाम दे सकते हैं। मुण्डा-कविता के इन भाव-चित्रों को देखकर उन्नत भाषाओं का विधवापन समझ में आ जाता है।

दृश्य के लिए :

१. **मरङ् बुरु दिअ सेङ्गेल् जिलिब् केन् जिलिब् केन्**
हुडिङ् बुरु मदि मरेसल् जोलोब् केन् जोलोब् केन्

बड़े पहाड़ पर दिया झिलमिला रहा है।
छोटी पहाड़ी पर ज्योति टिमटिमा रही है।

२. **मरङ् गड़ दो गुले गुलेअ,**
हुड़िङ् गड़ दो लेबे लेले,

बड़ी नदी उफनाई हुई है।
छोटी नदी लबालब भरी है।

३. **कुटि-बा रिबि-रिबि,**
नरि-बा गस-गस।

घनाघन कुटी-फूल !
गहगहाया हुआ नरी-फूल !

४. **रिग मिगि जोलो मोलो**

चमचमाता हुआ, झिलमिलाता हुआ।

ध्वनि के लिए :

१. **सेके सेके रोलो रोलो**

'सक-सक' की ध्वनि—'रल-रल' की आवाज।

२. **रिबि रिबि तना,...गस गस तन...**

टपटपा रहा है, झरझरा रहा है।

३. **कित दरु सिले सिले—**
लिटिअ चेगे टिउल् टिउल्

मरमर करता खजूर का वृक्ष !
फुरफुराता हुआ लिटिया पक्षी !

४. **...पिसिर् पिसिर—जड़म् जड़म ।**

(पानी) फिसफिसा रहा है, ...झमझमा रहा है ।

स्पर्श के लिए :

...चिरि बिरिअ—

(काँटा) परपरा रहा है ।

गन्ध के लिए :

१. **गितिल् गितिल् सोअन्,**
सेरेङ् सेरेङ् सिणि:अ

धुलियाया हुआ महकेगा ।
पथराया हुआ गमकेगा ।

२. **मोगो मोगो सुगड़-बा बुगिम् सोअन्**

मह-मह करती हुई, सुन्दर फूल की महक ।

स्वभाव के लिए :

...गिपल् गोपोल्,....केरो केचो ।

....मनमौजी (मुरगा)....कुड़कुड़ी (मुरगी) ।

क्रिया के लिए :

१. **...रुकुअलङ् मे,...दङ्सि अलङ् मे—**
....झरझरा दो, ... भरभरा दो ।

२. **जिलिब् जिलिब्—**
चमका रहा है ।

३. ....**दिले दोगोब, ...तिअर् तोओर**
....झमझमाकर फूल रहा है ....गहगहाकर फूट रहा है ।

पुनरावृत्ति :

अब हम उस प्रधान विशेषता की छटा देखें, जो सारी मुण्डा-काव्यकला का आधार है । मुण्डा-गीतों की प्रत्येक पंक्ति बड़ी सुन्दरता के साथ दुहराई गई है[1], जो गीत के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती है । अगर इस पुनरावृत्ति को हटा दिया जाय, तो सारी मुण्डा-कविता परिमाण में आधी रह जाय और सौन्दर्य में उतनी भी शेष न रहे ।

---

१. पुनरावृत्ति की समीक्षा 'छन्दोविधान' शीर्षक के अन्तर्गत देखें ।

किन्तु, यह पुनरावृत्ति कोरी और सीधी-सादी पुनरावृत्ति नहीं है। यह एक पंक्ति के प्रत्येक शब्द के लिए कभी समानार्थक और कभी विपरीतार्थक जोड़ा प्रस्तुत करती है। कभी पंक्ति के एक-दो शब्द को और कभी पूरी पंक्ति को मनोहर जोड़ों से बदल देती है। इस आवृत्ति में एक लय है, उसके कदमों में एक समगति है। मानों किसी वृक्ष की टहनी पर दो पक्षी सट-सटकर बैठे हुए चोंच मिला रहे हो या जंगल की झाड़ियों के बीच हिरनों की जोड़ी एक साथ छलाँगें मार रही हो। किसी साँचे में ढले हुए समान रूप-रंग के उन शब्दों के प्रयोग को देखकर मुण्डा-गीतकार की सुरुचि और प्रतिभा तथा मुण्डा-भाषा के शक्ति-सामर्थ्य का एक ही साथ पता चल जाता है।

यह आवृत्ति कर्त्ता, कर्म, क्रिया, क्रियाविशेषण, विशेषण सबमें है। और, जैसा ऊपर बताया गया है समानार्थक और विपरीतार्थक दोनों प्रकार की है। 'पहाड़' के साथ 'घाटी', 'टाँड़' के साथ 'जंगल', 'गतिन' के साथ 'सङ्गम्', 'हरिबा' के साथ 'सिसिबा', 'सेके-सेके' के साथ 'रोलो-रोलो', 'रिबि-रिबि' के साथ 'गस-गस', 'लेलेमेअ' के साथ 'चिनमेअ' आदि अनेक रूपों में यह आई है। छवि की इस मनोहर छटा के, जो प्रत्येक गीत में देखी जा सकती है, यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

१. **हिजुः सेनो राजाञ् लेलेमेअ--**
गोसो गोसो राजाञ् लेलेमेअ,
बिउर नचुर् राजाञ् चिनमेअ--
मोरोसो मएल राजाञ् चिनमेअ,
हे राजा, तुमको आते-जाते देखती हूँ,
हे राजा, तुमको सूखा-सूखा देखती हूँ,
हे राजा, तुमको घूमते-फिरते देखती हूँ,
हे राजा, तुमको उदास-उदास देखती हूँ।

२. **पलरे जुड़िरेन् मिरुकिङ्—**
नेलरे हड़ागुन् बेन्,
नेलरे जोतरेन् कारेकिङ्—
नेलरे नोसोरेन् बेन्।
हे मीरू की जोड़ी, उतर आओ।
हे कारे की जोड़ी, उतर आओ।

३. **मरङ् गड़ चिरपि लेक मइनम्—**
बिजिर् बिजिर् मइन।
तुड़िङ् गड़ नपर लेक मइनम्—
बिअन, बोएओन मइन।

हे बेटी, (तुम) बड़ी नदी की चिरपी
(एक मछली) के समान फुदकती फिरती हो।
हे बेटी, (तुम) छोटी नदी की 'नयरा'
(एक मछली) के समान उछलती फिरती हो

४. सोमए सेनो जन् देअम् कुब जन्
नुसड़ बिरड़ जन् जोअम् रेयो जन्

समय चला गया, कमर झुक गई।
दिन बीत गये, गाल पिचक गये।

कथनोपकथन :

लगभग सारे मुण्डा-गीत वार्त्तालाप के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। जो प्रकृति के रंगमंच पर जीवन-नाटक के सजीव अभिनय के समान जान पड़ते हैं। वास्तव में, इनका सर्जन रंगमंच के लिए ही हुआ है। अधिकांश गीत नृत्य-गीत हैं, नृत्य का अखाड़ा उनका रंगमंच है और गीतों में आकुल हृदय का विकल निवेदन भरा हुआ है, और अन्य गीत भी पठन-पाठन या अध्ययन-अध्यापन के लिए नहीं, वरन् गाने के लिए बने हैं, जिनमें जीवन के विस्तृत रंगमंच पर दूर या पास के किसी संगी के प्रति पुकार भरी हुई है। इस सामाजिकता-प्रिय जाति के ये गीत न तो आध्यात्मिक आत्मनिवेदन हैं और न दूर के किसी 'अन्यपुरुष' के प्रति नीरस उपदेश हैं। ये सीमित जीवन की सीमाओं में क्षण-क्षण उपस्थित होनेवाले भावावेग हैं, जो स्वाभाविक रूप से मध्यमपुरुष पर ही आश्रित हो सकते हैं और वहीं पर अपने मन का भार हल्का कर देते हैं। मुण्डा के हृदयाकाश के इन बादलों को न समुन्दर का पता पूछना है, न 'ऑक्सिजन-हाइड्रोजन' का भेद समझना है, वे केवल सामने की धरती को पहचानते हैं।

ये गीत 'गति-संगम' (प्रिया-प्रियतम), माँ-बेटी, पिता-पुत्र, दादा-भाई, दीदी-बहन, किन्हीं दो व्यक्तियों के वार्त्तालाप हैं, इनमें 'हरिबा' और 'सिसिबा', 'मीरु' और 'कारे', 'निसी' और 'चाडू' कभी प्रकृति-रूप में और कभी सहेली, मित्र या प्रेमी के रूप में बातचीत करते हैं। मित्र और प्रेमी गोपनीय अभियानों के लिए फूलों और पक्षियों के रूप में ही अधिकतर आये हैं। प्रायः सारे मुण्डा-गीतों में प्रश्न और उत्तर की सम्मिलित गत बज रही है।

इस प्रकार, मुण्डा-गीत या तो पारिवारिक सम्बन्धों के मनोहर दृश्य हैं, या नर-नारी की शाश्वत प्रणय-कहानी हैं या प्रकृति और पुरुष के चिरन्तन सम्मिलन हैं।

एक प्रधान विशेषता :

मुण्डा-गीतों में यद्यपि प्रेम के भावों की प्रचुरता है; किन्तु जैसा पहले कहा जा चुका है, उसमें संयम और मर्यादा का यथेष्ट पालन किया गया है। गीतों के इस पारदर्शी स्वरूप में मुण्डा-जीवन का संयम और अनुशासन स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ता है। यद्यपि इस समाज में बहुत दूर तक उन्मुक्त प्रेम की स्वीकृति है; किन्तु इतना होते हुए भी गीतों में यौन भावों या यौन शब्दावली का एकदम अभाव है। सभ्य और संस्कृत कहे

जानेवाले सारे साहित्यों में हम जिन नख-शिख अंगों, उद्दीपक चेष्टाओं और कभी-कभी तो निर्लज्ज क्रियाओं आदि के शब्दों की भरमार पाते हैं, उनका इस पिछड़ी कही जानेवाली जाति के गीतों में अभाव देखकर आश्चर्य होता है और उससे भी बढ़कर आश्चर्य तब होता है, जब हम अन्य आदिवासियों के गीतों को उनसे वंचित नहीं पाते ! बहुत-सी आदिवासी जातियों की कविता में इन शब्दों और भावों की छूट है। कभी-कभी तो प्रत्यक्ष रूप में और कभी-कभी प्रच्छन्न रूप में कहावतों आदि के द्वारा यौन शब्दों, भावों और क्रियाओं का प्रयोग किया गया है। **एल्विन** ने अपनी 'दि बैगा' पुस्तक में बैगाओं द्वारा यौन भावों के लिए ऐसी कहावतों के प्रयोग के बहुत-से उदाहरण प्रस्तुत किये हैं और गीतों के उस स्वरूप में उनके सामाजिक जीवन का प्रतिबिम्ब दिखलाया है।

किन्तु, जब हम मुण्डा की सामाजिक व्यवस्था की दृढ़ता देखते हैं, तब न केवल यह रहस्य समझ में आता है, वरन् हमारा आश्चर्य भी श्रद्धा में परिणत हो जाता है।

नृत्य के अखाड़े में जहाँ अन्य आदिवासियों में लड़के-लड़कियों की कतारें आपस में मिल जाती हैं, वहाँ मुण्डा-अखाड़ों में दोनों के बदन का स्पर्श वर्जित है। जहाँ लड़कियाँ केवल आपस में जुटकर नाचती हैं और वहीं लड़के उनको अछूता रख उछल-कूद मचाते हैं। जहाँ उच्छृंखल युवक अव्यवस्थित रूप में उछलते-कूदते हैं, वहाँ लड़कियाँ एक समगति से पैरों को उठातीं-गिरातीं और नारी की मर्यादा के अनुकूल अपनी आवाज को और भी बारीक बना लेती हैं, मानों स्वर की लजीली दुलहिन घूँघट की ओट से झाँक रही हो। विवाहिता युवतियाँ केवल पर्व के दिन नृत्य में सम्मिलित होती हैं ; किन्तु तभी तक, जबतक नाच देखने के लिए गाँव-भर के बूढ़े-बूढ़ियाँ वहाँ एकत्र होते हैं। और, वे उस समय से पहले ही अखाड़ों से विदा लेती हैं, जब वृद्धजन अन्य लड़के-लड़कियों को रात-भर उन्मुक्त रूप से नाचने के लिए छोड़कर घर लौट आते हैं।

मुण्डा-गीतों पर इस संयम और मर्यादा के जातीय संस्कार का प्रभाव है, जिसके कारण उनमें यौन और अश्लील भावों का कोई स्थान नहीं है।

छन्दोविधान :

मुण्डा-गीतों में काव्य और संगीत के तत्त्व मिल-जुलकर इस प्रकार एकाकार हो गये हैं कि उनकी अलग विवेचना नहीं हो सकती। ये रस से भरे हुए गीत संगीत के साँचे में ढले हैं और संगीत के 'चाक' पर ही इनका सर्जन हुआ है।

फिर भी, इन गीतों में काव्योचित छन्द और लय हैं और इनके चरणों में पद्यात्मक यति और गति हैं। मुण्डा-गीत साधारणतः तीन पदों के होते हैं। जैसे रेकार्डों पर नपे-तुले गीत ही चढ़ाये जा सकते हैं, वैसे स्वभाविक रूप से ही मुण्डा-गीत इतने बड़े बनाये गये हैं, जो नृत्य के एक ताल में समाप्त हो जायँ। वास्तव में, ये नृत्य-गीत हैं और परम्परा ने बहुत दिनों तक प्रयोग करके यह निर्धारित किया है कि इन्हीं तीन पदों की अवधि में नृत्य के उतार-चढ़ाव समाप्त होते हैं, भाव और उमंग 'क्लाइमेक्स' पर चढ़ते हैं और पैरों की गति क्षण-भर विश्राम लेने के लिए बन्द हो जाती है।

कुछ गीत, जो बहुत कम हैं, चार पदों के भी हैं और एक-आध पाँच पदों के भी। इन गीतों में तुकान्त का विधान है और केवल तुकान्त में ही नहीं, वरन् गीत के

प्रत्येक प्रधान शब्द में ऊपर और नीचे की पंक्तियों में एकरूपता होती है, जैसा कि काव्य-कला के विश्लेषण में बताया गया है—दूसरी पंक्ति के अधिकांश शब्द पहली पंक्ति के शब्दों के समानार्थक या विपरीतार्थक प्रत्युत्तर होते हैं।

पंक्तियों की लम्बाई समान होती है और उनमें एक गति होती है। यद्यपि यह लम्बाई हिन्दी के मात्रिक या संस्कृत के वार्णिक छन्दों के अनुसार नहीं होती और अरबी, फारसी तथा उर्दू के छन्दों के वजन की पद्धति भी इनमें नहीं होती, फिर भी काव्य की प्रधान वस्तु जो पद्य को गद्य से पृथक् करती है, इनमें बहुत अधिक होती है। और, यद्यपि गीतों के लिए वृत्त की किसी निश्चित मात्रा या वर्ण का विधान नहीं है, किन्तु वाद्यों के तालों और वाद्य-वृत्तों का विधान निश्चित बोलों द्वारा निर्धारित किया गया है। वाद्यों के यही बोल संगीत को निर्देशित करते हैं। गीतों की पदावली संगीत में बाजे के बोलों के ही समानान्तर चलती है और संकोच, प्रसार, ह्रस्व-दीर्घ और प्लुत के द्वारा अपने आकार-प्रकार घटा-बढ़ा लेती हैं।

पद बहुधा दो पंक्तियों के होते हैं और ध्यान से देखने पर इनमें भी संगीत का ही हाथ दिखाई देता है। भावों के स्पष्टीकरण के लिए, स्वर को मर्यादा-भर चढ़ाने के लिए, वाणी में सन्तुलन स्थापित करने के लिए और गीत की दूसरी डाल को उचककर पकड़ने के लिए प्रत्येक गायक को पंक्तियों को दुहराने की आवश्यकता पड़ती है। मुण्डा-गीतों में पंक्तियों की पुनरावृत्ति का रहस्य यही है। किन्तु, अन्य गीतों में जहाँ यह पुनरावृत्ति कविता से अलग केवल गाने में ही स्थान पाती है—गीत से अलग संगीत में ही, वहाँ मुण्डा ने अपनी कविता में ही इसको स्थान दिया है। बहुधा दूसरी पंक्ति का कोई अलग अर्थ नहीं होता। साथ ही आवृत्ति के सिवा उसके प्रयोग की और कोई उपयोगिता नहीं है; किन्तु उसके परिवर्त्तित शब्द संगीत को बड़े कलात्मक ढंग से प्रभावशाली बना देते हैं और सुननेवाले पर एक बड़ा मोहक प्रभाव डालते हैं। वे एक ऐसे झंकार का वातावरण उपस्थित कर देते हैं, जिसका अभाव पंक्तियों की कोरी आवृत्ति में श्रोताओं को घबरा देनेवाला एक मनहूस दृश्य बनकर रह जाता!

और, मुण्डा-गायक बड़े संयम और अनुशासन के साथ मौसम, ताल और लय की मर्यादा का पालन करता है। वह समय-असमय उच्छृंखल ढंग से भैरवी, असावरी और विहाग की खिचड़ी नहीं पकाता।

बाजों में मुख्यतया माँदर, ढोल और नगाड़े बजाये जाते हैं, जिनके बोल उनकी ध्वनियों के अनुरूप बनाये गये हैं। माँदर धीरे-धीरे अब कम हो रहा है और उसका स्थान ढोल ले रहा है।

इन बाजों और संगीतों के लय-ताल का विकास बहुत दिनों तक प्रकृति के वातावरण में, एकान्त और शून्यता की परिस्थितियों में, पक्षियों, नदी-निर्झरों आदि के स्वरों में स्वर मिलाकर मुण्डाओं ने किया है। एकान्त राह में राही की ऊँची टेर के समान वन के एकान्त में इन गीतों की टेर भी ऊँची चढ़ती है और फिर वनों-पर्वतों को ध्वनित-प्रतिध्वनित करके दिगन्त में खो जाती है।

गीतकार :

बहुधा लोकगीतकार का परिचय प्राप्त करना बड़ा कठिन होता है। लोकगीत कोई 'रचना' नहीं होते, और उनके पीछे कोई व्यक्तित्व नहीं होता। वे किसी व्यक्ति को केवल निमित्त बनाकर लोकमानस के स्वाभाविक भावों की अभिव्यक्ति होते हैं। 'साधारणीकरण' का सरल भाव अपने बड़े मनोहर रूप में लोकगीतों में व्याप्त होता है। लोकगीत में किसी व्यक्ति-विशेष के विशेष चिन्तन और भिन्न दृष्टिकोण नहीं होते, उनमें वही भाव होते हैं, जो सबके हैं और जिनमें अधिक-से-अधिक समानता है। अपने इस गुण के कारण लोकगीत विना किसी प्रयत्न या प्रकाशन की सामान्यता के 'ईथर' में लहराकर लोकमानस के उन्मुक्त आकाश में फैल जाते हैं।

दूसरे, लोकगीतकार किसी यश, नाम, अर्थ आदि की कामना के विना ही गीतों में अपने स्वाभाविक उद्गारों को प्रकट करता है। उसे अपनी रचनाओं को किसी पत्र या पुस्तक में प्रकाशित नहीं कराना है। उसे इसकी भी चिन्ता नहीं है कि उसके गीतों को जनता ने अपनाया या नहीं। गीतों के पीछे गीतकार के सब जगह मौजूद रहने की स्थिति की कल्पना भी वह नहीं करता। लोकगीतकार का अर्थ, धर्म, काम मोक्ष, किसी भी प्रकार की आकांक्षा से मुक्त व्यक्तित्व नाम और रूप से रहित होकर गीतों में खो जाता है और फिर गीतों के साथ जन-मन में घुलकर सर्वदा के लिए लुप्त हो जाता है।

तीसरे, गीतों के टिकने का सहारा मौखिक परम्परा है। लोकगीत अपने सरल-आकर्षण और गेयता के पंखों पर उड़ते हुए मौखिक परम्परा के आकाश में फैलते जाते हैं। अपने पंखों पर परिचय और इतिहास का बोझ बाँधकर उड़ना उनके लिए सम्भव नहीं है। गीत की मधुर लहरों के अतिरिक्त जो स्वयं बोझ बनने की जगह जीवन का बोझ हलका करने में सहायता करती हैं, जन-मन और किसी बोझ को ढोना पसन्द नहीं कर सकता। समीक्षक जिनके लिए माथापच्ची करता है, वे बातें जनता के लिए न तो सम्भव हैं, न उनमें उसकी कोई दिलचस्पी हो सकती है। किन्तु, अपने गीतकारों के प्रति जनता की मौन कृतज्ञता से बढ़कर और कोई कृतज्ञता नहीं हो सकती और हजारों गीतों को अपने कण्ठ में सुरक्षित रखने और इतनी तन्मयता से गाने से बढ़कर गीतकारों के प्रति श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है?

अस्तु; सभी लोकगीतों की तरह मुण्डा-गीतकारों के भी परिचय का कोई साधन नहीं है। कहना मुश्किल है कि इनके हजारों की संख्या में बिखरे हुए गीत, जो अब जातीय धन बन चुके हैं, किनके-किनके और कब-कब के सिरजे हुए हैं। गीतों में कुछ ऐतिहासिक संकेतों के आधार पर समय का अनुमान किया जा सकता है; पर गीत-कार का पता लगाना सम्भव नहीं है।

शिक्षा के प्रचार के साथ कुछ नाम मिलने लगे हैं। वे या तो उन गीतकारों के हैं, जो शिक्षित रहे और जिन्होंने गीतों में नाम का सिक्का चालू करने का फैशन दूसरों से सीख लिया। नहीं तो फिर, जिनका शिक्षित लोगों से सम्पर्क रहा और उन्होंने

उन नामों को याद रखा और थोड़ा बहुत प्रचारित किया। मगर, ये नाम आधुनिक युग के व्यक्तियों के ही हैं।

मुण्डा-गीतों की यह परम्परा उतनी ही पुरानी है, जितनी मनुष्य के हृदय में अनुराग और मस्ती ! इस आदिम जाति ने मानव-इतिहास के आदिम युग से ही गीत सिरजे और गाये हैं। इसके गीतकारों का इतिहास इस जाति के समान ही प्राचीन है। दो-चार परिचित नाम उस इतिहास-शृंखला की केवल अन्तिम कड़ियाँ हैं। ऐसी दशा में उन अनाम और अरूप गीतकारों की आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के सिवा उन्हें याद करने का और साधन नहीं है। मुझे केवल चार-पाँच नामों का ही पता मिला, जो इस प्रकार हैं—

श्रीबूढ़न सिंह : खूँटी से १४ मील पूर्व बूढ़ाडीह के मानकी थे और खूँटी थाने के प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्त्ता मानकी जूरन सिंह के पितामह थे। उनका गाँव, बुण्डू, तमाड़ और खूँटी के बीच सबसे ऊँचे पहाड़—'सुकन बूरू' की गोद में स्थित है। वे प्रकृतिप्रेमी और मस्त आदमी थे। मानकी थे ही, उनके रसिक स्वभाव के कारण उनके घर पर नौजवानों की जमघट लगी रहती थी और वे अपने रचे हुए गीत सुनाया करते थे। अपने मित्रों के साथ वे उत्साहपूर्वक अखाड़े में भी उतरते थे।

श्रीविनन सिंह : इनका नाम श्रीविनय सिंह है। ये तमाड़ इलाके के निवासी थे। इनके अधिक गीत नहीं हैं और इनके गीतों की पहचान भी कठिन है।

बुधू बाबू : बुधू बाबू मुण्डा-साहित्य को अपनी रचनाओं से समृद्ध करनेवाले सबसे बड़े गीतकार थे। तमाड़ से ढाई मील की दूरी पर 'बबाई कुण्डी' नामक ग्राम में इनका निवास था, जहाँ इनके दो पौत्र अपने परिवार के साथ रहते हैं।

बुधू बाबू के पूर्वज काशीपुर के महाराज से सम्बद्ध और उनके आश्रित थे और इनके प्रपितामह तमाड़ के राजा द्वारा लाये गये थे। बबाई कुण्डी में उन्हें जागीर मिली। उनकी उपाधि 'साय' थी ; किन्तु शिखर-भूमि के निवासी होने के कारण उन्हें 'शिखर' की उपाधि मिली। बुधू बाबू के पितामह का नाम 'माधव शिखर' और पिता का नाम 'गौर शिखर' था। गौर शिखर बलवान् गुणी और मन्त्र-तन्त्र के ज्ञाता थे। कहते हैं कि उन्हें देवी की कृपा प्राप्त थी।

बुधू बाबू का पूरा नाम बुधनाथ शिखर था। इनका जन्म सन् १८३० ईसवी के लगभग और मृत्यु सन् १९०० और १९१० ईसवी के बीच हुई थी। ये लगभग ८० वर्ष जीवित रहे। इनकी शिक्षा केवल बाल-वर्ग तक हुई थी। ये बड़े भक्त आदमी थे। नृत्य और गीत के बचपन से ही प्रेमी थे। इनके गीतों के वे भक्त, जो इनके जीवन की अन्तिम अवस्था में इन्हें देख चुके हैं, बड़ी श्रद्धा से इन्हें याद करते हैं। वे कहते हैं कि बुधू बाबू भावावेश में अखाड़े में नाचते समय नये गीत बनाकर गाया करते थे। बबाई कुण्डी ग्राम में एक बूढ़े ने, जिसने अखाड़े में बुधू बाबू के बूढ़े कदमों के साथ अपने बचपन के कदम मिलाये थे, बड़ी भक्ति के साथ मुझे बताया कि वह जो कुछ बोल गया, सो गीत बन गया।

पाँच परगने की संस्कृति पर चैतन्यदेव के कथा-कीर्त्तन का बड़ा व्यापक प्रभाव है। वहाँ के पाँचपरगनिया लोकगीतों में वह प्रभाव व्याप्त है। बुधू बाबू ने 'रामायण' नाम से १६ और 'प्रीतपला' नाम से ३६ गीतों की रचना की थी, जो प्रायः सब-के-सब पाये जाते हैं। ये सभी करमा-गीत हैं। 'रामायण' में सीता की खोज के लिए बन्दरों की लंका-यात्रा की कथा है। उनका पुल बनाने का उत्साह, अंगद का दूत-कर्म, हनुमान् का नेतृत्व, जामवन्त की सिखावन तथा राम-लक्ष्मण की झाँकी आदि विषय इन गीतों में आये हैं।

'प्रीतपला' में कृष्ण का बचपन, यशोदा का प्यार, कदम्ब, मुरली, गोपियाँ, राधा का प्रेम, रासलीला आदि विषय हैं।

बुधू बाबू के भावपूर्ण और दर्द-भरे गीत पाँच परगना के क्षितिज से काली घटा के समान उठकर अब सारे मुण्डा-संसार पर छा गये हैं। ये ऐसी सरल और स्वाभाविक शैली में लिखे गये हैं और इनमें इतना प्रभाव है कि उन्होंने लोकमानस को अपनी हरियाली से भर दिया है। मुण्डा न होने पर भी बुधू बाबू का मुण्डा-भाषा, शैली और अभिव्यक्ति की कला पर इतना व्यापक अधिकार देखकर स्वयं मुण्डाओं को भी आश्चय होता है। बुधू बाबू के गीतों ने मुण्डा-कण्ठ, राग, भाव और शैली सबको समान रूप से प्रभावित किया है और करमा-गीतों को अपनी कला और विशेषता में अन्य गीतों से बढ़कर बना दिया है।

कहते हैं कि हरी बाबू नामक एक पँचपरगनिया भाषा का गीतकार बुधू बाबू का साथी था। वह मुण्डा-भाषा भो अच्छी तरह जानता था। बुधू बाबू ने अन्तिम समय में उससे अपनी 'रामायण' पूरी करने का अनुरोध किया था; किन्तु उनकी इच्छा पूरी न हो सकी।

गाँजा पीना, शतरंज खेलना और रात-दिन गुनगुनाते रहना, बुधू बाबू की यही दिनचर्या थी और कहते हैं, मृत्यु के समय किसी अनजान शक्ति की आराधना में उनका सिर झुका हुआ था।

किष्टोमोहन शिखर उनके पुत्र थे। वबाई कुण्डी में बुधू बाबू के दो पौत्र जनार्दन शिखर और रुद्र शिखर अपने परिवार के साथ मौजूद हैं।

बुधू बाबू के गीतों में करमा-गीतों की विशेषता पाई जाती है। उनमें बड़ी लम्बी टेर और ऊँची पुकार है। यद्यपि पुनरावृत्ति, कथनोपकथन आदि मुण्डा-गीतों की परम्परागत शैली वहाँ नहीं है; किन्तु गीतों की लहरों में वही करुणा और कम्पन मौजूद है, जो मुण्डा-प्राणों को आन्दोलित करनेवाली वन-रागिनी की निजी विशेषता है। निम्नलिखित प्रसिद्ध गीत बुधू बाबू का ही है—

उरिः गुपिअते गोपाल्
हिजुः लेनएः अकल्-बकल्
अमनगेन् दोअकन
रोक तोअ लोटा रे—

चोःवो लेम
नमः सुगड़ मिरु मोचारे—
चोःवो लेम

राम : ये आधुनिक मुण्डा-भाषा के सबसे प्रमुख गीतकार थे। इनका घर रांगरोंग में था, जो खूँटी-तमाड़ रोड पर—थोड़ा बायें हटकर—खूँटी से १४ मील पर है। सन् १९४७ ईसवी में लगभग साठ वर्ष की अवस्था में लम्बी बीमारी से इनकी मृत्यु हुई। ये शिक्षित थे और प्राइमरी स्कूलों में इन्होंने अध्यापन का कार्य किया था।

इनका गाँव रांगरोंग प्रकृति की मनोरम रंगस्थली है। गाँव से सटा हुआ उत्तर की ओर ऊँचा पहाड़, पहाड़ के ऊपर घनघोर जंगल, ऊपर की झाड़ियों और चट्टानों से घिरा हुआ एक रमणीय सरोवर, सरोवर से पानी की एक धारा बहाई गई है, जो एक ओर तो पहाड़ की मिट्टी को बहाकर लाती है और नीचे के खड्डों को भरकर उन्हें खेत बना रही है। दूसरी ओर नीचे कई धाराओं में बँटकर प्रत्येक आँगन में और सब्जी के प्रत्येक खेत में पहुँचती है। प्रत्येक घर के लोग उसी पानी से धोने-माँजने का सारा काम करते हैं। गाँव की दूसरी ओर धान के खेत हैं, जिनमें बरसात का पहाड़ी पानी सदा कुलबुलाता रहता है।

राम प्रकृति के बड़े प्रेमी थे। वे बहुधा पहाड़ के ऊपर सरोवर के किनारे जाकर बैठा करते थे और वन-देवता के चरणों में अपने मधुर कण्ठ से गीतों के फूल चढ़ाया करते थे।

ये स्वभाव के बड़े मधुर, कोमल और मिलनसार थे। इन पंक्तियों के लेखक को भी उनके घर पर उनसे मिलने और दो दिनों तक उनके सत्संग में रहने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। वह साहचर्य मेरे जीवन की सबसे मधुर स्मृतियों में है।

उनके गीतों में प्रकृति का प्रेम और विरह की पुकार भरी हुई है, मानों फूलों के झुरमुट में कोयल कूक रही हो।

'कितहतु-होर रे....' (किताहातु की सड़क पर....) नामक उनके प्रसिद्ध गीत की वनदेवी अब दुनिया में अकेली है और उसकी अर्चना में आकुल रहनेवाला ऋतुराज उसे छोड़कर सदा के लिए चला गया है।

इनके अतिरिक्त, मुण्डा-गीतों के कोष में अन्य आधुनिक गीतकारों ने भी अपने गीत जोड़े हैं। विषय-शैली आदि की दृष्टि से उनकी नवीनता और आधुनिकता स्पष्ट हो जाती है; पर उनमें कोई नाम विशेष उल्लेखनीय नहीं है।

बाह्य प्रभाव :

अन्य जातियों के सम्पर्क से दूसरी सारी बातों की तरह मुण्डा-गीतों के विषय-शैली आदि पर भी बाह्य प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यों तो, रामकृष्ण-सम्बन्धी गीत मुण्डा-भाषा में पहले से थे; किन्तु करमा-गीतों में रामकृष्ण-सम्बन्धी गीतों की प्रचुरता चैतन्य महाप्रभु के उस प्रभाव से है, जो पाँच परगने की संस्कृति, भजन-कीर्त्तन आदि पर छाया हुआ है।

शैली में कई तरह के बाह्य प्रभाव परिलक्षित होते हैं। रामायण और कृष्ण-सम्बन्धी गीतों के लिए और ऐसे ही अन्य करमा-गीतों के लिए नये सिरजे हुए छन्दों, उपमाओं आदि का प्रयोग हुआ है।

आधुनिक युग के उन गीतों में, जो शिक्षित गीतकारों द्वारा सिरजे गये हैं, आवृत्ति या जोड़ा मिलाने की प्रवृत्ति का पूर्णतया अभाव है। यह शैली न तो मुण्डा-गीतों के श्रेष्ठ गीतकार बुधू बाबू में हैं और न वैसे ही श्रेष्ठ मुण्डा-कवि राम के गीतों में। कथनोपकथन भी प्रायः कम ही मिलते हैं। आधुनिक गीत शुद्ध 'लीरिक'-से जान पड़ते हैं, जिनमें एक ही केन्द्रीय भाव तीन-चार पदों में पिरोया गया है। यह शैली बहुधा विवरणात्मक हो गई है, किन्तु यह शुभ लक्षण है। इससे मुण्डा-कविता को विभिन्न भावों के प्रकाशन की शक्ति प्राप्त हो रही है और जीवन की व्यापक अनुभूतियों से मुण्डा-साहित्य का कोष भरा जा सकता है।

विभिन्न कृत्रिम विशेषणों को अपनाकर आज का मुण्डा-गीतकार अपनी चित्रात्मक और गुणात्मक अभिव्यक्तियों को छोड़ रहा है।

यद्यपि इस प्रकार की नई कविताएँ अपनी भावना में, उन परम्परागत विश्वासों और मान्यताओं से तथा अपनी कला में, उन परम्परागत अभिव्यक्तियों से कभी-कभी अलग पड़ जाती हैं, जिनके कारण कोई साहित्य लोक-साहित्य या लोकवार्त्ता के अन्तर्गत आता है ; किन्तु वे अब भी शिक्षित हो रहे लोकमानस के सामान्य धरातल से अलग नहीं हो सकी हैं और फिर, मुण्डाओं के जीवन में अभी वह समय नहीं आया है, जिसमें उनके साहित्य का 'लोक' और 'अभिजात'-वर्गों में वर्गीकरण किया जाय तथा उनकी अलग-अलग विवेचना प्रस्तुत की जाय ! वहाँ लोक और अभिजात-वर्ग की वार्त्ताएँ अलग-अलग नहीं हैं। वहाँ तो जो कुछ है, लोकवार्त्ता ही है। फिर भी, लोकवार्त्ता की मर्यादा को बनाये रखने के लिए और इस जाति की मौलिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए गीतों की विवेचना में इनके मौलिक और परम्परागत भावों पर ही ध्यान दिया गया है। और, जैसा कि पाठकों को स्मरण होगा, काव्य-कला आदि की विवेचना में ये नये और सुन्दर गीत भी समीक्षा-क्षेत्र से बाहर छोड़ दिये गये हैं। किन्तु, ये गीत मुण्डा के प्राणों में इस प्रकार समा गये हैं कि इनकी मूल प्रवृत्तियों पर ध्यान रखने के अतिरिक्त समीक्षा से उन्हें अलग रखने का और कोई औचित्य नहीं है।

राम और कृष्ण-सम्बन्धी गीत बड़े स्वाभिाविक रूप से मुण्डा-प्राणों में समाये हुए हैं। ये गीत मुण्डा-जीवन के आदर्शों और अभिरुचियों के अनुकूल हैं। कृष्ण-सम्बन्धी गीतों में साँवले-सलोने, घने-घुँघराले बालोंवाले, मोर-पंख खोंसे और बाँसुरी बजानेवाले कृष्ण की मनोहर छवि ; गोचारण, (वृन्दा) वन और गाड़ (यमुना नदी) का किनारा, राधा की प्रेमविह्वलता और करुण पुकार, ये दृश्य मुण्डा के लिए नये नहीं हैं। आप इन जंगलों में जाकर देखें, हजारों कृष्ण अपनी मधुर बाँसुरी से स्वर्गीय अमृत की वर्षा कर रहे है और हजारों राधाएँ उन विह्वल रागिनियों पर अपना तन-मन न्योछावर कर नृत्य-निरत हैं।

और, रामकथा भी इनके आदर्शों के अनुकूल है। उसमें हनुमान्, अंगद तथा जामवन्त की आई हुई कहानी, वीरों का लंका पर चढ़ाई करने का उत्साह, रावण-राज्य को मिटाकर राम-राज्य की स्थापना में सहयोग देना, इनके अपने ही पूर्वजों का इतिहास है। यद्यपि ये जिन्हें प्रत्यक्षतः भूल गये हैं, तथापि उन चरित्रों की सूक्ष्म सत्ता इनके प्राणों में अनजान रूप से विद्यमान है। उस अनजान प्रेरणा से राम-सम्बन्धी गीतों की ओर प्रेरित हो जाना इनके लिए बिलकुल स्वाभाविक है।

लेकिन, मुण्डा-भाषा में पाये जानेवाले ईसाई भजनों की बात अलग है। इस भाषा में सैकड़ों की संख्या में ईसाई भजन भी गाये जाते हैं ; किन्तु ये मुण्डा लोक-साहित्य के कोश से स्वाभाविक रूप से ही अलग हो जाते हैं। ये मुण्डा-लोकमानस में खिले हुए कमल नहीं हैं। ये ईसाई बन जानेवाले मुण्डाओं पर धर्म-प्रचार के लिए ऊपर से लादे हुए भजन हैं। लोकमानस की हत्या करके उसके खँडहर पर स्थापित होनेवाले इस माया-भवन को हम लोक-साहित्य की संज्ञा नहीं दे सकते। ईश्वर की महिमा में गाये जानेवाले इन सुरीले भजनों के सर्जन में, मिशनरियों के बायें कन्धे पर सवार पृथक्करण का षड्यन्त्र रचनेवाले शैतान का हाथ है! ईश्वर की खोज में भटकनेवाले ये भजन स्वयं अपने ही घर का पता नहीं जानते। इन भजनों में छन्द, लय, बाजों के ताल आदि सारी बातें बलपूर्वक अलग कर दी गई हैं और सब कुछ कृत्रिम रूप से नई बनाई गई हैं। यह परिवर्त्तन इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि धर्म-प्रचार के पीछे इन भोले-भाले आदिवासियों को अपनी वास्तविक वार्त्ताओं से अलग करके विदेशी रंग में ढालने का कितना घृणित उद्देश्य छिपा हुआ था। धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देनेवाले भारतीय शासन के समक्ष मिशनरियों की यह विदेश-सापेक्षता क्या कभी आयगी भी ?

ईसाई बन जानेवाले मुण्डाओं को उनके हृदय में उठनेवाले नाना भावों को मिटाकर केवल धार्मिक भाव सिखाये गये और इस अप्राकृतिक व्यापार द्वारा उन्हें बगुला भगत बनाने की कोशिश की गई। क्रिश्चियन भी मनुष्य हैं और प्रेम, विरह, मिलन, हर्ष, विषाद आदि भावों के बादल मानव-मात्र की तरह उनके हृदयाकाश में भी अपनी छटा दिखाते हैं। प्रकृति के सौन्दर्य और जीवन के घात-प्रतिघात उनके हृदय-सरोवर में भी लहरें पैदा करते हैं। किन्तु, उन्हें केवल धर्म के 'बाइबलिकल' गीत ही गाने पड़ते हैं। इन धर्मप्रचारकों की इस घृणित मनोवृत्ति की चर्चा करते हुए श्रीआर्चर ने लिखा है कि "उस इंगलैण्ड की लोक-कविता में भी, जहाँ शत-प्रतिशत क्रिश्चियन हैं, 'बाइबलिकल' भाव कुछ ही प्रतिशत हैं।"[1]

और, यहाँ की हालत यह है कि अपने जीवन में मानव की सभी भावनाओं के घात-प्रतिघात से भरे हुए क्रिश्चियन गीतों में केवल भक्त हैं।

यही हाल शैली का भी है। उनसे वे राग, ध्वनियाँ और लय-ताल छुड़ा दिये गये, जिन्हें उनके पूर्वजों ने हजारों वर्षों में भारत के पक्षियों के मधुर कलरव से, यहाँ के जंगलों की गाती हुई वायु से, यहाँ के नदी-निर्झरों के अविरल प्रवाह से सीखकर तथा

---

१. डबल्यू० जी० आर्चर : मुण्डा साँग्स्, भूमिका, पृ० २।

उनके सरगम से गति लेकर बनाया था, जिनके मधुर हिंडोलों पर इनकी जाति ने बचपन की लोरी सुनी थी, जवानी की बाँसुरी बजाई थी और बुढ़ापे के सुख-दुःखों की सनातन कहानी सुनी-सुनाई थी और उन्हें यूरोप की अपरिचित, कर्णकटु और अप्राकृतिक रागिनियाँ जबरदस्ती सिखा दी गईं।

इस प्रकार, प्रचार के उद्देश्य से बनाये गये इन कृत्रिम भजनों का लोक-साहित्य में कोई स्थान नहीं है।

प्रभाव और उपयोगिता :

मुण्डाओं के लिए : मुण्डाओं के जीवन पर इन गीतों का बड़ा व्यापक और गहरा प्रभाव है। ये गीत उनके जीवन की सूखी धरती पर हरियाली की तरह छाये हुए हैं। इतने दुःखों और विपत्तियों के जीवन में गीत-नृत्य का होना इनके लिए बड़े सौभाग्य की बात है। ये गीत-नृत्य इनके प्राणों में शक्ति और हाथ-पैरों में काम करने का बल भरते हैं।

सच पूछिए, तो जीवन में जितना महत्त्व बुद्धि, कर्म तथा अन्य साधनों का है, उससे अधिक महत्त्व आनन्द और मनोरंजन का है। जैसे आध्यात्मिक जगत् में साधन-रूप सत् और चेतना-रूप चित् से युक्त होकर भी प्राणी आनन्द के विना पूर्णता नहीं प्राप्त करता, वैसे ही भौतिक जीवन में भी विभिन्न साधनों तथा मानसिक शक्तियों से पूर्ण होने पर भी आनन्द और मनोरंजन के विना मनुष्य अपूर्ण है। जीवन को रसमय और सुखी बनाने के लिए मनुष्य की रागात्मक वृत्तियों की तृप्ति आवश्यक है। मनुष्य चाहे जितना भी ज्ञानी और कर्मठ हो ; किन्तु इस तृप्ति के विना उसमें जीवन के प्रति श्रद्धा और अनुराग नहीं पैदा होते। मनुष्य अपनी इस प्यास के लिए लाचार है। अच्छे साधनों के अभाव में वह या तो बुरे साधनों से ही इस प्यास को बुझाता है या जीवन की डाल से मुरझाकर गिर जाता है। जब यह प्यास सात्त्विक होती है और पवित्र गंगाजल से बुझाई जाती है तब मनुष्य ब्रह्मानन्द को प्राप्त करता है और जब यह गन्दी प्यास पनालों में मुँह, लगाती है, तब तरह-तरह के अनैतिक व्यभिचारों का जन्म होता है। बीच की मंजिल मानवता की है।

मुण्डाओं के आनन्द और मनोरंजन की मंजिल यही है। यद्यपि यह मनुष्य की उच्चतम वृत्तियों का आत्मिक आनन्द नहीं है, किन्तु यह आनन्द निकृष्ट कोटि का भी नहीं है। यह मानवता का सामाजिक आनन्द है। यह ऐसा उत्तम मनोरंजन है, जो समाज की मर्यादा के भीतर रहकर चलता है, जो किसी से छिपाने की वस्तु नहीं और जिसके लिए लज्जित होने की आवश्यकता नहीं।

मुण्डाओं के गीत-नृत्य की भारत के अन्य सभ्य समाजों के गीत-नृत्य से तुलना कीजिए। अन्य समाजों में गायक, नर्त्तक और अभिनेता समाज में हीन समझे जाते हैं। तात्पर्य यह है कि हमारे मनोरंजन के साधन वे वस्तुएँ हैं, जिन्हें हम हीन समझते हैं और जिन्हें स्वयं करने में मर्यादा-भंग होने और लज्जित होने की बात है। वह मनोरंजन कितना निकृष्ट है, जो घृणित समझी जानेवाली वेश्या के नृत्य से प्राप्त किया जाता है। किन्तु, मुण्डा उन गीत-नृत्यों से मनोरंजन करता है, जिन्हें अपनी बहन-बेटी के सामने भी

छिपाने की आवश्यकता नहीं समझता और जिनमें उनको भी सम्मिलित करता है। यह मुण्डाओं की जातीय संस्कृति उनके लिए गौरव की बात है।

यह ठीक है कि इस संस्कृति में कुछ विकृति के अंश भी सम्मिलित हो गये हैं। 'हँड़िया' और शराब वैसी ही प्रवृत्ति है। इनके प्रभाव उनके आनन्द और मनोरंजन को निम्न कोटि का बना देते हैं। किन्तु, इसे मुण्डाओं ने जान-बूझकर नहीं किया है। अज्ञानता और गरीबी ने इन नशाओं का अवलम्ब लेने के लिए उन्हें बाध्य किया है। ये बुराइयाँ, जिनके लिए मुण्डा निरीह और निर्दोष हैं और जिनका उत्तरदायित्व सभ्य समाजों पर है, उनके आनन्द और मनोरंजन के सांस्कृतिक तत्त्व की महत्ता को घटा नहीं सकतीं। जीवन में आनन्द और मनोरंजन के तत्त्वों को स्वीकार कर लेने के बाद हमें यह समझने में आसानी होनी चाहिए कि स्वस्थ और कल्याणकारी मनोरंजन वही है, जो विकेन्द्रित और स्वावलम्बी हो। जीवन में यदि स्वावलम्बन का महत्त्व है, तो यह नहीं हो सकता कि हम कुछ बातों में स्वावलम्बी और कुछ बातों में परावलम्बी रहें। और उससे भी खतरनाक बात यह होगी कि आनन्द के तत्त्वों का केन्द्रीयीकरण हो जाय। कुछ लोग आनन्द का उत्पादन करें और बाकी लोग उपभोग करें! तुम 'काम करने का' कार्य करो और हम 'खाने' का कार्य करें, यह कार्य-विभाजन (डिवीजन ऑव लेबर) मानव-संस्कृति की आत्मा को ही खतरे में डाल देगा। गीत-नृत्यों ने मुण्डाओं को स्वस्थ, स्वावलम्बी और विकेन्द्रित आनन्द प्रदान किया है।

तात्पर्य यह कि मुण्डाओं के गीत-नृत्य उनकी मानसिक शक्तियों की कमी और जीवन-यापन के साधनों के अभाव में भी उनके उस आनन्द को बनाये रखने में समर्थ रहे हैं, जिसके विना उनकी जाति की जिन्दगी खतरे में पड़ गई होती।

अध्येताओं के लिए : इनके जीवन के अध्येताओं के लिए इन गीतों की उपयोगिता दूसरी ही है। हम इनके गीतों में इनके सामाजिक जीवन, मानसिक अभिरुचि और भावनाओं-आकांक्षाओं को स्पष्ट रूप में देख सकते हैं। इन गीतों के माध्यम से हम जितना इनके निकट जा सकते हैं, उतना अन्य किसी साधन से नहीं; अन्य साधनों से हम इनका इतिहास जान सकते हैं। इनका जातीय, सामाजिक या धार्मिक विश्लेषण कर सकते हैं; इनके चरित्र और स्वभाव को पहचान सकते हैं; किन्तु गीतों से हम इनकी अनुभूतियों को पहचानते हैं। हम मुण्डा-गीतों में मुण्डा का हृदय देखते हैं। मगर, इन कविताओं का केवल साहित्यिक मूल्य ही नहीं, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व भी है।

किन्तु, सबसे बड़ा उपयोग इन कविताओं का यह है कि ये जाति-धर्म-रूप-रंग आदि की भिन्नताओं को भेद कर छोटे-बड़े और सभ्य-असभ्य कहे जानेवाले विभिन्न मानव समुदायों के भीतर जो एक आत्मा और एक हृदय है, उसका दर्शन कराती हैं। इन लोक-कविताओं से हमें पता चलता है कि रूप-रंग की ऊपरी चट्टानों के भीतर जीवन की एक ही निर्मल धारा बह रही है और विभिन्नता के ऊपरी छिलकों के भीतर एक ही रस छलक रहा है। गीतों की आँच में पड़कर हमारे घृणा, नफरत और अलगाव-बिलगाव के संस्कार जलकर भस्म हो जाते हैं और गीतों के गंगाजल में हमारे मन की मैल धुल जाती है। जिन बाह्य और कृत्रिम आवरणों के कारण हमें प्रकृत मनुष्य दिखाई नहीं

देता, उन्हें भेदकर ये गीत मानव के वास्तविक रूप का दर्शन कराते हैं। गीत वह तीर्थ-स्थल है, जहाँ युगों के बिछुड़े हुए मानव-मानव का मिलन होता है।

श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में यदि सभी देशों के लोकगीत संकलित किये जायँ और उनका तुलनात्मक अध्ययन हो, तो यह प्रत्यक्ष होगा कि उनमें एक ही मन और एक ही हृदय छिपा है, जो मनुष्य-मात्र में समान है।

और डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में—"इन असंख्य लोकगीतों की आत्मा अभिन्न है। भाषा का भेद होते हुए भी गीतों में व्याप्त भारतीय मानव का हृदय उसके सुख-दुःख की अनुभूति, उसकी आशा और निराशा एक जैसी ही है।"

उपसंहार :

मुण्डाओं के ये प्रकृत गीत उनकी जाति के लिए गौरव की वस्तु हैं। उन्हें इस बात का अभिमान होना चाहिए कि इतने महान् दुःखों और विपत्तियों को भी उत्साहपूर्वक काट लेने के लिए उनकी जाति ने इतने निश्छल, निरीह और पवित्र साधनों का निर्माण किया है। सभ्यता के भड़कीले आवरणों की चकाचौंध में पड़कर उन्हें इन नैसर्गिक और निर्दोष परम्पराओं के लिए लज्जित नहीं होना चाहिए। यह लज्जित होने की प्रवृत्ति एक निकृष्ट कोटि की गुलामी है, जो अनेक अनर्थों को जन्म देती है और दूसरों की बहुधा बुरी बातों में ही रुचि पैदा कराती है। मनुष्य को ऐसी मानसिक स्थिति में डाल देने-वाली मार्मिक घड़ी एक प्रबल धारा के समान है, जिसमें उसके पैर जम नहीं पाते और एक आँधी के समान है, जिसमें पड़कर उसे दिग्भ्रम हो जाता है। शिक्षित हो रहे मुण्डाओं और उनके सच्चे शुभचिन्तकों को इस बात में सावधान होना चाहिए।

तेजी से बदलते हुए इस वैज्ञानिक युग में जहाँ कुछ लोगों का यह कहना ठीक नहीं है कि आदिवासियों को अपने-आप प्राकृतिक रूप से सुधरने दिया जाय, वहाँ अन्धाधुन्ध सुधार के नाम पर अप्राकृतिक प्रणालियों को अपना लेना भी ठीक नहीं। इससे जो सुधार होगा, वह कृत्रिम और अस्वस्थ होगा। निस्सन्देह, वह हर सुधार अस्वस्थ होगा, जिसमें आदिवासियों के अपने स्वभाव, अपनी पृष्ठभूमि और अपनी मनोदशा का खयाल नहीं करके सुधारक अपनी इच्छाओं और आदर्शों को अधिक महत्त्व देंगे।

अज्ञानता और गरीबी ये दो आदिवासियों के सबसे बड़े शत्रु हैं। निश्चय ही इन्हें मिटना चाहिए। किन्तु वे कैसे मिटें? क्या यह मानकर कि जंगल और पहाड़ ही इसके लिए जिम्मेवार हैं, इसलिए सारे आदिवासी तथाकथित शिक्षा और सभ्यता के लिए शहरों में बस जायँ? क्या इन जंगलों और पहाड़ों की सारी बातों को घृणित समझकर छोड़ दिया जाय और शहरों की सारी बातों को अपना लिया जाय या सभ्यता और शिक्षा की ज्योति इन जंगलों-पर्वतों में जलाई जाय? आखिर, आदिवासियों को क्या चाहिए, ज्ञान और विद्या या नगरों की सभ्यता का मादक नशा—जिसे पीकर मानव आज अपनी नैसर्गिक अभिरुचियों को कृत्रिम सभ्यता के बाजार में बेच रहा है? और, मानवता दूसरों से स्वतन्त्र होकर भी अपने ही बनाये हुए गुलामी के मायाजाल में दम तोड़ रही है; या विद्या की वह पावन ज्योति, जिसमें उनके जंगल रसमय हो जायँ, पहाड़ों में प्रेम की वंशी गूँज उठे, और उनके खेत-खलिहान जीवन की समृद्धियों से भर जायँ?

आदिवासियों के पिछड़ेपन के लिए ये जंगल और पहाड़ दोषी नहीं हैं और गाँवों तथा खेत-खलिहानों में विकेन्द्रित इनकी सभ्यता पर इसका उत्तरदायित्व नहीं है। इन्होंने तो बहुत दूर तक इनकी रक्षा ही की है। वन-पर्वतों के प्राकृतिक जीवन में सभ्यता और संस्कृति के ऐसे नैसर्गिक तत्त्व निहित हैं, जिनको लेकर ही भविष्य की सारी मानवता निर्मित होगी। यह ठीक है कि वे तत्त्व ज्ञान की किरणों के अभाव में विकसित नहीं होने पाये, अज्ञानता के हिम-तिमिर में उनके अंकुर दुबके पड़े रहे; किन्तु अब समय आ गया है कि ज्ञान की उष्ण किरणें उन्हें विकसित और पल्लवित-पुष्पित करेंगी, उनकी शीतल छाया में मानवता प्यार की वंशी बजायगी और उनकी पावन गन्ध में सुख-चैन की साँस लेगी।

आज की सभ्यता को अपने इन विकृत प्रयोगों के रास्ते, बेकार बड़ी लम्बी दूरी तय करने के बाद, फिर पीछे लौटकर, संसार को मिटने से बचाने के लिए मानवता की जिस मंजिल पर पहुँचना पड़ेगा, वह पवित्र मंजिल आदिवासियों के लिए अपेक्षाकृत निकट है। जंगलों और पहाड़ों की संस्कृति को जहाँ केवल आगे बढ़ना है, वहाँ शहरों की सभ्यता को अपने भ्रष्ट पथ को छोड़कर ठीक राह पकड़ने के लिए काफी पीछे लौटना भी है। एक दिन हमें जिस मंजिल पर जाना है, मानवता का वह अनागत स्वप्न ऐसी व्यवस्था का सर्जन करेगा, जिसमें शासन, न्याय, अर्थ-व्यवस्था, कला, संस्कृति, आनन्द और मनोरंजन ये सारी बातें विकेन्द्रित और स्वावलम्बी होंगी। जहाँ वायु में आज शोषण और प्रपीडन की विषाक्त ज्वाला भरी हुई है, वहाँ सबके समान परिश्रम के स्वेद-कण उसे शीतल बनाकर रखेंगे। मानव-मुक्ति के उसी रामराज्य में एक दिन मानवता को पहुँचना है।

आदिवासियों ने आनन्द और मनोरंजन के विकेन्द्रित और स्वावलम्बी तत्त्व को गीत नृत्य के रूप में पहले से ही पा लिया है। उनके जीवन का स्तर जैसे-जैसे ऊपर उठेगा, इन मनोरंजनों का स्तर भी उठेगा। और यदि, वे कहीं इस तत्त्व को भूल गये, तो जंगलों की पत्तियाँ मुरझा जायेंगी, पहाड़ों के झरने सूख जायेंगे, वनों में पंछियों के पंख झड़ जायेंगे और वृक्षों की छाया में बाँसुरी के स्वर मौन हो जायेंगे। जब आदिवासियों के जीवन से प्यार का स्रोत सूख जायगा और उनके कण्ठों में गीत की टेर सो जायगी, तब इन जंगलों-पहाड़ों में क्या शेष रह जायगा?

नया युग मुण्डाओं को ज्ञान-कर्म और आनन्द के स्वर-लोक में जगा रहा है!

●

द्वितीय खण्ड

गीत

[सानुवाद]

सुड़ाकन् दरु चिगो अलाकान् बा
अलाकान् बा लेक डिण्ड सोमए

नव-पल्लवित वृक्ष अथवा खिला हुआ फूल !
जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है ।

जदुर-गीत

|

होर रे सरजोम् बा
लेसेकेन् लेसेकेन् !
डरे रे हेन्दे नपनम्
मोचोकेन् मोचोकेन् !

रास्ते में साखू का फूल
लहरा रहा है !
मार्ग में कुँवारी लड़की
मुसकरा रही है !

१

सिङ्गि: लेक सिरिमरे जुलेतन् प्रभु
ओते सिरिमहोम् मरेसल् तव
ओतेरे हुड़िङ् मरङ् सोबेन् को
अमगः नुतुमेको हिअतिङ्तन

कजि मेने गेहो मेनः मेअ
मेन्दो हो कञ् लेले दड़ि
दिसुम् होड़ो को अएअर तएओम्
अमगः मण्डगे को जरे तन

बुरु दिरि हट हुटु
अञ् दो होञ् दन्दगिड़िजन्
बुरु जनर् सुड़ सङ्गेन्
अञः जी रड़ेः जन्

अएअर रेदो अएअरिञ् मे
गड़ परोम् दिसुम् टुण्डु ते
दोलरे दो दोलञ् मे
इचः बा रसि चेपेः ते ।

२

सोतो जूगु कले जूगु
सोतो जूगु तइकेन
सोतो जूगु कले जूगु
कले जूगु दओरदकन्

सोतो जगु तइकेन्रे
बएअर् होको टोण्डोम्केन्
कले जूगु दओरदकन्
लिक होको नोले तन्

१

हे सूरज के समान आकाश में चमकनेवाले प्रभो !
तुमने पृथ्वी और आकाश को प्रकाशित कर दिया है।
धरती के सभी छोटे-बड़े (जीव)
तुमको याद करते हैं।

तुम केवल कहने भर के लिए हो (लेकिन)
आँख से दिखाई नहीं देते।
दुनिया के सभी आदमी कतार बाँधकर
तुम्हारे ही पदचिह्नों पर चल रहे हैं।

पहाड़ के ऊबड़-खाबड़ पत्थरों को (देखकर)
(हमको) आश्चर्य होता है।
घाटी के पेड़ों की कोमल पत्तियों को (देखकर)
मेरा मन सन्तुष्ट होता है।

अगर हमें ले चलना है
(तो) नदी के उस पार, देश के सीमान्त तक, ले चलो!
अगर हमें ले चलना है
(तो) ईचा फूल का रस चूसने के लिए ले चलो।

२

सतयुग और कलियुग !
(पहले) सतयुग था।
सतयुग और कलियुग !
(अब) कलियुग आ गया।

(जब) सतयुग था
(उस समय) लोग रस्सी बाँधा करते थे।[१]
(अब) कलियुग आ गया।
(अब) लिखकर हिसाब करते हैं।

---

१ रस्सी की गाँठों से हिसाब जोड़ा करते थे

बएअर् होको टोण्डोम्केन्
दिसुम् हो को टेकओ लेद्
लिक होको नोले तन्
दिसुम् होको चेचः केद्

३

सुड़ कान् दरू चिगो अलाकान् बा
अलाकान् बा लेक डिण्ड सोमए
सुअम् जन् कोतो चिगो इसिन्जन् इलि
सुअम् जन् कोतो लेक बुड़िअ हड़ाम्

अलाकान् बा लेक डिण्ड सोमए
एनचि सुगड़म् रसिक तन
सुअम् जन् कोतो लेक बुड़िअ हड़ाम्
एनचि अबेनेबेन् उडुः तन

एनचि सुगड़म् रसिक तन
कचिम् लेल् जद गोसो तन
एनचि अबेनेबेन् उडुः तन
करेबेन् नमेअरे सिद जोनोम्

४

अञगः सोमए बोले तइ केन् रेदो
पितल् टटि रेदो मानि सुनम्
अञगः नुसड़ परिय रे
गम्छ किचिरिरे तबेन् पोटोम्

अञगः सोमए बोले सेनोः जन
पितल् टटि दोरे पोअः जन
अञगः नुसड़ परिअ चब जन
गम्छ किचिरि बोले केचः जन

(जबतक) लोग रस्सी बाँधा करते थे ,
(तबतक) दुनिया को टिकाये हुए थे ।
(जब) लोग लिखने लगे,
(तब) देश को बरबाद कर दिया ।

३

नई कोंपलोंवाला वृक्ष अथवा खिला हुआ फूल !
जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है ।
वृक्ष पर उगा हुआ बंझा अथवा पकी हुई हँड़िया[1]
बुढ़ापा वृक्ष के बँझे के समान है ।

जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है ।
हे सुन्दरी, इसीसे क्या तुम प्रसन्न हो रही हो ?
बुढ़ापा वृक्ष के बंझा के समान है, हे बूढ़े-बूढ़ियो,
इसीसे क्या तुम चिन्ता करती हो ?

तुम उसके लिए क्यों प्रसन्न हो रही हो ?
क्या नहीं देखती कि फूल मुरझा रहा है ?
तुम लोग उसके लिए क्यों चिन्ता कर रही हो ?
पहले का समय फिर नहीं आता !

४

जब मेरा समय था तब (मैं)
पीतल के कटोरे में सरसों का तेल लिये फिरता था ।
जब मेरी जवानी थी तब (मैं)
कपड़े में चिउड़े की पोटली लिये फिरता था ।

जब मेरा समय बीत गया (तब)
पीतल का कटोरा फूट गया ।
जब मेरी जवानी समाप्त हो गई (तब)
कपड़े की पोटली फट गई ।

---

१. हँड़िया = चावल की शराब ।

हिअतिङ् मोनिञरे चकतिङ् सनञ
पीतल् टटि बोले पोअः जन
हिअतिङ् मोनिञरे चकतिङ्ङ् सनइञ
गम्छ किचिरि बोले केचः जन

हिअतिङ् रेओ बोले चकतिङः रेओ
कारेम्नमेअरे सिद सोमए
हिअतिङ् रेओ बोले चकतिङः रेओ
करेम्नमेअरे डिण्ड सोमए

५

निकु दोग मोदे चण्डुः होने कोचि
निकु दोग बरबरिः गेअ
निकु दोग बर् चण्डुः गण कोचि
निकु दोग सरसरि गेअ

निकु दोग मोद् चण्डुः होन कोगे
निकु दोग बरबरि गेअ
निकु दोग बर्चण्डुः गणड़ा कोगे
निकु दोग सरसरि गेअ

निकु दोग मोद् पिड़ि हुन्दि बदो
निकु गेग बा चब केद्
निकु दोग बरे पिड़ि साजोम् बा
निकु गेग डलि निअर् केद्

६

चिमिन् चिमिने गोम डिण्ड लेद
असकल् लेक गोम् खदिड़िन् जन
चिमिन् चिमिने गोम् डङ्गुअ लेद
किकिर् लेकगे गोम् डबुरन जन

मेरे मन में अफसोस और दुःख हो रहा है (कि)
पीतल का कटोरा फूट गया।
मुझे सोच और चिन्ता हो रही है
(कि) कपड़े की पोटली फट गई।

तुम दुःख या अफसोस जो कुछ करो,
बीता हुआ समय लौटकर नहीं आयगा।
तुम सोच या चिन्ता जो करो,
गई हुई जवानी फिर वापस नहीं होगी !

५

क्या ये एक ही महीने के बच्चे हैं
कि (सब के सब) बराबर हैं ?
क्या ये एक ही महीने के लड़के हैं
कि (सब के सब) एक समान हैं ?

(हाँ) ये एक ही महीने के बच्चे हैं
(इसलिए सब) बराबर हैं ?
हाँ ये एक ही महीने के लड़के हैं
(इसलिए सब) एक समान हैं ?

इन्होंने एक समूचे मैदान के हुन्दी फूल
(तोड़कर-खोंसकर) समाप्त कर डाले।
इन्होंने दो पूरे मैदानों के साखू फूल,
(खोंसकर) खतम कर दिये।

६

तुम्हारी जवानी कितनी-कितनी थी
(कि तुम) आसाकल पक्षी की तरह कूद पड़े ?
तुम्हारी तरुनाई कैसी-कैसी थी
(कि तुम) पनडुब्बी की तरह डूब चले !

असकल् लेक गे गोम् खदिड़िन् जन
जुलेतन् सेङ्गेल् रेम् खदिड़िन् जन
किकिर् लेक गे गोम् डबुरन् जन
इकिर् दःगे रेगेम् डबुरन् जन

एङ्गम् अपुमे बङ्को लेक
जुलेतन् सेङ्गल् रेम् खदिड़िन् जन
हगम् बरेमेको बङ्को लेक
इकिर् दगे रेगेम् डबुरन् जन

एङ्गञ् अपुञ् बोल मेनः कोरे
उरिः लेक चिको हर् बेड़ञ्
हगञ् बरेञ् बोले मेनः कोरे
मेरोम् लेक चिको तिगे बेड़ञ्

७

नेअ दोग चिकन् मँडुकम्
नेअ दोग चोप सिद जन्
नेअ दोग चिकन् सरजोम्
नेअ दोग मोए तयोम् जन्

नेअदोग फागु मँडुकन्
नेअदोग चोप सिद जन्
नेअदोग चैति सरजोम्
नेअदोग मोए तयोम् जन्

नेअदोग चोप सिद जन्
नेअदोग पुसि कटते
नेअदोग मोए तयोम् जन्
नेअदोग पुतम् लचोते

तुम असकल् (पत्ती) की तरह कूद पड़े,
तुम धधकती हुई आग में कूद पड़े !
तुम पनडुब्बी की तरह डूब चले!
तुम गहरे पानी में डूब चले !

तुम विना माँ-बापवाले की तरह
धधकती आग में कूद पड़े !
तुम विना भाई-बहनवाले के समान
गहरे पानी में डूब चले!

अगर माँ-बाप होते तो भी क्या वे
हमको बैल के समान हाँकते फिरते ?
अगर भाई-बहन होते तो भी क्या वे
बकरी की तरह (हमारे गले में) रस्सी बाँधे फिरते ?

७

माँ यह कैसा महुआ है,
जो पहले ही फूल गया ?
माँ यह कैसा साखू है,
जिसमें देर से कली निकली ?

बेटा, यह फागुन का महुआ है,
इसीलिए यह पहले फूला।
बेटा, यह चैती साखू है,
(इसीलिए) इसमें पीछे से कली निकली।

माँ यह पहले फूला है,
(इसलिए) यह बिल्ली के पैर के समान है।
माँ, इसमें पीछे से कली निकली है,
(इसलिए) यह पण्डुकी के ठोर के समान है।

८

बा बदि रे हले
बा बदि रे हो
सुड़ बदि रे हले
सु बदि रे

बा बदि रे हले
मिरुबा हो
ड़ बदि रे हले
करे डलि

मिरु बा हले
ओटङोः लेक हो
करे डलि नले
दोपलियोः लेक

९

होर रे जुड़ि दरु लुदम्बा
ओकोए मइन बा पेटेः केद्
डरे रे पन्ति दरु अटल् डलि
चिमए मइन डलि चङ्गड़ केद्

सेन्देर को जिलिब् जिलिब
सेन्देर को बा पेटेः केद्
करेङ्ग को जोलोब् जोलोब
करेङ्ग को डलि चङ्गड़ केद्

सेन्देर को बा पेटेः केद मइन
चुटि रेको पेटेः केद्
करेङ्ग को डलि चङ्गड़ केद मइन
सुब रेको चङ्गड़ केद्

८

हे मित्र, फूलों की वाटिका में
फूलों की वाटिका में
हे मित्र कोंपलों के वन में
कोंपलों के वन में

फूलों की वाटिका में
मीरु फूल है
कोंपलों के वन में
कारे की कोंपलें

मित्र, मीरु फूल
मानों उड़ रहे हैं
मित्र, कारे की कोंपलें
मानों लहरें मार रही हैं।

९

रास्ते में एक जोड़ा जो लूदम फूल है,
(उस फूल को) ऐ बेटी, किसने तोड़ लिया ?
रास्ते में अटल फूल की जो कतार है,
(उसके फूल को) हे बेटी, किसने छिनगा लिया ?

चमचमाते हुए शिकारी
शिकारियों ने फूल को तोड़ लिया
झलकते हुए अहेरी
अहेरियों ने डाल को छिनगा दिया

शिकारियों ने जो फूल को तोड़ा
हे बेटी, चोटी ही से तोड़ लिया।
अहेरियों ने जो डाल को छिनगा दिया,
सो हे बेटी, नीचे से ही छिनगा दिया ?

सेन्देर को पेटेः केद मइन
चुटि कोतो गोसो जन्
करेङ्ग को डलि चङ्गड़ केद मइन
सुब दड़ मएल जन्

१०

हतु तलरे गतिङ्ग् हुन्दि बा
हए गतिञ् सोन हुन्दि बा
दिसुम् तलरे सङ्गइञ् जम्बिर
हए सङ्गइञ् रूप जम्बिर

गुतु लेकमे गतिञ् हुन्दि बा
हए गतिञ् सोन हुन्दि बा
गलङ् लेकमे सङ्गञ् जम्बिर
हए सङ्गञ् रूप जम्बिर

मोद् चरिः दो गतिङ् हुन्दि बा
गतिङ्-ओमञ् मे
बरे सुतम् दो सङ्गञ् जम्बिर
सङ्गञ् चेदइञ् मे

११

बा बदि रे हले
बा बदि रे हो।
डलि बदि रे
हले डलि बदि रे।।

बा बदि रे हले
चिकन् बा हो
डलि बदि रे हले
मेरे केन् डलि।।

शिकारियों ने (जो फूल को) तोड़ा,
हे बेटी ! उसकी फुनगी मुरझा गई ।
अहेरियों ने जो छिनगा दिया,
हे बेटी, उसका तना कुम्हला गया ।

१०

हे प्रिय, गाँव के बीच में हुन्दी फूल है,
हुन्दी फूल सोना के समान है ।
हे प्रिये, देश में जम्बिर फूल है,
जम्बिर फूल रूपा के समान है ।

हे प्रिय, सोना के समान हुन्दी फूल !
हुन्दी फूल को गूँथ लो ।
हे प्रिय, रूपा के समान जम्बिर !
जम्बिर का हार बना लो ।

हे प्रिय, हुन्दी फूल का एक गुच्छा
(हमको) अवश्य देना ।
हे प्रिय, जम्बिर फूल का दो हार
(हमको) अवश्य देना ।

११

हे मित्र, फ़ुलवारी में
हे मित्र, फ़ुलवारी में
हे मित्र, बगीचे में
हे मित्र, बगीचे में

हे मित्र, फ़ुलवारी में
कौन-सा फूल है ?
हे मित्र, बगीचे में
कौन-सा प्रसून है ?

बा बदि रे हले
सरजोम् बा हो
डलि बदि रे हले
सुड़ सङ्गेन

१२

होर-होरते सोना हुन्दि बा
दइगोरेञ् सेन्देर नमन
डरे-डरेते रूपा जम्बिर
दइगोरेञ् करेङ्ग नमन

दइगोरे मोद् सुतम बर् सुतम
दइगोरे गुतु लेकम्
दइगोरे मोद् चरिः बर् चरिः
दइगोरे गलङ-लेकामे

कइञ हो गतिङो बङ्गइअ
कइञ हो कञ् गुतुअ
कइञ हो सङ्गञो बङ्गइअ
कइञ हो कञ् गलङ

१३

हए गतिङ् रे गतिङ् हुन्दि बा
हए गतिङ् सोना हुन्दि बा
हए सङ्गञ् रे सङ्गञ् जम्बिर
हए सङ्गञ् रूपा जम्बिर

हए गतिङ् उरए बरएअ
हए गतिङ् सोना हुन्दि बा
हए सङ्गञ् तरे तसेअ
हए सङ्गञ् रूपा जम्बिर

फुलवारी में
साखू का फूल है
बगीचे में
(नई) कोंपलें हैं

१२

रास्ते में सोने के समान हुन्दी फूल
हे बहन, मैंने संयोग से पाया है
मार्ग में रूपा के समान जम्बिर फूल
हे बहन, मैंने संयोग से देखा है

हे बहन, एक-दो हार
हे बहन, गूँथ लो !
हे बहन, एक-दो गुच्छा,
हे बहन, गुच्छा बना लो !

नहीं मैं नहीं गूँथूँगी,
नहीं, (क्योंकि) मेरा प्रेमी नहीं है।
नहीं मैं गुच्छा नहीं बनाऊँगी
नहीं, (क्योंकि) मेरा साथी नहीं है।

१३

हे सखी, हुन्दी फूल (को देखो)
हे सखी, सोने के समान हुन्दी फूल !
हे सखी, जम्बिर फूल (को देखो)
हे सखी, रूपे के समान जम्बिर फूल !

हे सखी, झबरा हुआ है ?
हे सखी, सोने के समान हुन्दी फूल !
हे सखी, बिखरा हुआ है
हे सखी, रूपे के समान जम्बिर फूल !

हए गतिङ् गुतु लेक मे
हए गतिङ् सोन हुन्दि बा
हए सङ्गञ् गलङ लेक मे
हए सङ्गञ् रूपा जम्बिर

१४

बुरु रेंदो सङ्गेल मइ न
निर मइन निरेंमे
कञ्चि गड़ होएओ दुदुगर्
होजोर् मइन होजोरे मे

निरे मइन निरे मे
एङ्गम् ओड़ः लोतन
होजोर मइन होजोरे मे
अपुम् रोसोम् बले तन

एङ्गम् ओड़ः ल तन् रे
होर-होरम् नकिः सुपिद
अपुम् रोसोम् बल् तन्रे
डरे-डरेम हुदुम पएल

१५

दः अगु डड़ि रे ललिता
लेलद् मेअएःअ ललिता
तिरे दोएः सबन ललिता
रङ्ग रे रुतु

तिरे दोएः सबन ललिता
रङ्ग रे रुतु ललिता
कोदोम् सुब रे ललितएः
ओरोङ् तन्

हे सखी, हुन्दी फूल को गूँथो
हे सखी, सोने के समान हुन्दी फूल !
हे सखी, जम्बिर फूल को गूँथो,
हे सखी, रूपे के समान जम्बिर फूल !

१४

पहाड़ पर आग (जल रही) है,
भागो बेटी, भागो !
काँची नदी में आँधी (आ रही) है,
भागो बेटी, भागो !

भागो बेटी, भागो !
तुम्हारी माँ का घर जल रहा है,
भागो बेटी, भागो !
तुम्हारे बाप का घर आँधी उड़ा रही है,

तुम्हारी माँ का घर जल रहा है,
(और तुम) रास्ते-रास्ते बाल सँवारती फिरती हो।
तुम्हारे बाप का घर बरबाद हो रहा है,
और तुम रास्ते-रास्ते आँचल फहराती फिरती हो।

१५

हे ललिता, पानी लाते समय
हे ललिता, उसने (तुमको) देखा था।
अपने हाथ में हे ललिता !
वह लाल वंशी पकड़े हुए है !

हे ललिता, उसके हाथ में,
हे ललिता, लाल वंशी है।
हे ललिता, कदम्ब वृक्ष के नीचे
(वह) वंशी बजा रहा है।

१६

अलङ् दिसुम् रेलङ् हर मत लेन
मोद् रे गतिङ लङ् इनुङ् केन
जुड़ि-जुड़ि होलङ् सेने, बेड़ए
पन्ति रे सङ्गजेलङ् दुबे केन

चिकन् कजि बोलेम् अइउम् लेद
हड़द् सुकु लेकम् हड़देन् जन
अमगः मण्ड गेहोञ् चपद् तनिः
(मेन्दो) दुबिरः दुम्बु लेकम् रिककिञ

चम्पा बा तिम्बुरुब् जी रड़ेः तनिः
कहोञ् हड़दञ् सिबिल् गेअ
चिल्क एः मेन्ते होञ् नेक केन
मेन्दो जीरेम् केटेः केद

१७

रबङ्-तयो म्तेम्-हिय कन
राजा-रानी-लेकम् सम्पोड़ोअ कन
इसु दिन तेञ् उड़ुः केन
मेन्दोम्-सुलुः लेन बाहा चण्डुः

पुरना पण्डु सकम् ओचोः केते
नव सुड़ सड़िम् ओमे तद
बिरते दरु कोञ् लेलउ केन
मोए तन बातन जोतन

हरियाली अरः सुड़ पिड़िः लेक
चिकन् सुनम्दोम् गोसोः अकद
बिर्कोरे बा बुगिन्-सुगड़ सोअन्
कुड़म्-बितरेरे-गुम्बुरओ तन

१६

हमलोग अपने देश में एक साथ बढ़े ।
(और) एक साथ हे प्रिय, हम लोग खेले ।
साथ-साथ हमलोग घूमे-फिरे,
(और) साथ-साथ उठे-बैठे ।

(लेकिन) अब तुमने ऐसी कौन-सी बात सुनी
(जो) तीते कद्दू के समान कड़ुए बन गये ।
मैं तुम्हारे ही पीछे चलनेवाली हूँ ।
(लेकिन) तुमने (मुझे) कतवार की तरह कर दिया (मुझसे घृणा की)

हे चम्पा फूल की गन्ध की तरह हृदय को आनन्द देनेवाली,
मैं कड़ुआ नहीं हूँ, मीठा हूँ ।
तुमपर क्या प्रभाव पड़ेगा, यही देखने के लिए मैंने बहाना किया था,
लेकिन उसे ही तुमने मन में सच मान लिया ।

१७

जाड़े के बीत जाने पर तुम आये हो ।
तुम राजा-रानी के समान सजे हो ।
मैं बहुत दिनों से (तुम्हारी) चिन्ता (प्रतीक्षा) कर रहा था ।
मगर आज (जाकर) चैत का चाँद उगा ।

(वृक्षों से) पुरानी पीली पत्तियाँ झाड़कर—(तुमने)
नई कोंपलों की साड़ी पहना दी ।
मैं जंगल के वृक्षों को देख आया
उनमें कलियाँ, फूल और फल लग रहे हैं ।

(तुम्हारी) हरी और लाल कोंपलें चमक रही हैं ।
तुमने कौन-सा तेल लगा लिया है ?
जंगल के सुन्दर फूलों की सुगन्ध
(मेरी) छाती में घूम रही है ।

बिर् दरु सुबरे 'राम' सोम्बोदकन
सिर् मरेन् सिङ् बोङ्गएः जोअर् तन
बाएअले मेन्ते गोड़ेः रसिक तन
तर कोतो सरजोम् बाएः असितन

१८

एलरे जुड़िरेन् मिरुकिङ्
एलरे हड़ गुन् बेन्
एलरे जोतरेन् करे किङ्
एलरे नोसोरेन् बेन्

एलरे निलेम सुतम्ते
एलरे हड़ गुन् बेन्
एलरे बदिम बयर्ते
एलरे नोसो रेन् बेन्

एलरे निलेम सुतमे दो
एलरे सिदे जन्
एलरे बदिम बएअरे दो
एलरे रोचोद् जन्

मरेहो टोन्डोम्-टोन्डोमेते,
मरेहो हड़ गुन् बेन
मरेहो कुतम् कुतमेते
मरेहो नोसोरेन् बेन्

१९

सोना लेकन् दिसुम लिपि
ओकोरेम् लेलद लिपि
रूपा लेकन् गमएअ करे
चिमएरेम् चिनद्

'राम' वन के वृक्ष के नीचे झुका हुआ है
(और) आकाश के देवता को प्रणाम कर रहा है।
सरहुल मनायगा, यह सोचकर प्रसन्न हो रहा है।
और, साखू के फूलों की एक डाली माँग रहा है।

१८

हे मीरू की जोड़ी,
उतर जाओ।
हे कारे की जोड़ी,
उतर जाओ।

हे (मीरू की जोड़ी), नीले सूत की सहायता से
उतर जाओ।
हे (कारे की जोड़ी), रस्सी की सहायता से
उतर जाओ।

हे (!) उतरते-उतरते
नीला सूत टूट गया।
हे (!) उतरते-उतरते
बादामी रस्सी टूट गई।

चलो सूत को जोड़ते हुए
चलो उतर जाओ।
चलो रस्सी को जोड़ते हुए
चलो उतर जाओ।

१९

हे लिपि, सोने के समान देश
हे लिपि, तुमने कहाँ देखा ?
हे कारे, रूपे के समान देश
हे कारे, तुमने कहाँ देखा ?

सोना लेकन् दिसुम लिपि
डोंएस रेम् लेलद लिपि
रूपा लेकन् गमएअ करे
कुकुर रेम् चिनद्

सोना लेकन् दिसुम लिपि
बिउर् तनय लिपि
रूपा लेकन् गमय् करे
सेकोर् तन

चर्क लेकय लिपि
बिउर् तनय लिपि
रेम्ट लेकय करे
सेकोर् तन

२०

जेटे सिङ्गि ओते लोलोरे
ओको दरु कगे उरुडुः
जरगिदः जुरुकुण्डु रे
ओको चेणे कगे ओटङोः

जेटे सिङ्गि ओतो लोलोरे
कित दरु कगे उरुडुः
जरगिदः होएओ गमरे
लिटिअ चेणे कगे ओटङोः

कित दरु सिले सिले
कित दरु कगे उरुडुः
लिटिअ चेणे टिउल् टिउल्
लिटिअ चेणे कगे ओटङोः

हे लिपि, सोने के समान देश
तुमने डोंएसा में देखा
हे कारे, रूपे के समान केश
तुमने कुकुरा में देखा

हे लिपि, (जो) सोने के समान देश (है)
घूम रहा है।
हे कारे, (जो) रूपे के समान देश (है)
घूम रहा है।

हे लिपि, सोने के समान देश
चरखे के समान घूम रहा है।
हे लिपि, रूपे के समान देश
रहट के समान घूम रहा है।

२०

जेठ की गरमी में (जब) धरती तप जाती है,
(तब) कौन पेड़ नहीं झरता ?
बरसात की मूसलधार वर्षा में
कौन पच्छी (हवा के झोंके में) उड़ नहीं जाता ?

जेठ की गरमी में (जब) धरती तप जाती है,
(तब) खजूर का कौन पेड़ (है, जो) नहीं झरता।
बरसात के तेज आँधी-पानी में,
लिटिया पच्छी नहीं उड़ता !

मरमर करता हुआ खजूर का पेड़,
नहीं झरता।
फुरफुर करता हुआ लिटिया पच्छी
नहीं उड़ता।

२१

ओकोरेम् लेलद लिपि,
दिसुमदो बिउर् तन्
चिमए रेम् चिनद करे
गमएअ दो सेकोर् तन्

डड़ि दः रेञ् लेलद लिपि
दिसुम्दो बिउर् तन्
सिद् दः रेञ् चिन लेद करे
गमएअ दो सेकोर् तन्

दिसुम्दो बिउर् तन्
चर्क लेक गे
गमएअ दो सेकोरे तन्
रेम्ट लेकगे

२२

हय गतिङ् रे गतिञ् हुन्दि बा
हय गतिङ् सोन हुन्दि बा
हय सङ्गञ् रे सङ्गञ जम्बिर
हय सङ्गञ् रूपा जम्बिर

हय गतिञ् उरएय् बरएअ
हय गतिङ् सोना हुन्दि बा
हय सङ्गञ् तरे तसेअ
हय सङ्गञ् रूपा जम्बिर

हय गतिञ् गुतु लेकामे
हय गतिङ् सोना हुन्दि बा
हय सङ्गञ् गलङ् लेकामे
हय सङ्गञ् रूपा जम्बिर

२१

हे लिपि, तुमने कहाँ देखा है
कि देश घूमता है ?
कारे, तुमने कहाँ देखा है
कि देश चक्कर काटता है ?

हे लिपि, मैंने डाड़ी के पानी में
देश को चक्कर काटते देखा है ।
हे लिपि, मैंने झरने के पानी में
देश को घूमते देखा है ।

देश घूम रहा है
चरखे के ही समान
देश चक्कर काट रहा है
रहट के ही समान

२२

हे प्रिय, यह हुन्दी फूल,
हे प्रिय, हुन्दी फूल सोने के समान है ।
हे प्रिय, यह जम्बिर,
हे प्रिय, जम्बिर रूपे के समान है ।

हे प्रिय, यह सोने के समान हुन्दी,
हे प्रिय, फूलों से लदा है ।
हे प्रिय, यह रूपे के समान जम्बिर,
हे प्रिय, फूलों से भरा है ।

हे प्रिय, (यह जो) सोने के समान हुन्दी फूल है,
हे प्रिय, (उसे) गूँथ लो ।
हे प्रिय, (यह जो) रूपे के समान जम्बिर है,
हे प्रिय, (उसका) गजरा बना लो ।

२३

उलटि-पलटि गोसञ्
उलटि-बा एअ गोसञ्
उलटि पलटि गोसञ्
पलटि-डलिअ गोसञ्

ओकोरेम्-लेलद गोसञ्
उलटि बा एअ गोसञ्
चिमएरेम्-चिनद गोसञ
पलटि डलिअ गोसञ्

उलटि बा एअ गोसञ्
बिउर् तन एअ गोसञ्
पलटि डलिअ गोसञ्
सेकोर् तनएअ गोसञ्

२४

नेअ दोग नेअ दो
चिकन् दरु
नेअ दोग नेअ दो
मेरेकन् नड़ि

नेअ दोग नेअ दो
सिन्दुरि दरु
नेअ दोग नेअ दो
कजोड़ नणि

कलङ् उदुबेअ
सिन्दुरि दरु
कलङ् चुण्डुलेअ
कजोड़ नणि

२३

हे गुसाईं ! वह अलाटी और पलाटी ।
हे गुसाईं ! वह अलाटी का फूल ।
हे गुसाईं ! वह अलाटी और पलाटी ।
हे गुसाईं ! वह पलाटी का फूल ।

हे गुसाईं ! अलाटी का फूल
तुमने कहाँ देखा है ?
हे गुसाईं ! पलाटी का फूल
तुमने कहाँ देखा ?

हाँ गुसाईं ! वह घूमनेवाला
अलाटी का फूल
हाँ गुसाईं ! वह घूमनेवाला
पलाटी का फूल ।

२४

यह वृक्ष, यह वृक्ष
यह कौन-सा वृक्ष है
यह लता, यह लता
यह कौन-सी लता है

यह वृक्ष, यह वृक्ष
यह सिन्दूर का वृक्ष है
यह लता, यह लता
यह काजल की लता है

किसी को नहीं बतावें
इस सिन्दूर के वृक्ष को
किसी को नहीं दिखावें
इस काजल की लता को

अलङ् जुड़ि रेलङ्
सिन्दुरिन्तेअ
अलङ् जोत रेलङ्
कजोड़न् तेअ

२५

बुरु रेम चिरे टिकुर रेम
कजि तेगे होञ् अइउम् मेअ
गड़ रेम चिरे जोबेल रेम
बकण तेगे होञ् अतेन् मेअ

कजि तेगे होञ् अइउम् मेअ
गतिङ् लेक होञ् अइउम् मेअ
बकण तेगे होञ् अतेन् मेअ
सोङ्गोति लेक होञ् अतेन् मेअ

सोङ्गोति लेक होञ् अइउम् मेअ
एलरे गतिञ् रेलङ् जगर् कोअ
पिरिति लेक होञ् अतेन् मेअ
एलरे सङ्गञ् रेलङ् लपन्द कोअ

एलरे गतिङ् रेलङ् जगर् कोव
गति सोङ्गोतिलङ् जगर् कोव
एलरे सङ्गञ् रेलङ् लपन्द कोः अव
हिरिति पिरितिलङ् लपन्द कोव

२६

पिड़ि पिन्दर् कोदोम् बा चेणे
ओको कोरे बोलेम् हड़गुन् जन
गड़ जोबेल रे गरुड़ पुतम्
चिमए कोरे बोलेम् नोसोरेन् जन

जब हम दोनों शादी करेंगे
तब (इसी से) सिन्दूर लगायेंगे
जब हमारा विवाह होगा
तब (इसी से) काजल करेंगे

२५

तुम पहाड़ पर हो या (किसी) टीले पर हो
(वहाँ से केवल) तुम्हारी आवाज ही सुनाई देती है।
तुम नदी में हो या किसी दलदल में हो
(वहाँ से केवल) तुम्हारी बोली ही सुनाई देती है।

तुम्हारी आवाज ही सुनाई देती है
(उससे तुम) प्रियतम के समान जान पड़ते हो।
तुम्हारी बोली ही सुनाई देती है
तुम प्रियतम जैसे लगते हो ।

तुम प्रियतम के समान जान पड़ते हो
हे प्रिय, आओ, हमलोग बातचीत करें।
तुम प्रिय जैसे जान पड़ते हो
हे प्रिय, आओ हमलोग हँसे-बोलें।

आओ प्रिय, हमलोग बातें करें
हम प्रिया-प्रियतम के समान बातें करें ।
आओ प्रिय, हमलोग हसें-बोलें
हम प्रिया-प्रियतम की तरह हँसें-बोलें ।

२६

हे टाँड़ में रहनेवाले दोवा पक्षी !
तुम कहाँपर उतरते हो ?
हे नदी की तराई में रहनेवाले गरुड़ पण्डुक !
तुम कहाँपर उतरते हो ?

हतु लतर् रे दो डड़ी दगे
डड़ी दगे रेम् हड़गुन् जन
झरिम रेदो हो सुइले दगे
सुइल दगे रेगम् नोसोरेन् जन

डड़ी दरेगेम् हड़गुन् रेदो
मुसिङ् रेओ चेणेञ् अटमेअ
सुइले दगे रेगेम् नोसोरेन् रे दो
बरसिङ् रे ओ चेणेञ् जुड़ः मेअ

२७

हेन्दे गुले गुले दो
नोकोए सेनोः तन्
चँउरिअ सदोम्ते
चिमए बिरिद् तन्

हेन्दे गुले गुले दो
गतिम् सेनोः तन्
चँउरिअ सदोम्ते
सङ्गम् बिरिद् तन

मोयोद् कजिते
गतिम् हर्तिङ् जन्
बरिअ बकण ते
सङ्गम् हरतिङ् जन्

२८

चुटि मुलि सरजोम् रे
अलो मिरुम् ड़अम
बदि लतर् तड़ए रे
अलो करेम् सएअद

गाँव के नीचे डाड़ी का पानी है
तुम डाड़ी के पानी में उतरते हो
झरने के पास साफ पानी है
तुम साफ पानी में उतरते हो

(अगर) तुम डाड़ी के नीचे के पानी में उतरोगे
तो एक दिन तुमको लासा से पकड़ लेंगे
अगर तुम झरने के पानी में उतरोगे
तो दो दिन में तुमको फँसा लेंगे

२७

यह काला-काला
कौन जा रहा है ?
यह चौंरिया घोड़े पर
कौन जा रहा है ?

यह काला-काला
तुम्हारा प्रियतम जा रहा है
यह चौंरिया घोड़े पर
तुम्हारा प्रियतम जा रहा है

एक ही बात से
तुम्हारा प्रिय हार गया
दो ही बातों से
तुम्हारे प्रियतम की हार हो गई
(उसने अपने को समर्पित कर दिया)

२८

साखू की चोटी पर
हे मिरु, (पक्षी) सोच मत करो
दोन के तड़ए वृक्ष पर
कारे, (पक्षी) मत बिलखो

कचि तेरङ्ञ् हअम
सुड़ दोरे गोसो जान्
कचि तेरङ्ञ् सएअद
सङ्गेन् दोरे मोरोसो जान्

सुड़ दोरे गोसो जान्
कचि तेर सुड़ओअ
सङ्गेन् दोरे मोरोसो जान्
कचि तेर सङ्गेनोः

सुड़ दोरे सुड़ओःअ
सिद सुड़ लेकचि
सङ्गेन् दोरे सङ्गेनोः
मुनु सङ्गेन् लेकचि

२६

समड़ोम् लेक गेको जोगओ लेद् मेअ
बलेः-ए मुलुः चण्डु लेकम् मत जन
पुनिम चण्डुः लेकम् मेद् मुअड़जन
तुरे तन् सिङ्गिः लेकम् मरेसल् केद

कित हतू तल तेदो हदिअ होर
पालः पालः गेगोम् सेने बेड़ए
हतुअते सिङ्गिः तुरोः गगरि डड़ि
चेले चेपेले गोम् बुरगअ

लन्द जगर् अद् होनोर् बेड़
सिद रेअः टएअद्गो उडुः लेमे
गगरि डड़ि दोरे अमेः रग
अमगः बदल दो ओकोए बुरगेअ

मैं क्यों सोच न करूँ
(जब कि) कोंपलें मुरझा गईं
मैं क्यों न बिलखूँ
(जब कि) पत्तियाँ सूख गईं

कोंपलें मुरझा गईं
(किन्तु) क्या वे फिर नहीं निकलेंगी ?
पत्तियाँ सूख गईं
किन्तु, क्या वे फिर नहीं पनपेंगी ?

नई कोंपलें तो निकलेंगी,
(पर) क्या वह पहले के समान (होंगी)।
पत्तियाँ तो फिर पनपेंगी,
(पर) क्या वे पहले के समान (होंगी)।

२६

तुमको सोने के समान जुगाकर रखा,
तुम दूज के चाँद के समान बड़ी हुई।
पूर्णिमा के चाँद के समान तुम्हारा मुख सुन्दर हुआ,
(और) उगते हुए सूरज के समान तुम्हारी ज्योति फैली।

'किता हातू' गाँव के बीच रास्ते से
तुम घूमती-फिरती रहीं।
(और) गाँव के पूरब की गागरी डाड़ी से
तुम पानी भरती रहीं।

हँसना-बोलना और घूमना-फिरना
पहले की बातें तुम याद करो।
गागरी डाड़ी तुमको पुकारती है
(अब) तुम्हारे बदले कौन (वहाँ से) पानी लेगा ?

गोड़्मे दिने दोगो तेबः लेन
डिण्ड रेअः सुकु सोबेन् सेनोः जन
अमगः मोनेरेअः उडुः अर् मोने
सोबेन् हस रेगे जम जन ।

३०

हिजुः सेनोः रजञ् लेले मेअ
गोसो गोसो रजञ् लेल् मेअ
बिउर् नचुर् राजाञ् चिन मेअ
मोरोसो मएल राजाञ् चिन मेअ

ओते लोलो अद् सिरिम जेटे
एन तेचि रजम् गोसो तन
रेङ्गेः तेतङ् अर् जीरेअः दुकु
एन तेचि राजाम् मएल तन

ओते लोलो अद् सिरिम जेटे
एन कोदो सोबेन् रानीञ् सातिङ् तद
रेङ्गेः तेतङ् अर् जीरेअः दुकु
एन कोदो रानीञ् सातिङ् तद

निद सिङ्गि रानी पेरेम उड़ुः
कुम्बर् होएओ लेकञ् लो तन
होड़ो कोलो काजीओक बपइ रानी
एन कोदोम टोरेअ सेणाकन् रानी

३१

होरो रे सरजोम् बा
लेसेकेन् लेसेकेन्
डरे रे हेन्दे हपनुम्
मोचोकेन् मोचोकेन्

अब तुम्हारी शादी का दिन निकट आ गया
और बचपन का सारा सुख चला गया,
अब तुम्हारे मन की अभिलाषा
और सारी बातें मिट्टी में मिल गईं

३०

हे राजा, मैं (जब) तुमको आते-जाते देखती हूँ,
हे राजा, (तब) मैं तुमको मुरझाया हुआ देखती हूँ।
हे राजा, (जब) मैं तुमको घूमते- फिरते देखती हूँ,
हे राजा, (तब) मैं तुमको सूखा-सूखा और मलिन देखती हूँ।

धरती की आँच और आकाश की ज्वाला से
हे राजा, क्या तुम इस तरह मुरझा रहे हो ?
भूख-प्यास और हृदय की व्यथा से
हे राजा, क्या तुम इस तरह मलिन हो रहे हो ?

धरती की आँच और आकाश की ज्वाला
हे रानी, मैंने सबको झेल लिया है
भूख-प्यास और हृदय की व्यथा
हे रानी, मैंने सबको सह लिया है

हे रानी, प्रेम की आग रात-दिन
मुझे कुम्हार के आँवें (भट्ठी) की तरह जला रही है
(हृदय की बात) किसी से कहते नहीं बनती
रानी, यह तो तुम जानती ही हो

३१

रास्ते में साखू का फूल
लहरा रहा है, लहरा रहा है
मार्ग में कुँवारी लड़की
मुस्करा रही है, मुस्करा रही है

लेसेकेन् लेसेकेन्
तीते हो कगे तेबगोः
मोचोकेन् मोचोकेन्
मोचते हो कगे जगरोः

तीते हो कगे तेबगोः
बकोः हो बइअइपे
मोचते हो कगे जगरोः
लिकहो ओलइ पे

बकोः होले बडअःइअ
बकोः हो हुलः जन्
लिक होले ओलःइअ
लिक हो चेचः जन्

३२

अट मट बिर्को तल रे
अलो होम् निरज बगेञ्
रमकन् मरेच रे
अलो होम् निरज रड़ञ

कचि होम् लेले लेदिञ
सेङ्गेल् लेकञ् जुलतन्रे
कचि होम् चिन लेदिङ
दगे लेकञ् लिङ्गि तन् रे

कगे चोअञ् लेलेलेदेम
दिसुम्दो दुदुगर् जन्
कगे चोअञ् चिन लेदेम
गमएअ दो कोअसि जन्

(जो फूल) लहरा रहा है
(वहाँतक) हाथ नहीं पहुँचता।
(जो लड़की) मुस्करा रही है
(उससे) मुँह से (कुछ) कहते नहीं बनता।

(जहाँ) हाथ नहीं पहुँचता
(उसके लिए) अंकुश बना दो।
(जिससे) कहते नहीं बनता
(उसके लिए) चिट्ठी लिख दो।

अंकुश बना दिया (परन्तु)
वह भी टूट गया।
चिट्ठी लिखी गई (परन्तु)
वह भी नष्ट हो गई।

३२

इस घने जंगल में—
तुम मुझे छोड़कर मत भागो!
इस काँटा-भरे मैदान में—
तुम मुझे छोड़कर मत भागो!

क्या तुमने मुझे नहीं देखा था,
(जब) मैं आग के समान चमक रही थी?
क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना था,
(जब) मैं पानी की तरह उमड़ रही थी?

हाँ, मैंने नहीं देखा था
(क्योंकि) दुनिया में आँधी (की धूल) भरी थी?
हाँ मैंने (तुम्हें) नहीं पहचाना था,
(क्योंकि) दुनिया में कुहासा छाया हुआ था।

३३

मगे फगुन्रे
जदुर् सुसुन् को
असड़ सवन् रे
करम् कोजोड़ो को

जदुर् सुसुन् को
लिटिः लोपोङ
करम् कोजोड़ो को
लटङ् कोएअङ

लिटिः लोपोङ
सेनोगे मोनिञ
लटङ् कोएअङ
बिरिदेगे सनञ्

सेनोः रेदो सेनोः मे
सेनोः गेम् कजिअ
बिरिद् रेदो बिरिद् मे
बिरिदेगेम् बकण

अम् बड़े सेनोः जन् रे
तोअ बइञ् बा जोम
अम् बड़े बिरिद् जन्रे
अटल् डलिञ् डलि नपएअ

तोअ बञ् बा तरे
सएतेम् लेलिञ्
अटञ् डलिञ् डलि तरे
मोचोः लेकम् लन्दएअ

३३

माघ और फागुन में
जदुर नाचनेवाले
असाढ़ और सावन में
करम नाचनेवाले

जदुर नाचनेवाले
धूल उड़ा रहे हैं।
करम नाचनेवाले
लथपथ हो रहे हैं।

धूल उड़ा रहे हैं
जाने को मन करता है
लथपथ हो रहे हैं
उठने का मन करता है

जाना है, तो चले जाओ
बार-बार जाने की ही बात कहते हो
उठना है, तो उठ जाओ
बार-बार उठने की ही बात करते हो

(लेकिन) जब तुम चले जाओगे
तब मैं दूधी फूल लगाऊँगी।
(लेकिन) जब तुम भाग जाओगे
तब मैं अटल फूल खोसूँगी।

जब मैं दूधी फूल लगाऊँगी
तब तुम कनखियों से (मुझे) देखोगे।
जब मैं अटल फूल खोसूँगी।
तब तुम मुस्काओगे।

३४

हय धोनी सोन मुनि रे
ने लेकञ् बलए तन्
हय धोनी रूप मुनि रे
ने लेकइञ कोसोटो तन्

कचि होम् लेले जदिञ्
ने लेकञ् बलए तन्
कचि होम् चिन जदिञ्
ने लेकञ् कोसोटो तन्

हिअतिङ् हिअतिङ् तेञ्
गोसो चब तन्
चकतिङ् चकतिङतेञ्
मोरोसो मैल तन्

३५

अलङ् दिसुम्रेलङ् जोनोम् जन
पुतम् लेक होलङ जुड़ि जन
अलङ् गमएरेलङ् मत जन
परए ,लेक होलङ् मत! जन

पुतम् लेक होलङ् जुड़ि जन
मोदेरे गतिञ् रेलङ् सुसुन करम
परए लेक होलङ् जोत जन
अलङः जी सोबेन् मोदे जन

मोदे रे गतिञ रेलङ् सुसुन् करम्
करे गतिञ् रेलङ बपगेअ
अलङः जी सोबेन् मोदे जन
ज़ीदन सुमुड़ेलङ् अप सुल

३४

हाय प्रिये, सोनामुनी,
मैं इस तरह दुःख सह रहा हूँ।
हाय प्रिये, रूपामुनी
मैं इस तरह कष्ट भोग रहा हूँ।

क्या तुम नहीं देखती कि मैं
किस तरह दुःख भोग रहा हूँ।
क्या तुम नहीं देखती कि मैं
किस तरह कष्ट भोग रहा हूँ।

सोच करते-करते
मेरा शरीर सूख रहा है
चिन्ता करते-करते
मैं मुरझा रहा हूँ।

३५

हम दोनों ने अपने देश में जन्म पाया
हम दोनों की पण्डुक के समान जोड़ी हुई।
हम दोनों अपने देश में बढ़े
(और) हम दोनों कबूतर के समान साथी हुए।

हम दोनों की (जो) पण्डुक के समान जोड़ी हुई
तो हम एक साथ नाचे-गायेंगे।
हम दोनों जो कबूतर के समान साथी बने
(तो) हम दोनों का हृदय एक हो गया।

हम दोनों एक साथ नाचे-गायेंगे,
(और) कभी अलग नहीं होंगे
हम दोनों का मन एक हो गया है
(और) जीवन-पर्यन्त एक दूसरे का पालन-पोषण करेगा।

३६

गड़ गितिल् कोदोम् सुब रे
तिरि रिरि रुतु सड़ि तन्
हय गतिञ् हय सङ्गञ्रे
जेतरेओ कमे लेलोःअ

तर तीते रचञ् जोग
तर तीते मेद्दइञ् गोसोः न
हय गतिञ् हय सङ्गञ् रे
जेत रेओ कमे लेलोअ

३७

दो तञ् सलुरे दो तञ् सुग
चेतन् टोल रे जोमे लङ् हेसः
दो तञ् सलु रे दो तञ् सुग
लतर् टोल रे नबे लङ् बड़े

कलङः सलु रे कलङः सुग
जोमे लङ्हेसः रेको अट तद
कलङः सलु रे इलङः सुग
न बेलङ् बड़े रेको जुड़ः तद

जोमे लङ् हेसः रेको अट तद
बलेः बलेः रेको अटतलङ् गेअ
न बेलङ बड़े रेको जड़ः तद
लिण्डङ् लिण्डुङ् रेको जुड़ः तलङ् गेअ

३८

अमगः सुपिद् लेलते
सोङ्गोतिन् मोनिञ
अमगः पएल चिनते
पिरितिन् सनञ

३६

नदी के किनारे की रेत पर, कदम्ब वृक्ष के नीचे,
तिरिरिरि की आवाज में बाँसरी बज रही है।
(किन्तु) हे प्रिय ! हे मित्र !
तुम कहीं भी दिखाई नहीं देते।

मैं एक हाथ से आँगन बुहारती हूँ
(और) दूसरे हाथ से आँसू पोंछती रहती हूँ।
हे प्रिय ! हे मित्र !
तुम कहीं भी दिखाई नहीं देते।

३७

हे सालू ! चलो, हे सुग्गा ! चलो
ऊपर टोले में पीपल (का फल) खाने चलें।
हे सालू ! चलो, हे सुग्गा ! चलो
नीचे टोले में बड़ (का फल) चखने चलें।

नहीं सालू, नहीं सुग्गा, हमलोग नहीं जायंगे
जिस पीपल को खाने चलना है, उसमें कम्पा रख दिया है
नहीं सालू, नहीं सुग्गा, हम नहीं जाएंगे
जिस बड़ को चखने चलना है उसमें लासा डाल दिया है।

जिस पीपल को खाने चलना है (उसमें) कम्पा रख दिया है।
हे सालू, छुटपन में ही हम दोनों को (लोग) बझा लेंगे।
जिस बड़ को चखने चलना है, उसमें लासा डाल दिया है
हे सुग्गा, बचपन में ही हम दोनों को (लोग) फँसा लेंगे।

३८

तुम्हारी चोटी देखकर
तुमसे प्रेम करने की इच्छा होती है।
तुम्हारा आँचल देखकर
तुमको प्यार करने को जी चाहता है।

सोङ्गोतिन मोनिञ
सोङ्गोति कमे मोसइञ
पिरितिन् सनञ
पिरिति कमे सेलेदिञ्

हिअतिङ्गे मोनिञ
सोङ्गोति कमे मोसञ
चकतिङ्गे सनञ
पिरिति कमे सेलेदिञ्

३९

बलेः बलेः रेलङ् सोङ्गोति लेन
सोङ्गोति गतिञरेम् बगे किञ
लिण्डुङ्-लिण्डुङ् रेलङ् पिरिति लेन
पिरिति सङ्गञरेम् रड़ किञ

हिअतिङ् मोनिञ
सोङ्गोति गतिञरेम् बगे किञ
चकतिङ् सन इञ
पिरिति सङ्गञरेम रड़ किञ

हिअतिङ् हिअतङ् ते
जिरटि हएअद् जन्
चकतिङ् चकतिङ् ते
कुड़म् रटि ओड़ेः जन्

४०

लमः जङ् गतिङ् चिरे बड़ुजु जङ् सङ्गञ्
सङ्गिन् दिसुमे रेम् पण्डिल् जन
लमः जङ् गतिञ् चिरे बुड़ुजु जङ् सङ्गञ्
जिलिङ् गमएरेम् चोलङ् जन

तुम्हारा साथी बनने की इच्छा होती है
(लेकिन) तुम मुझे साथी नहीं बनाती।
तुमसे प्रेम करने की इच्छा होती है
(लेकिन) तुम मुझे अपना प्रेमी नहीं बनाती।

मुझे बड़ा दुःख होता है
(कि) तुम मुझे साथी नहीं बनाती।
मुझे बड़ा अफसोस होता है
(कि) तुम मुझे प्रेमी नहीं बनाती।

३९

बचपन में ही हम लोगों की दोस्ती हुई,
(लेकिन) तुमने उस दोस्ती को तोड़ दिया।
छुटपन में ही हम लोगों ने प्रेम किया,
(लेकिन) तुमने उस प्रेम को छोड़ दिया।

मुझे बड़ा दुःख है
कि तुमने (बचपन की दोस्ती को) तोड़ दिया।
मुझे बड़ा खेद है
कि तुमने (बचपन के प्रेम को) छोड़ दिया।

सोच-सोचकर
मेरा हृदय सूख गया।
चिन्ता करते-करते
मेरी छाती टूक-टूक हो गई।

४०

हे प्रिय, लामा[१] के बीज की तरह अथवा बुड़जू[१] के बीज की तरह
प्रिय, लामा के बीज की तरह तुम दूर देश चले गये
हे प्रिय, लामा के बीज की तरह अथवा बुड़जू के बीज की तरह
प्रिय, बुड़जू के बीज की तरह तुम बहुत दूर चले गये

---

१. लामा एक फल, जो पकने पर फट जाता है और बुड़जू (कचनार), जिसका बीज पकने पर दूर छिटक जाता है।

सङ्गिन् दिसुमेरेम् पण्डिल् जन
ओको कोरे होलङ् लेपेल् रुङ:
जिलिङ् गमएरेम् चोलङ् जन
चिमए कोरे होलङ् चिपिन रुङ:

हस बुरु होको बुरुङ रेदो
हस बुरु रेलङ् लेपेल् रुङ:
बमनि जतर-होको जतरए रेदो
बमनि जतर रेलङ् चिपिन रुङ:

हस बुरु रेलङ् लेपेल् रेदो
तीरे मुन्दमेञ् ओममेअ
बमनि जतर रेलङ् चिपिन रेदो
होटोः रे कड़े मालञ् चेदमेअ

तीरे मुन्दमेः दोञ् ओममेअ
तीरे मुन्दमेः जगरमेअ
होटोः रे कड़े मलञ् चेदमेरे
होटोः रे कड़े मलएः लन्दामेअ

४१

बुरु अतेञ् लेल् मेरे गतिञ्
कम् लेलोः लेलोग गतिञ्
बेड़तेञ् चिन मेरे सङ्गञ्
कम् चिनओः चिनओःअ सङ्गञ्

हुन्दि बाञ् गुतु लेद गतिञ्
कम् लेलोः लेलोग गतिञ्
बगड़ि बाञ् गलङ् लेद सङ्गञ्
कम् चिनओः चिनओअ सङ्गञ्

तुम बहुत दूर जा पड़े,
फिर अब कहाँ मुलाकात होगी ?
तुम बहुत अलग चले गये
फिर अब कहाँ हम (एक दूसरे को) देखेंगे ?

जब हासा का जतरा होगा,
तब फिर हमारी मुलाकात होगी
जब बभनी का मेला होगा,
तब फिर हम (एक दूसरे को) देखेंगे

अगर हासा जतरा में मुलाकात होगी,
तब मैं तुम्हें एक अँगूठी दूँगा।
यदि बभनी मेले में मुलाकात होगी,
तब मैं तुम्हें गले में पहनने के लिए काँसी की माला दूँगा।

मैं तुम्हें अँगूठी दूँगा
अँगूठी ही मेरी बात तुमसे कहेगी
मैं तुम्हें माला पहनाऊँगा
माला ही तुमसे मेरी खुशी बतायगी

४१

हे प्रिय ! मैं तुमको पहाड़ पर से देखती हूँ,
(किन्तु) हे प्रिय, तुम दिखाई नहीं देते।
हे प्रिय ! मैं तुमको तराई में से देखती हूँ,
(किन्तु) हे प्रिय, तुम दीख नहीं पड़ते।

हे प्रिय ! मैंने (तुम्हारे लिए) हुन्दी के फूल गूँथे हैं,
(परन्तु) तुम दिखाई नहीं देते।
हे प्रिय ! मैंने (तुम्हारे लिए) वगड़ी (वकुल) का हार बनाया है,
(परन्तु) तुम दीख नहीं पड़ते।

कम् लेलो लेलोग गतिञ्
चरिः रेंगे गोसो जन्
कम् चिनओ चिनओअ सङ्गञ्
सुतम् रेंगे मएल जन्

चरिः रेंगे गोसो जन गतिञ्
अइञ जीओ गोसो जन्
सुतम् रेंगे मएल जन सङ्गञ्
अइञः कुड़मो मएल जन्

४२

अमगः नङ्गेन् तेञ्
बोदोनम् जन दो
अमगः नङ्गेन् तेञ्
सुब नम् जन दो

मोच जगर् तेञ्
बोदोनम् जन दो
मेदे लेपेल् तेञ्
सुबनम् जन दो

हिअतिङ् मोनिञ
बोदोनम् जन दो
चकतिङ् सनञ
सुब नम् जन दों

४३

बलेः बलेः रेङ् सोङ्गोनि गतिञ्
मोदेरे गतिञ् रेलङ् इनुङ् केन
जुड़ि जुड़ि होलङ सेन बेड़ए
पन्ति रे सङ्गम् रेलङ् दुब केन

हे प्रिय ! तुम दिखाई नहीं देते
और (हुन्दी का फूल) गुच्छा मुरझा रहा है ।
हे प्रिय ! तुम नजर नहीं आते ।
(और, वकुल का गुच्छा) सूत में ही सूख रहा है ।

(इधर) फूलों का गुच्छा मुरझा रहा है
(और उधर) मेरा हृदय (भी) मुरझा रहा है ।
(इधर) सूत का हार सूख रहा है
(और) उधर मेरा दिल (भी) उदास हो रहा है ।

४२

तुम्हारे ही कारण हम
बदनाम हुए ।
तुम्हारे ही कारण हम
दोषी ठहराये गये ।

(केवल) बात करने के कारण हम
बदनाम हुए ।
(केवल) आँख मिलाने के कारण हम
दोषी बने ।

मुझे दुःख है कि हम
बदनाम हुए ।
मुझे अफसोस है कि हम
दोषी बने ।

४३

बहुत बचपन से ही हे प्रिय !
हम लोग एक साथ रहते और खेलते थे ।
साथ-साथ चलते-फिरते थे
(और) हे प्रिय ! एक साथ उठते-बैठते थे ।

मोयोद् कजि गेलङ् कजि केन
मोयोद् कजि तेलङ् बपगड़ओ जन
पन्ति रे सङ्गञ् रेलङ् दुबे केन
दुबि रः दुम्बु लेकम् रिककिःञ जन

जीरे उड़ः चण्डल् का बुगिन् तनिः
जुले तन सेङ्गेलेरे खदिड़िन् लेकः
निद सिङ्गि बोलेञ् उड़ुः तन
अञगः नसिब् रम बङ्क जन

४४

अञः रे जीदो बोले अञरे कुड़म्
दिदि लेक गेगोञ् जलतिङ् तन
अञ रे जिदो बोले अमःरे कुड़म्
कुड़िद् लेक गेगोञ् बुलतिङ् तन

दिदि लेक गेगोञ् जलतिङ् तन
हतु हतु बोलेञ् जलतिङ् तन
कुड़िद् लेक गेगोञ् बुलतिङ् तन
दिसुम् दिसुम् बोलेम् बुलतिङ् तन

हतु हतु बोलेञ् जलतिङ् तन
जेत रे गतिञेरे कइञ् लेलेमेअ
दिसुम् दिसुम् बोलेञ् बुलतिङ् तन
जा रे सङ्गञ् रे कइञ चिन मेअ ।

४५

चिकन् कजि बौलेम् अइउम् लेद
पेटेः गोसो पतड़ लेकम् गोसो तन
मेरे को बकण बोलेम् अतेन् लेद
गेर गोएः दरु लेकम् मएल तन ।

हम दोनों एक ही बात बोला करते थे,
(लेकिन) एक ही बात के लिए हममें अनबन हो गई
हम दोनों एक ही साथ बैठते थे,
(लेकिन) खर-कतवार की तरह हम लोग अलग हो गये ।

दिल का दुःख बहुत बुरा होता है,
जी चाहता है कि जलती आग में कूद पड़ें ।
हम रात-दिन सोचा करते हैं
'राम' कहता है कि हमारा भाग्य बिगड़ गया ।

४४

हमारा दिल तुममें लगा ही है
(और) मैं गीध की तरह उड़ता फिरता हूँ ।
हमारा हृदय तुम्हारे ही पास है
(और) मैं चील के समान घूमता-फिरता हूँ ।

मैं गीध के समान उड़ता फिरता हूँ !
(और) गाँव-गाँव उड़ता फिरता हूँ
मैं चील के समान घूमता-फिरता हूँ
और देश-देश घूमता-फिरता हूँ

मैं गाँव-गाँव उड़ता फिरता हूँ
किन्तु, हे प्रिय ! तुमको नहीं देखता ।
मैं देश-देश घूमता फिरता हूँ
किन्तु, हे प्रिय ! तुम दिखाई नहीं देते ।

४५

तुमने कौन-सी बात सुन ली है ?
(जो) तोड़ी हुई डाली की पत्तियों के समान मुरझा गये !
तुमने कौन-सी चर्चा सुन ली है
(जो) छीले हुए पेड़ के समान सूख गये ?

सिद रेन् गतिमे चि कोनेअन् जन
पेटेः गोसो पतङ् लेकम् गोसो तन
तयोम् सङ्गम् चि बोओरेन् तन
गेर गोएः दरु लेकम् मएल तन।

बुलुङ् सुनुम् चगोम् ओमे लेद
पेटेः गोसो पतङ् लेकम् गोसोतन,
गोनोङ् सति चिगोम्-चेदे-लेद
गेर गोएः दरु लेकम् मएल तन

४६

कोदोम् दरु बङ्क दड् रे
किष्टो जी रुतुइ ओरोङे
ओ गतिङ् ओ सङ्गञ् रे
जेत रेओ कमे लेलोग

ओङ्ःअतेञ उडुङ लेन
बोओः रे तोञ् अगु केद
ओ गतिञ ओ सङ्गञ् रे
जेत रेओ कमे लेलोग

तर तीते मण्डिञ् जोमेअ
तर तीते मेददःञ् गोसोः न
ओ गतिञ ओ सङ्गञ् रे
जेत रेओ कमे लेलोग

४७

अइअ रे गतिञ् रेञ्
तुङ्ग्ङ्र-मुङ्ग्ङ्र
बपरे सङ्गञ रेञ्
डुले कलेअ

क्या तुम्हारे पहले के प्रेमी की शादी हो गई ?
(जो तुम) तोड़ी हुई डाल की पत्तियों की तरह मुरझा गये।
क्या तुम्हारे पीछे के प्रेमी का विवाह हो गया ?
(जो तुम) छीले हुए पेड़ के समान सूख गये।

क्या तुमने (उसके लिए) नमक-तेल खर्च किया था ?
(जो) तोड़ी हुई डाल की पत्तियों की तरह मुरझा गये।
क्या तुमने (उसके लिए) दाम चुकाया था ?
(जो) छीले हुए वृक्ष के समान सूख गये।

४६

कदम्ब वृक्ष की टेढ़ी डाल पर
कृष्ण वंशी बजा रहे हैं।
हे प्रिय, हे सगी !
तुम (कहीं) नहीं दीखते हो।

मैं घर से निकली
और सिर पर हाथ रखा
हे प्रिय ! हे मित्र !
तुम कहीं नहीं दीखते हो।

मैं एक हाथ से खाना खाती हूँ
और दूसरे हाथ से आँसू पोंछती हूँ
हे प्रिय ! हे मित्र !
तुम कहीं नहीं दिखाई देते हो।

४७

हे प्रिय ! (तुम तो)
पहले ही आगा-पीछा कर रहे हो !
हे प्रिय ! (तुम तो)
आगे ही इधर-उधर हो रहे हो।

तुङ्ग्र-मुङ्ग्र
दसि तलङ् मे
डले कलेअ
गुतिन् तलङ् मे

दसिन् दसिन् दो
लेपेल् सड़िमरे
गुतिन् गुतिन् दो
चिपिन चन्दए रे

सेङ्गेल् असि रेञ्
असि नमे म
सकम् मङ्गनि रेञ्
मङ्गनि खोजर्म

सेङ्गेल् असि रे
तो तेञ् चुण्डु लम
सकम् मङ्गनि रे
मेद् तेञ् रपिदम

४८

बिरे सेङ्गेल् दो
जिलिब् जिलिब्
रज पुकरि दो
गुले-गुलेअ

जिलिब् जिलिब् रे
सतिन् मोनिञ
गुले-गुले रे
डबुरन् सनइञ

तुम जो आगा-पीछा कर रहे हो,
(सो) कहीं चाकरी कर लो।
तुम जो इधर-उधर भटक रहे हो,
(सो) कहीं धाँगर बन जाओ।

तुम चाकरी करो तो,
ऐसी चाकरी करो (जिससे) एक दूसरे को देखें।
तुम धाँगर बनो तो,
ऐसी जगह (जिससे) एक दूसरे को पा सकें।

आग माँगते हुए
मैं तुमको खोज लूँगी,
पत्ती माँगते हुए
मैं तुमको पा लूँगी।

आग माँगते हुए
मैं तुमको उँगली से इशारा कर दूँगी।
पत्ती माँगते हुए
मैं तुमको कनखी मार दूँगी।

४८

जंगल में आग
धाँय-धाँय जल रही है।
राजा का तालाब
लबालब भरा हुआ है।

धाँय-धाँय जलती हुई (आग) में
जल मरने की इच्छा होती है।
लबालब भरे हुए (पानी) में
डूब मरने को जी चाहता है।

अलोगोम् सतिन
गतिम् ह्जुः तन
अलोगोम् डबुरन
सङ्गम् सेटेर् तन

गतिम् ह्जुः तन
डुगु मुगु चौडल्ते
सङ्गम् सेटेर् तन
गज बज बजुणिअन्ते

४६

सण्डि सिम् गिपल् गोपोल्
ओकोतिः जन
कलुटि सिम् केरो केचो
चिमय् तिः जन

सण्डि सिम् गिपल गोपोल्
चेणे टोटे तिः अ
कलुटि सिम् केरो केचो
ए-को ह्लङ् तिः अ

उतु तले-बनोग
चेणे टोटे तिः अ
बुलुङ् तले बनोग
ए-को ह्लङ् तिः अ

५०

सिद सिम्को रनः
अयुम्लङ् गतिञ्
तएओम् मरः एओन्
अतेन लङ्—सङ्गञ्

तुम मत जल मरो
(तुम्हारा) प्रिय आ रहा है।
तुम मत डूब मरो
(तुम्हारा) प्रेमी पहुँच रहा है।

(तुम्हारा) प्रिय आ रहा है
डुगमुग डोली पर आ रहा है।
तुम्हारा प्रेमी पहुँच रहा है
गाजे-बाजे के साथ पहुँच रहा है।

४६

वह मनचला मुरगा
कहाँ चला गया।
वह कुड़कुड़ाती हुई मुरगी
किधर चली गई ?

वह मनचला मुरगा
चिड़िया मारने गया।
वह मनचली मुरगी
लाह बटोरने गई।

सालन नहीं है,
(इसलिए) चिड़िया मारने गया।
नमक नहीं है,
(इसलिए) लाह बटोरने गई।

५०

हे प्रिय, हम मुरगे की
पहली बाँग सुन लें।
हे प्रिय, हम मोर की
पिछली आवाज़ पहचान लें।

सिद सिम्को रनः रे
ओको कोते लङ
तएओम् मरः एओन् रे
चिमय् कोते लङ

सिद सिम्को रनः रे
एङ्गम् कोते लङ
तएओम् मरः एओन् रे
अपुम् कोते लङ

एङ्गम् कोते मेनेरे
जीगे लिटिब् -लिटिब
अम्पु कोते मेनेरे
कुड़म् दोपोल् -दोपोल

५१

नेते दुड़ नेते जिलि मिलिअ
दिसुमेदो लेसे लेसे अ
नेते दुड़ नेते जिलि मिलिअ
गमए दो जिरिपि जलङ

दिसुमेदो लेसे लेसेअ
दिसुमेदोम् बगे जद
गमए दो जिरिपि जलङ
गमए दोम् रड़ जद

मोद् किअ सिन्दुरि ते
दिसुमेदोम् बगे जद
बरे थड़ि ससङ्ते
गमए दोम् रड़ जद

मुरगे की पहली बोली सुनकर
हम कहाँ चलें ?
मोर की पिछली आवाज
जानकर हम कहाँ जायँ ?

मुरगे की पहली बाँग सुनकर
हम माँ के घर (चलें)।
मोर की पिछली आवाज जानकर
हम बाप के घर (जायँ)।

'माँ का घर' कहने से
जी धक-धक करने लगता है।
'बाप का घर' का नाम सुनकर
छाती काँपने लगती है।

५१

यहाँ की धूल चमकीली है
यह देश बड़ा सुन्दर है !
यहाँ की मिट्टी चमकीली है
यह इलाका बड़ा मनोहर है !

ऐसा सुन्दर देश !
ऐसे सुन्दर देश को तुम छोड़ रही हो !
ऐसा मनोहर इलाका !
ऐसे मनोहर इलाके से तुम अलग हो रही हो !

तुम 'कीया' (सिन्धोरा)-भर सिन्दूर से
यह देश छोड़ रही हो
तुम केवल दो थाली हल्दी से
इस इलाके से अलग हो रही हो।

दिसुमे दो बिउर तन्
अमः जीओ बिउर तन्
गमए दो सेकोर् तन्
अमः जीओ सेकोर् तन्

५२

बा चण्डुः मुलुः लेन मइ
सिम् होन् दोएः चिअब्-चिअब
लोगोन् दोको तोल् केद मइ
कुड़ि होन् दोएः चुलु दुब कन्

सिम् होन् दोएः चिअब् चिअब मइ
खलोम् केन् खलोम् केन्
कुड़ि होन् दोएः चुलु दुब कन मइ
सतोम् केन् सतोम् केन्

अइञ् जुड़ि मेनइअन मइ
तएअर् नणि दिले दोङ्गोब्
अञ् जुड़ि मेनइअन मइ
सुकु बारे सेपेड़ेद्

५३

तिरे दो तोल् उलि सकम्
तिरे दो कञ् तोलेन
मोलोङ् रे टिक सिन्दुरि
मोलोङ् रे कञ् टिकन

अइञ् लोःते जुडि बँगइय
अइञ् दो हो कइञ् तोलेन
अइञ् लोःते जोत बँगइय
अइञ् दो हो कइञ् टिकन

देश घूम (बदल) रहा है
(और) तुम्हारा हृदय (भी) घूम रहा है।
इलाका घूम (बदल) रहा है
(और) तुम्हारा दिल (भी) घूम रहा है।

५२

चैत का चाँद उग आया
मुरगी का बच्चा चीं-चीं बोल रहा है।
लगन (निश्चित) हो गया
लड़की सिकुड़ी बैठी है।

मुरगी का बच्चा चीं-चीं बोल रहा है
कि हमारा बलिदान अगले वर्ष हो।
छोटी लड़की बैठी हुई सोच रही है
कि हमारी शादी तीसरे वर्ष हो।

हमारा जोड़ा ककड़ी की लता के समान—
खिला हुआ एक जवान है।
हमारा जोड़ा कद्दू के फूल के समान—
प्रफुल्लित एक युवक है।

५३

हाथ में बाँधी जानेवाली आम की पत्ती
मैं हाथ में नहीं बाँधूँगी।
माथे पर लगाया जानेवाला सिन्दूर
मैं माथे पर नहीं लगाऊँगी।

मेरा जोड़ा नहीं है
मैं नहीं बाधूँगी।
मेरा साथी नहीं है
मैं नहीं लगाऊँगी।

अइञ् लोःते जुड़ि किनिः
जुड़िन् जन दो
अइञ् लोःते जोत किनिः
जोतन् जन दो

५४

होर दुड़दो को सेने केद
चिरे गतिञ् चिलङ् मेने
रइसि बोरोसो को सल केद
मेरे रे मोचो कु'लि मेरे लङ् मेने

मोद् अरण उरिः ओड़ोः बरो टक
मोणे होड़ो तल रेको लेक केद
सुकु रेओ मइ न दुकु रेओ
अमगः नुतुम् तेको सकि केद

धोरोज ओङ रेदो इसिटि कुटुम्
मोणे होड़ो तल रेदो बमणे गोसञ्
सुकु रओ मइ न दुकु रेओ
अणदि लोगोन को तोले केद

मेरेल् पतड़ को बकिड़ि तद
गितिल् मण्डोअको दुलकद
सुकु रेओ मइ न दुकु रेओ
नेओ तरि कोदो रेको हिजुः अकन

मण्डोअ तल रेदो किअ सिन्दुरि
अमगः नङ्गेन् गे दोरोपोन् नकिः
सुकुरेओ मइ न दुकु रेओ
एल रेञ् नकिः लेम समड़ोम् सोन

मेरा संगी होनेवाला
दूसरे का संगी हो गया।
मेरा साथी बननेवाला
दूसरे का साथी बन गया।

५४

रास्ते की धूल पार की जा चुकी, (शादी की) बात तय हो चुकी
हे प्यारी बेटी, अब क्या कह सकते हैं ?
राशि-लगन सब चुन लिया गया
हे मुसकानेवाली, अब हम लोग क्या कह सकते हैं ?

एक जोड़ा बैल और बारह रुपये
पाँच पंचों के बीच गिने जा चुके हैं।
तुम राजी हो या न हो
तुम्हारा नाम लिया जा चुका है।

धर्म के घर में इष्ट, मित्र, कुटुम्ब (सब आ गये हैं)।
पंचों के बीच ब्राह्मण और गोसाईं बैठे हैं।
तुम चाहो या न चाहो
शादी का लगन ठीक हो चुका है।

आँवले की पत्ती का मण्डप बन गया है
और बालू का मड़वा (वेदी) बनाया जा चुका है।
तुम्हें सुख हो या हे बेटी, दुःख हो
निमन्त्रित व्यक्ति भी आ चुके हैं।

मण्डप के नीचे सिंधोरा और सिन्दूर रख दिया गया है
(और) तुम्हारे लिए आइना और कंघी भी रख दी गई है।
हे बेटी, अब तो चाहे तुम्हें सुख हो या दुःख हो
हे सोने-सी बेटी, आओ, तुम्हारे बालों को सँवार दें।

५५

बुरु दोको बुरु चब केद मइ
अम्दो मइ कम् जुड़िन् जन्
जतर दोको जतर चेब केद मइ
अम्दो मइ कम् जोतन् जन्

अमते हुपुड़िङ् कोनमइ
अमते मपरङ् को
सोबेन् को जुड़िन् जन मइ
सोबेन् को जोतन् जन्

५६

नेन मइ डुब लेक तोअ बा
नेन मइ बा लेक मे
नेन मइ तड़ि लेक अटल् डलि
नेन मइ डलि लेक मे

नेन मइ जुगुतु-जुगुतु ते
नेन मइ को गोङे मेअ
नेन मइ बिचरे अचरे ते
नेन मइ को चल् मेअ

नेन मइ को गोङे मेरे
नेन मइ कको ओममे
नेन मइ चल् केमते
नेन मइ कको चेदमे

हेल मइ मोदे पिड़ि गतिमेको
हेल मइम् बगे जद् कोअ
हेल मइ बर् सेकरि सङ्गमे को
हेल मइम् रड़ जद् कोअ

५५

सभी बुरु (पर्वत पर लगनेवाले मेले) बीत गये,
हे लड़की, तुमने अभी तक अपना साथी नहीं चुना !
सभी जतराएँ खतम हो गईं (किन्तु)
हे बालिका, तुमने अभी तक (किसी को) अपना मित्र नहीं बनाया !

तुमसे सारी छोटी लड़कियों ने भी
तुमसे सभी बड़ी लड़कियों ने भी,
सबने अपना साथी चुन लिया।
सबने अपना संगी बना लिया।

५६

हे बेटी, यह कटोरा के समान दूधी फूल है !
हे बेटी, यह फूल पहन लो !
हे बेटी, यह थाली के समान अटल फूल है।
हे बेटी, यह फूल पहन लो !

हे बेटी, तुम्हारी शादी की
बातचीत चल रही है
हे बेटी, तुम्हारे विवाह के बारे में
सोच-विचार हो रहा है ।

हे बेटी, यह फूल ले लो
हे बेटी, शादी के बाद यह कोई नहीं देगा।
हे बेटी, यह फूल ले लो
हे बेटी, विवाह के बाद यह कहीं नहीं मिलेगा।

हे बेटी, तुम अपने बहुत-से साथियों को
हे बेटी, छोड़ रही हो ।
हे बेटी, तुम अपनी बहुत-सी सहेलियों से
हे बेटी, अलग हो रही हो।

५७

हतु तलेम् मेनेअ मइन
हतु दोम् बगे जद
दिसुम् तलेम् मेनेअ मइन
दिसुम् दोम् रड़ जद

मोद् किअ सिन्दुरि ते
हतु गोम् बगे जद
बर् थड़ि ससङ् ते
दिसुम् गोम् रड़ जद

हतु गोम् बगे जद
हतु गो ले ले रुड़ लेम्
दिसुम् गोम् रड़ जद
दिसुम् गो हेत रुड़ लेम्

हतु गो लेले रुड़ लेम्
अम् जुड़ि गतिम्को लेल कुल्तन
दिसुम् गो हेत रुड़ लेम्
अम् जोत सङ्गमेको चिन कुल्तन

५८

बा तइञ् मेग नेअङ् बा तञ् मे
डलि तञ् मेग नपङ् डलि तञ् मे

बा दोरेइञ् बा मेअ चिकन् बा
डलि दोरेञ् डलि मेअ मेरेकन् डलि

बा तइञ् मेग नेअङ् सराजोम् बा
डलि तञ् मेग नपङ् सुड़ सङ्गेन्

५७

हे बेटी, तुम जिसको अपना गाँव कहती थी,
उस गाँव को (तो) छोड़ रही हो।
हे बेटी, तुम जिसको अपना देश कहती थी,
उस देश से (तो) अलग हो रही हो।

तुम एक कीया (सिंधोरा) सिन्दूर से
अपना गाँव छोड़ रही हो।
तुम दो थाली हल्दी से
अपने देश से अलग हो रही हो।

गाँव को (तो) छोड़ रही हो
(लेकिन, उस) गाँव को मुँह फेरकर एक बार देख लो।
देश तो छोड़ रही हो,
(लेकिन) देश को घूमकर फिर एक बार देख लो।

तुम गाँव को फिर एक बार देख लो
तुम्हारी सहेलियाँ (तुमसे) मिलने के लिए आई हैं।
तुम देश को फिर लौटकर एक बार देख लो
तुम्हारी सखियाँ (तुमको) देखने के लिए आई हैं।

५८

हे मा, मुझे फूल पहना दो।
हे पिता, मुझे कोमल पल्लवों से सजा दो।

फूल तो पहनाऊँगी, किन्तु कौन-सा फूल ?
कोंपलों से तो सजा दूँगा, किन्तु किन कोंपलों से ?

हे माँ, मुझे साखू का फूल पहना दो
हे पिता, मुझे साखू की नई कोंपलों से सजा दो।

५६

अरे-चण्डुः अतेञ् उडुः केन
मेन्दो हिजुः लेन बा लेक
जी रेयः दुकु सोबेन् रड़ेः जन
अम्गे तञः मइ जिरेअः लन्द

बा लेक-मइनम् हिजुः अकन
पुनिम चण्डुः लेकम् मेद-मुअड़कन
अम्गे तञः मइ जी रेअः लन्द
तुर् तन् सिङ्गि लेकम् मर सल् केद

६०

गोड़् मे दिने मुण्डि तेबः लेन
डड़ि दः रेगेम् इअम् तन
चले मे बोचोर् नेण्ड पुर लेन
सुदे दगे रेगेम् सयद् तन

डड़ि दः रेगेम् इअम् तन
एङ्गम् अपुमे कोम् उड़ुः तन
सुइले दः रेगेम् सयद् तन
हगम् बरेमे कोम् सयद् तन

एङ्गम् अपुमे कोम् उड़ुः तन
उरिः लेक गेको अकिरिङ् मेअ
होनेम् बरेम् कोम् सयद् तन
अड़ः लेकगे को केज मेअ

उरिः लेक गेको अकिरिङ् मेअ
बरो टक तेको अकिरिङ् मेअ
अड़ः लेक गेको केज मेअ
कण पोएस तेको केज मेअ

५९

इसी चाँद की (के दर्शन की) मैं प्रतीक्षा कर रहा था,
लेकिन अब यह फूल के समान आया है।
(इसे पाकर) मेरे हृदय की सारी ज्वाला शान्त हो गई,
हे चाँद, तुम्हीं मेरे हृदय की सारी प्रसन्नता हो।

हे बालिका, तुम फूल के समान आई हो
और पूर्णिमा के चाँद के समान तुम्हारा मुख है।
तुम्हीं मेरे हृदय की सारी प्रसन्नता हो
तुम उगते सूरज के समान अपना प्रकाश फैला रही हो।

६०

तुम्हें देने (शादी करने) का दिन पहुँच गया,
तुम डाड़ी के पानी में रोती रहती हो।
तुम्हें भेजने का वर्ष पूरा हो गया,
तुम झरने के पानी में आह भरती रहती हो।

तुम जो डाड़ी के पानी में रोती रहती हो
(सो) माँ-बाप को सोचती रहती हो।
तुम जो झरने के किनारे आह भरती रहती हो
(सो) अपने भाई-बन्धुओं के लिए कलपती रहती हो।

(तुम जिन) माँ-बाप को सोच रही हो
(वही) गाय-बैल की तरह तुम्हें बेच देंगे।
(तुम जिन) भाई-बन्धुओं के लिए कलप रही हो
(वही) साग-पात के समान तुम्हें बेच देंगे।

गाय-बैल की तरह तुम्हें बेच देंगे
तुम्हें बारह रुपये पर बेच देंगे।
तुम्हें साग-पात की तरह बेच देंगे
तुम्हें एक अधेली के लिए बेच देंगे।

६१

सोमए बरि होम्
दिले दोङ्गोब
नुसड़ बरि होम्
लङ चेणे बोण्डोल

सोमए सेनो जन्
देअम् कुब जन्
नुसड़ बिरिद् जन्
जोअम् रेपो जन्

जोजो लेकगे
देअम् कुब जन्
सोसो लेकगे
जोअम् रेपोजन्

६२

अमगः कजिअ सिसिबाञ्
अयुम् लेदय सिसिबा
अमगः बकणय हरिबाञ्
अतेने लेद्

चेतन् टोलरे सिसिबाञ्
अयुम् लेदय सिसिबा
लतर् टोला रे हरिबाञ्
अतेने लेद्

गोङे मेअको सिसिबाञ्
अयुम् लेदय सिसिबा
चल् मेअ को हरिबाञ्
अतेने लेद्

६१

जबतक समय था
(तबतक तुम्हारे) दिल में उमंग थी ।
जबतक दिन थे
(तबतक) लं-पत्ती के समान तुम्हारा पिछौटा था ।

समय चला गया
(और) पीठ झुक गई ।
दिन बीत गये
(और) गाल पिचक गये ।

इमली के समान
(तुम्हारी) कमर झुक गई ।
मेलवा के समान
(तुम्हारे) गाल पिचक गये ।

६२

ऐ सिसिबा, मैंने तुम्हारे बारे में एक बात सुनी है ।
ऐ हरिबा, मैंने तुम्हारे बारे में एक चर्चा सुनी है ।

ऐ सिसिबा, मैंने (उस बात को) ऊपर टोले में सुना है ।
ऐ हरिबा, मैंने (उस बात को) नीचे टोले में सुना है ।

ऐ सिसिबा, मैंने सुना है कि तुम्हें विवाह कर ले जायेंगे ।
ऐ हरिबा, मैंने सुना है कि तुम्हें (दूसरे को) दे देंगे ।

सङ्गिन् दिसुम् रे सिसिबा को
गोङे मेयय सिसिबा
जिलिङ् गमएरे हरिबा को
चले मेअ

६३

एते सोम्बरि, ओकोरेको बइ तन
एते सोम्बरि, सोना समड़ोम्
एते बुदुनि, चिमय्रेको बड़्इ तन
एते बुदुनि बुदुकुमुनि[1]

एते सोम्बरि बुण्डुरेको बइ तन
एते सोम्बरि सोना समड़ोम्
एते बुदुनि टमड़ रेको बड़्ई तन
एते बुदुनि बुदुकुमुनि

६४

लेलेसि सिसिपिड़ि हो
लेलेसि लो तन
लेलेसि तिलइ बदि हो
लेलेसि बलेतन

सिसिपिड़ि लो तन मनजु
ओकोरेम् अतिङ मनजु
तिलइ बदि बलेतन असकल्
चिमएरेम् गुसम्

तर तेदो लो तन मनजु
तर रेम् अतिङ मनजु
तर तेदो बले तन असकल्
तर रेम् गुसम्

---

१. इसमें 'सोम्बरि' तथा 'सोना समड़ोम्' में और 'बुदुनी बुदुकुमनी' में अनुप्रास की छटा प्रदर्शित की गई है।

ऐ सिसिबा, तुम्हें दूर देश में विवाह देंगे ।
ऐ हरिबा, तुम्हें दूर देश में देंगे ।

६३

सोम्बारी कहाँ बनाते हैं
सोम्बारी, सोने का गहना
बुधनी कहाँ बनाते हैं
बुधनी, बुदु मछली पकड़ने की कुमनी

सोम्बारी, बुण्डू में बनाते हैं
सोम्बारी, सोने का गहना
सोम्बारी तमाड़ में बनाते हैं
मछली पकड़ने की कुमनी

६४

देखो, सिसिपिड़ि
धधककर जल रही है ।
देखो, तिलई बादी
तेजी से बरबाद हो रही है ।[1]

हे मैना, सिसिपिड़ी तो जल रही है ।
हे मैना, तुम कहाँ चरोगी ?
हे आसाकल्, तिलई बादी तो बरबाद हो रही है
आसाकल् , तुम कहाँ विचरोगे ।

हे मैना, (सिसिपड़ी) आधा जल रही है
(तो) तुम आधे में चरना ।
हे आसाकल्, (तिलई बादी) आधा बरबाद हो रही है ।
(तो) तुम आधे में विचरना ।

---

१. एक बार राँची के पास मुण्डाओं की किसी से लड़ाई हुई थी, वही सिसिपिड़ी और तिलई बादी के मैदान हैं । मुण्डा अपने अस्तित्व की चिन्ता कर रहा है ।

६५

बुरु रे बुरु रे मनि दोगो
बेड़रे बेड़रे रइ
ओकोएगे हेरेलेद् मनि दोगो
चिमएगे पसिर् लेद रइ

मुण्ड कोगे हेरे लेद् मनि दोगो
सन्त कोगे पसिर् लेद राई
लिमङ लोमोङ मनि दोगो
किदर कोदर रइ

सिदे लेगे मोनीञ मनि दोगो
टोटाः लेगे सनञ रइ
अलोकुड़ि किङ् बन् सिदेअमनि दो
आलोकोड़ किङ् बेन् टोटएअ रइ

तिरे मुदम् गोनोङ् ते मनि दो
जङ्गरे पोल सतितेरइ

६६

सिरिमरे सिङ्बोङ्ग राजा
चिकन् जोनोमेदोम् ओंमादिञ
ओतेरे बोसोमोती बिधाता रानी
मेरेकन् लिखानेदोम् लिखादिञ्

सिरिमरेन् सिङ् बोङ्ग राजा
मनोअ जोनोमेदोम् ओंमदिञ
ओतेरे बासो मोती बिधाता रानी
नोरे लिखाने दोम् लिखादृदिञ

६५

पहाड़-पहाड़ पर सरसों है
(और) घाटी-घाटी में राई
सरसों को किसने लगाया है ?
राई को किसने बोया है ?

सरसों को मुण्डाओं ने लगाया है
कोमल-कोमल सरसों को।
राई को सन्तालों ने लगाया है,
नरम-नरम राई को।

कोमल-कोमल सरसों बढ़ रही है
सरसों को तोड़ने की इच्छा होती है।
नरम-नरम राई खिल रही है,
राई को तोड़ने का जी चाहता है।

हे लड़कियो, इस सरसों को मत तोड़ो,
इस सरसों का दाम हाथ की अँगूठी के बराबर है।
हे लड़को, इस राई को मत तोड़ो
इस राई का मोल पैर की अँगूठियों के समान है।

६६

हे आकाश के देवता राजा,
तुमने हमको क्या जन्म दिया ?
हे पृथ्वी की वसुमती रानी (देवी),
तुमने हमारे भाग्य में क्या लिख दिया ?

हे आकाश के देवता,
तुमने मुझे मनुष्य में जन्म दिया।
हे पृथ्वी की देवी,
तुमने हमारे भाग्य में मनुष्य-जन्म लिख दिया।

मनोअ जोनोमेदोम् ओमद्दिञ
सङ्गिन् दिसुमेरेम् ओमद्दिञ
नोरे लिखानेदोम् लिखाद्दिञ
जिलिङ् गमएरेम् लिखाद्दिञ

६७

गंगा तल चिरे समुन्दर् तल
गेलेबर् गोसाईं को दुबकन
गंगा तल चिरे समुन्दर् तल
हिसि बर् बमणे को जारुअकन

चि रे गतिञ् को चिकतन
गेलेबर् गोसाईं को दुबकन
मेरे रे सङ्गञ् को रिकतन
हिसि बर् बमणे को जारुअकन

कचि गतिञ्रे को उदुबद्मेअ
सिद रेन् गातिमे को हरि बोलतन
कचि सङ्गञ् रे को चुण्डुलद् मेअ
तयोम्रेन् सङ्गमेको रामे राम तन

६८

जिली मिली सेरेङ् रे
किचिरि नुर कुड़ि किङ्
चप चुड़ि सड़गिर्रे
गमेछा सोबोद् कोड़किङ्

किचिरि नुर कुड़ि किङ्
किचिरि अतु तन
गमेछा सोबोद् कोड़ किङ्
गमेछा बुअल्तन

तुमने मनुष्य का जन्म तो दिया,
लेकिन दूर देश में भेज दिया।
तुमने भाग्य में नर-जन्म तो लिखा,
पर दूर इलाके में (भेजकर) लिख दिया।

६७

गंगा के बीच या समुद्र के बीच
बारह गोसाईं बैठे हुए हैं।
गंगा के बीच या समुद्र के बीच
बाईस ब्राह्मण पहुँचे हुए हैं।

वे बैठे हुए बारह गोसाईं
हे मित्र, क्या कर रहे हैं!
वे आये हुए ब्राह्मण (बाईस)
हे साथी, क्या कर रहे हैं?

क्या तुमको नहीं बताया गया है
(कि) वे तुम्हारे पहले के साथी की अन्त्येष्टि-क्रिया कर रहे हैं!
क्या तुमको नहीं बताया गया है
(कि) वे तुम्हारे पीछे के संगी का अन्तिम संस्कार कर रहे हैं?

६८

चमकती हुई चट्टान पर
कपड़ा धोनेवाली दो लड़कियाँ (हैं)।
चमचम डाबर में,
गमछा साफ करनेवाले दो लड़के (हैं)।

हे कपड़ा धोनेवाली लड़कियो,
(तुम्हारा) कपड़ा बह रहा है।
हे गमछा साफ करनेवाले लड़को,
(तुम्हारा) गमछा उतरा रहा है।

किचिरि अतु तन
बिङ् को इकिर् ते
गमेछा बुअल्तन
तयन् को मण्डोअते

६९

बा बसि तद-चिको बुरु बसि तद
कुपुल् चेतन् कुपुल् दोको हिजुः तन
हेसः जरोम् तन चिरे बड़े गदरतन
चेणे चेतन चेणे दोको हड़गुन् तन

चिक नङ्गेन् गे
कुपुल् चेतन् कुपुल् दोको हिजुः तन
मेरे को नङ्गेन् गे
चेणे चेतन चेगे दो को हड़गुन् तन

बा बसिओ क गेबुरु बसिओ क
हिजुः मेन गे कोहिजुः तन
हेसः ओ क गे बड़ेओ क गे
हड़ गुन् मेन गेको हड़गुन् तन।

७०

अलङः सोङ्गेति दो दइ
कएः उड़ुङ् जन
अलङः पिरिति दो दइ
कएः पएअर जन

चिके मेन्ते दइ
कएः उड़ुँ जन
मेरे को मेन्ते दइ
कएः पएअर जन

(तुम्हारा) कपड़ा (जो) बह रहा है
(वह) साँप की गहराई में बह रहा है।
(उस गहराई में, जहाँ साँप रहते हैं)
(तुम्हारा) गमछा (जो) उतरा रहा है
(वह) घड़ियाल के दह में चला जा रहा है।

६९

सरहुल के बासी का दिन है या किसी जतरा के बासी का दिन
मेहमान-पर-मेहमान आ रहे हैं।
पीपल पक रहा है या बड़ गदरा रहा है
पंछी-पर-पंछी उतर रहे हैं।

किसलिए
(ये) मेहमान-पर-मेहमान आ रहे हैं ?
किसलिए
पंछी-पर-पंछी उतर रहे हैं !

सरहुल का बासी भी नहीं है, जतरा का बासी भी नहीं है
आना है (इसलिए) आ रहे हैं (यों ही आ रहे हैं)
पीपल भी नहीं, बड़ भी नहीं (गदराया है)
उतरना है (इसलिए) उतर रहे हैं।

७०

हे दीदी, हमलोगों का साथी नहीं निकला,
हे दीदी, हमलोगों का प्रेमी नहीं आया।

हे दीदी, (साथी) किस कारण नहीं निकला ?
हे दीदी, (प्रेमी) क्यों नहीं आया ?

अलङः सोङ्गोति दो दइ
सेन्देर जन
अलङः पिरिति दो दइ
करेङ्ग जन

एकसि को पिड़ि रे दइ
सेन्देर जन
तेरसि को बदि रे दइ
करेङ्ग जन।

अलङः सोङ्गोति दइ
सिदा सारजन
अलङः पिरिति दइ
तयोम गुलिजन

७१

चिमिन् सिरिमगोम् डिण्डलेद
कोकोर् लेक निदम् अतिङ्जन
चिमिन् कलोमेगोम् डङ्गुअलेद
हपुः लेक सिङ्गिम् दुङुम्जन।

हिसिबर् सिरिमगोम् डिण्डलेद
कोकोर् लेक निदम् अतिङ्जन
गेले बर् कलोमेगोम् डङ्गुअलेद
हपुः लेक सिङ्गिम्दुङुम्जन।

हिअतिङ्गे मोनीञ रे चकतिङ् गे सनञ्
कोकोर् लेक निदम् अतिङ् जन
हिअतिङ्गे मोनीञ चकतिङ् गे सनञ्
हपुः लेक सिङ्गिम् गितिः जन।

हे दीदी, हम दोनों के साथी को
शिकार कर लिया गया।
हे दीदी, हम दोनों का प्रेमी
मार डाला गया।

हे दीदी, एकासी के मैदान में
शिकार किया गया।
हे दीदी, तेरासी के मैदान में
मार डाला गया।

हे दीदी, हमारे साथी को
पहली गोली लगी।
हे दीदी, हमारे प्रिय को
पिछला तीर लगा।

७१

कितने वर्षों तक कुँवारी रही
कि उल्लू पक्षी की तरह रात में चरने निकलती हो?
कितने वर्षों तक तुम अविवाहित रही
कि तुम हापू पक्षी की तरह दिन में सोया करती हो?

बाईस वर्ष कुँवारी रही
(जिसके कारण) उल्लू के समान रात में जागती रहती हो।
बारह वर्ष तक अविवाहित रही
(जिस कारण) हापू के समान दिन में सोती हो।

मुझे आश्चर्य होता है कि तुम
रात में उल्लू के समान चरने जाती हो।
मुझे दुःख होता है कि तुम
दिन में हापू की तरह सोया करती हो।

७२

चिमिन्-चिमिन् चेणे चिरिगल्तेम
मुसिङ् रेओ चेणेञ् अट मेअ
चिमिन्-चिमिन् चेणे बनित तेम
मुसिङ् रेओ चेणेञ् जुड़ः मेअ ।

मुसिङ् रेओ चेणेञ् अट मेअ
डड़ि दगे रेगेञ् अट मेअ ।
बरसिङ् रेओ चेणेञ् जुड़ःमेअ
सुदे दगे रेगेञ् जुड़ःमेअ

डड़ि दगे रेगेञ् अट मेअ
चुटि अपरोब् रेगेञ् अट मेअ ।
सुदे दगे रेगेञ् जुड़ः मेअ
सुब कनसुल् रेगेञ् जुड़ः मेअ ।

७३

ओते लिटि लिटि चिरे सिर्म लोपोङ् लोपोङ्
सुतम् रेको गुतुतद सरजोम् बा
ओते लिटि लिटि चिरे सिर्म लोपोङ्-लोपोङ्
चरिः रेको गलङ् तद सुड़ सङ्गेन्

मोदे सुतम् बरे सुतम्
सुतम् रेको गुतु तद सरजोम् बा
मोदे चरिः बरे चरिः
चरिः रेको-गलङ् तद सुड़ सङ्गेन्

सुतम् रेको गतु तद सरजोम् बा
सुतम् रेगे गोसोजन सरजोम् बा
चरिः रेको गलङ्तद सुड़ सङ्गेन्
चरिः रेगे मएल जन सुड़ सङ्गेन्

७२

हे पद्दी, तुम कितनी चतुराई करोगे ?
एक दिन तुमको बझा ही देंगे !
हे पद्दी, तुम कितनी चालाकी करोगे ?
एक दिन तुमको फँसा ही लेंगे !

हे पद्दी, एक दिन बझा लेंगे,
डाड़ी के पानी में ही बझा लेंगे।
हे पद्दी, एक दिन फँसा ही लेंगे,
झरने के पानी में ही फँसा लेंगे।

डाड़ी के पानी में ही बझा लेंगे,
पंखों की चोटी में ही बझा लेंगे ।
झरने के पानी में ही फँसा लेंगे,
पंखों की जड़ों में ही फँसा लेंगे।

७३

धरती गीली-गीली है और आकाश दग-दग जल रहा है
लोग सूत में साखू के फूल गूँथे हुए हैं।
धरती भींगी-भींगी है और आकाश धाँय-धाँय तप रहा है
लोगों ने कोमल पल्लवों के गुच्छे बनाये हैं।

एक सूत दो सूत
सूत में साखू के फूल गुँथे हुए हैं।
एक तीली दो तीली
तीली में गुच्छे बनाये हुए हैं।

सूत में जो साखू के फूल गुँथे हैं
(वे) सूत में ही सूख गये।
तीली में जो कोमल पल्लवों का गुच्छा बनाया है
वह तीली में ही कुम्हला गया।

७४

उरि: गुपि बुगिनचि मेरोम् गुपि बुगिन्
मन्दुकम् पिडि तेको निरेगेअ
उरि: गुपि बुगिनचि मेरोम्गुपि बुगिन्
सरजोम्बेड़ तेको दउड़ी गेअ

मन्दुकम्पिड़ि तेको निरे गेअ
मन्दुकम् होरो कुड़ि एरङ् तन
सरजोम् बेड़ तेको दउड़ी गेअ
सरजोम् जङ्गि कोड़ सेगेद् तन

मन्दुकम् होरो कुड़ि एरङ् तन
जति पति होएः एरङ् तन
सरजोम् जङ्गि कोड़ सेगेद् तन
किलि-मिलि होएः सेगेद् तन

७५

देनवइ अम्लेक चुकुबुरु
देन दइ सुपिद् तञ् मे
देन दइ अम्लेक जिर्पि जलङ्
देन दइ पएल तञ् मे

देन दइ अम् लेकञ् लेलोः रेदो
देन दइ सुपिद् तञमे
देन दइ अम् लेकञ् चिन ओः रेदो
देन दइ पएल तञ् मे

देन दइ करेञ् हिरुमेन
देन दइ सुपिद् तञ् मे
देन दइ करेञ् गोड़ोमेन
देन दइ पएल तञ् मे

७४

बैल चराना अच्छा है या बकरी चराना
बकरियाँ महुए के टाँड़ में दौड़ रही हैं !
बैल चराना अच्छा है या बकरी चराना
बैल, तराई के साखू की ओर भाग रहे हैं ।

(बकरियाँ जो) महुए के टाँड़ की ओर दौड़ रही हैं
(इसके लिए) महुए की रखवालिन स्त्री गाली दे रही है ।
(बैल जो) साखू की ओर भाग रहे हैं
साखू का रखवाला आदमी गाली दे रहा है ।

महुआ की रखवालिन स्त्री गाली दे रही है
जाति-पाँति का नाम लेकर गाली दे रही है ।
साखू का रखवाला आदमी गाली दे रहा है
कुल-गोत्र का नाम लेकर गाली दे रहा है ।

७५

हे दीदी, तुम भी मुझे अपने समान ऊँचा खोपा बना दो
हे दीदी, तुम मुझे भी अपने समान फहराता हुआ आँचल
(वाली साड़ी) पहना दो ।
हे दीदी, तुम मुझे भी खोपा बना दो ।

(जिससे) मैं भी तुम्हारी तरह दिखाई दूँ !
हे दीदी, तुम मेरा भी आँचल फहरा दो ।

(जिससे) मैं भी तुम्हारी तरह फबूँ !
हे दीदी, मैं तुम्हारी सौत नहीं बनूँगी (ऐसा न सोचो)
मुझे खोपा बना दो ।
हे दीदी, मैं तुम्हारी सौत नहीं बनूँगी,

अञगः ओ मेनः इअनदइ
सुकुबारे सेपेड़ेद्
अञगः ओ मेनः इअन दइ
तयर् नणि बिजिर् बलङ्

७६

जओ जदूर् अखड़ रे मइ न
फिरे फिरे बिउरेन् मे
जओ रुड़ुङ् सेरेङ् रे मइ न
रिले गुमे खेलड़ि मे

ने डिण्ड सोमएरे मइ ब
फिरे फिरे बिउरेन् मे,
ने डङ्गुअ नुसड़रे मइ न
रिले गुमे खेलड़ि मे

अम् मइनम् जुड़ि जन् रे
डड़ि दःरे मेद् दःम् जोरोएअ
अम् मइनम् जोत जन्रे
सुदद: रेम् रः गेराङ

रगे रेओ मइनम् गेरडे रेओ
करेम् नमेअरे एङ्ग दुलड़
उड़ु: रेओ मइनम् फिकिर् रेओ
करेम् नमेअरे अपु दुलड़

७७

रबङ् तन् रेदो बोले रेअड़ तन् रेदो
मरे होञ् बोलो अरे कुद सुड़
रबङ् तन् रेदो बोले रेअड़ तन् रेदो
मरे होञ् सोड़ोअरे बरुसुड़।

मेरा भी आँचल सँवार दो।
हे दीदी, मेरा (प्रेमी) भी कद्दू के फूल के समान सुन्दर जवान है।
हे दीदी, मेरा (प्रेमी) भी खीरे की लता के समान
सुन्दर जवान है।

७६

हे बेटी, जदुर के अखाड़े में
घूम-घूमकर नाच लो।
हे बेटी, चट्टान की ढेंकी में
फटक-फटककर खेल लो।

इस कुँवारी समय में हे बेटी,
घूम-घूमकर नाच लो!
जबतक अविवाहित हो, हे बेटी,
फटक-फटककर खेल लो!

(जब) तुम ब्याह दी जाओगी
(तब) डाड़ी के पानी में आँसू गिराओगी।
(जब) तुम्हारी शादी हो जायगी
(तब) झरने के किनारे (बैठकर) रोओगी।

(लेकिन) तुम चाहे जितना भी आँसू गिराओ
माँ का प्यार नहीं पाओगी।
(लेकिन) तुम चाहे रोओ-कलपो
पिता का प्यार नहीं मिलेगा।

७७

जाड़ा लगेगा ठण्ड लगेगी
हे जामुन की कोंपल (के समान सखी) मैं (घर में) घुसना चाहूँगा।
जब जाड़ा लगेगा, ठण्ड लगेगी
हे कुसुम की कोंपल (के समान संगिनी) मैं (घर में) घुसना चाहूँगा।

मरे होञ् बोलोअरे कुद सुड़
डुब लेकन् सुपिद् ते इकुञ् मेहो
मरे होञ् सोड़ोअरे बरु सुड़
जिरपि जलङ् पएलते दनङिञ् मेहो

डुब लेकन् सुपिद ते उकुञ् मेहो
सङ्गिन् दिसुम् तेलङ् सेनोआ दो
जिरपि जलङ् पएलते दनङिञ् मेहो
जिलिङ् गमए तेलङ् बिरिद दो

७८

ददय बुण्डु हतु दो
ददय दिकुकजि गे
ददय सरगेआ दो
ददय बंगालिअ गे

ददय दिकु कजि दो
ददय कञ् इतुअन्
ददय बंगालिअ दो
ददय कञ् सरिअन्

बबु रे मएनो लेक गे
बबु रे कजि इतुन् मे
बचा रे सलु लेक गे
बचा रे बक्रण सरिन् मे

७९

अम्न मइ बले अकन् रे
बुण्डु बिर् बिरे लेन
अम्न मइ लिण्डुङ् अइन् रे
कुकुरु डड़ि दपेरे लेन्।

हे जामुन की कोंपल, मैं घर में घुसूँगा
कटोरे के समान खोपा से ढक दो।
हे कुसुम की कोंपल, मैं आऊँगा
अपने विस्तृत आँचल में छिपा लो।

मुझे खोंपा से ढक दो (लो)
हमलोग दूर देश में चले जायेंगे।
मुझे आँचल में छिपा लो
हमलोग दूर देश में चले जायेंगे।

७८

हे दादा, बुण्डू गाँव में तो
हे दादा, सदानी बोली बोली जाती है,
हे दादा, सरगेया गाँव में तो
हे दादा, बंगाली बोली बोली जाती है।

हे दादा, सदानी बोली तो
हे दादा, मैं नहीं जानता !
हे दादा, बंगाली भाषा तो
मैं नहीं समझता !

हे भाई, तुम मैना के समान (बोल-बोलकर)
सदानी बोली सीख लो !
हे भाई, तुम सुग्गा के समान (बोल-बोलकर)
बंगाली बोली सीख लो !

७९

हे बेटी, जब तुम छोटी थी
(तब) बुण्डू में घना जंगल भरा हुआ था।
हे बेटी, जब तुम छोटी थी
(तब) कुकरु डाड़ी का पानी भरा हुआ था।

अम्न मइ मत जन
बुण्डु बिर् उजड़ जन्
अम्न मइ सेण जन
कुकुरु डड़ि दः अञ्जेद् जन्

अम्न मइ को गोड़् केदेम
बुण्डु बिर बिर् रुअड़् जन्
अम्न मइ कोचले केदेम
कुकुरु डड़ि दः पेरे जन्

८०

बिउरेन् मे ज सलु
बिउरेन् मेहो
सेकोरेन् मे ज सलु
सेकोरेन् मेहो

हेसः सकम् लेक सलु
बिउरेन् मेहो
बड़े सकम् लेक सलु
सेकोरेन् मेहो

हेसः सकम् दो ज सलु
जिजिलद् गेअ
बड़े सकम् दो ज सलु
बोबोरोड़ो गेअ

सुनुम् चिको दुले तद
जिजिलद् गेअ
गोतोम् चिको अरेः तद
बोबोरोड़ गेअ

हे बेटी, जब तुम बड़ी हो गई
(तब) बुण्डू का जंगल उजड़ गया।
हे बेटी, जब तुम बुद्धिमती हो गई
(तब) कुकरु डाड़ी का पानी सूख गया।

हे बेटी, जब तुम्हरी शादी हो गई।
(तब) बुण्डू का जंगल फिर से घना हो गया।
हे बेटी, जब तुम्हारा विवाह हुआ
(तब) कुकरु डाड़ी में फिर पानी भर गया।

८०

घूम-घूमकर नाचो, सालू,
घूम-घूमकर नाचो।
फिर-फिरकर नाचो सुग्गे,
फिर-फिरकर नाचो।

हे सालू, पीपल की पत्ती की तरह
घूम-घूमकर नाचो।
हे सालू, बरगद की पत्ती की तरह
फिर-फिरकर नाचो।

हे सालू, पीपल की पत्ती
(कितनी) चिकनी है!
हे सुग्गे, बरगद की पत्ती
(कितनी) पिच्छल है।

क्या उसपर तेल उडेल दिया गया है
(कि पीपल की पत्ती) इतनी चिकनी है।
क्या उसपर घी छिड़क दिया गया है
(कि बरगद की पत्ती) इतनी पिच्छल है।

८१

एङ्गमेको बा कटब्[1] तन मइ
कुण्डम् रेम् तिङ्गुअकन्
अपुमेको गिड़ि तोरो एः[2] तन मइ
सलन्दि रेम् जपगकन्
कुण्डम् रेम् तिङ्गुअकन् मइ
कुण्डम् हस हन्दिड़ि तन्
सलन्दि रेम् जपगकन् मइ
चन्दए दः दो जोरो तन्
हिअतिङ् गे मोनिञ
कुण्डम् हस हन्दिड़ितन्
चकतिङ् गे सनाञ
चन्दए दः दो जोरो तन्

८२

मरङ् गड़ चिरपि लेक मइनम्
बिजिर् बिजिर् मइन
हुड़िङ् गड़अएनयर लेक मइनम्
बिअन् बोयोन मइन
एङ्गम् मेनइः सुमुङ् गे मइनम्
बिजिर् बिजिर् मइन
अपुम् मेनइः परिअगे मइनम्
बिअन बोयोन मइन
एङ्गम् बड़े गोएः जन्रे मइनम्
विकु कमिणिना दो मइन
अपुम् बड़े सेर्जन्रे मइनम्
सरग टेक ड़िन दो मइन

---

१. कटब्=सरहुल का उपवास।
२. गिड़ि तोरो एः=दूसरे दिन का उत्सव, जिसमें मछली पकड़ी जाती है।

८१

हे बेटी, तुम्हारी माँ सरहुल का उपवास कर रही है
और तुम पिछ्वाड़े खड़ी हो।
हे बेटी, तुम्हारा बाप गिड़ी तोरो एः कर रहा है
(और) तुम ओरी के नीचे सटी हो।

हे बेटी, तुम पिछ्वाड़े खड़ी हो
और पिछ्वाड़े की मिट्टी धँस रही है।
हे बेटी, तुम ओरी के नीचे सटी हो
(और) ओरी का पानी चू रहा है।

मुझे चिन्ता हो रही है
कि पिछ्वाड़े की मिट्टी धँस रही है।
मुझे दुःख हो रहा है
कि ओरी चू रही है।

८२

हे बेटी, तुम बड़ी नदी कीं चिरपी मछली के समान
हे बेटी, तुम चमकती फिरती हो!
हे बेटी, तुम छोटी नदी की अयरा मछली के समान
हे बेटी, तुम फुदकती फिरती हो!

हे बेटी, जबतक तुम्हारी माँ है
(तभी तक) चमकती फिरती हो।
हे बेटी, जबतक तुम्हारा बाप है
(तभी तक) फुदकती फिरती हो।

हे बेटी, जब तुम्हारी माँ मर जायगी
तब तुम किसी दीकू की दासी बन जाओगी।
हे बेटी, जब तुम्हारा बाप मर जायगा
तब तुम किसी सरगा की दासी बन जाओगी।

८३

हाय रबङ् जू रबङ्
हाय रबङ् सेनोः मे
हाय रेअड़ मरे रेअड़
मरे रेअड़ बिरिद् मे

जू रबङ् सेनो मे
बएपरिको जुड़ि कमड़
मरे रेअड़ बिरिद् मे
लदेना को जुड़ि चँवर्

सेनोः दोञङ सेनोःअ
वामण्डि जोम् लेअते
बिरिदे दोञ् बिरिद
टण्डः इलि नू केअते

८४

अङ् नम् रेङ्गेः चिगितिः नम् गोनोएः
चिमिन् चिमिन् लङ् हिअतिङ्
अङ् नम् रेङ्गेःचि गितिःनम् गोनोएः
चिमिन् चिमिन् लङ् चकतिङ्

हिअतिङ् मोनिञरे चकतिङ् सनञ्
चिमिन् चिमिन् लङ् हिअतिङ्
हिअतिङ् मोनिञरे चकतिङ् सनञ्
चिमिन् चिमिन् लङ् चकतिङ्

चिमिन् चिमिने लङ् हिअतिङ्
बन्दि बबओ चब तन
चिमिन् चिमिने लङ् चकतिङ्
मिण्डि मेरोमे को टुण्डु तन

८३

हाय जाड़ा !
तुम चले जाओ।
हाय ठण्ड !
तुम उठ जाओ।

हे जाड़ा, तुम उन व्यापारियों के पास जाओ
जिनके पास जोड़ी कम्बल है।
हे ठण्ड, तुम उन सौदागरों के पास जाओ
जिनके पास मोटे कपड़े हैं।

जाने को तो जायेंगे,
पर सरहुल का भात खा लेने के बाद !
उठने को तो उठेंगे,
पर सरहुल का हँड़िया पी लेने के बाद !

८४

भूखे-प्यासे (सवेरे) उठना और भूखे-प्यासे (रात में) मुर्दे के समान सो जाना !

हाय, हमलोग कबतक दुःख काटें ?
भूखे-प्यासे उठना और रात में मर जाना !
हमलोग कबतक कष्ट झेलें ?

मुझे अचरज होता है
कि हमलोगों को इतना-इतना दुःख काटना पड़े !
मुझे आश्चर्य होता है
कि इतना-इतना कष्ट भोगना पड़े !

हमलोग कितना-कितना सोचें,
बँधा हुआ 'मोरा'[1] भी खत्म हो रहा है।
हमलोग कबतक हाय-हाय करें,
भेड़-बकरियाँ भी खत्म होती जा रही हैं।

---

१. पुआल से बँधा हुआ धान का गट्ठर।

८५

एकसि पिड़ि चिरे तेरसि बदि
बलेः होने दोको तो तोले तिअ
एकसि पिड़ि चिरे तेरसि बदि
लिण्डुङ् गण दोको नेओड़ तिअ

बलेः होने दोको तोले तिअ
चिको मेन्ते को तोले तिअ
लिण्डुङ् गण दोको नेओड़ तिअ
मेरे को मेन्ते को नेवड़ा तिअ

एङ्गते जोमे लेद जेटे रिणि
जेटे रिणि तेको तोले तिअ
अपुते लेद जरगि कड़ि
जरगि कड़ि तेको नेओड़ तिअ

८६

इसु दुकु सुकु तेबु तेबः नम् तद
सोना लेकन् बा चण्डुः मुलुःअकन
कमि उदम् दुकुतेबु सेटेर् नम् तद
रूपा लेकन् बा चण्डुः सेटेरकन

सोना लेकन् बा चण्डुः मुलुः अकन
मुनु पोटोम् बन्दि बब होदोड़ो जन
रूपा लेकन् बा चण्डुः सेटेरकन
केरे बोरे कलुटि दोएः डुबओ जन

हिअतिङ् मोनिञरे चकतिङ् सनञ्
मुनु पोटोम बन्दी बब होदोड़ो जाना
हिअतिङ् मोनिञरे चकतिङ् सनञ्
केरे बोरे कलुटि दोएः डुबओ जन

८५

एकासी के टाँड़ (और) तेरासी के चँवरा में
नादान लड़के को पकड़ रखा है,
एकासी के टाँड और तेरासी के चँवरा में
छोटे बच्चे को बाँध लिया है

छोटे बच्चे को जो बाँध लिया है
(सो) किसलिए बाँध लिया है ?
नादान लड़के को जो पकड़ रखा है
(सो) क्यों पकड़ रखा है ?

उसकी माँ ने जेठ में ऋण लिया था
उसी ऋण के कारण बाँध लिया है।
उसके बाप ने बरसात में कर्ज लिया था
उसी कर्ज के कारण पकड़ रखा है।[1]

८६

बहुत दिनों के सुख-दुःख के बाद सरहुल पहुँचा है
(और) सोने के समान सरहुल चाँद निकल गया है।
बहुत उद्यम, काम और सुख-दुःख के बाद (यहाँतक) हम पहुँचे हैं
(और) रूपे के समान चैत का चाँद उगा है।

सोने के समान सरहुल का चाँद उग गया है
(लेकिन) नये बाँधे हुए धान के मोरे खत्म हो गये।
रूपे के समान चैत का चाँद आ गया है
(लेकिन) कुड़कुड़ाती हुई मुरगी खत्म हो गई।

हमें चिन्ता हो रही है
(कि) नये मोरे का सब धान खत्म हो गया।
हमें विस्मय हो रहा है
(कि) कुड़कुड़ाती हुई मुरगी खत्म हो गई।

---

१. माँ-बाप का कर्ज चुक के लिए छोटे बच्चे को नौकर बनकर खेत में काम करना पड़ रहा है।

८७

बुरु मदुकमे हले
बुरु मदुकमे हो
बेड़ सरजोमे हले
बेड़ सरजोम्

बुरु मदुकमे हले
रिबि-रिबि तन हो
बेड़ सरजोमे हले
गस-गसतन

हलङ्-अलङ् गतिञ्
रिबि-रिबि तन हो
तुम्बलङ् सङ्गञ्
गस-गसतन

रिङ्ग कोरे लङ्
तिकि जोमेतेअ हो
अकल् कोरे लङ्
तङ् नबे तेअ

८८

सङ्गिन दिसुमेरे सोङ्गाति गतिञ्
बुरु सोसो लेकञ् लेले मेअ
जिलिङ् गमएरे पिरिति सङ्गञ्
हतु जोजो लेकञ् चिनमेअ

हिअतिङ् मोनिञ रे चकतिङ सनञ्
बुरु सोसो लेकञ् लेले मेअ
हिअतिङ् मोनिञ रे चकतिङ सनञ्
हातुर जो जो लेकाइङ् लेले मेअ

८७

हे मित्र, यह पहाड़ी महुआ,
हे मित्र, यह पहाड़ी महुआ है।
हे मित्र, यह तराई का साखू,
हे मित्र, यह तराई का साखू है।

हे मित्र, यह पहाड़ी महुआ
टपाटप गिर रहा है।
हे मित्र, यह तराई का साखू
झरझराकर झर रहा है।

(महुआ जो) टपाटप गिर रहा है,
(उसे) हमलोग बटोरने चलेंगे।
साखू जो झरझराकर झर रहा है,
(उसे) हम दोनों चुनने चलेंगे।

गरीबी के दिनों में हमदोनों
(उस महुए को) उबालकर खायेंगे।
अकाल के दिनों में हम दोनों
(उस साखू को) पकाकर खायेंगे।

८८

हे प्रिय, तुम दूर देश में
पहाड़ी भेलवा के समान दिखाई देते हो।
हे प्रिय, तुम दूर देश में
गाँव की इमली के समान दिखाई देते हो।

मुझे बड़ा दुःख है कि
तुम पहाड़ी भेलवा के समान दिखाई देते हो।
मुझे बड़ा अफसोस है कि
तुम गाँव की इमली की तरह दिखाई देते हो।

अमःरे हिअतिङ् दो न मइ
दिरि लेक अटल् जन्
अमःरे चकतिङ् दो न मइ
सकम् लेक दोपलि जन्

८९

एल हो कुम्पाट मुण्डा को
एल हो दुबन् पे
एल हो नाग बंसी राजा को
एल हो जरुअन्पे

एल हो ने किल पटि रे
एल हो दूबन् पे
एल हो ने पपड़ गण्डुरे
एल हो जरुअन्पे

एल हो ने घुन तमक
एल हो जोमन्पे
एल हो ने इलि सबः
एल हो नुअन्पे

९०

तिसिङ् दो सोञ्जोको
जोजो रेंगेंहइ को
गप दो सोञ्जोको
गोट रम्बड़

चिको मेनेंगे
जोओ रेंगेंहइ को
मेरे को मेनेंगे
गोट रम्बड़

तुम्हारा दुःख,
चट्टान के समान दब गया है।
तुम्हारा अफसोस
पत्ती के समान हवा में उड़ रहा है।

८९

हे कुम्पाट (शुद्ध) मुण्डा लोगो,
आओ, बैठो।
हे नागवंशी राजाओ,
आओ, बैठो।

आओ, खजूर की चटाई पर,
आओ, बैठो !
आओ, पपड़े के पीढ़े पर,
आओ, बैठो।

आओ, चूना तम्बाकू,
आओ, खालो
आओ, हँड़िया इत्यादि,
आओ, पीलो।

९०

आज सौभाग्य से
इमली के रस में मछली
(और) कल संयोगवश
(पूरे) उड़द की दाल (पकाई जायगी)

किसलिए
इमली के रस में मछली,
(और) किसलिए
उड़द की दाल (पकाई जायगी) ?

सरजोम् बा नङ्गेनेगे
जो जो रेगे हइ को
सुड़ सङ्गेन् नङ्गेनगे
गोट रम्बड़

९१

बादोपे बातन मुण्ड को
बा कपे ओमेअ मुण्ड को
डलि दोपे डलि तन सन्तको
डलि कपे चेदे।

बा तेपे रिङ्ग तन मुण्ड को
बा कपे ओमेअ मुण्ड को
डलि तेपे अकल्तन सन्त को
डलि कपे चेदे।

अलेअः दिसुम् तेपे सेनोः रेदो
सुपिद् चुटि रेले बाकुल्पेअ
अलेअः गमए तेपे बिरिद् रेदो
रोपोद् सुब रेले डलि कुल् पेअ।

सुपिद् चुटि रेले बाकुल् पेअ
लो दोब् लेक गेले बाकुल् पेअ
रोपोद् सुबरे ले डलि कुल पेअ
तिञ्जर् तोञ्जोर् ले डलि कुल् पेअ।

९२

सरजोम् बारे कुइलिम्
हड़गु लेनय कुइलि
सुड़ सङ्गेन् रे कुइलिम्
होसोरे लेन्।

साखू के फूल के लिए (उपलक्ष्य में)
इमली के रस में मछली
और नर्म कोंपलों के लिए (उपलक्ष्य में)
पूरे उड़द की दाल पकाई जायगी।[1]

९१

हे मुण्डा लोगो, तुमलोग सरहुल तो मना रहे हो,
लेकिन फूल नहीं देते हो।
हे सन्ताल लोगो, तुमलोग सरहुल तो मना रहे हो,
लेकिन फूल नहीं देते हो।

ऐ मुण्डाओ, तुमलोग फूल के भूखे हो,
इसलिए फूल नहीं देते हो।
ऐ सन्तालो, तुमलोगों को फूल की कमी है,
इसलिए फूल नहीं बाँटते हो।

(ऐ मुण्डाओ !) यदि तुमलोग हमारे देश में चलो
(तो) हमलोग खोंपा के ऊपर फूल पहनाकर विदा करेंगे।
(ऐ सन्ताल लोगो !) यदि हमारे देश में आओ
तो हमलोग चोटी के नीचे कोंपल पहनाकर विदा करेंगे।

ऐ मुण्डाओ, हमलोग तुम्हारे खोंपा के ऊपर फूल खोंस देंगे,
भरपूर फूल खोंसकर विदा करेंगे।
ऐ पाहुनो, हमलोग तुम्हारी चोटी के नीचे फूल खोंस देंगे,
भरपूर कोंपल खोंसकर विदा करेंगे।

९२

हे कोयल, तुम सारक के फूलों में
हे कोयल, तुम उतरी थी।
हे कोयल, तुम नई कोंपलों में
हे कोयल, तुम आई थी।

---

१. सरहुल पर्व के उपलक्ष्य में मछली बनती है और दूसरे दिन उड़द की दाल पकती है।

इलि मण्डि नङ्नेन्गे कुइलिम्
हड़गु लेनय कुइलि
सिम्कट नङ्नेन्गे कुइलिम्
होसोरे लेन्

इलि मण्डि चबजन कुइलिम्
सेनोः जनय कुइलि
सिम्कट टुण्डूजन कुइलिम
रुअड़ लेन्

६३

बा दोग एअङ्
बा तेबः तन
डलि दोग अपुञ्
डलि सेटेर् तन

बोङ्ग बुरु एअङ्
कञ् इतुअन
सेवा सुसर् अपुञ्
कञ सरिअन ।

इसु सिबिल् जरेते
इतु तञ् मे
इसु हेडेम् बकणते
सरितञ् मे

६४

बा चन्डुः मुलुः लेन
सरजोम् बा बा तन
बलेः ओपद् नव दड़रे
सुड़ सङ्नेन् सुड़ तन ।

हे कोयल, तुम भात और हँड़िया के लिए
हे कोयल, तुम उतरी थी।
हे कोयल, तुम मुरगी की टाँग के लिए
हे कोयल, तुम आई थी।

हँड़िया और भात खत्म हो गया,
हे कोयल, तुम चली गई,
मुरगी की टाँग समाप्त हो गई,
हे कोयल, तुम लौट गई।

६३

बा पर्व तो, हे माँ,
बा पर्व पहुँच रहा है
फूलों का पर्व तो, हे पिता,
फूलों का पर्व पहुँच रहा है।

पूजा करना, हे माँ,
मैं नहीं जानता हूँ।
सेवा करना, हे पिता,
मैं नहीं जानता हूँ।

अत्यन्त मीठी बातों से
मुझे सिखा दो।
बहुत मीठे ढंग से
मुझे बता दो।

६४

चैत का महीना आ गया
साखू का फूल, फूल रहा है।
नये वृक्षों की नई डालों पर
नई कोपलें पल्लवित हो रही हैं।

सरजोम् बा बा तन
दिले दोङ्गोब
सुड़ सङ्गेन सुड़ तन
तिञजर तोञजोर

दिले दोङ्गोब
बा तेगे तोपाकन
तिञजर तोञजोर
सुड़ तेगे दोलोबकन

६५

सङ्गिन् दिसुमतेञ् हिजुःअकन
सोञजोको होर रेपे जदूरतन
गुने ग्यान कन सोबेन् होड़ो
हड़म् बुड़िया को लेलेतन

बुगिन लेकागे होञ् दूरङ्लेद
गुन तद्लेक गेको कुदओ जिञ
रूतन् को दो हो निकु दो निकु
बोरो एः लेक गेको बोतोङ् जिञ

गुन तद्लेक गेको कुदओ जिञ
पएल किचिरि को दन्दोअञ्तन
बोरो एः लेक गेको बोतोङ् जिञ
दीरेन् तन हो को दोमोङेन् तन

६६

ओको कोरे होको सुसुन् तन
बुरु रे लमः जो दो चटगोः लेक
चिमए कोरे होको करम् तन
बेड़रे तिरिल् तरोब् गदरोः लेक

साखू फूल रहा है,
झूम-झूमकर फूल रहा है।
नई कोपलें फूट रही हैं,
गहगहाकर फूट रही हैं।

साखू जो झूम-झूमकर फूल रहा है,
(उससे) डालें ढक गई हैं।
पत्तियाँ जो गहगहाकर फूट रही हैं,
उनसे टहनियाँ ढक गई हैं।

६५

मैं बहुत दूर देश से आया हूँ,
संयोगवश तुमलोग रास्ते में जदुर नाच रहे हो।
सभी ज्ञानी और गुणवान्,
बूढ़े और बूढ़ियाँ देख रही हैं।

मैंने यहाँ अच्छे भाव से ही गाया
(लेकिन) ये लोग अपराधी की भाँति मुझे दौड़ा रही हैं।
और तो और, बाजा बजानेवाले भी
डरा रहे हैं, मानो हम डर जायेंगे।

अपराधी की भाँति मुझे दौड़ा रही हैं
और अपना आँचल तान रही हैं।
और, (बाजा बजानेवाले) डरा रहे हैं, मानों हम डर जायेंगे।
कभी छाती तान रहे हैं, कभी शरीर झाड़ रहे हैं।

६६

लोग कहाँ पर नाच रहे हैं (जिसके प्रभाव से)
पहाड़ पर लामा (एक फल) फटने जैसा (हो गया है)।
कहाँ पर लोग करमा नाच रहे हैं (जिसके कारण)
घाटी में 'तिरिल और तोरोब' गदराने जैसा (हो गया है)।

बुण्डु कोरे होको सुसुन् तन
बुरु रे लमः जो दो चटगोः लेक
तमण कोरे होको करम् तन
बेड़रे तिरिल् तरोब् गदरोः लेक

हिअ तिङ् मोनिञ रे चकातिङ् सनञ्
बुरु रे लमः जो दो चटगोः लेक
हिअतिङ् मोनिञ रे चकातिङ् सनञ्
बेड़रे तिरिल् तरोब् गदरोः लेक

६७

सलुरे सुगम्
नकिगेन् तन
सलुरे सुगम्
जुरुड़् न तन

सलुरे सुग
ओको तेम् तन
सलुरे सुग
चिमए तेम् तन

सलुरे सुग
सुसुन् तेम् तन
सलुरे सुग
करम् तेछिम् तन

सलुरे सुग को
कुणसु तम् गेअ
सलुरे सुग को
तिणिस तम् गेअ

(लोग) बुण्डू में जदुर नाच रहे हैं (जिससे)
पहाड़ पर लामा फटने लगा है ।
(लोग) ताड़ में करमा नाच रहे हैं (जिससे)
'तिरिल और तोरोब' गदरा रहे हैं ।

मुझे आश्चर्य हो रहा है (कि कैसे)
पहाड़ पर लामा फल फटने लगा है ।
मुझे आश्चर्य हो रहा (कि कैसे)
घाटी में 'तिरिल और तोरोब' गदराने लगे हैं ।

९७

हे सालू सुग्गा,
तुम कंघी लगा रहे हो ।
हे सालू सुग्गा,
तुम बाल सँवार रहे हो ।

हे सालू सुग्गा,
तुम कहाँ जा रहे हो ?
हे सालू सुग्गा,
तुम कहाँ चल रहे हो ?

हे सालू सुग्गा,
तुम नाचने जा रहे हो ।
हे सालू सुग्गा,
तुम करम खेलने जा रहे हो ।

हे सालू सुग्गा,
(वहाँ पर लोग तुमको) लात न जमा दें ।
हे सालू सुग्गा,
(वहाँ पर लोग तुमको) गिरा न दें ।

९८

पडिअ रिगि मिगि हो
पडिअ तम् जलतिङ् तन्
डुरिअ जोलो मोलो हो
डुरिअ तम् बुलतिङ् तन्

पड़िअ ओको कोरे हो
पड़िअ तम् जलतिङ् तन
डुरिअ चिमए कोरे हो
डुरिअ तम् बुलतिङ् तन्

पड़िअ सुसुन् कोरे हो
पडिअ तम् जलतिङ् तन्
डुरिअ करम् कोरे हो
डुरिअ तम् बुलतिङ् तन्

९९

दोलङ् हिसि दोलङ् चड़ु रे
सुसुन् को लेले अगुते
दोलङ् हिसि दोलङ् चड़ु रे
करम् को चिन अगुते

कइञः हिसि कइञ चड़ु रे
गतिङो बङ्गइअ
कइञ हिसि कइञ चड़ु रे
सङ्गओ रे बङ्गइअ

दोलङ् हिसि दोलङ् चड़ु रे
सुसुन् रेलङ् नमिअ
दोलङ् हिसि दोलङ् चड़ु रे
करम् रेलङ् चिनइअ

६८

तुम्हारा कपड़ा चितकबरा है,
तुम्हारा कपड़ा उड़ रहा है।
तुम्हारा फीता झलमला रहा है,
तुम्हारा फीता फरफरा रहा है।

(तुम्हारा) कपड़ा कहाँ पर,
तुम्हारा कपड़ा उड़ रहा है।
(तुम्हारा) फीता कहाँ पर,
तुम्हारा फीता फहर रहा है।

(तुम्हारा) कपड़ा नाच में
तुम्हारा कपड़ा उड़ रहा है।
(तुम्हारा) फीता करम में
तुम्हारा फीता फहर रहा है।

६९

हे हिसि, चलो, और हे 'चाड़ू' चलो,
(चलो) हमलोग नाच देख आवें।
हे हिसि, चलो और हे चाड़ू, चलो।
(चलो) हमलोग करम देख आवें।

हे हिसि, मैं नहीं आऊँगी,
(क्योंकि) मेरा प्रिय नहीं है।
हे चाड़ू, मैं नहीं जाऊँगी,
(क्योंकि) मेरा प्रिय नहीं है।

हे हिसि, चलो, हे चाड़ू, चलो,
हम उसे नाच में पायेंगे।
हे हिसि, चलो, हे चाड़ू, चलो,
हम उसे करम में पायेंगे।

कुरि हिसि कुरि चड़ु रे
कए: लेलो: लेलो: अ
कुरि हिसि कुरि चड़ु रे
कए: चिनओ: चिनओ:अ

१००

इसु होबु सुसुन् जन्
काली होबु करम् जन
दोल होबु सेनोग
मरे होबु बिरिद

दोल होबु सेनोग
होर सङ्गिन
मरे होबु बिरिद
डरे—जिलिङ

होर सङ्गिन
मण्डि रेङ्गेग
डरे जिलिङ
दगे तेतङ

१०१

दोलङ् हो हुन्दि बा
दोलङ् हो सुसुन् कोते लङ्
दोलङ् हो डबए बा
दोलङ् हो करम् कोते लङ्

कइञः हो गतिञो बङ्गइअ
कइञः हो सुसुन् कोते दो
कइञः हो सङ्गञो बङ्गइअ
कइञः हो करम् कोते दो

हे हिसि, कहाँ ? हे चाड़ू , कहाँ ?
वह दिखाई नहीं देता
हे हिसि, कहाँ ? हे चाड़ू , कहाँ ?
वह पहचाना नहीं जाता।

१००

हे भाई, हमलोग बहुत नाच चुके।
हे भाई, हम लोग, करमा खेल चुके।
हे भाई, चलो चलें।
हे भाई, चलो, अब जायँ।

हे भाई, चलो,
रास्ता बहुत दूर है।
हे भाई, चलो,
रास्ता बहुत लम्बा है।

रास्ता दूर है
(इसलिए) भूख लग जायगी।
रास्ता लम्बा है
(इसलिए) प्यास लग जायगी।

१०१

हे हुन्दी फूल,
चलो नाचने के लिए चलें।
हे डबाय फूल,
चलो करम खेलने चलें।

नहीं, मैं नहीं जाऊँगा,
मेरा प्रिय नहीं है।
नहीं, मैं नहीं जाऊँगा,
मेरा प्रेमी नहीं है।

दोलङ् हो सुसुन् रेलङ् नमिअ
दोलङ् हो सुसुन् कोते लङ्
दोलङ् हो करम् रेलङ् चिनइअ
दोलङ् हो करम् कोते लङ्

कुरी हो अयर् रेचि तायोम्रे
कुरी हो कए: लेलोः लेलोः
कुरी हो तलरेचि मल रे
कुरी हो कए: चिनओः चिनओः

कचि होम् लेले जदिअ
अयर् रेगेः गतिअ कन्
कचि होम् चिन जदिअ
तयोमरेगेः जपगकन्

कच होञ् लेले जदिअ
ओते रेदो ओते दुदुगर्
कच होञ् चिन जदिअ
सिरम रेदो सिरम कोअसि

१०२

सङ्गिन् दिसुमतेञ् हिजुः अकन
सोञ्जोकोञ् नमनरे जदुर् सुसुन्
जिलिङ् गमएअतेञ् सेटेर् लेन
सोञ्जोको नमनरे करम् कोजोड़ो

सोञ्जोकोञ् नमनरे जदुर् सुसुन्,
एङ्ग सिम् फनङ्पे फद जदिञ
सोञ्जोकोञ् नमनरे करम् कोजोड़ो
रलि मुइः तुनुङ् पे इचः जदिञ

चलो, नाचने चलें,
हम लोग उसे वहीं पा जायेंगे ।
चलो करम खेलने चलें,
हम लोग वहीं देख लेंगे ।

कहाँ है ? आगे पीछे कहीं तो,
दिखाई नहीं देता ।
किधर है ? (नाच के) बीच में
कहीं तो नजर नहीं आता ।

क्या तुम नहीं देखते हो ?
आगे (किसी के साथ) जुड़ा हुआ है ।
क्या तुम नहीं देखते ?
पीछे (किसी के साथ) मिला हुआ है ।

नहीं मैं नहीं देखता,
जमीन से धूल उड़ रही है ।
नहीं, मैं नहीं देखता,
आकाश में कुहासा छा गया है ।
(धुँआधार नाच हो रहा है)

१०२

मैं बहुत दूर से आया हूँ ।
संयोग से मैं जदुर नाच पा गया ।
मैं बहुत दूर देश से पहुँचा हूँ
संयोगवश मुझे खेल मिल गया ।

संयोगवश जदुर नाच पा गया ;
लेकिन, तुमलोग गदबदाई हुई मुरगी की तरह मार रही हो
संयोगवश, मुझे करम खेल मिला;
लेकिन, तुमलोग लाल चींटी के डँसने की तरह मुझे कोंच रही हो ।

नेअ मोसञ् हिअतिङ् जन्,
एङ्गः सिम् फनदपे फद जदिञ
एन मोसञ् चकतिङ् जन्
रुलि मुइःतुनुङुपे इचः जदिञ

अञः रे हिअ तिङ् दो
सिर्‌म रेंगे टेकद् जन्
अञःरे चकतिङ् दो
ओते रेंगे दलोब् जन्

१०३

दोलङ् हिसि दोलङ् चड़ुरे
सुसुन् को अयुम् नम्‌ते
दोलङ् हिसि दोङङ् चड़ुरे
करम् को पयर् नम्‌ते

कञः हिसि कञः चड़ुरे
कुण्डम् रे रिचि तोलकन्
कञः हिसि कञः चड़ुरे
सलन्दि बेसेर नेओड़ाकन्

कञः हिसि कञः चड़ुरे
रिचि गुगुर जोणोए केन्
कञः हिसि कञः चड़ुरे
बेसेर टिड़िङ् रिड़िङ् केन

कञः हिसि कञः चड़ुरे
कण्डम्‌रे एङ्गञ् दुबकन्
कञः हिसि कञः चड़ुरे
सलन्दिरे अपूञ्ङ् जपगकन्

इसके लिए मुझे दुःख है
कि तुम लोग मुरगी की तरह लात मार रही हो।
इसके लिए मुझे चिन्ता हो रही है
कि तुम लोग लाल चींटी की तरह बींध रही हो।

हमारी चिन्ता,
आकाश में अटक गई;
हमारा सोच,
जमीन में गिर गया।
(सोच और चिन्ता कोई काम नहीं आये।)

१०३

हे हिसि, चलो, हे चाड़ू, चलो।
जदुर-गीत सुनने चलो।
हे हिसि, चलो, हे चाड़ू, चलो।
करम का गीत याद करने चलो।

हे हिसि, मैं नहीं चलूँगा, हे चाड़ू, मैं नहीं चलूँगा,
पिछवाड़े सिकरा (बाज) बँधा हुआ है।
हे हिसि, नहीं चलूँगा, हे चाड़ू, मैं नहीं चलूँगा,
ओरी में बाज बँधा हुआ है।

हे हिसि, नहीं, हे चाड़ू, नहीं,
बाज के पैर का घुँघरू बज रहा है।
हे हिसि, नहीं, हे चाड़ू, नहीं,
बाज की घण्टी आवाज कर रही है।

हे हिसि, मैं नहीं, हे चाड़ू, मैं नहीं,
घर के पीछे माँ बैठी हुई है।
हे हिसि, मैं नहीं, हे चाड़ू, मैं नहीं।
घर के आगे बाप भीत से उठँगा हुआ है।

१०४

रसल् केओञ्जरि
बन्दु गुलि सट सटि
रसल् केओञ्जरि
टेम्बसार् जड़म्-जड़म्

रसल् केओञ्जरि
ओकोरे को मपः तन्
रसल् केओञ्जरि
चिमए रेको तुपुञ् तन्

रसल् केओञ्जरि
बुण्डु रे को मप तन्
रसल् केओञ्जरि
टमण रेको तुपुञ् तन्

रसल् केओञ्जरि
बुण्डु राजा सिद सार् जन्
रसल् केओञ्जरि
टमण राजा तयोम् गुलि जन्

रसल् केओञ्जरि
बुण्डु रउड़ु जन्
रसल् केओञ्जरि
टमण राजा लन्दुब् जन्

रसल् केओञ्जरि
दिटम दो दुदुगर् जन्
रसल् केओञ्जरि
गमए दो कोंअसि जन्

१०४

रासाल क्योंजरी,
गोलियाँ सटासट चल रही हैं।
रासाल क्योंजरी,
तीर भराभर चले रहे हैं।

रासाल क्योंजरी,
कहाँ मारकाट हो रही है ?
रासाल क्योंजरी,
कहाँ तीर छूट रहे हैं ?

रासाल क्योंजरी,
बुण्डू में मारकाट हो रही है।
रासाल क्योंजरी,
तमाड़ में तीर चल रहे हैं।

रासाल क्योंजरी,
बुण्डू राजा को पहला तीर लगा।
रासाल क्योंजरी,
तमाड़ के राजा को पिछली गोली लगी।

रासाल क्योंजरी,
बुण्डू का राजा गिर गया।
रासाल क्योंजरी,
तमाड़ का राजा धराशायी हो गया।

रासाल क्योंजरी,
देश में आँधी आ गई।
रासाल क्योंजरी,
दुनिया में कुहासा छा गया।

१०५

हाय नरङ् गंगा नरङ्
हेणेः लेकम् जलतिङ् तन्
हाय नरङ् गंगा नरङ्
डुलुः लेकम् बुलतिङ् तन्

हेणेः लेकम् जलतिङ् तन्
कण्ड तम् जुले तन्
डुलुः लेकम् बुलतिङ् तन्
पिरि तम् लिङ्गिः तन्

कण्ड तम् जुले तन्
सेङ्गेल् लेक जुले तन्
पिरि तम् लिङ्गिः तन्
दगे लेक लिङ्गिः तन्

सेङ्गेल् लेक जुले तन्
तर दिसुम् लो तन्
दगे लेक लिङ्गिः तन्
तर गमए बुअल् तन्

१०६

ससङ् हतु हले ससङ् हतु हो
बिण्ड गोर् नगोर् हले बिण्ड गोर् नगोर्
ससङ् हतु रेको मपः तन
बिण्डगोर् नगोर् रेको तुपुञ् तन

मूरूद् बा कपि तेको मपः तन
इचः बा सार् तेको तुपुञ् तन
हग-हग रेको मपः तन
कुम-गेड़े रेको तुपुञ् तन

१०५

हे गंगा नारायण,
तुम हेणोः पक्षी की तरह उड़ रहे हो !
हे गंगा नारायण,
तुम डुलु पक्षी के समान चक्कर काट रहे हो !

तुम (जो) हेणोः पक्षी के समान उड़ रहे हो,
तो तुम्हारी तलवार चमक रही है।
तुम जो डुलु पक्षी के समान चक्कर काट रहे हो,
तो तुम्हारी ढाल बह रही है।

तुम्हारी तलवार जो चमक रही है,
आग के समान चमक रही है।
तुम्हारी ढाल जो बह रही है,
पानी के समान बह रही है।

(तुम्हारी तलवार) जो आग के समान चमक रही है,
(उससे) आधा देश जल रहा है।
(तुम्हारी ढाल) जो पानी के समान बह रही है,
(उससे) आधा देश बह रहा है।

१०६

ससङ् (नामक) गाँव है
(और) बिण्डागोर (नामक) नगर है।
ससङ् गाँव में मार-काट हुई,
बिण्डागोर गाँव में तीर चला।

पलास के फूलों के समान फरसों से मार-काट हुई
और ईंचा फूल के समान तीर से लड़ाई हुई।
भाई-भाई में मार-काट हुई
(और) मामा-भगिना में तीर चला।

तोअ लेकन् पिडि रेको मपः तन
दही लेकन् बदि रेको तुपुञ् तन
तोअ-लेकन् पिड़ी दोरे मायोम् जन
दही लेकन् बदि दोरे किरुम् जन

१०७

डण्ड गुले गुले चिहो होंड़ो टेस टसि
कचि गतिञेरेम् बोरो तेअ
कपि बिजिर बलङ् चिहो सार सिड़ाय सोड़ोए
कचि सङ्गञेम् चिरि तेअ

एगाञ् आपुञे को सेङ्गेल् लेक
कचि गतिञेरेम् बोरो तेअ
हगञ् बरेञेको दगे लेक
कचि सङ्गञेरेम् चिरि तेअ

एगञ् अपुञे को सेङ्गेल् लेक
सेङ्गेल् लेक गेको जुले तन
हगञ् बरेञेको दगे लेक
दगे लेक गेको लिङ्गि तन ।

सेङ्गेल् लेक गेको जुले तन
सेङ्गेल् लेक गेको गोएः कोअ
दगे लेक गेको लिङ्गि तन
दगे लेक गेका अञ्जेद् कोअ ।

१०८

दिरि पनरोम्
सेन्देर कोदो
जलकरि टोण्डङ्रे
कारेङ्ग कोदो

दूध के समान (साफ) मैदान में मार-काट हुई,
दही के समान (साफ) मैदान में तीर चला।
वह दूध के समान मैदान लहूलुहान हो गया,
वही दही के समान मैदान गेरुवा रंग का हो गया।
(इतनी मार-काट हुई—खून बहा)

१०७

भयानक डण्डे लिये लोगों की जहाँ पर ठसाठस भीड़ है,
हे प्रिय, उसे देखकर क्या तुम्हें डर नहीं लगता ?
जहाँ चमचमाते हुए बलुवे और सनसनाते हुए तीर हैं,
हे प्रिय, उसे देखकर क्या तुम नहीं डरते ?

मेरे माँ-बाप आग के समान हैं,
हे प्रिय, क्या तुम्हें भय नहीं लगता ?
मेरे भाई-बन्धु पानी (की धारा) के समान हैं।
क्या तुम्हें डर नहीं लगता ?

मेरे माँ-बाप आग के समान हैं,
और आग ही के समान चमक रहे हैं।
मेरे भाई-बन्धु पानी के समान हैं,
और पानी के समान ही बह रहे हैं।

वे आग के समान जल रहे हैं,
वे आग की ही तरह जलाकर मार डालते हैं।
वे पानी की ही तरह बह रहे हैं,
वे पानी की ही तरह सुखा डालते हैं।

१०८

पथरीली नदी के उस पार
शिकार खेलनेवाले
झुरमुटवाली झाड़ियों में
शिकार खोजनेवाले

लिह्-लिह् गुटुरेको
लिह् लिह् जद
मरे धर बेड़ रेको
मरे धर जद

तुयु चिको नमकःइअ
लिह् लिह् जद
सरम् चिको नमकःइअ
मरे धर् जद

१०६

लङ् लङ् लङ् चेणे दो बोयो
ओको रेम् अट लिअ
बेङ्गगा बङ्गि गड़ किकिर् दो बोयो
चिमय रेम जुङ् लिअ

लङ् लङ् लङ् चेणे दो बोयो
ककस रेञ् अट लिअ
बेङ्ग गड़ किकिर् दो बोयो
रोरोङ्ग रेञ् जुड़ः लिअ

ककस रेम अट लिअ
चिलङ् चिक इअ
रोरोङ्ग रेम जुड़ः लिअ
मेरे लङ् रिक इअ

ककस रेञ अट लिअ
मनि लङ सुनुमिअ
रोरोङ्ग रेञ जुडः लिअ
रइ लङ् ससङिअ

जंगल के भीतर वे
'दौड़ो, देखो' करके चिल्ला रहे हैं।
पहाड़ की तराई पर वे
'मारो, पकड़ो' करके हल्ला कर रहे हैं।

क्या उन लोगों ने कोई सियार पाया है
कि वे 'दौड़ो, देखो' करके चिल्ला रहे हैं।
क्या उन लोगों ने कोई बारहसिंघा पाया है
कि वे 'मारो, पकड़ो' करके हल्ला कर रहे हैं।

१०६

हे बेटा, (इस लम्बी पूँछवाली) लङ्-चिड़िया को
तुमने कहाँ बझाया ?
हे बेटा, इस चितकबरे किकिर पच्छी को
तुमने कहाँ फँसाया ?

इस लङ्-चिड़िया को
ककसा (एक झाड़ी) में बझाया।
इस किकिर पच्छी को
रोरोंग (एक झाड़ी) में फँसाया।

(यह चिड़िया जिसे) ककसा में बझाया,
उसे हमलोग क्या करेंगे ?
(यह पच्छी जिसे) रोरोंग में फँसाया,
उसे हमलोग क्या करेंगे ?

(जिसे) ककसा में बझाया,
उसमें सरसों का तेल देंगे।
(जिसे) रोरोंग में फँसाया,
उसमें राई का मसाला डालेंगे।

मनि लङ् सुनुमिअ
इसु होएः सिबिल
रइ लङ् ससङिअ हो
कोरे होएः हेड़े म

११०

हरे राजा नाग बंसी को
कजि होपे बइ लेद
दिसुम रेन भुइयरी को
बकण पे ठनओ लेद

कजि होपे बइ लेद
दिसुमे पे चेचः केद्
बकण पे ठनओ लेद्
गमए होपे तम्बुर केद्

निदते नुबःते
कजि होपे बइ लेद्
सिङ्गिः ते मरेसल्ते
बकण पे ठनओ लेद्

१११

नइ दोग ओकोरेन् बण्ड सेत
नइ दोग टकएः टोण्डोमन्
नइ दोग त्रिमएरेन् डुण्ड सुकुरि
नइ दोग सिकएः चिपुदन्

नइ दोग बुण्डु रेन् बण्ड सेत
नइ दोग टकएः टोण्डोमन्
नइ दोग टमण रेन् डुण्ड सुकुरि
नइ दोग सिकएः चिपुदन्

सरसों का तेल डालने से
वह (मांस) बड़ा स्वादिष्ठ होगा !
राई का मसाला लगाने से
वह (मांस) बड़ा मधुर होगा !

११०

हे नागवंशी राजाओ,
तुमलोगों ने बात बनाई थी।
ऐ मुड्यारी राजाओ,
तुम लोगों ने ठान लिया था।

तुम लोगों ने जो बात बनाई थी
(उससे) दुनिया को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।
तुम लोगों ने जो ठान लिया था
(उससे) सारी दुनिया में उथल-पुथल मच गई।

रात के अँधियाले में
तुमने बात बनाई थी।
दिन के उजियाले में
तुमने ठान लिया था।

१११

माँ, यह कहाँ का बण्डा कुत्ता, कहाँ का है ?
जिसने रुपया बाँध रखा है।
माँ, यह बड़े सिरवाला सूअर कहाँ का है।
जिसने सिक्का पकड़ रखा है।

माँ, यह बण्डा कुत्ता बुण्डु का है,
जिसने रुपया बाँध रखा है।
माँ, यह बड़े सिरवाला सूअर तमाड़ का है,
जिसने सिक्का पकड़ रखा है।

११२

बुरुअते हड़गुन् कोहो सोन्दरि
नराते नोसोरेन् को
सेके सेके हड़ गुन् कोहो सोन्दरि
रोलो रोलो नोसोरेन को

निकु चिको तुल बुलुङ हो सोन्दरि
निकु चिको गण्ड रसुणि
तुलते को तुल बुलुङ हो सोन्दरि
गण्डते को गण्डा रसुणि

जोजो सुब डेरा तेकोअ हो सोन्दरि
उलि सुब बसते को अ
पुण्डि रम्बड़ रुतु तेको अ हो सोन्दरि
डिञ्ज डिम्बु डोले तेकोअ

११३

कलिकता तेलेगेङ को रकब् लेन
ओकोरे अजिनको डेरा केद
सरगटि सायोबे को ऊपर् लेन
चिमए रे अजिनको बासा केद

मेनः मेनः दो रे राँची पिड़ि
राँची पिड़ि रेको डेरा केद
मेनः मेनः दो डुरुण्डा बदि
डुरुण्डा बदि रेको बासा केद

राँची पिड़ि रेको डेरा केद
राँची पिड़ि बोले एकेल जन
डुरुण्डा बदि रेको बासा केद
डुरुण्डा बदि बोले तयुर् जन

११२

हे सोन्दारी, पहाड़ से उतरनेवाले,
(और) तराई से आनेवाले (ये राही)।
हे सोन्दारी, ये सेके-सेके उतरनेवाले,
(और) रोलो-रोलो आनेवाले (राही)।

हे सोन्दारी, क्या यही लोग नमक तौलनेवाले हैं ?
क्या यही लोग लहसुन बेचनेवाले हैं ?
हाँ, यही लोग नमक तौलनेवाले हैं।
हाँ, यही लोग लहसुन बेचनेवाले हैं।

हाँ सोन्दारी, ये इमली के पेड़ के नीचे डेरा डालनेवाले हैं।
ये आम के पेड़ के नीचे वास करनेवाले हैं।
बोदी की तरह इनकी बाँसरी है
जाल में ये डिम्बफल लिये हुए हैं।

११३

कलकत्ता के तिलंगे जो आये,
हे आजी, उन लोगों ने कहाँ डेरा डाला है ?
शेरघाटी से जो साहब लोग आये थे,
हे आजी, उन लोगों ने कहाँ निवास किया ?

राँची में जो मैदान है (उस)
राँची मैदान में डेरा किया।
डुरण्डा में जो मैदान है (उस)
डुरण्डा मैदान में वास किया।

राँची में जो डेरा किया,
राँची मैदान काँप गया।
डुरण्डा में जो वास किया,
डुरण्डा मैदान हिल गया।

राँची पिड़ि बोले एकेल जन
दिसुम् रटि एकेल जन
डुरुण्डा बदि बोले तयुर् जन
गमए रटि तयुर् जन

११४

अठारह सौ छेयानबे रे
जोर्जो बादशाह हुकुम केनरे
टमण थाना, खूँटी डिबिजन्
हतु हतु उमिन् सोडे केद

डोण्डो लोभ हग होन् को
रेपेः तन को ओते अड़ि को
तनाजा रेपेः घूस ओम् ते
कबु जनबु टक ओम् ते

दङ्गड़ हड़म् होड़ो को
उड़ुः तनबु आते अड़ि को
निद सिङ्गि बु उड़ुः तन
सुकुते कबु दुड़ुम् तन

११५

टमण परगना गरेणे उलि हतु
बिरसा भगवानेः जीनोम् लेन
अट मट बिरको तल चलेकद् रेदो
चलेकद् हतु रेः उल उल्गुलन् लेद

सरोअदः गिरजारे सार् थुञ् लेन
खूँटी हतु रेदो हिल् हिलओ लेन
डिपुटी कमिश्नरेः हिजुः लेन
बिरसा भगवानेः पिच केन

राँची मैदान जो काँप गया (उससे)
सारा देश काँप गया।
डुरण्डा मैदान जो हिल गया
(उससे) सारी दुनिया हिल गई ।

११४

अट्ठारह सौ छियानब्बे में
जार्ज बादशाह ने हुकुम किया।
खूँटी-सबडिवीजन के तमाड़ थाने के
सारे गाँव अमीनों ने नाप लिये ।

(हमारे) मूर्ख तथा लोभी भाई लोग
एक दूसरे के खेत लूट रहे हैं।
घूस देकर (अमीनों को) तनाजा किया और लूटा
और हमलोग रुपया देने से थक गये ।

हम सभी बूढ़े और जवान
खेत के विषय में चिन्ता में पड़ गये हैं ।
दिन रात चिन्ता में रहते हैं
और सुख से नींद नहीं आती है ।

११५

तमाड़ परगने के गरेरोया उली हातु गाँव में
बिरसा भगवान् का जन्म हुआ।
घोर घने जंगल के बीच चलकद् गाँव में
उसने हलचल मचा दी।

सरवदा गिरजा में तीर चलाया
और खूँटी गाँव में हलचल मच गई ।
(तब) डिप्टी कमिश्नर आये
(और) बिरसा भगवान् का पीछा किया।

डोम्बरि बुरु रेको रकब् लेन्
गुणे ज्ञानकन् सोबेन् होड़ो
बुरु चेतन् रेको हिबि हिबि केद्
बेड़ लतरतेः टोटे केद् कोअ

गोएः अकन् एङ्गः तोअ होन् नुनु केन
मेम् सयोब् इनिः लेल्ते जी बिल्क किःअ
हों हों चिका जन
नया दो का कटीकि जन

११६

अठारह सौ निनाबेरे
मरे होको रकब् लेन्
डोम्बरि बुरु हे
मरे हो को उपर् लेन्

मरे होको रकब लेन्
तेलेंगेङ चपरासी को
मारे होको उपर् लेन्
बिरसा भगवान को

मरे होको डेरा केद्
सलगा सपरुम् रे
मरे होको बासा केद्
सोएको गुटुहतु रे

मरे होको टोपोटेतन्
ठले ठुले बन्दुकते
मरे होको हुर्दङ तन्
हरे हुरे हुर्दङ ते

(तब) गुणी ज्ञानी सभी मनुष्य
डुम्बारी पहाड़ पर चढ़ गये।
(बिरसा के दलवाले) पहाड़ के ऊपर चिल्लाये,
(डप्टी कमिश्नर-दल ने) पहाड़ के नीचे से गोली चलाई।

एक बच्चा मरी हुई माँ का दूध पी रहा था।
यह देखकर मेम साहब को दया आई।
हाय, हाय, क्या हो गया!
यह तो ठीक नहीं हुआ।

११६

अठारह सौ निन्यानब्बे साल में
वे चढ़ आये थे।
डोम्बारी पहाड़ पर
वे आ खड़े हुए थे।

जो चढ़ आये थे,
वे अँगरेज के सिपाही थे।
जो आ खड़े हुए थे,
वे बिरसा भगवान् के लोग थे।

उन्होंने डेरा किया,
सलगा और सपारुम में।
उन्होंने पड़ाव डाला,
सोएको और गुटहातु में।

उन्होंने गोली चलाई,
ठाँय-ठाँय बन्दूकों से।
उन्होंने ढेले फेंके,
दनदनाते ढेलकुसियों से।

तर होको रउड़् जन्
डोम्बारी बुरु चेतन् रे
तर होको निरे जन्
सिङ्गि तुरोः होराते

११७

छोटानागपुर बिरसाम्
एकेल केदय बिरसा
चुलु बुकुरा बिरसाम्
तयुर् केदय बिरसा

कुन्दुरु गुटुरे बिरसा
उकु केनय बिरसा
बुदु बाबुअ बिरसा
लेल् केद् मेअय बिरसा

राँची होरते बिरसा को
इदि केद् मेअय बिरसा
मेणेद् गणि रे बिरसा को
लेने केद् मेअय बिरसा

अमगः मयोम बिरसा को
अकरिङ् केदय बिरसा
सुनम् मेन्ते बिरसा को
किरिङ् केदय बिरसा

११८

अबु दिसुम रे जोनोम् लेन् गाँधी बाबा
होन चुटु सोबेन् को इतुअन ।
अमगः कजि नियम उनओ जन
अंग्रेज सरेकार बोलेः एकेल जन

आधे आदमी गिर पड़े
डोम्बारी पहाड़ के ही ऊपर।
आधे आदमी भाग गये
पूरब के रास्ते से।

११७

हे बिरसा, तुमने छोटानागपुर को
हे बिरसा, तुमने हिला दिया!
हे बिरसा, चुलु बुकुर गाँव को
हे बिरसा, तुमने दहला दिया!

हे बिरसा, कुन्दुरु गुट गाँव में
हे बिरसा, तुम छिपे थे।
हे बिरसा, बुदु बाबू ने
हे बिरसा, तुम्हें देखा था।

हे बिरसा, राँची के रास्ते से
हे बिरसा, वे तुम्हें ले गये।
हे बिरसा, लोहे की घानी से
हे बिरसा, उन्होंने तुम्हें पेर डाला।

हे बिरसा, तुम्हारा खून
हे बिरसा, उन्होंने बेच दिया।
हे बिरसा, तेल समझकर
हे बिरसा, लोगों ने उसे खरीद लिया।

११८

हमारे देश में गान्धी का जन्म हुआ
उनको छोटा-से-छोटा बच्चा तक जान गया।
उनकी बात सब जगह फैल गई,
अँगरेज-सरकार भी हिल गई।

गाँधी बाबाः कजि कको बुझाओ जन
डोण्डो तेंगे दिसुम् अकाल जन
कांग्रेस दल बोलेः बड़ केद
निद सिङ्गि तेको निन्दा तन

११६

होर हेसः दो सलु
ओकोए रोअ लेद
डरे बड़े दो सलु
चिमए पोअ लेद

होर हेसः दो सलु
गतिम् रोअ लेद
डरे बड़े दो सलु
सङ्गम् पोअ लेद्

तर कोतो दो सलु
हतु तल रेअ
तर दड़ दो सलु
दिसुम् तलरे

तर कोतो रे सलु
सादोम् तोलकन
तर दड़ रे सलु
पड़कि नेओणाकन

१२०

राजा दीसोरोथो
राजाम् इअम् तन
रानी कोसोइला
रानीम् सयद् तन

(लेकिन) लोग गान्धीजी की बात ठीक से समझ न सके
और लोगों की मूर्खता से अकाल पड़ गया।
काँगरेसवालों ने दल बनाया।
लोग रात-दिन उनकी निन्दा करते रहे।

११६

हे सालू (मैना) ! रास्ते के पीपल को
किसने रोपा था ?
हे सालू (मैना) ! रास्ते के बड़ को
किसने लगाया था ?

हे सालू ! रास्ते के पीपल को
(तुम्हारे) प्रेमी ने लगाया था।
हे सालू ! रास्ते के बड़ को
(तुम्हारे) प्रिय ने रोपा था।

हे सालू ! उस (पीपल) की एक डाल
गाँव के बीच चली गई है।
हे सालू ! उस (बड़) की एक डाल
देश के बीच चली गई है।

हे सालू ! एक ओर की डाल में
एक घोड़ा बँधा हुआ है।
हे सालू ! एक ओर की डाल में
पैकी सजा हुआ खड़ा है।

१२०

हे राजा दशरथ,
हे राजा, तुम रो रहे हो।
हे रानी कौशल्या,
हे रानी, तुम चिन्ता कर रही हो।

राजाम् इअम् तन्
चिको मे ने ते
रानीम् सयद् तन्
मेरे को मे ने ते

राम लोखोन किङ् टोण्डङ् बासी जन्
राजाम् इअम् तन्
लोकी कुंवारी बिदेस जन्
रानीम् सयद् तन्

१२१

राम लाखोन साय
लोका लो तन
रानी श्री सीता
अयोध्या बले तन

ओकोए गे ओण्डोर् लेद
लोका लो तन
चिमए गे जुडि लेद
अयोध्या बले तन

हनुमान ओण्डोर लेद
लोका लो तन
केकइ रानी जुण्डि लेद
अयोध्या बले तन

१२२

राँची जिला चिरे सेलद: हतु
भैया राम मुण्डा दोए: जोनोमकन
खूँटी थाना चिरे जोजो हतु
मानकी सिंहराय दोए: उपजनकन

हे राजा, तुम रो रहे हो,
किसलिए रो रहे हो ?
हे रानी, चिन्ता कर रही हो,
किसलिए चिन्ता कर रही हो ?

राम-लखन वनवासी हो गये,
हे राजा, इसीलिए चिन्ता कर रहे हो ?
सीता विदेश चली गई,
हे रानी, इसीलिए चिन्ता कर रही हो ?

१२१

राम-लखन के कारण
लंका जल रही है।
सीता के लिए
अयोध्या जल रही है।

किसने आग लगा दी
कि लंका जल रही है ?
किसने आग सुलगा दी
कि अयोध्या जल रही है ?

हनुमान् ने आग लगाई
(जिससे) लंका जल रही है।
कैकेयी ने आग सुलगाई
(जिससे) अयोध्या जल रही है।

१२२

राँची जिले के सेलदा गाँव में
श्रीभइयाराम मुण्डा का जन्म हुआ।
खूँटी थाने के जोजोहतु गाँव में
श्रीसिंहराय मानकी का जन्म हुआ।

भैयाराम मुण्डा दोएः जोनोमकन
हग जाति कोअः सेवा नङ्गेन्
मानकी सिहराय दोएः उपजनकन
हग जाति कोअः सुसर् नङ्गेन्

सेवा नङ्गेन् गेः जोनोमकन
अलोरे हग कोपे एरङिअ
सुसर् नङ्गेन् गेः उपजनकन
आलोरे हग कापे सेगेदिअ

अलोरे हागा कोपे एरङिअ
मुसिङः दिन् होरएः उदुबबुअ
अलोरे हग कोपे सेगेदिअ
मुसिङः दिन् डरेः चुण्डुल बुअ

१२३

पिड़िङ्गिरे पितल् रुतु
अलो जुगिम् ओरोङेअ
चौरा रे रंग बनम्
अलो सन्ताम् बनामेअ

अलो जुगीम् ओरङेअ
अम् लोःते सेनोः मोनिञ
अलो सन्ताम् बनामेअ
अम् लोः ते बिरीदे सनाञ

अञ् दोरे जुगी जाति
अञ् लोः चि सेनोः मोनेम
अम् दोरे मुण्डा होन्
अञ् लोः चि बिरिद् सनम

श्रीभइयाराम मुण्डा का जन्म
जाति-भाइयों की सेवा के लिए हुआ।
श्रीसिंहराय मानकी का जन्म
जाति-भाइयों की शुश्रूषा के लिए हुआ।

वे सेवा के लिए ही पैदा हुए हैं,
हे भाई, उन्हें गाली मत दो।
शुश्रूषा के लिए ही पैदा हुए हैं,
हे भाई, निन्दा मत करो।

भाई, गाली मत दो,
एक दिन वे हमें रास्ता बतायेंगे।
भाई, निन्दा मत करो,
एक दिन पथ-प्रदर्शन करेंगे।

१२३

बरामदे में पीतल की बाँसुरी है।
हे जोगी, मत बजाओ।
चबूतरे पर रंगा की सारंगी है।
हे सन्ताल, मत बजाओ

हे जोगी, मत बजाओ।
तुम्हारे साथ चले जाने की इच्छा होती है।
हे सन्ताल, मत बजाओ।
तुम्हारे साथ चल देने को जी चाहता है।

मैं तो करया (कौपीन) पहननेवाला हूँ,
हमारे साथ क्यों जाना चाहती हो ?
और तुम लहँगावाली हो,
हमारे साथ क्यों उठना चाहती हो ?

अञ् दोरे टोण्डोम् बोतोएः
अञ् लोः चि सेनो मोनेम
अम् दोरे पाड़िञ किञ्चिरि
अञ् लोः चि बिरिद् सनम

अलो जुगीम् ओरोङेअ
पिड़िङ्गिरे ले तुकुइः सकम
अलो सन्ताम् बनामेअ
चौरा रेले चरिः चटग

हे जोगी बाँसुरी मत बजाओ
हमलोग बरामदे में दोना-पत्तल बना लेंगे।

हे सन्ताल, सारंगी मत बजाओ
चबूतरे पर हमलोग खरिका चीरने का काम करेंगे।

ञोर जदुर

हेसः सुब लेसे लेसे
अमे चि मइ तिङ्गः केन
बड़े सुब जिर्‌पि जलङ्
अमे चि मइ जपः केन

१२४

बुरु सोङ्गः सोङ्गः ते दो
होयो चिग सरजोम् बा
नर जोड़ेन् जोड़ेन् ते दो
रम्पि चिग सुड़ सङ्गेन्

और जदुर

पीपल की झिलमिल छाया में
हे बालिके, क्या तुम्हीं खड़ी थी ?
बरगद की झिरमिर छाँह में
हे बालिके, क्या तुम्हीं उठँगी थी ?

१२४

पहाड़ की घाटियों में
हवा बह रही है या साखू झड़ रहा है ?
ढलवानों के जोड़ पर
आँधी चल रही है या पत्तियाँ खड़खड़ा रही हैं ?

दोल तिबु लेल लेअ
होयो चिग सरजोम् बा
मरे तिबु चिन लेअ
रम्पि चिग सुड़ सङ्गेन्

अले दोले लेल लेद
होयो गेग सरजोम् बा
अल दोले चिन लेद
रम्पि गेग सुड़ सङ्गेन्

१२५

बुरु मगो चेतन् रेदो
कुद सुड़ दोङ्गोब् केन
नर मगो लतर् रेदो
बरु सुड़ जिपिड़ि केन

कुद सुड़ दोङ्गोब् केन
अञः जीदो लिटिब् केन
बरु सुड़ जिपिड़ि केन
अञः जीदो दोपोल् केन

हिअतिङ् मोनिञ्रे चकतिङ् सनञ्
अञः जीदो लिटिब् केन
हिअतिङ् मोनि इञरे चकतिङ् सनञ
अञः जिदो दोपोल् केन

१२६

सेरेङ् चेतन् चेतन् तेदो
अम चिमइ सेन् लेद्
नरए रुगुड़ि डड़ि तेदो
अम् चिमइ मण्ड लेद्

चलो तो देख आवें,
हवा है या साखू का फूल ?
चलो तो देख आवें,
आँधी है या पत्तियों का खड़खड़ाना ?

हमने तो देखा
(कि) हवा ही है, जिसमें साखू झड़ रहा है ?
हमने तो पहचाना
(कि) आँधी ही है, जिसमें पत्तियाँ खड़खड़ा रही हैं ?

१२५

पहाड़ के ऊपर तो
जामुन की घनी कोंपलें निकलती हैं ।
ढलवान के नीचे
बारु के घने पत्ते लगे हैं ।

जामुन में जो सघन कोंपलें निकली हैं,
उनसे हमारा हृदय धक्-से हो गया।
बारु में जो घनी कोंपलें फूटी हैं,
उन्हें देखकर तो हमारा हृदय दहल गया।

हम को आश्चर्य होता है कि
हमारा हृदय धक्-से हो गया !
हमको आश्चर्य होता है कि
हमारा हृदय दहल गया !

१२६

हे लड़की, पहाड़ के ऊपर-ऊपर
क्या तुम्हीं चल रही थी ?
पथरीली डाड़ी के नीचे-नीचे
क्या तुम्हीं जा रही थी ?

अञ्रे गेच सेने लेद एङ्गइञ्
एङ्गञे कोञ् दणकेन
अञ्रे गेच मण्ड लेद
अपुञे कोञ् कोजर केन

करे मइनम् नमे कोअ
दिरि तेको तेनेन् जन
ए रे मइनम् नमे कोअ
जनुम् तेको रमेन् जन

मोद अटल् बर् अटल
दिरि तेको तेनेन् जन
मोदे कोतो बरे कोतो
जनुम् तेको रमेन् जन

१२७

हेसः सुब लेसे लेसे
अमे चिमइ तिङ्गु केन
बड़े सुबः जिर्पि जलङ्
अमे चिमइ जपः केन

अञ्गे चोअ तिङ्गु केन
तीरे मुन्दम् उयुः जन
अञ्गे चोअ जपः केन
जङ्गरे पोला होसोर्जन

नेक नेक सेण तेम
तीरे मुन्दमेम् चिटतन
नेक नेक बुद्धि तेम
जङ्गरे पोलम् सुब तन

हाँ, मैं ही चली थी,
अपनी माँ को खोज रही थी।
हाँ, मैं ही गई थी,
अपने बाप को ढूँढ़ रही थी।

हे बेटी, उनको तुम नहीं पाओगी,
वे पत्थर के नीचे चले गये।
हे बेटी, उनको तुम नहीं पाओगी,
वे काँटे के नीचे ढक गये।

एक तह—दो तह
वे पत्थर के नीचे चले गये।
एक डाल—दो डाल,
वे काँटों से ढक गये।

१२७

पीपल की हिलती छाया में
हे लड़की, क्या तुम्हीं खड़ी थी ?
बरगद की चमकीली छाँह में
हे लड़की, क्या तुम्हीं उठँगी थी ?

हाँ, मैं ही (खड़ी) थी,
हाथ की अँगूठी गिर गई।
हाँ, मैं ही उठँगी थी,
पैर की अँगूठी फिसल गई।

ऐसी बुद्धिमती हो
कि हाथ की अँगूठी का बहाना बना रही हो।
ऐसी समझदार हो
कि पैर की अँगूठी का बहाना कर रही हो।

१२८

सेअड़िरे सेअड़िरे
सेअड़िरे हुन्दि बादो
बकइनिरे बकइनिरे
बकइनिरे बङ्गुर बा

सेअड़िरे हुन्दि बादो
ओकोए मइरे पेटेः केद
बकइनि रे बङ्गुर बादो
चिमए मइरे चङ्गड़ केद

सेन्देर को जिलिब् जिलिब्
सेन्देर को बा पेटेः केद
करेङ्ग को जोलोब् जोलोब्
करेङ्ग को डालि चङ्गड़ केद

सेन्देर को पेटेः केद
चुटि रेको पेटेः केद
करेङ्ग को चङ्गड़ केद
सुब रेको चङ्गड़ केद

१२९

डड़ि लङ् दो डड़ि लङ् दो
नौनगर डड़ि लङ्
चुअँ लङ् दो चुअँ लङ् दो
रतनपुरे चुअँ लङ्

ओकोए मइन गेलेः लेद
नौनगर डड़ि लङ् दो
चिमए मइन सोड़ लेद
रतनपुरे चुअँ लङ्

१२८

सेयाड़ी[1] में
हुन्दी-फूल था।
बकाइन में
बाँगुर-फूल था।

सेयाड़ी में हुन्दी-फूल को
किसने तोड़ लिया ?
बकाइन में बंगुर-फूल को
किसने छिनगा दिया ?

चमकीले शिकारियों ने
फूल को तोड़ लिया।
झमझमाते हुए शिकारियों ने
फूल को छिनगा दिया।

शिकारियों ने जो तोड़ लिया,
सो ऊपर से ही तोड़ लिया।
शिकारियों ने जो छिनगा दिया,
सो जड़ से ही छिनगा डाला।

१२९

हमलोगों की डाँड़ी (नहर),
नवनगर की डाँड़ी !
हमलोगों का चुँवा (सोता),
रतनपुर का चुँवा।

हमलोगों के नवनगर की डाँड़ी को
हे बेटी, किसने खोदा है ?
हमलोगों के रतनपुर के चुँवें को
हे बेटी, किसने कोड़ा है ?

---

१. एक प्रकार का कँटीला पौधा।

दिरि लेक कुड़म् तिअ
इनिः मइन गलेः लेद
पङ्ङः लेक सुपु तिअ
इनिः मनइरे सोड़ लेद

हेलो गेअ पोण्डे गेअ
नौनगर डड़ि लङ् दो
लोसोद् गेअ गोदेद् गेअ
रतनपुरे चुअँ लङ्

१३०

कुम् सिसिपिड़ि दो हले
कुम् लोतन
कुम् तिलए बदि दो हले
कुम् बलेतन

ओकोए गे जुण्डि तद
कुम् लोतन
चिमएगे अतर् तद
कुम् बले तन

कुम् महर कोड़ जुण्डि तद
कुम लो तन
कुम् चोड़ेअ कोड़ अतर् तद
कुम् बले तन

कुम् कड़े गोड़ रट पट
कुम् लो तन
कुम् लुपुःतिअम् चिटिपिदि
कुम् बले तन

हे बेटी, पत्थर के समान छातीवाले
(किसी आदमी) ने खोदा है।
हे बेटी, मोटी डाल के समान बाँहवाले
(किसी आदमी) ने कोड़ा है।

हिलकोर दी गई और गँदली हो गई,
नवनगर की डाँड़ी।
कीचड़ से भर गया, सेंवार से भर गया
रतनपुर का चुँवा।

१३०

सिसिपिड़ी
धुआँधार जल रही है।
(और) तिलइबादी
जोर-जोर से धधक रही है।

किसने आग सुलगा दी
कि धायँ-धायँ जल रही है ?
किसने आग लगा दी
कि जोर-जोर से धधक रही है ?

महरा के लड़के ने सुलगाया,
(जिससे) धायँ-धायँ जल रही है।
यह आग ग्वाला छोकरे ने लगाई (जिसमें)
जोर-जोर से धधक रही है।

काँसी का खेत रटपट की आवाज में
जल रहा है।
लुपुतियम (एक घास) चरपट की आवाज में
धधक रहा है।

१३१

बुरु दः दो सेके सेके
कचि गड़िम् नुअ नदो
नरदःदो रोलो-रोलो
कचि सरःम् जेम्बेदन् दो

कगे चोअञ् नुअ नदो
बुरु लिण्डुङ्ग अतुतन
कगे चोअञ् जेम्बे दन् दो
बेड़ मर्मर् बुअल् तन

नक नक सेण तेम
बुरु लिण्डुङम् चिट तन
नक नक बुद्धि तेम
बेड़ मर्मरेम् सुब तन

१३२

बुरु रे बुरु रे मनि दो
बेड़ रे बेड़ रे रइ
लिमङ लोमोङ मनि दो
किदर कोदोर रइ

सिदे लेगे मोनिञ मनि दो
टोटः ले गे सनञ रइ
लिमङ लोमोङ मनि दो
किदर कोदोर रइ

अलो कुड़िकिङ् बेन् सिदेअ मनि दो
अलो कुड़िकिङ् बेन् टोटः य रइ
लिमङ लोमोङ मनि दो
किदर कोदोर रइ

१३१

पहाड़ से टलमल-टलमल बहते हुए पानी को
हे बन्दर, क्या तुमने नहीं पिया है ?
ढाल के रिलमिल-रिलमिल पानी को
हे बन्दर, क्या तुमने नहीं पिया है ?

मैंने नहीं पिया है, (क्योंकि उसमें)
पहाड़ी कीड़ा बह रहा है।
मैंने नहीं पिया है, (क्योंकि उसमें)
ढलवान का गोजर उतर रहा है।

तुम्हें ऐसी बुद्धि है कि
पहाड़ी कीड़े का बहाना कर रहे हो।
तुम्हें ऐसी समझ है कि
ढाल के गोजर का बहाना कर रहे हो।

१३२

पहाड़-पहाड़ पर सरसों है,
घाटी-घाटी में राई है।
सरसों गहगहाई हुई है,
राई गनगना रही है।

मैं सरसों (का साग) खोंटना चाहती हूँ,
मैं राई (का साग) तोड़ना चाहती हूँ।
सरसों गहगहाई हुई है,
राई गनगना रही है।

हे स्त्रियो ! सरसों मत खोंटो,
हे स्त्रियो, राई मत तोड़ो।
सरसों गहगहाई हुई है,
राई गनगना रही है।

तीरे मुन्दम् गोनोङ्तें मनि दो
जङ्ग रे पोल सति ते रइ
लिमङ लोमोङ मनि दो
किदर कोदोर रइ

१३३

पिड़ि पिड़ि
पिड़ि मेरलि दो
गड़ गड़
गड़ कुदलि

ओकोएगे रोअ लेद
पिड़ि मेरलि
चिमएगे पोअ लेद
गड़ कुदलि

दसि कोड़ रोअ लेद
पिड़ि मेरलि
कमिड़ि कुड़ि पोअ लेद
गड़ कुदलि दो गड़ कुदलि

सरसों हाथ की अंगूठी की कीमत की है,
राई पैर की अंगूठी की कीमत की है।
सरसों गहगहाई हुई है,
राई गनगना रही है।

१३३

प्रत्येक टाड़ में
आँवला है
और प्रत्येक नदी में
जामुन है।

टाड़ के आँवले को
किसने रोपा था ?
नदी के जामुन को
किसने लगाया था ?

धाँगर लड़के ने रोपा था
टाड़ के आँवले को।
धँगरिन स्त्री ने लगाया था
नदी के जामुन को।

गेना

ओकोरे तमः मइ रसिक
चिमए रे तमः मइ चएल
बब-बा रे तमः मइ रसिक
कःसोम्-बा रे तमः मइ चएल

गेना

हे बेटी, तुम्हारी प्रसन्नता किस बात में है ?
हे बेटी, तुम्हारा शृंगार किस बात में है ?
हे बेटी, आनन्द तो धान के फूल में है !
हे बेटी, शृंगार तो कपास के फूल में है।

१३४

सिरि जटि ओड़ः रेम गतिञ्
पटः गोड़ रोसोम् रे
बालेकम् डड़ुङ लेन गतिञ्
डलि लेकम् पयर् लेन्

बा लकम् उड़ुङ् लेन गतिञ्
बा लेकम् गोसो जन्
डलि लेकम् पयर् लेन गतिञ्
डाली लेकाम मएल जन्

ओते लोलो तेचि गतिञ
सिरिम सितुम् ते
बा लेकम् गोसो जन गतिञ्
डलि लेकम् मएल जन्

ओते लोलो तेओ कगे
सिरिम सितुम् तेओ क
सोमए सेनोः तन गतिञ्
ओसड़ बिरिद् तन्

१३५

ओको मुलि रेअ हो मेतम्
जुड़ि दरु गोलञ्चि
चिमए मुलि रेअहोमेतम्
पन्तिदरु अटल् बा

सिङ्गि तुरोः रेअ हो मेतम्
जुड़ि दरु गोलञ्चि
चण्डुः मुलुःरेअ हो मेतम्
पन्तिदरु अटल् बा

१३४

हे प्रिये, तुम झाड़ी से घिरे हुए घर में हो,
हे प्रिये, तुम पटरी से बन्द किये हुए घर में हो।
हे प्रिये, तुम फूल के समान निकली,
तुम फूल के समान विकसी।

हे प्रिये, तुम फूल के समान खिली
और फूल के ही समान मुरझा गई।
हे प्रिये, तुम फूल के समान विकसी
और फूल के ही समान सूख गई।

हे प्रिये, तुम जमीन की गरमी से
या आकाश की ठण्ड से
फूल के समान मुरझा गई,
फूल के समान सूख गई ?

जमीन की गरमी से नहीं
आकाश की ठण्ड से भी नहीं,
हे प्रिये, समय बीत गया (इसलिए मुरझा गई),
हे प्रिये, जवानी चली गई (इसलिए कुम्हला गई)।

१३५

हे प्रिय, किस तरफ है
गुलइची का जोड़ा पेड़।
हे प्रिय, किस ओर है
अटल फूल के पेड़ों की पंक्ति।

प्रिय, पूरब की ओर
गुलइची का जोड़ा पेड़ है।
प्रिय, पश्चिम में
अटल फूल के पेड़ों की पंक्ति है।

सिङ्गि तुर्तन् लेक हो मेतम्
जुड़ि दरु गोलञ्चि
चण्डु मुलुः तन् लेक हो मेतम्
पन्ति दरु अटल् बा

१३६

सिसि बा कोतो कोतो ते
सिसि बाम् चलेन् तन्
हरि बा दड़ दड़ ते
हरि बाम् हिगड़न् तन्

सिसिबा ओकोए कजि ते
सिसिबाम् चलेन् तन्
हरिबा चिमए बकणते
हरि बाम् हिगड़न् तन्

सिसि बा गतिम् कजि ते
सिसि बाम् चलेन् तन्
हरिबा सङ्गम् बकणते
हरि बाम् हिगड़न् तन्

सिसि बा गतिम् कजि दो
सिसि बा रनुअन् गे
हरि बा सङ्गम् बकण दो
हरि बा जिअणन् गे

१३७

दः पिसिर पिसिर
गम जड़म् जड़म्
कुड़ुम्ब बुरु रे दः दो
मइल् बुरु दनङ् रे

प्रिय, उगते सूरज के समान
गुलइची का जोड़ा पेड़ है।
प्रिय, खिलते चाँद के समान
अटल फूल के पेड़ों की पंक्ति है।

१३६

सिसि बा, तुम डाल-डाल पर
सिसि बा, तुम चल रही हो।
हरि बा, तुम टहनी-टहनी पर
हरि बा, तुम बिखर रही हो।

सिसि बा, किसके कहने से
सिसि बा, तुम चल रही हो?
हरि बा, किसके कहने से
हरि बा, तुम बिखर रही हो?

सिसि बा, तुम प्रिय के कहने से
सिसि बा, तुम चल रही हो।
हरि बा, संगी के कहने से
हरि बा, तुम बिखर रही हो।

सिसि बा, तुम्हारे प्रिय की बात तो
सिसि बा, दवा खाने जैसी है।
हरि बा, तुम्हारे संगी की बात तो
हरि बा, नान डाली हुई-सी है।

१३७

फिस-फिस पानी फिसफिसा रहा है,
झम-झम वर्षा झमझमा रही है।
कुड़ुम्बा पहाड़ पर पानी फिसफिसा रहा है,
माइल पहाड़ के पीछे वर्षा झमझमा रही है।

चि बु चिकएअ दः दो
मरे बु रिकएअ गम दो
कुड़ुम्ब बुरु रे दः दो
मइल् बुरु दनङ् रे

चउलि चपि ते दः दो
तबेन् लुम्ते गम दो
कुड़ुम्ब बुरु रे दः दो
मइल् बुरु दनङ् रे

१३८

उपल् बा पुखुरि दो
गुले गले
तड़ए बा बन्देल दो
बिजिर् बलङ्

ओकोए देरङ्
रेअड़न् ते अ
चिमए देरङ्
उमेन् ते अ

सेकरि सरेग
रेअङ्न् ते अ
बमणे बगौतिः
उमेन् ते अ

उपल् बा इकिर् दो
अञ्जेद् जन
तड़ए बा बन्देल दो
डुड जन

(फिस-फिस) पानी से हम क्या करें ?
(झम-झम) वर्षा से हम क्या करें ?
कुड़ुम्बा पहाड़ पर पानी फिसफिसा रहा है,
माइल पहाड़ के पीछे वर्षा झमझमा रही है।

हम उस पानी से चावल धोयेंगे,
हम उस वर्षा से चिउड़ा फुलायेंगे।
कुड़ुम्बा पहाड़ पर, पानी फिसफिसा रहा है,
माइल पहाड़ के पीछे वर्षा झमझमा रही है।

१३८

उपल (कमल) फूलवाली पोखरी
लबालब भरी है।
तड़ए फूलवाला बाँध
झलमल कर रहा है।

(उपल फूलवाली पोखरी) किसके
नहाने के लिए है ?
तड़ए फूलवाला बाँध
किसके स्नान के लिए है ?

(पोखरी) माँझी के
नहाने के लिए है
(बाँध) ब्राह्मण के
स्नान के लिए है।

उपल फूलवाली पोखरी
सूख गई।
तड़ए फूलवाला बाँध
सूख गया।

सेकरि सरेग
इअम तन
बमणे बगौतिः
सयद् तन

चेतन् रिम्बिल् दो
गुले गुले
लतर लारि दो
अलए बलए

तिकिन् सिङ्गिः
गम लेद
तर सिङ्गिः
रम्पि लेद

उपल् बा इकिर दो
पेरेः जन
तड़ए बा बन्देल दो
चड़ङ् जन

सेकरि सरेगएः
रसिक तन
बमणे बगौतिः
लन्द तन

१३६

सिरि बृन्दा बिररे कुटि बा हो मेतम्
कुटि बा रिबि रिबि
हाय-हाय हरि बा हो मेतम्
हरि बा गस गस

माँझी
रो रहा है।
ब्राह्मण
अफसोस कर रहा है।

ऊपर बादल
घुमड़ने लगे।
नीचे लहरें (बादल की)
झुक आईं।

दोपहर में
पानी बरसा।
तीसरे पहर
तूफान चला।

उपल फूलवाली पोखरी
भर आई।
तड़ए फूलवाला बाँध
उमड़ चला।

माँझी
प्रसन्न हो रहा है
ब्राह्मण
(खुशी से) हँस रहा है।

१३९

वृन्दावन में कुटि-फूल का क्या कहना!
घनघोर कुटि-फूल!
हाय, हाय! हरि-फूल का क्या कहना!
गहगहाया हुआ हरि-फूल!

हलङ् लेकम् तुम्बल् लेकम् कुटि बा हो मेतम्
कुटि बा रिबि रिबि
हाय हाय हरि बा मेतम्
हरि बा गस गस

हलङ् केदञ् तुम्बल् केदञ् कुटिबा हो मेतम्
कुटि बा रिबि रिबि
हाय हाय हरि बा हो मेतम्
हरि बा गस गस

गुतु लेकम् गलङ् लेकम कुटि बाहो मेतम्
कुटि बा रिबि रिबि
हाय हाय हरि बा हो मेतम्
हरि बा गस गस

गुतु केदञ् गलङ् केदञ् कुटिबा हो मेतम्
कुटि बा रिबि रिबि
हाय हाय हरि बा हो मेतम्
हरि बा गस गस

बा लेकम् डलि लेकम् कुटि बाहो मेतम्
कुटि बा रिबि रिबि
हाय हाय हरि बा हो मेतम्
हरि बा गस गस ।

बा केदञ् डलि केदञ् कुटिबा हो मेतम्
कुटि बा रिबि रिबि
हाय हाय हरिबा हो मेतम्
हरि बा गस गस

उठा लो, बटोर लो, कुटि-फूल का क्या कहना !
घनघोर कुटि-फूल !
हाय हरि-फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ हरि-फूल !

कूटि-फूल को उठा लिया, बटोर लिया, क्या कहना !
घनघोर कुटि-फूल ।
हाय, हाय ! हरि-फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ हरि फूल !

कुटि-फूल को गूँथ लो, बीन लो, क्या कहना !
घनघोर कुटि-फूल !
हाय, हाय ! हरि-फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ हरि-फूल !

गूँथ लिया, बीन लिया, क्या कहना !
घनघोर कुटि-फूल !
हाय, हाय ! हरि-फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ हरि-फूल !

कुटि-फूल को पहन लो, खोंस लो, क्या कहना !
घनघोर कुटि-फूल !
हाय, हाय ! हरि-फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ हरि-फूल !

कुटि-फूल को पहन लिया, खोंस लिया, क्या कहना !
घनघोर कुटि-फूल !
हाय, हाय ! हरि-फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ हरि-फूल !

१४०

नी चिअ को
गोरोणेअ हो
नी चिअ को
सुड़िअम्

इचः बारे
गोरोणेअ हो
मुरुद् बारे
सुड़िअम्

इचः बागेः
जोमे तन हो
मुरुद् बा गेः
हबे तन्

१४१

बुरु-चेतन् सोखि
लुदम् बा
नर लतर् सोखि
नरइन्

अम् जुड़ि सोखि
लदम् बा
अम् जोत सोखि
नरइन्

पेटेः लेम् सोखि
लुदम् बा
चङ्गड़ लेम् सोखि
नरइन्

१४०

क्या इसी (पक्षी) को
गौरेया कहते हैं ?
क्या इसी (पक्षी) को
सुड़ियम कहते हैं ?

इचः फूल में रहता है
(यह) गौरेया पक्षी ।
पलाश फूल में रहता है
(यह) सुड़ियम पक्षी ।

इचः फूल (का रस) ही
यह चूसता है ।
पलाश फूल (का रस) ही
यह लेता है ।

१४१

पहाड़ के ऊपर, हे सखी,
लुदम् फूल है ।
नाले के नीचे, हे सखी,
नारायण फूल है ।

तुम्हारी जोड़ी है, हे सखी,
लुदम् फूल ।
तुम्हारा संगी है, हे सखी,
नारायण फूल ।

तोड़ लो, हे सखी,
लुदम् फूल को ।
छिनगा लो, हे सखी,
नारायण फूल को ।

गुतुलेन् सोखि
लुदम् बा
गलङ् लेम् सोखि
नरइन्

१४२

डुञ्बा डोडोबोः
ओकोतिजनरे
तड़ए बा तपिर्सः
चिमएतिजन

डुञवा डोडोबोः
सुसु नतिजनरे
तड़ए बा तपिर्सः
करम्तिजन्

डुञ्बा डोडोबोः
इसुइ रसिकरे
तड़ए बा तपिर्सः
कारे चायला

१४३

मोदे कोतो हो सरजोम् बा
मोदे कोतो सरेगञ् मे
बरे दड़ हो सुड़ा सङ्गेन्
बरे दड़ नेण्डेलञ् मे

मोदे कोतो होञ् सरेग मेरे
चिहोम् चिकय
बरे दड़ होञ् नेण्डेल मेरे
मेरे होम रिकय

गूँथ लो, हे सखी,
लुदम् फूल को।
बीन लो, हे सखी,
नारायण फूल को।

१४२

सिर निकाला हुआ डुं-फूल
कहाँ गया ?
बिखरा हुआ तड़ाय-फूल
कहाँ गया ?

सिर उठाया हुआ डुं-फूल
नाचने गया।
बिखरा हुआ तड़ाय-फूल
करम खेलने गया।

सिर उठाया हुआ डुं-फूल
बड़ा रसिक है।
बिखरा हुआ तड़ाय-फूल
बड़ा रँगीला है।

१४३

साखू के फूल की एक डाल
प्रिय, तुम हमारे लिए बचा दो।
कोंपलों की दो टहनियाँ
प्रिय, तुम हमारे लिए छोड़ दो।

एक डाली बचा दें,
तो तुम क्या करोगे ?
दो टहनियाँ छोड़ दूँ,
तो तुम क्या करोगे ?

मोदे कोतो होम् सरेगञ् रे
बा होञ् गुतूय
बरे दड़ होम् नेण्डेलञ् रे
डलि होञ् गलङे

१४४

सिरि जंगल जोबेलरे गतिञ्
सिरि बृन्दा बिरे रे
अम् चिरे लन्द लेद गतिञ्
अम् चिरे जगर् लेद

अञ् गेच लन्द लेद गतिञ्
अञ् गेच जगर् लेद
सान् अगुञ् सेन् केन गतिञ्
सकम् हेःञ् बिरिद् केन्

सान् अगुम् सेनोः रेदो गतिञ्
सकम् हेःञ् बिरिद् रे
अलोरेम् अयरेन गतिञ्
अलोरेम् तयोमेन

कोरचे कोण्डेः कुल जन गतिञ्
सकम् कुड़ तरुब् जन्
दसि कोड़ हुअः किअः गतिञ्
कमिणि कुड़ि सोदोर् किः

१४५

डड़ि होर जोजो हेसः हो
हेसः गतिञ् जारोमकन्
कोलोम् जपः हेड़ेम् बरु हो
बरु सङ्गञ् गदरकन्

एक डाली छोड़ दोगे,
तो फूलों को गूँथेंगे।
दो टहनियाँ छोड़ दोगे
तो कोंपलों का गुच्छा बनायेंगे।

१४४

जंगली जोभी में,
श्रीवृन्दावन में,
हे प्रिये, क्या तुम्हीं हँस रही थी
(और) क्या तुम्हीं बातचीत कर रही थी ?

हे प्रिय, मैं ही हँस रही थी
और मैं ही बातचीत कर रही थी।
हे प्रिय ! मैं लकड़ी लाने गई थी
और पत्ती तोड़ने गई थी।

हे प्रिय, तुम लकड़ी लाने जाना
या, तुम पत्ती तोड़ने जाना, तो
हे प्रिय, तुम आगे-आगे मत जाना।
हे प्रिय, तुम पीछे-पीछे मत जाना।

हे प्रिये ! टेढ़ी टँगिया बाघ बन जाती है,
पत्तियों की गठरी भेड़िया बन जाती है।
हे प्रिये, (बाघ ने) धाँगर को काट लिया,
हे प्रिये, (भेड़िये ने) धँगरिन को नोच लिया।

१४५

हे प्रिय, डाड़ी के रास्ते का खट्टा पीपल,
हे प्रिय, पका हुआ है।
हे प्रिय, खलिहान के निकट का मीठा कुसुम,
हे प्रिय, गदराया हुआ है।

हेसः गतिञ् जारोम कन हो
दोल गतिञ् उयुगञ् मे
बरु सङ्गञ् गदरकन हो
दोल गतिञ् होसोराञ् मे

उयुः दोरेञ् उयुग मेअ हो
गितिल् रेंगे उयुगोःअ
होसोर् दोरेञ् होसोर् मेअ हो
सेरेङ् रेंग होसोरोः अ

गितिल् रेंगे उयुगोःअ हो
गितिल् गितिल् सोअन
सेरेङ् रेंगे होसोरोःअ हो
सेरेङ् सेरेङ् सिणिग

१४६

सेरेङ् जपः ओते दोरे दद
अलो ददम् बन्दरेअ
मेयोद् गेअएः सिउः केड़ दद
अलो ददम् कुन्दरिअ

रिणि अलङ् कड़ी अलङ् दद
अलो ददम बन्दरेअ
पैंचाए अलङ् उधारे अलङ् दद
अलो ददम् कुन्दरिअ

मोदे बित लाइः नतिन् दद
अलो ददम् बन्दरिअ
चपु सुनुम् मोच नतिन् दद
अलो ददम् कुन्दरिअ

हे प्रिय, पीपल (जो) पका हुआ है,
हे प्रिय, चलो गिरा दो।
हे प्रिय, कुसुम जो गदराया हुआ है,
हे प्रिय, चलो गिरा दो।

गिराने को तो मैं गिरा दूँगा
(लेकिन) वह धूल में ही गिरेगा।
झाड़ने को तो मैं झाड़ दूँगा
(लेकिन) वह पत्थरों में गिरेगा।

धूल में गिर जायगा, तो
धूल-धूल महकेगा।
पत्थरों में गिरेगा, तो
पत्थर-पत्थर गमकेगा।

१४६

हे दादा, चट्टान के निकट की जमीन,
हे दादा, बन्धक मत रखो।
हे दादा, जोतने के लिए एक ही काड़ा है,
उसे मत दे दो।

हे दादा, हम ऋण लेंगे, माँग लेंगे,
पर बन्धक नहीं धरेंगे।
हे दादा, हम पैंचा लेंगे; उधार लेंगे,
पर उसे नहीं देंगे।

हे दादा, वित्ते-भर पेट के लिए,
हे दादा, उसे बन्धक मत रखो।
हे दादा, मुट्ठे-भर मुँह के लिए,
हे दादा, उसे दे मत दो।

१४७

जनुम् जनुम् गो
सिसि गोर जनुम्गो
नणि नणि गो
बलेः सेअड़ि नणि

जनुम् जनञ् गो
सिसि गोर जनुम्ते
सुदि जनञ् गो
बलेः सेअड़ि नणि ते

हासु तेगे गोञ्
चिरि बिरिअ
बबत तेगे गोञ्
डुण्डङ्ग केन्दे

एङ्गञ् मेनइःरे
कोयोङ्‌ने मोनिङ
अपुञ् मेनइःरे
सयरेन् सनञ्

१४८

मरङ् गड़ गुले गुलेअ
हुड़िङ् गड़ लेबे लेबेअ
चि होम् अतु लङ चि
चि होम् बुअल् लङ्

क होञ् अतु लङ हो
क होञ् बुअल् लङ्
सोओजे दरु बङ्क होम् इतुअन्
बङ्क दरु सोओजे होञ् सरिअन्

१४७

सिसिगोर काँटा
बड़ा कँटीला है।
बाले सेयाड़ी लता
बहुत छितराई हुई है।

सिसिगोर काँटा
(मेरे पैर में) गड़ गया।
बाले सेयाड़ी लता से
खरोंच लग गई।

(काँटा) दर्द से
परपरा रहा है।
(लता की) खुजलाहट से
छरपट छूट रही है।

मेरी माँ रहती
(तो) उसकी गोद में चले जाते।
मेरे पिता रहते
(तो) वे सहला देते।

१४८

बड़ी नदी आर-पार उमड़ी हुई है,
छोटी नदी लबालब भरी हुई है।
प्रिय, क्या तुम हमें बह जाने दोगे ?
प्रिय, क्या तुम हमें डूब जाने दोगे ?

नहीं, मैं तुम्हें बह जाने नहीं दूँगा,
नहीं, मैं तुम्हें डूब जाने नहीं दूँगा।
मैं सीधे पेड़ को टेढ़ा करना जानता हूँ,
मैं टेढ़े पेड़ को सीधा करना जानता हूँ।

क होञ् अतु लङ् हो
क होञ् बुअल् लङ्
कुल बोओ:रे चिगुड़ि होञ् ल:केन्
एएअ बुरु मर: होञ् द:केन् ।

१४६

अम् जुड़ि तिञ चिन दइ
मरङ् चटुम दुपिल् रिकञ
अम् जोत तिञ चिन दइ
खण्डि गुड़्लुम् मण्डि रिकञ

कन दइ करेञ् हिरुमेन
अलो दइम् दुपिल् रिकञ
कन दइ करेञ् गोड़ोमेन
अलो दइम् मण्डि रिकञ

अञ:ओ तञ् मेनइ: अन दइ
सुकु बा सेपेड़ेद्
अञ:ओ तञ् मेन इअ नदइ
तयर् नणि बिजिर् बलङ्

सुकु बा सेपेड़ेद् नदइ
खलोम् केन खलोम् केन्
तयर नणि बिजिर् बलङन दइ
सतोम् सतोम् केन्

१५०

ओकोरे तम: मइ रसिक
चिमए रे तम: मइ चैला
बाबा बा रेअ मइ रसिक
क:सोम् बा रेअ मइ चैला

नहीं, मैं तुम्हें बह जाने नहीं दूँगा,
नहीं, मैं तुम्हें डूब जाने नहीं दूँगा।
मैं बाघ के सिर पर ब्रहिंगा छीला है,
मैं सात पहाड़ों के पार मयूर मारा है।

१४६

हे दीदी, क्या तुम्हारी जोड़ी हूँ
कि मुझसे बड़ा-सा घड़ा ढुलवाती हो ?
हे दीदी, क्या मैं तुम्हारी बराबर हूँ
कि तुम मुझसे खाँड़ी-भर (आधा मन) गोंदली का भात पकवाती हो ?

हे दीदी, मैं तुम्हारी सौत नहीं बनूँगी,
मुझसे (बड़ा घड़ा) मत ढुलवाओ।
हे दीदी, मैं (तुम्हारे पति से) विवाह नहीं करूँगी,
मुझसे खाँड़ी-भर भात मत पकवाओ।

हे दीदी, मेरा भी प्रेमी है
कद्दू के फूल के समान खिलता हुआ।
हे दीदी, मेरा भी प्रेमी है
खीरे की लता के समान लहलहाता हुआ।

कद्दू के फूल के समान खिलता हुआ (के साथ)
हे दीदी, अगले साल (मेरी शादी होगी)।
खीरे की लता के समान लहलहाते हुए से
हे दीदी, दूसरे साल (मेरा विवाह होगा)।

१५०

हे बेटी, तुम्हारी खुशी किस बात में है ?
हे बेटी, तुम्हारा शृंगार किस बात में है ?
हे बेटी, खुशी तो धान के फूल में है !
हे बेटी, शृंगार तो कपास के फूल में है !

हेड़ेद् तुसङ् लेरे मइ रसिक
रिद् तकुञ् लेरे मइ चैला
लाइः पेरेः जोम-तरे मइ रसिक
मयङ् पेरेः तोल्-तरे मइ चैला

जलतिङ् तन मइ रसिक
बुलतिङ् तन मइ चैला
अखड़ तलरे मइ रसिक
अखड़ अतोम् रे मइ चैला

१५१

सेन् दलः दुलुःरे ञ्
लेल् लेद् म
सुपिद् बड़ए बुड़इरेञ्
चिन लेद् म

लेल्मे लेल्मे दोना मइम्
जुम्कु जुम्बड़ जन्
चिनमे चिनमे दोन मइम्
लःस लन्दिड़ि जन्

सुकु जम्बड़ लेकन मइम्
जुम्कु जुम्बड़ जन्
तयर् नाड़ी लेकन मइम्
लःस लन्दिड़ी जन्

ओकोरेबु गोडे मेअम्
जुम्कु जुम्बड़ जन्
चिमए रेबु चले मेअम्
लःस लन्दिड़ि जन्

हे बेटी, घास निकाने में ही खुशी है,
हे बेटी, सूत कातने में ही आनन्द है !
हे बेटी, भर पेट खाने में ही खुशी है,
हे बेटी, कमर-भर कपड़ा पहनने में ही आनन्द है ।

हे बेटी, तुम्हारी खुशी घूम रही है,
हे बेटी, तुम्हारा आनन्द डोल रहा है ।
हे बेटी, तुम्हारी खुशी अखाड़े के बीच घूम रही है,
हे बेटी, तुम्हारा आनन्द अखाड़े के किनारे डोल रहा है।

१५१

मैंने डुगुर-डुगुर चलते हुए
तुम्हें देखा था ।
मैंने नटखट अवस्था में
तुम्हें पहचाना था ।

हे बेटी, देखते-देखते ही
तुम गहगहा गई ।
हे बेटी, देखते-ही-देखते
तुम गदबदा गई ।

हे बेटी, तुम कद्दू के झमरे के समान,
तुम गहगहा गई ।
हे बेटी, तुम खीरे की लता के समान,
तुम गदबदा गई ।

तुम्हारी शादी हम कहाँ करेंगे,
तुम गहगहा गई ।
तुम्हारा विवाह हम कहाँ करेंगे,
तुम गदबदा गई ।

१५२

दोलङ् इचः बा मुरुचु
बालङ् गुतुअ
दोलङ् तड़ए बा तपिर्सः
डलि लङ् गलङ

रङ्गम चरिः रे मुरुचु
बालङ् गुतुअ
नीलेम सुतम्रे तपिर्सः
डलि लङ् गलङ

मोदे चरि दो मुरुचु
गतिम्-लङ् ओमइअ
बरे सुतम् दो तपिर्सः
सङ्गम् लङ् चेदइअ

ओमइ ओमइ दो मुरुचु
चुटि सुनुपिद् रे
चेदाई चेदाई दो तपिर्सः
जनर् रोनोपोद् रे

१५३

अम दोरे लोबो धोनी गतिञ्
लोबो लोबोम् जगरे
अम दोरे मोचो कोली सङ्गञ्
मोचो मोचोम् लन्दय

ओकोए कजि ते लोबो धोनी गतिञ्
लोबो लोबोम् जगरे
चिमए बकण ते मोचो कोली
मोचो मोचोम् लन्दय

१५२

हे इचः मुरुचु-फूल,
चलो, हम फूल गूँथें।
हे तड़ए तपिरसः फूल,
कल हम माला बनायें।

हे मुरुचु, रँगीली तीली में
हम फूल गूँथेंगे।
हे तपिरसः, नीले सूत में
हम माला बनायेंगे।

हे मुरुचु, एक तीली का फूल
हम तुम्हारे साथी को देंगे।
हे तपिरसः, दो सूत की माला
हम तुम्हारे संगी को देंगे।

हे मुरुचु, जब देना ही है,
तब खोंपे के ऊपर खोंस देंगे।
हे तपिरसः, जब देना ही है,
तब जूड़े के चारों ओर लगा देंगे।

१५३

हे बकवासिनी प्रिये,
तुम तो बक-बक करके बात करती हो।
हे मुसकानेवाली संगिनी,
तुम तो मुसका-मुसकाकर बात करती हो।

किसके कहने से हे प्रिय,
तुम बक-बक करके बात करती हो ?
किसके कहने से हे मुसकानेवाली,
मुसका-मुसकाकर बात करती हो ?

गतिम् काजी ते लोबो धोनी
लोबो लोबोम् जगरे
सङ्गम् बकणते मोची कोली
मोचो मोचोम् लन्दय

गतिम् कजि दो लोबो धोनी
रनुअन् गेअ दो
सङ्गम् बकण दो मोचो कोली
जिअणन् गेअ दो

१५४

होड़ो तेदोएः लेलो तन
रिम्बिल् लेकाएः लेलोः तन
तीन बङ्गएः तिङ्गुअकन
इनिः लोःते जीगे लो तन

तिकिन् सिंगि तइ केन
अङ् जन्तेज् लेल् बेड़इ
निमिन् सन्ते कए लेः लोग
ओकोतिअ वंसी धारी

१५५

अम चिन मइ अम् बोङ्गः लेदरे
अम चिन मइ इचः सकम् लेद्
सकम् हेः रे अम बोङ्गः लेदरे
सान् आगुरेम् इचः सकम् लेद्

ओकोए नङ्गेन्गे अम् बोङ्गः लेदरे
चिमए नङ्गेन् गेम् इचः सकम् लेद्
गतिम् नङ्गेन्गे अम् बोङ्गः लेदरे
सङ्गम् नङ्गेम् गेम् इचः सकम् लेद्

प्रिय के कहने से
बक-बक करके बात करती हो।
प्रिय के कहने से
मुसका-मुसकाकर बात करती हो।

हे बकवास करनेवाली, तुम्हारे साथी की बात तो
दवा के समान जान पड़ती है।
हे मुसकरानेवाली, तुम्हारे संगी की बात तो
जान डालने-जैसी लगती है।

१५४

आदमी जो दिखाई दे रहा है,
बादल की तरह दिखाई दे रहा है।
तीन जगह झुककर खड़ा है,
उसके लिए हृदय जल रहा है।

दोपहर को तो था,
सवेरा होने पर मैं खोजती-फिरती हूँ।
अभी तक दिखाई नहीं देता।
वंशीधारी कहाँ चला गया ?

१५५

हे बेटी, तुमने क्या पूजा की थी ?
क्या तुमने पत्ता तोड़कर पूजा की थी ?
तुमने पत्ता तोड़ने में पूजा की थी ?
तुमने जलावन लाने में पूजा की थी ?

तुमने किसके लिए पूजा की थी ?
तुमने किसके लिए पत्ता तोड़कर पूजा की थी ?
तुमने अपने प्रिय के लिए पूजा की थी ?
तुमने अपने प्रिय के लिए पूजा की थी ?

१५६

तिरिल् सकम् लुलुयुद् गतिम
तेलेः दरु पर्पण्डेअद् सङ्गम् दो
ओकोते सेनोः जन लुलुयुद् गतिम्
चिमए ते बिरिद् जन् पर्पण्डेअद् सङ्गम् दो

सुसुन्ते सेनोः जन लुलुयुद् गतिम् दो
करम् ते बिरिद् जन् पर्पण्डेअद् सङ्गम् दो
चेतन् टोला ते लुलुयुद् गतिम् दो
लतर टोला ते पर्पण्डेअद् सङ्गम् दो

१५७

एङ्गञ् अपुञ् दुलड़रे
हग मिसि सुगड़रे
हुड़िङ् सुकुञ् तइ केनरे
बुगिन् कुमुञ् कुमुइ निदरे

जोबे मरङ् जन सेण जनते
कञ् दुड़ुम् जन अमः उड़ुः ते
जी तञ् दोम् कुम्बुड़ु किदिञ
उपएः होड़मो परकोम् रे गिञ

अलए बलाएजी होञ् बलाए तन्
मण्डि उतु कहोंञ् जोमन
जी तञ् दोम् कुम्बुड़ किदिञ
एषएः होड़मो परकोम् रेगिञ

हाय विधि मोन पुरओ तम्
नेअ कमिरे होरअड़ः तम
मेद्दः ते कुड़म् लुम् तन्
बिलका तनएः राम लेलेते

१५६

तुम्हारा केवद के पत्ते के समान उदास साथी !
तुम्हारा तेले के वृक्ष के समान रुखड़ा मित्र !
तुम्हारा उदास साथी कहाँ चला गया ?
तुम्हारा रुखड़ा साथी कहाँ चला गया ?

तुम्हारा उदास साथी नाचने गया।
तुम्हारा रूखा-सूखा मित्र करम खेलने गया।
ऊपर के टोले को नाचने चला गया।
नीचे के टोले को करम खेलने चला गया।

१५७

माँ-बाप के दुलारे थे।
भाई-बहनों के प्यारे थे !
बचपन में बहुत सुख किया !
और रातों में सुख का सपना देखा !

जब बड़ा हुआ और कुछ बुद्धि हुई,
तब तुम्हारी चिन्ता में नींद नहीं आती।
तुमने मेरा दिल चुरा लिया।
केवल शरीर खाट में पड़ा हुआ है।

मेरे मन में बेचैनी हो रही है।
मुझसे कुछ खाया नहीं जाता।
तुमने मेरा दिल चुरा लिया।
केवल शरीर खाट में पड़ा हुआ है।

हे विधाता, मेरे मन की इच्छा पूरी करो।
इस काम में रास्ता छोड़ दो।
आँखों के पानी से छाती भींग रही है।
(इस दशा को) देखकर राम को दया आती है।

१५८

अमगः कजि दोन मइ
तीते हो तेलए लेक
अमगः बकण दोन मइ
कांसा-पितल् दले लेक

ओकोए कजि तेन मइ
तीते हो तेलए लेक
चिमए बकण तेन मइ
कांसा-पितल् दले लेक

गतिम् कजि तेन मइ
तीते हो तेलए लेक
सङ्गम् बकण तेन मइ
काँसा-पितल् दले लेक

गतिम् कजि दोन मइ
रनुअन् गेअ दो
सङ्गम् बकण दोन मइ
जिअणन् गेअ दो

१५६

लङ् लङ् लङ् धोती दो बोयो
मुण्डा कोचि मणकि को
नङ्गलि पोएता दो बोयो
राजा कोचि मांझी को

ओकोरेम् लेले लेदको बोयो
मुण्डा कोचि मणकि को
चिमए रेम् चिन लेद् को बोयो
राजा कोचि मांझी को

१५८

हे लड़की, तुम्हारी बात
हाथों में लोकने के समान है ।
हे लड़की, तुम्हारी बात
काँसा-पीतल ठोकने के समान है ।

हे लड़की, किसके कहने से
तुम्हारी बात हाथ में लोकने के समान है ?
हे लड़की, किसके कहने से
तुम्हारी बोली काँसा-पीतल ठोकने के समान है ।

हे लड़की, साथी के कहने से
हाथ में लोकने लायक है ।
हे लड़की, मित्र के कहने से
काँसा-पीतल ठोकने के समान है ।

मेरे साथी का कहना तो
दवा के समान है ।
मेरे साथी की बात तो
जड़ी-बूटी के समान है ।

१५९

हे मित्र, फहराती हुई धोती
मुण्डा की है या मानकी की ?
हे भाई, मोटा-मोटा जनेऊ
राजा का है या माँझी (जमीन्दार) का ?

तुमने कहाँ देखा था
कि मुण्डा की है या मानकी की ? (ऐसा कहते हो ?)
तुमने कहाँ पहचाना था
राजा का या माँझी का ? (ऐसा कहते हो ?)

अञ् दोञ् लेले लेद् को बोयो
चेतन् टोला सुसुन् रे
अञ् दोञ् चिन लेद्को बोयो
लतर् टोला करम् रे

१६०

जोजो को जुम्बुलए रे हो
उलि को अम्बरए रे
डुलकि दुमङ् बिनु सड़ि लेन हो
मेतम् गोपिन को सुसुन् तन्

दोल तेबु लेल् अगुअ
दोल तेबु चिन अगुअ
डुलकि दुमङ् बिनु सड़ि लेन् हो
मेतम् गोपिन् को सुसुन् तन्

अले दोले लेल् केन हो
अले दोले चिन केन
डुलकि दुमङ् सड़ि लेन हो
मेतम् गोपिन् को सुसुन् तन्

१६१

चेतन् टोला सुसुन् कोदो
हे हो मेतम् कुद सुड़
लतर् टोला करम् कोदो
हे हो मेतम् बरु सुड़

सुसुन् कोदो हिजुः अकन
बान मइ एकेलए ने
करम कोदो सेटेर कन
डालीना मइ तायुरे मे

हे भाई ! मैंने उन्हें देखा था
ऊपर टोले के नाच में।
हे भाई ! मैंने उन्हें पहचाना था
नीचे टोले के करम में।

१६०

इमली की झाड़ियों में
और आम के झुरमुटों में
ढोलक, माँदर और वेणु बज रहे हैं।
हे मित्र, गोपियाँ नाच रही हैं।

चलो देख आवें।
चलो, देखने चलें।
ढोलक, माँदर और वेणु बज रहे हैं,
और गोपियाँ नाच रही हैं।

हम तो देख आये,
हम तो देख आये।
(जो) ढोलक, माँदर और वेणु बज रहे हैं,
(और, जो) गोपियाँ नाच रही हैं।

१६१

ऊपर टोले के नाचनेवाले
जामुन की कोपलें खोंसते हैं।
नीचे टोले के करम खेलनेवाले
कुसुम की कोपलें पहनते हैं।

नाचनेवाले तो आ गये,
हे लड़की ! अपनी कोपलें लाओ।
करम खेलनेवाले तो आ गये।
हे बेटी ! अपना फूल हिलाओ।

कचि ददम् लेले जद
चुटि रेगे एकेल तन्
कचि ददम् चिन जद
लतर् रेगे तायुरे तन्

लेले दोरेञ् लेले जद
होयो तेगें एकेल तन्
चिन दोरेञ् चिन जद
रम्पि तेगे तायुरे तन्

१६२

सेतः दो गुरिः गिड़ि लण्डिअते
सेतः दोम् तरसु बसुःन
निमतङ् दो डुलकि डुमङ् सड़िते
निमतङ् दोम् चलि बलि न

ओकोए कजि तेन मइ
सेतः दोम् तरसु बसुःन
चिमए बकण तेन मइ
निमतङ् दोम् चलि बलि न

१६३

अमगः सुनुपिद् दोन मइ
बण्ड नयलो पड़ागोइःअ
अमगः पएला दोन मइ
सगिड़ि सान् थोलोःअ

ओकोए कजि तेन मइ
बण्ड नयलो पड़ागोःअ
चिमए बकण तेन मइ
सगिड़ि सान् थोलोःअ

हे दादा ! क्या नहीं देखते,
आगे हिल रहा है ।
हे दादा ! क्या नहीं देखते,
पीछे हिल रहा है ।

देखने को तो देखता हूँ;
लेकिन हवा से हिल रहा है (तुम्हारे हिलाने से नहीं) ।
देखने को तो देखता हूँ,
लेकिन आँधी से हिल रहा है ।

१६२

सवेरे तो गोबर फेंकने के आलस्य से,
सवेरे तो ढीली-ढीली रहती हो ।
और अभी तो ढोलक और माँदर की आवाज से,
अभी तो छटपटा रही हो ।

हे लड़की ! किसके कहने से
सवेरे तो ढीली-ढीली रहती हो ?
हे लड़की ! किसके कहने से
अभी तो छटपटा रही हो ?

१६३

हे लड़की ! तुम्हारा जूड़ा तो इतना बड़ा है
कि उसको फाड़ने से छोटा-मोटा हल निकल सकता है ।
तुम्हारा आँचल तो इतना बड़ा है
कि इसमें गाड़ी-भर लकड़ी बाँधी जा सकती है ।

कौन कहता है कि खोंपा,
फाड़ने से हल निकलने लायक है ?
कौन कहता है कि आँचल
गाड़ी-भर लकड़ी बाँधने लायक है ?

गतिम् कजि तेन मइ
बण्ड नयलो पड़ागोःअ
सङ्गम् बकण तेन मइ
सगिड़ि सान् थोलोःअ

१६४

दा तञ् दो टुइल
दा तञ दो डिण्ड केन्देर
ओकोरेअ टुइल
चिमए रेअ डिण्डा केन्देर

गितिः ओड़ः रे टुइल
जारु रोसोम् रे डिण्डा केन्दर
गितिः ओड़ः दो लो तन्
जारु रोसोम् दो डिण्डा बले तन्

हाय टुइल लो तन्
हाय डिण्डा केन्देरा बलेतन्
टुइला किसान इअम् तन्
केन्देरा किसान दो सयद् तन्

१६५

डड़ि होर गोड़ सिउः कोड़ को
रेल डड़ि दः अगु तो
नेते सेने कुड़ि होन् दोपे
लेलइचि बानोः गे

लेले दोले लेलःइअ हो
डुब रे मनि सुनुम्
चिन दोले चिनइअ हो
थाड़ी रे रइबा ससङ्

तुम्हारा साथी कहता है कि
खोंपा फाड़कर छोटा-मोटा हल बनाने लायक है।
तुम्हारा संगी कहता है कि
आँचल एक गाड़ी लकड़ी बाँधने लायक है।

१६४

हमारा टुइला दे दो।
हमारा जवानी के समय का केन्दरा (सितार) दे दो।
टुइला कहाँ है ?
सितार कहाँ है ?

टुइला शयन-गृह में है।
सितार विश्राम-गृह में है।
शयन-गृह तो जल रहा है!
विश्राम-गृह तो धधक रहा है!

हाय! टुइला जल रहा है!
हाय! सितार जल रहा है!
टुइला का मालिक रो रहा है!
सितार का मालिक आह भर रहा है!

१६५

हे डाड़ी के रास्ते पर हल चलानेवाले लड़को!
और हे रेला डाड़ी से पानी लानेवाली लड़कियो!
इधर से जानेवाली लड़की को
देखा है या नहीं ?

देखने को तो देखा था,
कटोरे में सरसों का तेल (लिये थी)।
देखने को तो देखा था,
थाली में राई के फूल के समान हल्दी (लिये थी)।

डुब रे मनि सुनुम् हो
गङ्ग ते रेड़न्तिः
थाड़ी रे रइ बा ससङ्
समन्दर् ते बुअलेन् तिः

१६६

ओको कोतेम् सेनोः तन दद
जुड़ि जुड़ि बोण्डोलन् गे
चिमए कोतेम् बिरिद् तन दद
जोत जोत बोतोर नगें

अञ् दोञ् सेनोः तन बबु
चेतन् टोल सुसुन् ते
अञ् दोञ् बिरिद् तन बबु
लतर टोल करम् ते

चेतन् टोल सुसुन् दोरे दद
करेम् इतुअन्
लतर टोल कोरम दोरे दादा
करेम् सरिअन्

चेतन् टोल सुनन् दोरे दद
चेतन् तेको कुड़ि लेअ
लतर टोल करम् दोरे दद
देअ तेको उसरेन

चेतन् तेको कुड़िलेरे बबु
अञो बबुञ् कुड़िलेअ
देअ तेको उसरेन् रे बबु
अञो बबुञ् उस रेन

कटोरे में सरसों का तेल (लेकर)
गंगा नहाने गई।
थाली में पीली हल्दी (लेकर)
समुद्र में तैरने गई।

१६६

हे दादा ! कहाँ जा रहे हो
जोड़ा-जोड़ा पिछौटा लटकाये हुए ?
हे दादा ! कहाँ चल रहे हो
जोड़ा-जोड़ा लटकन लटकाये हुए ?

हे बाबू ! मैं जा रहा हूँ
ऊपर टोला नाचने के लिए ।
हे बाबू ! मैं जा रहा हूँ
नीचे टोला करम खेलने के लिए।

हे दादा ! ऊपर टोले के नाच को
तुम नहीं जानोगे।
हे दादा ! नीचे टोले का करम
तुमसे नहीं होगा ?

हे दादा ! ऊपर टोले के नाच में (छोकरे)
ऊपर को उछलते हैं।
हे दादा ! नीचे टोले के नाच में (छोकरियाँ)
पीछे को खिसकती हैं।

हे बाबू, जब (लड़के) ऊपर को उछलेंगे,
तब मैं भी उछलूँगा।
हे बाबू, जब (लड़कियाँ) पीछे को खिसकेंगी,
तब मैं भी खिसकूँगा।

१६७

बुरु चेतन् चितिरि किङ् हो
नर लतर् असकल् किङ्
चिअ चितिरि कम् हड़गुन हो
चिअ असकल् कम् होसोरेन्

गतिम् दो अड़न्दिन् तनरे
सङ्गम् दोए कोणन्दिन् तन्
इच बागे पेरेड़ेद् हो तना
मुरुद् बागे नर सिंगा तन्

डुगु मगु चौडल् ते हो
गतिम दो एः अणन्दिन् तन्
गाजा बाजा बजुणिअ ते हो
सङ्गम् दो एः कोणन्दिन् तन्

●

१६७

पहाड़ के ऊपर दो तीतर हैं,
ढाल के नीचे दो आसाकल हैं।
हे तीतर ! क्यों नहीं उतरते ?
हे आसाकल, तुम क्यों नहीं आते ?

तुम्हारे प्रिय की शादी हो रही है,
तुम्हारे संगी का विवाह हो रहा है।
इचः-फूल की भेरी बज रही है,
और पलास-फूल का सिंगा बज रहा है।

डगमग चण्डूल (एक डोली) पर
तुम्हारे संगी की शादी हो रही है।
गाजा-बाजा बजाकर
तुम्हारे संगी का विवाह हो रहा है।

●

करमा

अयुब्-सिङ्गि बा जन

तिकिन् सिङ्गि: गोसो जन

ओहो जुगि चेणे

आमो चेड़ेम् गोसो चब जन् !

करमा

सायंकाल फूल खिला
और दोपहर को मुरझा गया।
हे जोगी पक्षी!
तुम भी मुरझा गये!

१६८

ने दिसुम् तल रे
जोनोमकन् अबुरे
रेङ्गे तेतङ् दुकु सुकु
जमारे-गेअ

जेत इमिनङ् पुंजी पाटी
कमि उदमन् रेओ
एन दोजा बरबरि
कगे तैन् गेअ

चिलक कड़ेबा बातन
एन्का पुंजीहिजुः तन
चिल्क कड़ेबा उरुड़ तन
एन्क पुंजी सेनोः तन्

१६९

अट-मट बिर्को तलरे
बुरु जपः रेबुअ, चिकएअबु ड़ोः
जेत लेकरे नेरे गेबु तइन
चिकएअबु ड़ोः

कुरु मुटुबु कमिअ
सुकु सुकबु जोमेअ चिकएअबु ड़ोः
जेता लेकरेनेरे गेबु तइन
चिकएअबु ड़ोः

अबअः मोलोङ् रे
दुकु सुकु सोबेन विधि ओलकद् चिकएअबु डोः
चिक लेरे बइओग नेरे गेबु तइन
चिकएअबु ड़ोः

१६८

इस धरती पर
हमलोगों का जन्म हुआ है।
यहाँ सुख-दुःख और भूख-प्यास
सभी सभी-एक साथ हैं।

जितनी भी पूँजी और धन
कमाये रहने पर भी,
भाई, वह बराबर
ठहरता नहीं।

जिस प्रकार काँस फूलता है,
उसी प्रकार धन आता है।
(और) जिस प्रकार काँस झड़ जाता है,
उसी प्रकार धन चला जाता है।

१६९

घने जंगल के बीच में
पहाड़ के निकट (रहते हैं, इसके लिए) क्या किया जाय ?
किसी तरह (हमें) यहीं रहना है,
क्या किया जा सकता है ?

हम तेजी से काम करेंगे
और अच्छी तरह खायेंगे-पीयेंगे।
जैसे-तैसे हमें यहीं रहना है,
क्या किया जा सकता है ?

हमारे भाग्य में
विधाता ने हमारे दुःख-सुख सब लिख दिया है।
जैसे-तैसे हमें यहीं गुजर करना है,
क्या किया जा सकता है ?

१७०

ने विसुम् रिङ्ग जन
हियतिङ् ते चब जन
दोलङ् गतिञ् सेनोः लील-बाड़ी
किरिङे अलङ् बुगिन् लील साड़ी

सेनो अलङ् जुड़ि जुड़ि
गोगे अलङ् मरङ् कपि
दोलङ् गतिञ् सेनोः लील्-बाड़ी
किरिङे अलङ् बुगिन् लील साड़ी

दोलङ् सेनोः लील-बाड़ी
हग होन् मेनः (कोवा) भारी
दोलङ् गतिञ् सेनोः लील बाड़ी
किरिङे अलङ् बुगिन् लील साड़ी

बुढु बाबु कजि तन
एन कजि सुकु जन
दोलङ् गतिञ् सेनोः लील-बाड़ी
किरिङे अलङ् बुगिन् लील साड़ी

१७१

कुइडीह रे जडुवा
जनुम् पिड़ि चिपिड़ि
करेञ् तइन
अञ् दो जेत तेगेञ् सेनोग
कगेञ् तइन

हतु रेदो मुण्डा मेनइः
बिर रेदो कुल मेनइः
करेञ् तइन
अञ् दो आसाम तेगेञ् सेनोग
कगेञ् तइन

१७०

इस देश में अकाल पड़ गया,
दुःख सहते-सहते थक गये।
हे प्रिय ! लील-बाड़ी चलो,
हम वहाँ सुन्दर नीली साड़ी खरीदेंगे।

हम दोनों साथ-साथ चलेंगे,
हम बड़ा फरसा ले लेंगे।
हे प्रिय ! लील-बाड़ी चलो,
वहाँ सुन्दर नीली साड़ी खरीदेंगे।

हे प्रिय ! लील-बाड़ी चलो,
वहाँ (हमारे) बहुत से भाई-बन्धु हैं।
हे प्रिय ! लील-बाड़ी चलो,
वहाँ सुन्दर नीली साड़ी खरीदेंगे।

बुदू बाबू कहते हैं (कि)
इस बात से आनन्द होता है।
हे प्रिय ! लील-बाड़ी चलो,
वहाँ सुन्दर नीली साड़ी खरीदेंगे।

१७१

कुइडीह में भी नहीं, जडुवा में भी नहीं,
जनुमपिड़ि और चिपिड़ि में भी नहीं,
मैं नहीं रहूँगा।
मैं कहीं भी भाग जाऊँगा।
मैं (यहाँ) नहीं रहूँगा।

गाँव में मुण्डा है
और जंगल में बाघ है।
मैं (यहाँ) नहीं रहूँगा।
मैं आसाम चला जाऊँगा,
मैं (यहाँ) नहीं रहूँगा।

बुदु बाबु कजि तन
एन कजि सुकुजन
करेञ् तइन
अञ् दो आसाम तेगेञ् सेनोग,
कगेञ् तइन

१७२

ने हतु तल रे
जोनोम कन् सुगा र
दुकु सुकु सोबेन मेनः
विधि ओल् तदरे

नेला रे तञ् नोबोधनी
नेला रे तञ् चोःलेम
नेक गे संसार मेनः
विधि ओल् तदा रे

बुदु बाबु अः कड़म् रे
दिरि थेन कन रे
अयर् तयोम् उड़ुः केते
दुरङ् बइ तनरे

१७३

नोरो जोनोम् बरसिङ् नङ्गेन्
लन्द जगर् हिरिति-पिरिति
ने जीबोन् गतिञ्
ने जीबोन क हो नमोग

काँसा-पीतल पोअः जन्र
काँसा-पीतल बदल नमोग
ने जीबोन् गतिङ्
ने जीबोन् क हो बदलओः

बुदु बाबू कहते हैं,
इस बात से हमें खुशी होती है।
मैं यहाँ नहीं रहूँगा।
मैं आसाम चला जाऊँगा,
मैं (यहाँ) नहीं रहूँगा।

१७२

इस गाँव में
हे सुग्गा, हम लोग पैदा हुए हैं।
(हमारे जीवन में) दुःख और सुख दोनों रहते हैं;
(क्योंकि) भगवान् ने (ऐसा ही) लिख दिया है।

हे मेरी नोबोधोनी,
आओ तुम्हें चूम लूँ।
संसार ऐसा ही रहता है;
क्योंकि भगवान् ने (ऐसा ही) लिख दिया है।

बुदु बाबू का हृदय
पत्थर से दबा हुआ है।
वह आगे-पीछे सोचकर,
वह गीत बना रहा है।

१७३

मनुष्य-जन्म दो दिन के लिए है।
इसलिए, इसमें प्रेम के साथ हँस-बोल लेना चाहिए।
हे प्रिय, यह जीवन
फिर नहीं मिलेगा।

काँसा-पीतल फूट जाने पर
बदला जा सकता है।
(लेकिन) हे प्रिय ! यह जीवन
नहीं बदला जा सकता।

कुम्बर चाटु पोअः जन्रे
कुम्बर् तःते क रुअड़्
ने जीबोन् गतिञ्
ने जीबोन् क हो नमोग

१७४

हुड़िङ् हुड़िङे्म् तइ केन
मेरोम् कोगेम् गुपि केन
मइना, मत जनम् सरम् दुपिल् तन्

सेने को होरा रे
पीटि को पलन् रे
गतिञ् रे होर कञि अड़ागञ् मे

अयरोना लेले मे
तयोमोना हेतए मे
मइना, कामोल् बारे जलतिङ् तन्

१७५

ने जोनोम् बरसिङ् नङ्गेन्
हिरिति पिरिति सलाई तेबु दुरङेअ
दुरङ् नेदो ओकोए
पूंजीअकन, गतिञ् ठोरेपे

होड़ो हिसिङ्ग मोच चेण्ट
ने जोनोम् कागे बुगिन
एना मेन्ते दिसुम्
तम्बओअ कन, गतिञ् ठोरेपे

कुम्हार का घड़ा फूट जाने पर
कुम्हार के पास लौट नहीं आता।
(उसी तरह) हे प्रिय ! यह जीवन
लौट नहीं सकता।

१७४

(जब) तुम बहुत छोटी थी,
(तब) बकरी चराती थी।
हे लड़की, (अब तुम) बढ़ गई (और) माँद ढो रही हो !

जाने के रास्ते में,
हाट-बाजार में,
हे प्रिये ! तुम मेरे लिए रास्ता छोड़ो।

तुम आगे देखो।
तुम पीछे देखो।
युवती, तुम्हारे लिए कमल-फूल उड़ रहा है।

१७५

यह जन्म दो दिन के लिए है,
इसलिए-मिल-जुलकर एक साथ गीत गायेंगे।
भला गीत से
कौन धनी हो गया है ?

हस चटु पोअः जन्रे
कुम्बर् तःते कगे सेनोः
एन् लेक ने सोमोय
पओते सेनोः तन, गतिङ ठोरेपे

काँसा-पीतल बदल नमोः
ने सोमोय कगे नमोः
एन मेन्ते सिङ् बोङ्ग
तबु गतिञ् ठोरेपे

१७६

डिण्ड सोमय तईकेन
फुलइ तेगेम् चब जन
पोल तम् दोना मइना
निरल् सड़ि तन्
मइनम् लन्द तने गे

बोः रेदो सुतम् बिण्ड
बिण्ड चेतन् हस चटु
सेन् तदम् ना मइना
जिड़िब् जिड़िब् तन्
मइनम् लन्द तने गे

मयङ् रेदो नीले साड़ी
साड़ी तदम् ओरे तन्गे
लेलोः तनम् ना मइना
कदल् दरु लेक
मइनम् लन्द तनेगे

(जिस तरह) मिट्टी का घड़ा (जब) फूट जाता है,
(तब) कुम्हार के पास फिर लौटकर नहीं आता।
इसी तरह यह समय व्यर्थ जा रहा है।
हे प्रिये ! समझो।

काँसा-पीतल बदला जा सकता है,
लेकिन यह समय फिर नहीं मिलेगा।
इसलिए, हे प्रिय, तुमलोग
ईश्वर का ध्यान करो।

१७६

(तुम्हारे) कुवाँरेपन का समय है।
तुम (अपने रूप के) मद में फूल रही हो।
तुम्हारे पैर की अँगूठी से
मधुर ध्वनि हो रही है।
(अरी) बालिका, (तुम) हँस रही हो।

(तुम्हारे) सिर पर सूत का विण्डा है,
(और) विण्डे के ऊपर मिट्टी का घड़ा।
तुम चली जा रही हो।
(और, तुम्हारे पैर की अँगूठी से)
'जिड़िब-जिड़िब' की ध्वनि निकल रही है।
(अरी) बालिका, तुम मुसकरा रही हो।

(तुम्हारी) कमर में नीले रंग की साड़ी है।
(जो) भूमि तक फहरा रही है।
तुम दिखाई दे रही हो
जैसे कि कोई कदली का वृक्ष हो।
(अरी) बालिका, तुम मुसकरा रही हो।

१७७

ने डिण्ड सोमय रेगे
सुसुनन् मे करमन् मे
मइना
तयोम् तेदो सुसुन करम वाले तोलोगा

ओड़ः जन-रेम् दुअर् जन्रे
चटुक जन्रे लुण्डिः जन्रे
मइना,
निद सिङ्गि लन्वा जगर् कमे नमेअ

हिअतिङ् रेओ मइना
चकातिङ् रेओ मइना
रागे रेओ—गेराँङ् रेओ
मइना,
सिद लेक डिण्ड सोमय कमे नमेअ

१७८

करम रे मेनः कोअ
एना विधि होबओः गेअ
ओ भाई एना ब्रेथा कारे सेनोअ
पापो-पुन्यो अम् सः ते सेनोअ
ब्रेदरे ओलकना बिचारोअ धरमपुरे
एन् दिपलि उड़ुःइने मे ओन्तोर्रे

जे लेक सङ्कटो मेनः
उड़ुः तेगे जी ओटङ् जना
ओ भाई जेतए अमः बङ्गइअ
अखिर एन् दिपली
बिपद रे काल हिजुग
एन् दिपिलि उड़ुःइ मे ओन्तोर् रे

१७७

हे लड़की (तुम) इसी जवानी के समय में
नाच लो—और करम खेल लो।
हे लड़की,
पीछे तो नाच और करम बन्द हो जायगा।

जब तुम्हारा घर-द्वार हो जायगा
और भात-पानी का प्रबन्ध स्वयं करना पड़ेगा,
हे लड़की,
(तब) यह रात-दिन की हँसी-बोली खतम हो जायगी।

तुम चाहे (जितनी भी) सोचो,
तुम चाहे जितनी भी चिन्ता करो,
हे लड़की,
पहले के समान यह कुँवारेपन का समय नहीं पाओगी।

१७८

जो कुछ कर्म में है,
वह तो होगा ही।
हे भाई! वह व्यर्थ नहीं जायगा।
पाप-पुण्य सब तुम्हारी ओर जायगा।
वेद में लिखा हुआ है कि धर्मपुर (स्वर्ग) में विचार होगा।
अपने अन्तर में सोचकर बताओ

जिस तरह का संकट है,
उसे सोचकर जान चली जाती है।
हे भाई! तुम्हारा (इस दुनिया में) कोई नहीं है।
आखिर जिस समय
विपत्ति में काल आयगा,
उस समय के लिए अपने हृदय में सोचो।

विधि जे लेका बिपदो
ओकोरे तइन जी नो
ओ भाई अम् डुबओअ संसार रे
ओहे नोबोधन कजि तन्
जेतएय बङ्गइ बिपद् सोमय रे
एन् सोमय उड़ुःइ मे ओन्तोर रे

१७६

जोनोमकनबु रे
आधा सोगो मञ्चोपुर रे
इपएः तेगे नेअ जनोम् सेनोग
जे दिन ते काल हिजुग

जेतन् बोङ्गः कजः हग
मुसिङ् दिन रे नमोग नगा
अको सोबेन् बुरुबोङ्गः बगेमे
जे दिन ते काल हिजुग

एङ्गः अपु हग होन्
जेतए कको दरन्
जेतए कको सेनोग
जे दिनते काल हिजुग

१८०

मोन रे हिअतिङ् तनएः
इपएः गे जोनोमकन
गोजोः गेअ
जे दिन ते काल हिजुग
गोजोः गे अ
जे दिन ते मेआद पुराओअ
गोजोः गेअएः

हे विधाता ! जिस तरह की विपत्ति है,
(उसमें) जान कहाँ रहेगी ?
हे भाई, तुम संसार में डूब जाओगे।
नवधन कहते हैं कि विपत्ति के समय
कोई नहीं (साथ देता)।
उस समय अपने मन में सोचो।

१७९

हम लोग पैदा हुए हैं
स्वर्ग और पाताल के मध्य में।
हमारा मानव-जीवन व्यर्थ ही चला जायगा,
जिस दिन मृत्यु आयगी।

हे भाई ! मैं किसी देवता की पूजा नहीं करूँगा,
(क्योंकि) ये किसी दिन धोखा देंगे।
(और हमारे) देवता हमारा साथ छोड़ देंगे,
जब मृत्यु आयगी।

माँ, बाप, भाई और बेटा—
कोई अपना नहीं होगा।
कोई कहीं साथ नहीं जा सकता है,
जब मृत्यु आयगी।

१८०

मन में सोच रहा है,
व्यर्थ ही जन्म हुआ
मृत्यु हो जायगी।
जिस दिन काल आयगा—
मृत्यु हो जायगी।
जिस दिन समय पूरा हो जायगा—
मृत्यु हो जायगी।

ने दिसुम संसार रे
जेतए लोः अलोम् प्रीति
गोजोः गेअ
ने मोचरे सेङ्गेल् को ओमेअ
गोजोः गेअ
जे दिन ते मेआद पुराओअ
गोजोः गेअ

नोबोधोन कजि मोनरे
अच्छा लेक उड़ुः लेम
गोजोः गेअ
ने देहो हस रे मिलओअ
गोजोः गेअ
जे दिन ते मेआद पुराओअ
गोजोः गेअ

१८१

डोड़ो बोओ बा लेम
जिंग बाओ बा लेन
जो जुगि चेणे,
ओको बारे जीगे सुकुजन्

अयुब् सिङ्गि बा जन
तिकिन् सिङ्गि गोसो जन
ओ जुगि चेणे
आमो चेणेम् गोसो चब जन्

नारायण दो कजि तन्,
भुमरि बनएइरे मोन्
ओ जुगि चेणे
आमो चेणेम् गोसो चब जन्

इस संसार में
किसी से प्रेम मत करो,
मृत्यु हो जायगी।
लोग इस मुँह में आग देंगे
मृत्यु हो जायगी।
जब समय पूरा हो जायगा—
मृत्यु हो जायगी।

निधन की बात मन में
अच्छी तरह सोच लो,
मृत्यु हो जायगी।
यह देह मिट्टी में मिल जायगी,
मृत्यु हो जायगी।
जिस दिन समय पूरा हो जायगा—
मृत्यु हो जायगी।

१८१

गोंगरा (घिउड़ा) भी फूलने लगा,
झींगी भी फूलने लगी।
हे जोगी पक्षी !
किस फूल में तुम्हारा मन लगता है ?

शाम को फूल खिला
और दोपहर को मुरझा गया।
हे जोगी पक्षी !
तुम भी मुरझा गये।

'नारायण' कहता है,
(और) मनमें झूमर की रचना कर रहा है।
हे जोगी पक्षी !
तुम भी फूल की तरह मुरझा गये।

१८२

अब असुल् नङ्गेन्
बब सुड़ सङ्गेन्
जरगि दः हो
तेबः लेन बुगिन्
मेन्तेः कजि तन
कमि पे सोबेन्

सड़ि तन रिम्बिल्
उयुः तन अरिल्
सोबेन् दिसुम्
होब्र जन बेरेल्
मेन्तेः कजि तन
'राम' हेरेल्

गोजोः तन् को जेटेते
तेतङ् तन् को दःते
सोबेन् को नङ्गेन्
अउतद दः सोङ्गे ते
मेन्तेः कजि तन
कमि पे सोबेन्

१८३

ओकोसःरे होयो लेद
चिमए सःरे रम्पि लेद्
मइना गुड़ु गुड़ु—
रिम्बिल् सड़ि तन्

१८२

हमलोगों को पालने के लिए
धान पनप रहा है ।
हे भाई, बरसात का सुन्दर दिन
आ पहुँचा है ।
इसलिए (कवि) कहता है
(कि) सबलोग काम करें ।

बादल गरज रहा है,
ओला गिर रहा है,
सारी दुनिया
हरी-भरी हो गई ।
ऐसा कह रहा है
प्रिय कवि 'राम' ।

जो धूप में मर रहे थे,
जो पानी के प्यासे थे,
सबके लिए
यह पानी लेकर आया है,
इसलिए (कवि) कहता है
(कि) सबलोग काम करें ।

१८३

किधर से हवा आई ?
किधर से धूल उड़ी ?
हे लड़की ! गुड़-गुड़ की आवाज में
बादल गरज रहा है ।

खुखरा रे होयो लेद्
ढोंयसारे रम्पि लेद्
मइना गुड़् गुड़्
रिम्बिल् सड़ि तन्

चेतनते होयो लेद्
लतरते रम्पि लेद्
मइना गुड़् गुड़्
रिम्बिल् सड़ि तन्

दे गतिञ् चातोमिञ् मे
दे सङ्गञ् चोतोरिञ् मे
गतिञ् रे सुरु सुटुञ्
लुमे चब तन्

१८४

दः दो गम तन
रिम्बिल् सड़ि तन
कोरे चिक जन् अञ् दोञ्
दन्द गिड़ि जन् रे

बेङ्गड़ दरु रेञ्
हक गोएःन
भला ने दिसुम् तल रे कञ् तइन
भला ने दिसुम् तल रे

लोटा दः रेञ्
डबुर गोएःन
भला ने दिसुम् तल रे कञ् तइन
भला ने दिसुम् तल रे

खुखरा (राज) में पानी बरसा
(और) ढोंयसा में आँधी चली।
हे लड़की ! गुड़-गुड़ की आवाज में
बादल गरज रहा है।

ऊपर से हवा आई
और नीचे से धूल चली।
हे बालिका ! गुड़-गुड़ की आवाज में
बादल गरज रहा है।

हे प्रिय ! मुझे छाते से बचाओ।
हे प्रिय ! मुझे छतरी से बचाओ।
मैं भीगते-भीगते
लथपथ हो रहा हूँ।

१८४

पानी बरस रहा है
और बादल गरज रहा है।
कहाँ क्या हो गया ?
इसका मुझे आश्चर्य है।

मैं बैंगन के पेड़ में
फाँसी लगा लूँगा।
मैं इस देश में नहीं रहूँगा,
इस देश में।

मैं लोटा-भर पानी में
डूबकर मर जाऊँगा।
मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगा,
इस दुनिया में।

१८५

करम् चण्डुः मुलुः लेन
करम् अड़ः साल् बाल्
करम् बङ्गः को धेआन् धोरोम तन
हइ-जिलु ककों जोम् तन

करम् दरु को अगु लेद, रच रेको बिद् केद
चुमन्-सिन्दुरि धुना धूप केद
करम् बोङ्गः पुंजी ओम को तन

कटब् कुड़ि को हिजुः लेना
चड़द् चुड़ुद् चुरिन् लेका
करम् दरु को दुब् बियुर् केद
लेलोः तन को चुरिन् लेक

कहनी गुरु कजि तन
सबेपेगो करम् कोतो
करम् बोङ्गः पुजीः ओम पेअ
बूढ़न सिंह दोरे-ए मनतिङ् तन

१८६

गुटुहतु सुसुन् करम्
निद सिङ्गि दुमङ् सड़ि
ओहोरी सोङ्गः भाई
दोलङ् सोङ्गे सुसुन् अगुते

होर रेदो बीर मेनः
बिर्रेदो कुल मेनइः
ओहोरी सोङ्गे भाई
बुचा कपि गोगलङ् मे

१८५

करम का चाँद उग गया।
करम के घर में चहल-पहल है।
(लोग) करम देवता का ध्यान कर रहे हैं
और उन्होंने मांस-मछली खाना छोड़ दिया।

(लोग) करम की डाल ले आये हैं,
और उसे आँगन में गाड़ दिया है।
आरती, सिन्दूर-दान और धूप जलाना सब हो गया।
करम देवता (लोगों को) धन दे रहा है।

उपवास करनेवाली स्त्रियाँ आ गईं।
वे चमक-दमकवाली भूतिनी के समान दिखाई दे रही हैं।
वे करम वृक्ष के चारों ओर बैठ गईं।
वे भूत-भूतिनी के समान दिखाई दे रही हैं।

कहानी कहनेवाला गुरु कहता है—
कि करम की डाल को पकड़ो।
करम देवता तुम्हें धन देगा।
बूढ़न सिंह भी यही मनाता है।

१८६

गुटुहातु में नाच और करम हो रहा है,
रात-दिन माँदर बज रहा है।
हे संगी भाई,
चलो, हमलोग नाचने चलें।

(मगर) रास्ते में जंगल है,
(और) जंगल मे बाघ है।
(इसलिए) हे संगी भाई,
(अपना) भोथा बलुवा पकड़ लो।

तर तीरे खण्डा मेनः
तर तीरे ढाल मेनः
ओहोरी सोङ्गे भाई
हिजुः रेदोञ् हेसे गोएःइअ

१८७

दोल दोल बृन्दा बिर् रास लेल्ते
रास बितर् राधा किष्टो सुसुने तन्
दोल दोल बृन्दा बिर् रास लेल्ते

रास चुड़ा जुले तन
सिङ्गि चण्डुः जुलोः लेक
हीरा-मुनि को दिया जुले तन
सिङ्गि चण्डुः तुरोः तन् लेक

सोलो सय गोपिन को
होरी होरी को दुरङ् तन
बौरा फूल जुल तन तको
निद रटि सिङ्गि जन रुतु सड़ि तन्

आंदू सकोम् तड़क मन्दुलि
रुपा साड़ी को पैला तद
बुढ़न सिहो एः सुसुन् बेड़ तन
रिगि मिगि सङ्गि इपिल् जुलोः तन् लेक

१८८

बिर् बितर् प्रभु गोपाल
बड़ तदएः नीला चमत्कार
झिकि मिकि जुलतन
सोबेन ब्रजधनी
रचि बिनन्दिनी
जेसोको हिअकन हो

एक हाथ में तलवार है,
एक हाथ में ढाल है।
हे भाई! अगर बाघ आयगा,
(तो) उसे काट देंगे।

१८७

चलो, वृन्दावन में रास देखने चलें।
रास के भीतर कृष्ण और राधा नाच रहे हैं।
चलो, वृन्दावन में नाच देखने चलें।

रास में मुकुट चमक रहा है।
सूरज उगने और चाँद उगने के समान
(उसके) हीरा और मणि दीपक के समान जल रहे हैं,
जो उगते हुए सूरज और चाँद के समान दिखाई देते हैं।

सोलह सौ गोपियाँ
'हरि-हरि' नाम लेकर गा रही हैं।
(उनका) फूल (इस तरह) चमक रहा है (मानों)
रात में दिन हो गया हो (और) बाँसरी बज रही है।

पैरी, पहुँची, तरड़ी और हँसुली, सभी चमक रहे हैं,
और सफेद साड़ी का आँचल फहरा रहा है।
बूढ़न सिंह कहता है कि जब नाचते फिरते हैं,
लगता है, मानों बहुत-से तारे एक साथ झिलमिला रहे हैं।

१८८

जंगल के भीतर प्रभु गोपाल ने
चमत्कार-लीला रची है
(वातावरण) झिल-मिल झिल-मिल चमक रहा है।
सारी ब्रजबालाएँ,
राधा की सारी सखियाँ,
सभी आई हैं।

बाँसरी बज रही

एल एल एल एलबु लेल
दोल दोल दोल दोल
सिङ् बोङ्गः बइतद लीला हो
एल एल एल एलबु लेल
दोल दोल दोल दोल

पूरा चण्डुः लेकएः तुरकन
ब्रजगोपिनी को इपिलकन
एन्लेक सोमाकन
निद सिङ्गि अबु
सेने अबु तबु
दो दो दो दोलबु हो
एल एल एल एलबु लेल
दोल दोल दोल दोल
सिङ्बोङ्गः बइतद लीला हो
एल एल एल एलबु लेल
दोल दोल दोल दोल

बिङ् होड़ोको हदुड़कन
बोङ्गः मुनि को दुबकन
लेल्तन को नीला
प्रभु सिरोमनि
रुनुइ ओरोङ् तनिः
तल रेः सुसुन्तन हो
एल एल एल एलबु लेल
दोल दोल दोल दोल
सिङ्बोङ्गः बइतद लीला हो
एल एल एल एलबु लेल
दोल दोल दोल दोल

आओ, आओ, हम देखने चलें।
चलो, चलो, हम देखने निकलें।
भगवान् ने लीला रची है।
आओ, आओ, हम देखने चलें।
चलो, चलो, हम देखने निकलें।

वे पूर्ण चन्द्र की तरह खिले हैं,
और व्रज की गोपियाँ तारिकाएँ बनी हैं।
सर्वत्र ऐसी शोभा छाई हुई है।
हम दिन-रात
चलते ही रहेंगे।
चलो, चलो, हम चल निकलें।
आओ, आओ, हम देखने चलें।
चलो, चलो, हम देखने निकलें।
भगवान् ने लीला रची है।
चलो, चलो, हम देखने चलें।
चलो, चलो, हम देखने निकलें।

शेषनाग उतरे हैं,
देवता मुनि बैठे हैं,
सारे लोग लीला देख रहे हैं।
प्रभुशिरोमणि
बाँसरी बजा रहे हैं।
वे बीच में नाच रहे हैं।
आओ, आओ, हम देखने चलें।
चलो, चलो, हम देखने निकलें।
भगवान् ने लीला रची है।
चलो, चलो, हम देखने चलें।
चलो, चलो, हम देखने निकलें।

सोबेन् होड़ोको उडुङकन
बुदु बाबू तबु तयोमकन
इपएः डोण्डो होड़ो लेक
हिजुअएः चि हो
कएः हिजुअ हो
अबु दोबु सेनेगेअ हो
एल एल एल एलबु लेल
दोल दोल दोल दोल
सिङ्बोङ्ग बइतब लीला हो
एल एल एल एलबु लेल
दोल दोल दोल

१८६

गेल तुरि सए गोपिन को
सिङ्बोङ्ग लोः सुसुन्तनको
दोल दोल दोल दोलबु लेल
एल एल एल एल

रसिकन् को सुसुन्तन
सेबातन् को सेबातन
दोल दोल दोल दोलबु लेल
एल एल एल एल

बिर् बितर् तल मल रे
लीला तनको किष्टो लीला रे
दोल दोल दोल दोलबु लेल
एल एल एल एल

बुदु बाबू रुतुइः ओरोङ्तन
ब्रोजो गोपिन को सुसुन् तन
दोल दोल दोल दोलबु लेल
एल एल एल एल

सारे लोग निकल गये हैं,
(केवल) बुदु बाबू ही पीछे पड़ गये हैं।
जैसे कि वह बिलकुल अनजान है।
वह आयगा भी
या नहीं आयगा।
हम तो चलते ही चलेंगे।
आओ, आओ, हम देखने चलें।
चलो, चलो, हम देखने निकलें।
भगवान् ने लीला रची है।
आओ, आओ, हम देखने चलें
चलो, चलो, हम देखने निकलें।

१८९

सोलह सौ गोपियाँ
भगवान् के साथ नाच रही हैं।
चलो, चलो, हम देखने चलें।
आओ, आओ, (हम देखने चलें)।

रसिक नाच रहे हैं।
भक्त पूजा कर रहे हैं।
चलो, चलो, हम देखने चलें।
आओ, आओ, (हम देखने चलें)।

वन के बीच
वे कृष्णलीला कर रहे हैं।
चलो, चलो, हम देखने चलें
आओ, आओ, (हम देखने चलें)।

बुदु बाबू बाँसरी बजा रहे हैं
और, ब्रज की गोपियाँ नाच रही हैं।
चलो, चलो, हम देखने चलें।
आओ, हम देखने चलें।

१६०

तीरे रानी रुतन् ताल
सुसुन्तन प्रभु नन्दलाल
छिनि छिनि सड़ितन पंएजनी
हए हए राजा रानी
लेल्तनको सोबेन् गोआलिनी

बङ्क बुङ्क सुसुन्तन
जिलि जिलि जिलि जुल्तन
कजितन रानी सुसुन्मे नीलमनि
हए हए राजा रानी
सुसुन्तनको सोबेन् गोआलिनी

चण्डुः मोचरे राजा रानी
चुम तनकिङ् घड़ि घड़ि
ओमइतनकिङ् दही छेनी
हए हए राजा रानी
लेलतन्को सोबेन् गोआलिनी

मोलोङ् रे टीका चन्दन
तुर्तन् सिङ्गिलेक जुलतन्
कजितन तबु बुदु बाबू बानी
हए हए राजा रानी
लेल्तनको सोबेन् गोआलिनी

१६१

छएल, दोलबु लेल् अउअ
बिर् बितर प्रभुइः सुसुन्तन रे
छएल, दोलबु लेल् अउअ

१६०

रानी करतलों पर ताल दे रही हैं,
प्रभु नन्दलाल नाच रहे हैं।
उनकी पैंजनी छिन-छिन आवाज कर रही है,
राजा, रानी
और सारी गोपियाँ देख रहा हैं।

वे झुक-झुककर नाच रहे हैं,
(उनका वस्त्र) झिल-मिल झिल-मिल चमक रहा है।
रानी कह रही हैं, नीलमणि, नाचो।
राजा, रानी
और सारी गोपियाँ देख रही हैं।

राजा, रानी उनके चन्द्रमुख को
बार-बार चूम रहे हैं,
उन्हें दही और मक्खन दे रहे हैं।
राजा, रानी
और सारी गोपियाँ देख रही हैं।

उनके भाल पर चन्दन का टीका है,
(जो) उगते हुए सूर्य की तरह दीख रहा है।
बुदू बाबू उन्हीं का वर्णन कर रहे हैं।
राजा, रानी
(और) सारी गोपियाँ देख रही हैं।

१६१

छैला, चलो, देखने चलें,
वन में प्रभु नाच रहे हैं।
छैला, चलो, देखने चलें।

नकिगेन्पे सुमिदेन् पे
पड़िअते किचिरिन् पे
छएल, दोलबु लेल् अउअ
बिर् बितर प्रभुइः सुसन्तन रे
छएल, दोलबु लेल् अउअ

होटोः रेदो मुग माला
तीरे सकोम् कट रे पोला
छएल, दोलबु लेल् अउअ
बिर् बितर प्रभुइः सुसुन्तन रे
छएल, दोलब लेल् अउअ

रसिकनको एल दोल
बुदु बाबु नेरेगेः लेल
छएल, दोलबु लेल् अउअ
बिर् बितर प्रभुइः सुसुन्तनरे
छएल, दोलबु लेल अउअ

१६२

अमो डिण्ड अञो डिण्ड
कित चिरेम् गलङ्तन
कित गलङ्, हए, हए, कित गलङ्
कित गलङ बगेतम्, सुसुनलङ्

अकड़ रेको सुसुन्तन
जुड़ि दुमङ् सड़ितन
जुड़ि दुमङ्, हए हए, जुड़ि दुमङ्
जुड़ि दुमङ् सड़ितन्, सुसुनलङ्

बिनन्द सिंह कजितन
झुमरि बनइरे मोन

कंघी लगा लो, खोंचा बाँध लो,
पडिया साड़ी पहन लो।
छैला, चलो, देखने चलें।
वन में प्रभु नाच रहे हैं।
छैला, चलो, देखने चलें।

गले में मूँगे की माला पहनो,
हाथ में चूड़ी (और) पैरों में अँगूठी।
छैला, चलो, देखने चलें।
वन में प्रभु नाच रहे हैं।
छैला, चलो, देखने चलें।

रसिके, चलो, चलें,
बुदु बाबू यहीं रहेंगे।
छैला, चलो, देखने चलें।
वन में प्रभु नाच रहे हैं।
छैला, चलो, देखने चलें।

१६२

तुम भी जवान, हम भी जवान,
तुम खजूर की चटाई बुन रही हो।
चटाई, बुनना, चटाई बुनना,
चटाई बुनना छोड़ो, चलो, नाचने चलें।

लोग अखरा में नाच रहे हैं
जोड़ा माँदर बज रहे हैं
जोड़ा माँदर, जोड़ा माँदर
जोड़ा माँदर बज रहे हैं, चलो, नाचने चलें।

बिनन्द सिंह कह रहे हैं,
(और) झूमर की रचना कर रहे हैं।

अकड़ रे, हुए हुए अकड़ रे
जुड़ि दुमङ् सड़ितन्, सुसुनलङ्

१६३

समड़ोम् लेकन् सुगड़तञ्
दुड़ रेः बटि अकन
ससङ् सुनुम् तएः ओतेरे दुलकन
अञ्दोञ् दन्द गिड़ि जन
अञ्दोञ् कुड्ङि गिड़ि जन्
जीरकन चिः गोएः जन
रोग जन चिरेः दुकुजन
देओण रगिः बेन् जू न
अञ्दोञ् दन्द गिड़ि जन्
अञ्दोञ् कुड्ङि गिड़ि जन्
चिक जन चिक जन
बुरुबोङ्ङ होए ओण जन
चउलि जङ् रे अएःगे नमोःतन
अञ्दोञ् दन्द गिड़ि जन्
अञ्दोञ् कुड्ङि गिड़ि जन्
बुदु बाबू कजितन
रनु रिदइःबेन् जू न
हरे किष्ट हरे किष्ट भेन्ते अनुइःबेन
अञ्दोञ् दन्द गिड़ि जन्
अञ्दोञ् कुड्ङि गिड़ि जन्

१६४

[१६३ का ही पाठान्तर]
समड़ोम् लेकन् राधा तञ्
मएल गिड़ि जन्

अखरा में, अखरा में,
जोड़ा माँदर बज रहे हैं, चलो, नाचने चलें।

१६३

[राधिका की एक सखी अन्य सखियों से कह रही है]

सोने के समान सुन्दर (राधा)
धूल में पड़ी हुई हैं।
उसका हल्दी-तेल (सारा शृंगार) जमीन में मिला हुआ है।
मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है,
मैं पागल हुई जा रही हूँ!

जिन्दा है या मर गई?
(उसे) कौन-सा रोग, कौन-सा दुःख हुआ?
जाओ, किसी ओझा को बुलाओ।
मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है,
मैं पागल हुई जा रही हूँ!

क्या हुआ, क्या हुआ?
पहाड़ का देवता बिगड़ गया।
चावल दिखाने से वही प्रकट होता है,
मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है,
मैं पागल हुई जा रही हूँ!

बुदु बाबू कह रहे हैं
(कि) उसके लिए दवा पी लो।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण कहकर इसे पिलाओ।
मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है,
मैं पागल हुई जा रही हूँ!

१६४

सोने के समान राधा
उदास हो गई।

एन्लेक सुगड़तञ्
दुड़रेः बटिअकन्
अञ्दोञ् कुड्कि गिड़ि जन्

सुनुम् ससङ् को तएअः
ओते रे दुलकन्
नलिता चम्पकलता
देओण रः अइबेन् जू न
अञ्दोञ् कुड्कि गिड़ि जन्

जीरकन चिः गोएः जन
दः अनुइबेन् जू न
चि दुकुअन चि
देओग रः अइबेन् जू न
अञ्दोञ् कुड्कि गिड़ि जन्

बुदु बाबू कजितन
सु रिदइबेन् जू न
हरे किष्ट हरे किष्ट मेन्ते
अनुइबेन् जू न
अञ्दोञ् कुड्कि गिड़ि जन्

१६५

उरिः गुपिअते गोपाल
हिजुः लेनएः अकल बकल
अम् नतिन दोअकन
रोक तोअ लोटा रे
चोः लेम
अमः सुगड़ मिस मोच रेञ्
चोः लेम

ऐसी सुन्दरी (राधा)
धूल में पड़ी हुई है।
मैं तो पागल हो गई हूँ !

हल्दी-तेल आदि
सारा धूल में गिरा हुआ है।
हे ललिता, चम्पकलता,
जल्दी, ओझा बुलाओ,
मैं तो पागल हो गई हूँ !

जिन्दा है या मर गई ?
जल्दी पानी पिलाओ।
कौन-सा दुःख हुआ ?
वैद्य को बुलाओ,
मैं तो पागल हो गई हूँ !

बुदु बाबू कह रहे हैं
(कि) उसके लिए दवा पीसो।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण कहकर
उसे दवा पिलाओ।
मैं तो पागल हो गई हूँ !

१६५

गाय चराकर गोपाल कृष्ण
थके-माँदे आये हैं।
तुम्हारे लिए रखा हुआ है
लोटे में ताजा दूध।
आओ चूम लूँ,
तुम्हारे सुग्गे-से सुन्दर मुख को,
आओ चूम लूँ !

सेन् बड़ डगर डुगुर
ओड़ः रटि सोभा जन
जसोदा माएः कजितन
एल बाछा सुग रेञ्
चोः लेम्
अमः सुगड़ मिस मोच रेञ्
चोः लेम्

बुदु बाबूक कजितन
उरिः गुजि अलोम् सेन
कंस राजा मेनमूः तबु
मुदइ मुरकटा रेञ्
चोः लेम्
अमः सुगड़ मिरु मोचरेञ्
चोः लेम्

१६६

बुहचेतन् बा सुब
गङ् गितिल कोदोम् सुब
ओहोर, ओको बिर रे रुनुइः ओरोङ्तन्
रुतु अयोम् सेनोः मोने तन

ओते रेचि सिर्म रे
सिर्म रेगे सड़ितन
ओहोर जड़ि बिगुल लेक सड़ितन
रुतु अयोम् सेनोः मोने तन

सोबेन को लेल्तन
नेइन् होड़ोकञ् ठोओरन
ओहोर, प्रभुगेचि ओकोए ओरोङ्तन
रुतु अयोम् सेनोः मोने तन

तुम्हारा डुगुर-डगुर चलने-फिरने से
घर सुशोभित हो गया।
माँ, यशोदा कह रही हैं,
मेरे सुग्गे के समान बच्चे,
आओ चूम लूँ,
तुम्हारे सुग्गे के समान सुन्दर मुख को
आओ चूम लूँ।

बुदु बाबू कह रहे हैं
(कि) गाय चराने मत जाओ।
राजा कंस हमारे लिए
जानी दुश्मन हैं।
आओ चूम लूँ,
तुम्हारे सुग्गे के समान सुन्दर मुख को
आओ, चूम लूँ।

१६६

पहाड़ पर फूल के नीचे
(अथवा) नदी के किनारे कदम्ब-तले
वन में कौन बाँसरी बजा रहा है ?
बाँसरी सुनकर वहाँ जाने की इच्छा होती है।

(यह बाँसरी) जमीन में अथवा आसमान में है,
बाँसरी ऊपर बज रही है।
वह जोड़ा बिगुल के समान सुनाई देती है,
बाँसरी सुनकर वहाँ जाने की इच्छा होती है।

सभी पशु और जन्तु देख रहे हैं,
ऐसा आदमी मैं नहीं जानता।
स्वयं प्रभु या कौन बाँसरी बजा रहा है ?
बाँसरी सुनकर वहाँ जाने की इच्छा होती है।

१९७

दोलबु भइ सोङ्गि को
बिर तेबु सेनोग
बाबु गुतअ
प्रभु बा तेबु तोपइअ
बाबु गुतुअ

नकिगेन् पे सुपिदेन् पे
पड़िअते किचिरिन् पे
बाबु गुतुअ
प्रभु बा तेबु तोपइअ
बाबु गुतुअ

१९८

बिर बितर् कुद सुड़
सुड़ाकन उगुल् दुगुल्
एन् रे किङ् दुबकन् सिदाम-सुदाम
ओड़ो बोलोराम, बोलोराम
रुतुकिङ् ओरोङ् घनश्याम

नेते नेते रुतु को ओरोङ्
नेते नेते बाको गुतु
जेतए जेतए डण्डि दे लुतुर दे रे सङ्गेन्
ओड़ोः बोलोराम, बोलोराम
रुतुकिङ् ओरोङ् घनश्याम

किष्ट दोएः नीलाकन
उरिः गइ कोएः गुपितन
अतिङ् तन्को अतिङ्तन् अतोम-अतोम

१६७

हे सखियो, चलो,
हम जंगल को चलें।
हम फूल गूँथें,
हम प्रभु को फूलों से ढक देंगे,
हम फूल गूँथें।

कंघी लगा लो, बाल सँवार लो,
पड़िया-वस्त्र पहन लो।
हम फूल गूँथें,
हम प्रभु को फूलों से ढक देंगे,
हम फूल गूँथें।

१६८

जंगल के बीच जाइन का वृक्ष है,
जिसमें कोमल-कोमल कोपलें लगी हैं।
उसपर सिदाम और सुदाम बैठे हुए हैं,
और 'बलराम बलराम' की आवाज में
कृष्ण बाँसरी बजा रहे हैं।

एक ओर बाँसरी बजा रहे हैं,
दूसरी ओर (युवतियाँ) फूल गूँथ रही हैं।
कोई-कोई कान के उपर कोपलें सजा रही हैं,
और 'बलराम बलराम' की आवाज में
कृष्ण बाँसरी बजा रहे हैं।

श्रीकृष्ण नीला वस्त्र पहने हुए हैं
और गाय-बैल चरा रहे हैं।

ओड़ोः बोलोराम, बोलोराम
रुतुकिङ् ओरोङ् घनश्याम

१६६

राधा रानी कजितन
प्रभु कजितेबु टिङ्जिन
ओ धोन गतिञ्, ओ धोन सङ्गञ्
निमिनङ् साज सोबेन् अकारन

तल निद चबजन
सिम् मरः को बकणतन
ओ धोन गतिञ्, ओ धोन सङ्गञ्
बा उरु को होनोर बड़ तन

बिर बा को उरुङ्तन
सिङ्गि उरोः स अङ्गिजन
ओ धोन गतिञ्, ओ धोन सङ्गञ्
बावन् बा सोबेन् गोसोतन्

चि मेन्ते चिकजन
हिजुग चि कएः हिजुग
ओ धोन गतिञ्, ओ धोन सङ्गञ्
बुडु बाबू डुरङ् बइतन्

२००

ओको कोरे छएल मएल
ओको कोरे होएः दुबकन
नलिता दः अगुलङ् सेन
मइ, राधा राधा नतुम्
रुनुइः ओरोङ्तन
मइ, राधा राधा नतुम्

चरनेवाली गायें किनारे-किनारे चर रही हैं,
और 'बलराम-बलराम' की आवाज में
कृष्ण बाँसरी बजा रहे हैं।

१६६

राधा रानी कह रही है
कि प्रभु की बातों से हम ठगा गईं।
हे सखियो, हे सहेलियो,
हमारा इतना साज-शृंगार अकारण चला गया!

आधी रात बीत गई,
मुरगे और मोर बोलने लगे।
हे सखियो, हे सहेलियो,
भँवरा भी फूलों पर मँडराने लगे।

वनफूल मुरझाने लगे,
पूर्वी आसमान में लाली छा गई।
हे सखियो, हे सहेलियो,
खिले हुए फूल भी मुरझाने लगे।

क्या हो गया, हो गया?
वह आयगा कि नहीं आयगा?
हे सखियो, हे सहेलियो,
बुदू बाबू गीत बना रहे हैं।

२००

वह छैला कहाँ है?
वह कहाँ बैठा हुआ है?
हे ललिता, चलो, हम पानी लाने चलें।
'राधा-राधा' के स्वर में
वह बाँसरी बजा रहा है,
'राधा-राधा' के स्वर में।

बगे तमे उतु मण्डि
सेनोगलङ् ने घड़ि
कुड़म् बितर जीरे रुडुङ्
मइ, राधा राधा नुतुम्
रुतुइः ओंरोंङ्तन
मइ, राधा राधा नुतुम्

जीरे एतु गुतु जन
मुट दङ्गर लेक बलेतन
निद सिङ्गि ईम्रे गेदेतन
मइ, राधा राधा नुतुम्
रुतुइः ओंरोंङ्तन
मइ, राधा राधा नुतुम्

अलए बलए जी दो न
इलि बुल नञ् बुलकन
बुदु बाबू इनएः दुरङ्तन
मइ, राधा राधा नुतुम्
सनुइ ओरोङ् तन
मइ, राधा राधा नुतुम्

२०१

सेन् जनञ् जबुनाते
हिजुः तन्रे आ नलिते
रसिक नागोर होर रे
बा किञएः हो प्रभु गतिञ्
बा किञएः बाकन् माला ते

हेड़ेम् हेड़ेम् जगर ते
हिड़ि किञ्एः कजिते
रसिक नागोर होर रे

खाना पकाने का काम छोड़ दो,
हम दोनों इसी समय चलेंगी।
छाती के भीतर हृदय में धुकधुकी उठ रही है
'राधा-राधा' के स्वर में
वह बाँसरी बजा रहा है,
'राधा-राधा' के स्वर में।

हृदय बाँसरी की आवाज से छिद गया,
(हृदय) भीषण आग की तरह जल रहा है।
रात-दिन हृदय कटा जा रहा है।
'राधा-राधा' के स्वर में
वह बाँसरी बजा रहा है,
'राधा-राधा' के स्वर में।

जी व्याकुलता से भर गया है
मैं हँड़िया लिये हुए के समान पागल हो रही हूँ!
बुदु बाबू यही गा रहे हैं कि
'राधा-राधा' के स्वर में
वह बाँसरी बजा रहा है,
'राधा-राधा' के स्वर में।

२०१

मैं यमुना गई थी
वापस आते समय, हे ललिते,
रास्ते में कृष्ण मिले।
सखी, प्रभु ने मुझे फूल पहनाये।
उन्होंने मुझे खिले फूलों की माला पहना दी।

मीठी बातों से,
उन्होंने बातों से ही मुझे ठग लिया।
रास्ते में कृष्ण मिले।

दुब्किजए: हो प्रभु गतिञ्
दुबकिजए: लेङ्गेली पन्नि रे

लेल्कि:जए: सए सए ते
लन्द केद्ए मणिते
रसिक नागोर होर रे
चो: कि:जए: हो प्रभु गतिञ्
चो: कि:जए: मोयते नोअ रे

२०२

सेन् जनञ् वृन्दाबिरते
उरि: गइ को गुपि मेन्ते
कोदोम दरु बङ्क दड़ रे
रुतुञ् ओरोङ् ओरोङ् दुबकेअते
कोदोम दरु बङ्क दड़ रे

सुगड़ सुगड़ हेरेल् कुड़ि को
डड़ि द:ते हिजु:अदो
अञ: रुतु दुरङ् अयुम्ते
एन घड़ि घड़ि हिजु: अको डड़िते
अञ: रुतु दुरङ् अयुम्ते

पड़िअ पयोन् किचिरि
जेतए अङ्गि ससङ् साड़ी
एन् लेक को सिङ्गार कनते
बा तेगे तोपाकन तको सुपिद् दो
एन् लेक द्वो सिङ्गार कनते

पिरिति कजि कुलि मेन्ते
दो दो सुफल दोय एन्ते

सखी, प्रभु ने मुझे पास बैठाया,
उन्होंने मुझे अपनी बाईं ओर बैठाया।

उन्होंने मुझे तिरछी आँखों से देखा
और धीरे से मुस्करा दिया।
रास्ते में कृष्ण मिले,
सखी, प्रभु ने मुझे चुम्बन दिया।
उन्होंने अपने मुख से मेरे गाल में चुम्बन दिया।

२०२

मैं वृन्दावन जाता हूँ
गाय-बैल चराने के लिए।
कदम्ब-वृक्ष की टेढ़ी डाल पर
बैठकर मैं बाँसरी बजाया करता हूँ,
कदम्ब-वृक्ष की टेढ़ी डाल पर।

वहाँ सुन्दर-सुन्दर सलोनी स्त्रियाँ
डाड़ी में पानी लेने आती हैं
(और) मेरी बाँसरी का स्वर सुनती हैं।
वे बार-बार डाड़ी को आती हैं
मेरी बाँसरी सुनने के लिए।

पड़िया और पायोन वस्त्र पहने,
कोई-कोई लाल-पीली साड़ी पहने,
इस तरह सज-धजकर आती हैं।
इनके खोंपे फूलों से ही लदे होते हैं,
ये इस तरह सज-धजकर आती हैं।

प्रीत की बात पूछने के लिए,
सुफल, चलो हम वहों चलें।

बुदु बाबू निअगे जगरे
बड़ए-बुड़ुइ नुपलि कुड़ि हतु रे
बुदु बाबू निअगे जगरे

२०३

ने दिसुम् तल रे
जोनोमकनबु भइ
ए भइ सोङ्गे को
एल भइ सोङ्गे को
अपे अलें प्रेमबु तोलेअ

अबु गेअ हग जति
अबु गेअ कुपुल कुटुम्
ए भइ सोङ्गे को
एल भइ सोङ्गे को
दुकु सुकु मरबु उपदुब

बुरु पिड़ि पोटि पिड़ि
जगरबु जोअरबु
ए भइ सोङ्गे को
एल भइ सोङ्गे को
होटोः रे बिर बा माला बु वदलए

२०४

हेन्दे हेन्देः दुतिअन
उरिः गइ कोएः गुपितन
बिर बितर जोलरेः दुबकन
रुनु तेदो अम्गेः नतुम्तन

बुदु बाबू यही कहते हैं,
गाँव में एक सुन्दर नटखट युवती है,
बुदु बाबू यही कहते हैं।

२०३

इस देश के अन्दर
हम पैदा हुए।
हे मित्र-बन्धुओ,
हे दोस्त-भाइयो,
आओ, हम-तुम प्रीत जोड़ें।

हम भी जात-भाई हैं,
हम ही कुटुम्ब-बन्धु हैं।
हे मित्र-बन्धुओ,
हे दोस्त-भाइयो,
आओ, हम आपस का हाल पूछें।

मेलों और बाजारों में
हम बात करें, मिलें।
हे मित्र-बन्धुओ,
हे दोस्त-भाइयो,
आओ, हम फूल-माला बदलें।

२०४

वह नीली-नीली धोती पहने हुए है,
वह गाय-बैल चरा रहा है।
वह जंगल के बीच तराई में बैठा हुआ है,
(और) बाँसरी से तुम्हारा ही नाम ले रहा है।

इचः बा तेः बा कन
समड़ोम्तेः मालाकन
सेर्मेणेद् होड़ोमो जुले तन
रुतु तेदो अम्गेः नुतुम्तन

परकातेञ् लेल्केन
एनते राधाञ् हिःअकन
पूरा चण्डुः बिररेः तुरकन
रुतु तेदो अम्गेः नुतुमतन

बुडु बाबू कजितन
नेकन् होड़ो कञ् लेलन
सिङ् बोङ्गचि बोङ्गएः दुबकन
रुतु तेदो अम्गेः नुतुम्तन

२०५

गड़ जपः रे प्रभु दुबकन
दो बोदे दो
अएः लोःते कपजि सनतन
दो बोदे दो

कोदोम सुब रे रुतुइः ओरोङ्तन
दो बोदे दो
रुतु तेदो अम्गेः नुतुम्तन
दो बोदे दो

जी तञ् दो बलए गिड़ितन
दो बोदे दो
अएः लोः जी दो जेरेदकन
दो बोदे दो

वह इचा फूल पहने हुए है,
और सोने की माला धारण किये हुए है।
उसका शरीर पिघले हुए लोहे के समान चमक रहा है,
और बाँसरी से तुम्हारा ही नाम ले रहा है।

मैंने उसे दूर से ही देख लिया है
राधा, मैं इसीलिए तुम्हारे पास आई हूँ।
वन में पूर्णचन्द्र खिला हुआ है,
बाँसरी से वह तुम्हारा ही नाम ले रहा है।

बुदु बाबू कहते है कि
ऐसा आदमी मैंने कभी नहीं देखा है।
स्वयं भगवान् या कोई देवता बैठा हुआ है,
वह बाँसुरी से तुम्हारा ही नाम ले रहा है।

२०५

नदी के किनारे प्रभु (कृष्ण) बैठे हैं,
चलो, जल्दी चलें।
उनसे बात करने की इच्छा होती है,
चलो, जल्दी चलें।

वे कदम्ब-वृक्ष के नीचे बाँसरी बजा रहे हैं,
चलो, जल्दी चलें।
बाँसरी से वे मेरा ही नाम ले रहे हैं,
चलो, जल्दी चलें।

मेरा मन व्याकुल हो रहा है;
चलो, जल्दी चलें।
उनके साथ मेरा मन लग गया है,
चलो, जल्दी चलें।

बुदु बाबू देअरेः उदुरतन
दो बोदे दो
दो न दो न दो नदोन
दो बोदे दो

२०६

गड़ गितिल् कोदोम् सुब
उरिः गड्कोएः गुपितन
ओहोरे, जुहि चमेलीः गुतुतन
ओकोरे तञ् प्रभुइः दुबकन

हेन्दे हेन्देः दुतिअन
समड़ोम् तेः मालाकन
ओहोरे, जुहि चमेलीः गुनुतन
ओकोरे तञ् प्रभुइः दुबकन

बुदु बाबू कजितन
एन कजि सुकुजन
ओहोरे, जुहि चमेलीः गुतुतन
ओकोरे तञ् प्रभुइः दुबकन

२०७

कलिजुगेर जोनोम् लेन
जेतन ग्यान बनोः तञः
अपे सोबेन् कुड़िए मरङ् प्रेमाकुल कटरे
जोअर तन
अञ् दो सोबेन् होड़ो सभा रे
जोअर तन

बुदु बाबू धकेलते हुए कहते हैं,
चलो, जल्दी चलें।
सखी, चलो, चलो,
चलो, जल्दी चलें।

२०६

नदी की रेत में कदम्ब के नीचे
वे गाय-बैल चरा रहे हैं।
(और) जूही-चमेली गथ रहे हैं,
हमारे प्रभु कहाँ बैठे हुए हैं ?

नीली-नीली धोती पहने हुए हैं,
सोने की माला से सुसज्जित हैं।
और, जूही-चमेली गूँथ रहे हैं,
हमारे प्रभु कहाँ बैठे हुए हैं ?

बुदु बाबू कहते हैं,
(कि) इसी बात से खुशी होती है।
आह, वे जूही-चमेली गूँथ रहे हैं,
हमारे प्रभु कहाँ बैठे हुए हैं ?

२०७

मैंने कलियुग में जन्म लिया है,
मुझको कुछ भी ज्ञान नहीं है।
आप छोटे-बड़े सबको प्रेमपूर्वक
प्रणाम कर रहा हूँ।
मैं सभा के सारे लोगों को
नमस्कार कर रहा हूँ।

संसार रे सोबेन् मरङ्
अञ् इसु दुरिङ् दरङ्
खेने मोति कसु नेअ अपना मोने बिचारे
जोअर् तन
अञ् दो सोबेन् होड़ो सभा रे
जोअर् तन

नेअ कजि ओण जन
यदि जेतन दोसी मेनः
बइतये सोबेन् कोते कजिकेदञ् सिदरे
जोअर् तन
अञ् दो सोबेन् होड़ो सभा रे
जोअर् तन

गिउः सोरोम् बनोः तञः
जाति कुल सेनोः जन
किष्टो प्रेम ओड़ो कञ् बगे अरे
जोअर् तन
अञ् दो सोबेन् होड़ो सभा रे
जोअर् तन

२०८

सोङ्गोति जनते
तयोम्ते पिरिति
तयोम्ते कएः लेल् इरिन् जन
अएअः नङ्गेन् जी गे लोतन

डेट रेः मिसिकेन
तीरे सकोम चूड़ी
इनिः लेल्ते जी तञ् भुलओ लेन
अएअः नङ्गेन् जी गे लोतन ।

संसार में सब लोग बड़े हैं,
लेकिन मैं बहुत छोटा हूँ।
मैं बार-बार इस बात को सोचा करता हूँ,
मैं नमस्कार करता हूँ।
सभा के सारे लोगों को
मैं नमस्कार करता हूँ।

यदि यह बात बिगड़ गई,
यदि कोई दोष निकला,
तो आप उसे बना दें, यही मेरा अर्ज है।
मैं प्रणाम करता हूँ,
सभा के सभी लोगों को
मैं प्रणाम करता हूँ।

मुझमें लाज-वाज नहीं है,
मेरी जाति एवं कुल नष्ट हो गये।
मैं कृष्ण का प्रेम नहीं छोड़ सकता,
प्रणाम करता हूँ।
मैं सभा के सभी लोगों को
नमस्कार करता हूँ।

२०८

दोस्ती होने के बाद
प्रेम भी हुआ था।
उसके बाद (जाने क्यों) हमसे छिप गई,
उसीके लिए जी जल रहा है।

मिस्सी से उसने दाँत रँगे थे,
हाथमें सकाम और चूड़ी पहने हुए था।
उसी में मेरा मन रमा था,
उसीके लिए जी जल रहा है।

होटोः रे मुङ्ग माला
रङ्ग नीले साड़ी
इनिः लेल्ते कुड़म् रेअड़ लेन
अएअः नङ्गेन् जी गे लोतन

होड़ोमोञ् जिम लिः अ
कजीञ् चब लिः अ
तयोम्ते कएः जपः अन् जन
अएअः नङ्गेन जी गे लोतन

२०६

दः अगुञ् सेन्केन
जमुना गड़ते
ओरे भइ
कोदोम् सुब ओकोए दुबकन रे

चिल्क गड़ दः हेन्दे मेनः
एन्क होड़ोमो हेन्दे मेनः
ओरे भइ
कोदोम दरु बङ्कए लेलोः तन रे

बुदु बाबु रजितन
राधा किस्टोएः दुबकन
ओरे भइ
राधा राधा रुतुइः ओरोङ्तन रे

२१०

गड़को जोबेल
गड़ गितिल् कोदोम् सुब
कोदोम् सुब ओकोए दुबकन
जुहि चमेलीः गुतुतन

गले में मूँगे की माला थी
लाल और नीली साड़ी (वह पहने हुए थी)।
उसे देख मेरा मन बहला था,
उसीके लिए जी जल रहा है।

मैंने उसे अपना शरीर दे दिया था,
बातें सब शेष थीं।
(किन्तु) बाद में वह फिर मिली नहीं,
उसीके लिए जी जल रहा है।

२०६

मैं पानी भरने गई थी,
पानी भरने के लिए।
हे सखी,
कदम्ब के नीचे कौन बैठा हुआ है ?

जिस तरह नदी का पानी काला है
उसी तरह उसका शरीर भी काला है।
हे सखी,
वह कदम्ब की टेढ़ी डाल की तरह दिखाई दे रहा है।

बुदु बाबू कहते हैं,
(कि) राधा-कृष्ण बैठे हुए हैं।
हे सखी,
वे 'राधे, राधे' के स्वर में बाँसरी बजा रहे हैं।

२१०

नदी के दलदल के किनारे,
बालू में, कदम्ब के नीचे,
कदम्ब के नीचे कौन बैठा हुआ है,
(जो) जूही-चमेली गूँथ रहा है।

बुदु बाबु इः कजितन
होपारे जपः अलोम् सेन
सेनोः जन् रे हिजुः क मोनेअ
निद सिङ्गि बा गेः गुतुतन

२११

अ न सुङ्गि को
दोलबु सम्पोड़ेन
बा बु गलङ
गतिञ् तिसिङेः हिजुःअ
बा बु गलङ

अ न सुङ्गि को
दोलबु रेअड़ेन
बा बु गलङ
सङ्गञ् बाते बु तोपइअ
बा बु गलङ

अ न सुङ्गिको
सोबेन्तेबु तलइअ
बा बु गलङ
सङ्गञ् चँवरतेबु टपइअ
बा बु गलङ

अ न सुङ्गि को
ओड़ोः कबु बगीअ
बा बु गलङ
बुदु बाबु लोःकिङ् हिजुःअ
बा बु गलङ

बुदु बाबू कहते हैं,
(कि) उसके निकट मत जाओ।
जाने से फिर लौटने की इच्छा नहीं होती है।
वह रात-दिन फूल ही गूँथता रहता है।

२११

हे सखियो,
चलो, तैयार हो,
हम फूल गूँथें।
आज मेरे प्रिय आनेवाले हैं,
हम फूल गूँथें।

हे सखियो,
चलो, स्नान करें,
हम फूल गूँथे।
और, हमारे प्रिय को हम फूलों से ही तोप दें,
हम फूल गूँथें।

हे सखियो,
उन्हें हम चारों ओर से घेरेंगे।
हम फूल गूँथें।
अपने प्रिय को हम चँवर झलेंगे,
हम फूल गूँथें।

हे सखियो,
हम उन्हें और नहीं छोड़ेंगे,
हम फूल गूँथें।
वे बुदु बाबू के साथ आयेंगे,
हम फूल गूँथें।

२१२

सोबेन् गोपिन् को तइकेन
बड़ए-बुड़ुइ र:किञ
नेरेंगे सुफल रुतु अदकन
जोतो गोपिन कोलोःञ् दुबकेन
भइ, नेरेंगे सुफल रुतु अदकन

सोबेन् गोपिन को केसेद्केन
तल रे होञ् सुसुन्केन
नेरेंगे सुफल रुतु अदकन
रसिकते क होञ् ठोरन
भइ, नेरेंगे सुफल रुतु अदकन

कुड़िको तलरे अदकन
नमोग चि क नमोग
नेरेंगे सुफल रुतु अदकन
हिअतिङ्ते क होञ् जोम्तन,
भइ, नेरेंगे सुफल रुतु अदकन

बुदु बाबु अजितन
बड़ए बुड़ इ इतुअन
नेरेंगे सुफल रुतु अदकन
निद सिङ्गि जोरे रुडुङ्तन
भइ, नेरेंगे सुफल रुतु अदकन

२१३

दः अगुञ् सेन्केन
जबुना गड़ ते
दुति भइ
किब सोमा दुबकन होर रे

२१२

सभी गोपियाँ बैठी हुई थीं,
(यहाँ) नटखट लड़की ने हमको बुला लिया।
हे सुफल ! यहीं पर (मेरी) बाँसरी खो गई।
सभी गोपियों के साथ मैं बैठा था,
हे भाई सुफल, यहीं मेरी बाँसरी खो गई।

सभी गोपियाँ घेरे हुई थीं,
और मैं बीच में नृत्य कर रहा था।
हे सुफल ! मेरी बाँसरी यहीं पर खो गई।
खुशी के मारे (इतना विह्वल था) कि मैं नहीं जान सका।
हे भाई सुफल ! मेरी बाँसरी यहाँ खो गई।

बुदू बाबू कहते हैं कि वह
नटखट लड़की जानती है।
बाँसरी यहीं पर खो गई,
(जिससे) रात-दिन हृदय में सोच लगा रहता है।
हे भाई सुफल ! यहीं बाँसरी खो गई है।

स्त्रियों के बीच खो गई।
(पता नहीं, मिलेगी या नहीं ?)
हे सुफल ! यहीं बाँसरी खो गई।
चिन्ता के मारे मुझे खाना (पीना) अच्छा नहीं लगता।
हे भाई ! यहाँ बाँसरी खो गई।

२१३

मैं पानी लाने गई थी
जमुना नदी।
हे सखी,
वह रास्ते में बैठा कैसा शोभ रहा है ?

सए सए तेः लेल् किःञ
मणि तेगेः लन्द केद
दुति भइ,
बा तेगेः तेर किञ कुड़म् रे

बुदु बाबुइ कजितन
एन कजि सुकुजन
दुति भइ,
एन कजि तइ जन जिबेन् रे

२१४

मोको तिअ ब्रोजो बाला
सुगा सुन्दोर छाला
इदि केदएः सोबेन नीला-खेला
अमो दुति सेनोगबु दोल

अञ् दोरेञ् चिक जन
निद सिङ्गि नुबः जन
तिः इदोञ् पेरे दुति दोल
आगे दुति, सेनोगबु दोल

तिसिङ् जोदि कबु सेन
तोबे अञ् दोञ् गोजोअन
जी बितर जुल तन जाला
अगो दुति सेनोगबु दोल

अञ् दोरेञ् ठोओरन
मथुरातेः सेन कन
बुदु बाबू एन्रे लेल् लिःअ
अगो दुति सेनोगबु दोल

उसने तिरछी नजरों से देखा
(और) धीरे से मुसकरा दिया।
हे सखी,
उसने मेरी छाती में फूल मारा।

बुदु बाबू कहते हैं,
(कि) उस बात से बड़ा आनन्द मिला।
हे सखी,
वह बात सदा के लिए रह गई।

२१४

हे व्रजबालाओ, सखियो,
सुन्दर साँवले कृष्ण कहाँ चले गये ?
वे हमारी सारी आनन्द-क्रीडा लेते गये,
चलो, अब हमलोग (उनके पास) चलें।

हे सखी ! मुझे तो हाथ पकड़कर ले चलो,
(मेरे लिए) रात-दिन अँधेरा जान पड़ता है।
हे सखी ! मुझे हाथ पकड़कर ले चलो,
चलो, अब हमलोग (उनके पास) चलें !

यदि हम आज नहीं जायेंगे,
तो मैं मर ही जाऊँगी।
मेरे मन में ज्वाला जल रही है,
हे सखी, हमलोग उनके पास चलें।

मुझे तो मालूम है
कि वे मथुरा ही गये हैं।
बुदु बाबू ने उन्हें वहीं देखा था,
हे सखी, चलो हम उनके पास चलें।

२१५

ओको सःअतेः होयो लेद
चिकन् कजि हिजुः लेन
कुड़म् बितर जी गे लिपिर केन
अञः जी दो कोरे तड़न् तन

हाय बिधिम् चिक किःञ
ने दिसुम् रिड़िङ् केद
सोबेन् सुकु प्रभुइः इदि केद
अञः जी दो कोरे तड़न् तन

अगो विधिम् चिक किःञ
ने सोमए रेम् दुकु किःञ
गड़ गितिल इकिर कोरे मेनः
डोबे रेओञ् डोबे गाएः न

२१६

ललिता वृन्दा दुति
सेनोःबेन् मथुराते
चिक मेन्ते
प्रभु कएः हिजुः नेते
चिक मेन्ते

निद सिञ्जिञ् उड़ुः तन
बुलकनएः चि कमिते
इन मेन्ते
प्रभु कएः हिजुःनेते
इन मेन्ते

२१५

क्रिधर से हवा आई,
और कौन-सी बात आई।
(कि) छाती के भीतर मेरा हृदय काँप उठा,
मेरा हृदय कहाँ टिका हुआ है ?

हाय विधाता ! तुमने मुझे क्या किया ?
तुम इस देश को भूल गये ।
प्रभु सदा सुख लेते गये,
(उनके विना) मेरा प्राण कहाँ टिका हुआ है ?

हाय विधाता ! तुमने मुझे क्या कर दिया,
इस समय तुमने मुझे दुःख दिया ।
नदी की गहराई कहाँ है ?
जहाँ मैं डूबकर मर जाऊँ ?

२१६

हे ललिता, हे वृन्दा,
तुम दोनों मथुरा जाओ।
(न जाने) किस कारण
प्रभु यहाँ नहीं आ रहे हैं,
(न जाने) किस कारण ।

मैं दिन-रात चिन्तित हूँ,
क्या वे काम से मतवाले हो गये हैं।
(शायद) इसीलिए
प्रभु यहाँ नहीं आ रहे हैं,
(शायद) इसीलिए।

एन् हतुरेन हपनुम्को
बुल्तःइअको रनुते
इन मेन्ते
प्रभु कएः हिजुः नेते
इन मेन्ते

जू न बोदे सेनोःबेन्
बुदु बाबू लोः मोद्ते
चिक मेन्ते
प्रभु कएः हिजुः नेते

२१७

तिसिङ् निदञ् कुमुलेन
प्रभु गतिञ् हिःअकन
नलिता रे नलिता रे
सामो नीला नीलाकेन सजनी रे

ससङ् दुतिः दुतितद
समड़ोम्तेः मालाकन
नलिता रे नलिता रे
सामो नीला नीलाकेन सजनो रे

अइ बङ्कएः तिङ्गुअकन
तीरे रुतुइः सबन
नलिता रे नलिता रे
राधा, राधा रुतुइः ओरोङ्तन रे

२१८

ओकोरेः उकुकिअ प्रभु सिरोमनि
ओकोए नतिन ब्रजगोपिन अबुतइन

इस गाँव की युवतियों ने
उन्हें दवा पिलाकर मतवाला कर दिया है।
(शायद) इसीलिए
प्रभु यहाँ नहीं आ रहे हैं,
(शायद) इसीलिए।

तुम दोनों शीघ्र ही जाओ
(और) बुदु बाबू को साथ कर लो।
(न जाने) किस कारण
प्रभु यहाँ नहीं आ रहे हैं?

२१७

(राधा ललिता से कह रही है)
हे सजनी, आज रात में मैंने सपना देखा
कि प्यारे कृष्ण आये हुए हैं।
(और) हे ललिता,
वे लीला रचाये हुए हैं।

पीले रंग का वस्त्र पहने हुए हैं।
सोने की माला धारण किये हुए हैं।
हे ललिता!
वे लीला रचाये हुए हैं।

वे बाँकी अदा में खड़े हैं।
हाथ में बाँसरी लिये हुए हैं।
हे ललिता,
'राधा-राधा' की ध्वनि में बाँसरी बजा रहे है।

२१८

प्रभु शिरोमणि को किसने कहाँ छिपा लिया?
हम व्रजगोपियाँ, किसके लिए जीवित रहें?

सोबेन दोलबु न
दुति गड़रेबु अतु गोजेन
सोबेन् दोलबु न

ने दिसुम् तल रे ब्रेथाबुजीदकन
नलिता चम्पकलता अगो वृन्दा
सोबेन् दोलबु न
दुति दरुरेबु हक गोजेन
सोबेन् दोलबु न

जातिपाति बुकुमुकु सोबेन् उकुजन
कुलरे कलङ्कजन इन तइनजन
सोबेन दोलबु न
दुति जोलरेबु सञ्जुगोजेन
सोबेन् दोलबु न

बुदु बाबू कजितन सिङ्गिनुबः जन
दोल दोल दोल सोबेन्कोबु सेन
सोबेन् दोलबु न
दुति कटसुब रे जीबु हदेन
सोबेन् दोलबु न

२१६

कुब्जी रानी उकुकिअ
ने जोनोम् रेः दुकुकिञ
एन नागर हेड़ेम सागर
जीरेः रुड़ुङ् तन
हिअतिङ्ते जी जलतिङ् तन

सखियो, चलो, सब चलें।
हम नदी में डूब मरें,
चलो, सब चलें।

हम इस दुनिया में व्यर्थ जीवित हैं,
हे ललिता, चम्पकलता, और वृन्दा
सखियो, चलो, सब चलें।
हम गले में फाँसी लगाकर मर जायें,
चलो, सब चलें।

जाति-पाँति, दुःख-सुख सब मिट गया,
कुल में कलंक—केवल यही रह गया।
सखियो, चलो, सब चलें,
हम किसी कदिरा में गिरकर मर जायें,
चलो, सब चलें।

बुदु बाबू कहते हैं कि दिन रात बन गया,
चलो, चलो, हम सभी चलें।
सखियो, हम सब चलें,
हम कृष्ण के चरणों में प्राण त्याग दें,
हम सभी चलें।

२१९

कृष्ण को कुब्जा रानी ने छिपा लिया,
(हमको) इस जन्म में दुःख दे दिया।
वही मधुरता के सागर (की याद)
हृदय को कूट रहे हैं।
दिल दुःख से उड़ता रहता है।

हाय विधिम् चिक किञ
ने सोमए रेम् नेक किञ
निद सिङ्गि अगो दुति
नबः लेलोः तन
हियतिङ् ते जी जलतिङ् तन

नेक मेन्ते कञ् ठोओरन
अञो होनङ् अएःवोः सेन
सोबेन सुकु बुरुलेक
हन् रे दुलकन
हियतिङते जी जलतिङ् तन

बुदु बाबू कजितन
इन दुकु तइजन
ने धड़ि कुबुजि कुड़ि
अएःगे सुगड़ जन
हिअतिङते जी जलतिङ् तन

२२०

हनु जइड़ काड़े कुड़ि
इअम् तनकिङ् राजा रानी हो
तड़ए कट बोङ्ग मेन्ते
सोबेन् को बलए तन
अहो गोम्केम् सेन चि कम् सेन हो

निदसिङ्गि राधामनि
अम्नतिन रुयुदतनिः हो
अएअः कजि बिन्ती मेन्ते
अलिङ् हो हिअकन
अहो गोम्केम् सेन चि कम् सेन हो

विधाता ! तुमने क्या किया
कि इस समय दुःख दे दिया।
हे सखी ! रात-दिन
अँधेरा दिखाई देता है,
हृदय चिन्ता से उड़ता फिरता है।

ऐसा है (होनेवाला है), मैं नहीं जानती थी।
मुझे उन्हीं के साथ जाने की इच्छा होती है।
सारा सुख पर्वत के समान
वहीं पर जमा है।
(उन्हीं के निकट सारा सुख है)
(उनके विना) मन चिन्ता से उड़ रहा है।

बुदु बाबू कहते हैं (सदा के लिए)
कि यह बात रह गई।
इस समय तो कुब्जा रानी ही
(सबसे अधिक) सुन्दर है।
(उनके विना) हृदय चिन्ता से जल रहा है।

२२०

गाँव और देश के सभी स्त्री-पुरुष
और राजा-रानी (दुःख से) रो रहे हैं।
तुम्हारी पूजा के लिए
सब कोई व्याकुल हो रहे हैं।
हे स्वामी, तुम चलोगे या नहीं चलोगे ?

राधा रानी, रात-दिन
तुम्हारे लिए रोया करती हैं।
उन्हीं की बात कहने के लिए
हम दोनों आई हैं।
हे स्वामी, तुम चलोगे या नहीं चलोगे।

जे दिनतेम् हिअकन
एन् दिनते कए: जोमन हो
जीदकन चीः गोए: जन
इनञ् हिअतिङ् तन
अहो गोम्केम् सेन चि कम् सेन हो

बुदु बाबू कजितन
चि अबेन् चिम्तङ् सेन हो
अन्रे बेआकुलते सोबेन्
होरको लेलतन
अहो गोम्केम् सेन चि कम् सेन हो

२२१

कुइलि कुहु तन
बोछोर मुण्डि जन्
तउ कए: लेलोञ
मोणे तुरि माए: नेण्ड तुकाद रे
अहो गतिञ् ओकोतिअ
अहो सङ्गञ् चिमए तिअ

मुरुद् बा बाजन
प्रदुकम् सुड़जन
तउ कए: लेलोअ
अगो वृन्दा ओकोए नतिन् बालङ् गलङ रे
अहो गतिञ् ओकोतिअ
अहो सङ्गञ् चिमए तिअ

जिस दिन से तुम आये हो,
वह खाना भी नहीं खाई है।
वह जीवित है या नहीं ?
मुझे इसकी चिन्ता है,
हे स्वामी, तुम चलोगे या नहीं चलोगे ?

बुदु बाबू कहते हैं कि
आप कब चलेंगे।
वहाँ व्याकुल हो रहे हैं
और सब लोग राह देख रहे हैं !
हे प्रभो, तुम चलोगे या नहीं चलोगे ?

२२१

कोयल कूक रही है,
वर्ष भर बीत गया,
तो भी दिखाई नहीं देता।
पाँच-छह दिनों का वादा कर गया था।
हाय ! हमारा साथी कहाँ चला गया ?
हाय ! हमारा प्रेमी कहाँ चला गया ?

पलाश के फूल फूलने लगे।
महुए में कोपलें निकलने लगीं,
तो भी दिखाई नहीं देता
हम किसके लिए फूल गूँथेंगे ?
हाय ! हमारा संगी कहाँ चला गया ?
हाय ! हमारा प्रेमी कहाँ चला गया ?

अहो होर लेल्लेल्ते
जोम्क जोमोअ तोते
तउ कएः लेलोअ
हिजुअएः चितञ करःहिजुअरे
अहो गतिम् ओकोतिअ
अहो सङ्गञ् चिमए तिअ

सोबेन् गोपिन सेनोअबु
बुदु बाबु लोः नमिअबु
तउ कएः लेलोअ
निद सिङ्गि अबु कनबु कमिअरे
अहो गतिङ् ओकोनिअ
अहो सङ्गञ् चिमए तिअ

२२२

पयार—
अगो, अगो, अगो दुति
ओकोतिअ ब्रजपति
मगे मगे ते बोछोर मुण्डिजन
ओड़ोः गतिञ कुएः हिजुअ
अञ् दो होञ् ठोओर केद
ओकोरे होएः लेठ गिड़िन् जन

रंग—
नलिता बृन्दादुति
ओकोतिअ ब्रज पति
निदसिङ्गि कुड़म् बितर अएःञे उड़ुःतन्

हाय ! राह देखते-देखते
और सोच के मारे खाना भी नहीं खाया जाता।
वह नहीं दिखाई देता,
(पता नहीं) वह आयगा या नहीं आयगा ?
हाय ! हमारा साथी कहाँ चला गया ?
हाय ! हमारा प्रेमी कहाँ चला गया ?

चलो, सभी गोपियाँ मिलकर चलें,
हम बुद्धु बाबू के साथ उनको खोजें।
वह नहीं दिखाई देता,
हम रात-दिन उन्हें खोजने का काम करें।
हाय ! मेरा साथी कहाँ चला गया ?
हाय ! मेरा प्रेमी कहाँ चला गया ?

२२२

हे सखी, हे सखी,
व्रजपति कहाँ चले गये ?
माघ से माघ तक वर्ष बीत गया,
अब प्रिय नहीं आयेंगे।
मैं जान गई,
(पता नहीं) वे कहाँ उलझ गये ?

हे ललिता, हे वृन्दा,
व्रजपति कहाँ चले गए ?
दिन-रात मन में उन्हें भी चिन्ता लगी है।

पयार—

बिर रे बा बातन
बरु सेरेङ् को लोलोतन
चेणे रेएङ् को एते बगोतन
बिर रे सकम् ओटङ् तन
सेतोम् दः अञ्जेद्तन
लेल् लेल्ते मेद्दः जोरोतन

रंग—

हाय गतिञ् ओकोतिअ
हिजुअ चि कएः हिजुअ
हारे लेल्ते हिअतिङ्ते मेद्दः जोरोतन
अरिल् लेक जी अएः नतिन् लेअगिड़ितन

पयार—

अञ् दो होञ् दुड़ुम्लेन
हपे हपे तेः बिरिद् जन
कुम्बड़ु लेकएः उड़ुङ् हपेजन
इसु खोन रेञ् ठोओर केद
गतिञ् तञ् दो ओकोतिअ
इन निर्गेः निर् गिड़िजन

रंग—

अबेन्दोबेन् लेलन
ओकोर मुलीः उड़ुङ्जन
दोल दोल दोलबुन अञ्दोञ् बलएतन
गतिञ् हिअतिङ्ते अएः नतिन् जीगे सेनोःतन

वन में फूल खिल रहे हैं,
पहाड़ के पत्थर तप रहे हैं,
पंछी और कीड़े-मकोड़े आवाज कर रहे हैं।
वन की पत्तियाँ उड़ रही हैं,
झरने सूख रहे हैं,
यह सब देखकर आँसू झर रहे हैं।

हाय ! मेरे प्रिय कहाँ चले गये ?
वे आयेंगे कि नहीं आयेंगे।
राह देखते-देखते और सोच करते-करते आँसू झर रहे हैं,
उनके लिए हृदय ओले की तरह पिघल रहा है।

मैं तो सोई हुई थी,
वे चुपके-से उठ गये,
और चोर की तरह निकल पड़े।
मैं बहुत देर में समझ पाई
(कि) मेरे प्रिय कहाँ चले गये,
जो चले गये, सो चले ही गये।

तुम दोनों ने तो देखा है
वे किधर निकल गये ?
चलो, चलो, मुझे चिन्ता हो रही है,
प्रिय की चिन्ता में उनके लिए जान निकल रही है।

पयार—
मथुरा रेः राजा जन
राधा कलङ्किनी जन
निअ कनि बेद रे ओलकन
कुबुजि कुड़ि छुलि किअ
दिसुम रेन् राजा तञः
अएः लोः पिरिति तुद् गिड़िजन

रंग—
बुदु बाबु कजितन
मथुरा रेः राजाजन
कुबुजि कुड़ि सुगड़ जन अञ् दोञ् इतुअन
अबेन् अलोबेन् सेन गतिम अएलोः नीलातन

२२३

सेन् जनञ् मथुराते
हिः अकनञ् इनते (हो)
अन्रेअः नीला खेला जोतोञ् लेल्केन
प्रभु दोरेः गोम्के जन
कुबुजी कुड़ि रानि जन
ब्रजरेन् कन्हाइ तबु राजाजन
अञ्दोरेञ् लेल्केन

रुरुतन् को रूतन
सुसुन्तन् को सुसुन्तन
दिसुम्रेन होड़ो को जोतो को हिःअकन
बमणे गोसञ् दुबकन
पोथी पञ्जि लेल्तन
दरवान सिपइ को तिङ्गुअकन
अञ्दोञ् लेल्केन

वे मथुरा में राजा बन गये
(और) राधा कलंकिनी बनी,
यह बात वेद में लिखी हुई है ।
कुब्जा ने मोह लिया,
देश के मेरे राजा को ।
उनके साथ मेरी प्रीति टूट गई ।

बुदु बाबू कहते हैं कि
वे मथुरा के राजा हो गये ।
मैं जान गया कि कुब्जा सुन्दरी बन गई,
तुम वहाँ मत जाओ, वे उसी के साथ लीला कर रहे हैं ।

२२३

मैं मथुरा गया था
और वहीं से आया हूँ ।
वहाँ का जितना क्रीडा-कौतुक था, मैंने देख लिया ।
प्रभु कृष्ण वहाँ के राजा बने
और कुब्जा रानी बनी ।
हमारे व्रज के कन्हैया (वहाँ) बन गये हैं,
मैं सब कुछ देख आया ।

(वहाँ) वादक बजा रहे हैं,
(और) नाचनेवाले नाच रहे हैं ।
देश के सारे लोग आये हुए हैं,
ब्राह्मण गोस्वामी बैठे हैं,
(और) पोथी-पत्रा देख रहे हैं,
दरवान और सिपाही खड़े हैं ।
मैं सब कुछ देख आई ।

रुतु माला बङ्क चूड़ा
इनको जोतो दोअकन
टोपी सोनोः ते किङ् सिङ्गरकन
पन्तिरेकिङ् दुबकन
बङ्कतेकिङ् लेपेल्तन
सलु सुग लेक जुड़िअन
अञ् दोञ् लेल्केन

अगो राधा बिनन्दिनी
कएः हिजुःअ नीलमनि
ने दुकु कुड़म् बितर् जीरे रुड़ुङ्तन
बुदु बाबू कजितन
मोलोङ् तबु चटःजन
इअम् इअम् तेलिङ् हिःअकन
अञ् दोञ् लेल्केन

२२४

इअम् इअम् कजितन
सतो श्रीमती
अगो दुति
पोलोजन सुङ्गुति
अगो दुति

दुकु सुकु चबजन
तइ जन श्रीमती
अगो दुति
अतुजन पिरिति
अगो दुति

बाँसरी, माला, तिरछा मुकुट,
सब कुछ रखा हुआ है ।
वे टोपी और आँगा से शृंगार किये हुए हैं ।
दोनों एक पाँत में बैठे हैं,
वे कनखियों से एक दूसरे को देख रहे हैं,
सालू-सुग्गा के समान जोड़ी बन गये हैं,
मैं सब कुछ देख आया ।

हे राधा विनन्दिनी,
वे नीलमणि कृष्ण फिर नहीं आयेंगे ।
यह दुःख छाती को बेध रहा है ।
बुदु बाबू कहते हैं
(कि) हमारा भाग्य फूट गया ।
हम रो-रोकर आये हैं ।
हमने सब कुछ देख लिया ।

२२४

रोती-रोती कह रही हैं
सती श्रीमती राधा ।
हे सखी,
हमारा साथ छूट गया
हे सखी !

सारा दुःख-सुख समाप्त हो गया,
केवल राधा (अकेले) रह गई ।
हे सखी,
हमारा प्रेम बह गया ।
हे सखी !

चि मेन्ते चिकजन
हुण जनएः भगवती
अगो दुति
बगे किःञएः जी हिति
अगो दुति

बुदु बाबू कजितन
नलिता सुङ्गुति
अगो दुति
ओलकन ने रीति
अगो दुति

२२५

नलिता सुन्दरी दुति
राजा जनएः ब्रजपति
अलोम् कजीअ
इन कजि अयोम्ते जी हो ओटङ्तन्

अदोङ् कजि अयोम् लेन
अदोङ् दोरे पोचोजन
अञ् दोञ् बउल गिड़िजन
इन कजि अयोम्ते जी हो ओरङ्तन्

अञ् दोरे मोनेलिःञ
मोसतेबेंन् हिजुग
इन कजि क होबजन्
इन कजि अमोम्ते जी हो ओरङ्तन्

क्या से क्या हो गया ?
भगवती अप्रसन्न हो गई !
हे सखी,
मेरे प्राणप्रिय मुझे छोड़ गये,
हे सखी !

बुदु बाबू कहते हैं
(कि) हे ललिता,
हे सखी,
(भाग्य का) यही नियम लिखा हुआ है,
हे सखी !

२२५

हे सुन्दरी सखी ललिता,
कृष्ण राजा हो गये।
(इस बात को) मत कहो,
इस बात को सुनते ही जी उड़ जाता है।

आधी बात मैंने सुन ली है
और आधी छूट गई।
मैं तो बावली ही बन गई
उनकी बात सुनते ही जी उड़ जाता है।

मेरे मन में था कि
तुम दोनों एक साथ आओगे।
लेकिन बात खतम हो गई।
यह बात सुनकर प्राण उड़ रहा है।

बुदु बाबू कजितन
निअ कजि तइजन
कजि बेदरे ओलकन्
इन कजि अयोम्ते जी ह्रो ओटङ्तन्

२२६

अञः सुगड़ सुन्दर नटवर
ओकोनिअ कालिआ नागर
ओकोए नतिन्
दुति, ओकोतिअ कालिआ नागर

अञ् दो ह्रोञ् जदिकन्
जी ह्रो सेनोःजेन्
ओकोए नतिन्
दुति, जो ह्रो सेनोःजन्

दरु दड़ रेञ् ह्रक गोजेन
ने दिसुम् तल रे
ओकोए नतिन्
दुति, ने दिसुम् तल रे

सुगड़ सोमए तञः बसि गिड़ितन्
बुदु बाबू दुरङ् बइतन्
ओकोए नतिन्
दुति, बुदु बाबू दुरङ् बइतन्

२२७

पृथी रे जोनोमकन
बोङ्ग चण्डुः (लेक) होलङ् तुरकन
अमः क्रिअ करेञ् बगे मे

बुदु बाबू कहते हैं कि
यह बात अच्छी लगी। (!)
यह बात वेद में लिखी है।
यह बात सुनकर हृदय उड़ रहा है।

२२६

हमारा सुन्दर नटवर,
हमारा साँवला नटनागर कहाँ चला गया?
(मैं) किसके लिए (जी रही हूँ?)
सखी, वह साँवला सलोना कहाँ चला गया?

मैं जीवित हूँ,
लेकिन जान निकल गई।
(मैं) किसके लिए (जी रही हूँ?)
सखी, मेरे प्राण निकल गये।

मैं किसी पेड़ की डाली पर फाँसी लगा लूँगी,
(मैं) इस दुनिया में (नहीं रहूँगी)।
(मैं) किसके लिए (जी रही हूँ)?
सखी, इस दुनिया में।

मेरी सुन्दर जवानी बासी हो गई।
बुदु बाबू गीत बना रहे हैं।
(मैं) किसके लिए (जीवित हूँ)?
सखी, बुदु बाबू गीत बना रहे हैं।

२२७

इस पृथ्वी पर हमदोनों का जन्म हुआ,
हम चन्द्रमा के समान उगे हुए हैं,
तुम्हारी कसम, मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा।

नीला खेला इनुङलङ् मोसते
अमः क्रिअ करेञ् बगे मे

चेणे लेक (लङ्) जुड़िअन
बालेक होलङ् अलाकन
अमः क्रिअ करेम् बगे मे
जीरे जीरे थोलकन मेगेद्ते
अमः क्रिअ करेञ् बगे मे

अम् नतिन् अञ् दो गतिङ्
बउल लेक होञ् बुलकन
अमः क्रिअ करेञ् बगे मे
जदिकनलङ् गोजोअलङ् मोसते
अमः क्रिअ करेञ् बगे मे

बुदु बाबू कुजितन
निअ कजि होञ् सुकुजन
अमः क्रिअ करेञ् बगे मे
दोल राधा वृन्दाविरते होन्तेरते
अमः क्रिअ करेञ् बगे मे ।

२२८

सोबेन् गोपिन अएओमेपे
दहि चटु दुपिलेपे
इसु दिनने कञ्लेलन सुङ्गिमेन्ते
सेनोःअबु मथुराते
इसु दिनते कञ् लेलन सुङ्गिमेन्ते ।

सोलोहो सिङ्गरेन्पे
हेन्दे अङ्गि किचिरिन्पे

हम सारा क्रीडा-कौतुक एक साथ करेंगे।
तुम्हारी कसम, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।

पक्षी के समान हम दोनों की जोड़ी हुई
और फूल के समान हम खिले।
तुम्हारी कसम, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।
(हम दोनों का) दिल लोहे से बँधा हुआ है।
तुम्हारी कसम, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।

प्रिय, मैं तो तुम्हारे लिए
पागल - सा हो गया।
तुम्हारी कसम, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।
हम (साथ) जी रहे हैं (और) साथ ही मरेंगे।
तुम्हारी कसम, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।

बुदु बाबू कहते हैं
(कि) यह बात अच्छी लगी।
तुम्हारी कसम, तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।
राधा, चलो, हम वृन्दावन घूम आयें।
तुम्हारी कसम, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।

२२८

सभी गोपियाँ, सुनो,
दही के बरतन सिर पर उठा लो।
बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए।
चलो, हम मथुरा चलें।
बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए।

सोलहों शृंगार कर लो,
नीला, रंगीन कपड़ा पहन लो।

कुलिलरें कजिअबु दहि मेन्ते
सेनोःअबु मथुराते
इसु दिनते कञ् लेलन सुङ्गिमेन्ते

दोल दोल दोल मेन्ते
सम्पोड़ेन् जन बृन्दे दुति
लेल्लेरे हिजुअतञ् सुङ्गि मेन्ते
सेनोःअबु मथुराते
इसुदिनते कञ् लेलन सुङ्गिमेन्ते

जी तञ् दो हिअतिङ्ते
सेनोःतन सोमए दिन्ते'
बुदु बाबू दुरङ् बइतन् हिअतिङ् ते
सेनोअबु मथुराते
इसु दिनते कञ् लेलन सुङ्गि मेन्ते

२२६

अम् नतिन् अञ्दो गतिञ्
मेदृदः जोरो तन् हो
गतिञ्, अम्दो गतिञ्
करेम् हिअतिञ् दो

जी तञ् दो हिअतिङ्ते
दिदि लेक जलतिङ् तन
गतिञ् ने सोमए रे
नेक हिअतिङ् दो

इसु दिनते कञ् जोमन्
निद सिङ्गि जो गुल्तन्
गतिञ् अम्दो गतिञ्
करेम् सएअद् जःञ दो

पूछने पर कहेंगे कि दही है।
चलो, हम मथुरा चलें।
बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए।

चलो, चलो, चलो, कहकर
वृन्दावन की सखियाँ तैयार हो गईं।
हमें देखते ही साथी कहकर कृष्ण आयेंगे।
चलो, हम मथुरा चलें।
बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए।

मेरा मन चिन्ता से भरा है,
दिन-दिन समय जा रहा है।
बुदु बाबू चिन्तित मन से गीत बना रहे हैं।
चलो, हम मथुरा चलें।
बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए।

२२६

हे प्रिय, तुम्हारे लिए
(हमारे) आँसू बरस रहे हैं।
हे प्रिय, तुम्हें तो
(हमारी) चिन्ता ही नहीं है।

दुःख से मेरा दिल
गीध की तरह उड़ता फिरता है।
हे प्रिय, ऐसे समय में
ऐसी चिन्ता आ गई है।

मैंने बहुत दिनों से खाना छोड़ दिया है।
रात-दिन जी जलता रहता है।
हे प्रिय, तुम्हें तो
(हमारी) खबर ही नहीं है।

निअ उड़ः तइजन्
दिन् दिन् सोबेन् दिन्
गतिञ्, बुदु बाबू
दुरङ् बइतन् दो

२३०

तिरि रिरि तिरि रिरि
रुतुइ ओरोङ् तन्
राधा राधा राधाएः नुतुम्तन्
इनते दुति अञ्दोञ् बलएतन्

दिन् दिन् दिन् सोबेन् दिन्ते
इनगे गुतुतन्
निद सिङ्गि दुति जोरे रुड़ुङ्तन्
इनते दुति अञ्दोञ् बलएतन्

लेलि लेलि लेलिते
क होएः लेलोअ
मोने मोने मोनेरेञ् लेलिअ
इनते दुति अञ्दोञ् बलएतन्

दो दो दो दो दो बोरे दो
बोदेतेञ् कजितन्
बुदु बाबू इनगे दुरङ्तन्
इनते दुति अञ्दोञ् बलएतन्

२३१

हाय रे ओकोतिअ
रुतु ओरोङ् तनिः रे, छैला
हायरे ओकोतिअ

यह चिन्ता रह गई
सब दिन के लिए।
हे प्रिय, बुदु बाबू
गीत बना रहे हैं।

२३०

तिरि रिरि की आवाज में
वे बाँसरी बजा रहे हैं।
राधा, राधा कहकर पुकार रहे हैं,
इससे, हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ।

प्रत्येक दिन, सब दिन
यही बेधता है।
रात-दिन, हे सखी, हृदय कूटता रहता है।
इससे, हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ।

ढूँढ़ने, देखने से
वे दिखाई नहीं देते।
(केवल) मन में ही दिखाई देते हैं।
इससे, हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ।

चलो, चलो, चलो, जल्दी चलो,
जल्दी चलो, यही कह-कहकर।
बुदु बाबू गीत गा रहे हैं।
इससे, हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ।

२३१

हाय ! वह कहाँ चला गया
बाँसरी बजानेवाला छोकरा ?
हाय ! वह कहाँ चला गया ?

निद सिङ्गि अएः नतिन्
मेद्दः जोरोतन रे, छैला
हाय रे ओको तिअ

चन्दन कस्तूरी बा
सोबेन् गोसोजन रे छैला
हाय रे ओको तिअ

बुदु बाबू हिअतिङ्ते
दुरङ् बइतन रे छैला
हाय रे ओको तिञ

२३२

हतु हतुञ् नम् किःञ्
क होञ् नम् तःइअ हो
ओको हतु रिःअ चिरे ओकोतिञ

हिड़ि तःञएः ओकोए तञ्
साम सुन्दर छैला हो
रनु तः ञएः चिरेः चिकतःञ

इसु दिन अपन् मेद्दते
कञ् लेल् तःइअ हो
एनमेन्ते कहोञ् जोम रिअतिङ्ते

हिजुःअचि कएः हिजुःअ
ओको दिसुम रिअ हो
बुदु बाबु सोङ्गि तबु कुलिअबु

रात-दिन उसके लिए
आँसू बरसा करते हैं।
हाय ! वह कहाँ चला गया ?

चन्दन और कस्तूरी
(और) सभी फूल मुरझा गये।
हाय ! वह कहाँ चला गया ?

बुदु बाबू चिन्ता से
गीत बना रहे हैं।
हाय ! वह कहाँ चला गया ?

२३२

गाँव-गाँव में मैंने उसे खोजा,
किन्तु मैं उसे नहीं पा सकी।
पता नहीं, वह किस गाँव में है या कहीं चला गया ?

कोई मुझसे ठगकर ले गई
(मेरे) श्यामसुन्दर को।
उसने मुझे दवा पिलाई या क्या कर दिया ?

बहुत दिनों से अपनी आँखों से
मैंने उसे नहीं देखा है।
इसी चिन्ता के मारे मैं नहीं खाती।

पता नहीं, वह आयगा या नहीं ?
वह किस देश में होगा।
संगी बुदु बाबू से हम पूछेंगे।

२३३

हस टटि पितल टटि
होड़ोमो दोरे तीते जगि
तिरि रिरि तिरि रिरि
रुतु दोरे सड़ितन्

पिड़ि रेवो चिकन् कमि
ओड़ाः रेवो हनर् होञ्जर्
तिरि रिरि तिरि रिरि
रुतु दोरे सड़ितन्

२३४

हेड़ेम् हेड़ेम् कजि ते
हिड़ि किजम् गो मेन्ते
हिड़ि किजम् गतिञ्
जाति पातिअते

होटोः रेवो प्रेम माला
माला किजम् गो मेन्ते
माला किजम् गतिञ्
चिमिनङ् नीलाते

होड़ोके तलाते
इदिकिजम् गड़ते
अनुकिजम् गतिञ्
इकिर् दः तल रे

२३५

एन दिलङ् हारे रे
क़जि लेदम् सुग रे

२३३

मिट्टी और पीतल के दीये की तरह (प्रकाशमान)
(उसका) शरीर छू लेने को मन करता है।
बाँसरी तिरि-रिरि, तिरि-रिरि
की आवाज लिये बज रही है।

मैदान में क्या काम है, जिसके बहाने निकलूँ ?
घर में सास-ससुर मौजूद हैं।
बाँसरी तिरि-रिरि, तिरि-रिरि
की आवाज लिये बज रही है।

२३४

मीठी-मीठी बातों से
तुमने प्रिय कहकर मुझे ठग दिया।
प्रिय, तुमने मुझे ठग लिया।
मुझे अपनी जाति से अगल कर दिया।

मेरे गले में तुमने प्रेम की माला,
तुमने प्रिय कहकर डाल दी।
प्रिय, वह माला तुमने
कितने कौतुक से मुझे पहनाई।

आदमियों के बीच से
तुम मुझे नदी ले गये।
प्रिय, तुमने मुझे बहा लिया।
तुमने मुझे गहरे पानी में बहा दिया।

२३५

उस दिन रास्ते में
सुग्गे, तुमने एक बात कही थी।

ओ सुबोदोनी रे
एन कजि कगे रिड़िङोः
गूड़ चिरेम् जोम् लेद
जी रटि हेड़ेम् जन
ओ सुबोदोनी रे
एन कजि जी रे गुतुजन्

२३६

गलिम् दो मह हिअकन
टिकुरटेः दुबे जन
दुबे दुबे रुतुइः ओरोङ्तन
धोनी अमः जीरे उड़ुः बनोः जन

रुतु दोरेः ओरोङ्तन
तिरि रिरि सड़ितन्
दुअर रेम् नकिगेन तन
धोनी अमः जीरे उड़ुः बनोः जन

तिरि रिरि सड़ितन्
मेह्ः रटि जोरोतन
पिडिङ्गि रे कितम् गलञ्तन
धोनी अमः जीरे उड़ुः बनोः जन

२३७

अहोगलिञ् अम् नतिन हो
बिसुम् दिसुम् गतिञ् जुगिकेन
गतिञ् नम् नम् तेञ् नमन
सङ्गञ् दण दण तेञ् पिचन
अहो गतिञ् करेञ् बगेमेअ
सुगड़ सुगड़ तञ् गतिञ् दो
हेरेल् हेरेल् तञ सङ्गञ् दो

हे सुन्दरी,
वह बात नहीं भूलती।

क्या तुम गुड़ खाई हुई थी
कि मेरा हृदय तक मीठा हो गया।
हे सुन्दरी,
वह बात हृदय में गड़ गई।

२३६

तुम्हारा मित्र आया है,
वह टीले पर बैठा है।
(और) बैठे-बैठे बाँसरी बजा रहा है,
(लेकिन) तुम्हारे हृदय में कोई चिन्ता नहीं है।

वह बाँसरी बजा रहा है,
(बाँसरी) तिरि-रिरि, तिरि-रिरि आवाज कर रही है।
(किन्तु) तुम द्वार पर बैठी कंघी कर रही हो,
(लेकिन) तुम्हारे हृदय में कोई चिन्ता नहीं है।

तिरि-रिरि, तिरि-रिरि स्वर के साथ
जैसे आँसू टपक रहे हैं।
(किन्तु) तुम बरामदे में बैठी चटाई गूँथ रही हो।
तुम्हारे हृदय में जरा भी चिन्ता नहीं होती।

२३७

हे प्रिय, तुम्हारे लिए
मैं देश-देश योगिनी की तरह घूमती फिरी,
(तब कहीं) खोजते-खोजते तुम्हें पाई हूँ।
(तब कहीं) तुम्हारा पीछा कर पाई हूँ।
प्रिय, अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी!
मेरे सुन्दर प्रिय!
मेरे सलोने प्रिय!

अहो गतिञ् अम् नतिन् हो
बिङ् बिसि होञ् बिसिलेन
गतिञ् गोनोएः सेटेर लेन
सङ्गञ् मउतु तेबः लेन
अहो गतिञ् करेञ् बगेमेअ
अमः उम्बुल् तेञ् जीदकन्
अमः कोतोर रेञ् सयद्तन

अहो गतिम् अम् नतिन् हो
हुड़िङ् मरङ् जोलञ् दणकेन्
गतिञ् ओकोरेम् उकुकेन
सङ्गञ् चिमए रेम् बनङ्केन्
अहो गतिञ् करेञ् बगेमेअ
तड़ए मेद्रे होञ् लेलन् मे
होपोर जपः रे डुबन् मे

अहो गतिञ् अम् नतिन् हो
सिर्मरेन् सिङ्बोङ्गञ् अगोम्केन
गतिञ् इनते होञ् नम्तद् मे
सङ्गञ् इनते होञ् पिचतद् मे
अहो गतिञ् करेञ् बगेमेअ
बुद्रु बाबु दुरङ् तन
कट कतिर हो हुथतन

२३८

होर तेगोम् सेन् जद
होर गेगोम् लेल्तन
गतिञ् गोलञ्चि बा
कचिम् लेल् जद रे

हे प्रिय, तुम्हारे लिए
मैंने साँपों के विष को सहन किया।
प्रिय, मेरी मृत्यु आ गई थी,
प्रिय, मेरी मौत निकट थी।
प्रिय, अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी।
मैं तुम्हारी छाया में जीवित रहूँ
मैं तुम्हारी छतरी के नीचे साँस लूँ।

हे प्रिय, तुम्हारे लिए
मैंने छोटे-बड़े कितने पहाड़ पार किये।
प्रिय, तुम कहाँ छिपे थे ?
प्रिय, तुम कहाँ गायब थे ?
प्रिय, अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी।
मैं तुम्हारे कमल-नयन देखती रहूँ,
तुम मेरे नजदीक बैठे रहो।

हे प्रिय, तुम्हारे लिए
मैंने स्वर्ग के भगवान् से प्रार्थना की थी।
प्रिय, तभी मैंने तुम्हें पाया है,
प्रिय, तभी मैंने तुम्हें अपनाया है।
प्रिय, अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी।
बुदु बाबू गीत गा रहे हैं,
कि तुम्हारे पैर दबाने की इच्छा हो रही है।

२३८

तुम रास्ते से चल रही हो
(और) केवल रास्ता ही देख रही हो।
हे प्रिये, क्या तुम गुलाइची का फूल
नहीं देख रही हो ?

बा सुबम् तेबः केद
गोलञ्चि बाम् बाकेद
गतिञ् पएल तेम्
गुगुलन् जन रे

ओको सः अतेः होयोलेद
गुगुलदो ओटङ्जन
गतिञ् गोलञ्चि बा
बा उयुःजन रे

२३६

संसार रे जोनोम् लेन
माया प्रेमतेञ् तोलकन
बृन्दा दूती
धोनी रे दो तम् तञ् बिन्ती
बृन्दा दूती

सोङ्गे रेअः हिअतिङ्
इन कजिञ् कजितन
बृन्दा दूती
धोनी रे जोनोमो सोङ्गोती
बृन्दा दूती

ने जीबोन बर्सिङ् नङ्गेन्
तइनलङ् रिति पिरिति
बृन्दा दूती
बुडु बाबु निअएः बिन्ती
बृन्दा दूती

तुम फूल के वृक्ष के नीचे पहुँची
(और) गुलाइची का फूल पहन लिया।
(और) हे प्रिये, तुमने आँचल से
अपना सिर ढक लिया।

(अचानक) किसी ओर से हवा आई
(और) तुम्हारा आँचल गिर गया।
प्रिये, तुम्हारा पहना हुआ फूल—
वह भी गिर गया।

२३९

हमने संसार में जन्म लिया,
हे सखी, मैं माया और प्रेम में बँधा हुआ हूँ।
हे हमारी वृन्दावन की संगिनी!
तुम हमारी बात रख लो,
हे हमारी वृन्दावन की संगिनी !

हमारे साथ जो चित्त लगा है,
मैं वही बात कह रहा हूँ।
हे, हमारी वृन्दावन की संगिनी !
हे, जन्म की संगिनी !
हमारी वृन्दावन की संगिनी !

यह जीवन दो दिनों के लिए है,
हम प्रेमपूर्वक रहें।
हे हमारी वृन्दावन की संगिनी !
बुदु बाबू की यही विनती है।
हे हमारी वृन्दावन की संगिनी !

२४०

बपरिबु सोङ्गेजन
जो कुड़म् बदलओः लेक
जीदन् बारि कबु बपगेअ
जोअर् जगर कबु रिपिड़िङ

दुकु मेनः सुकुमेनः
रेङ्गेः मेनः रबङ्मेनः
अपे अले सोबेन्बु उपुदुब
जोअर् जगर कबु रिपिड़िङ

अबुगेअ जति जपः
अबुगेअ कुटुम् कुपुल्
सोबेन्कोबु हिर कोपोयोग
जोअर् जगर कबु रिपिड़िङ

काशीनाथेः कजितन
मेद्लेपेल् मोच जगर
जोदन् बारिबु लेपेल् जपगर
बरसिङ् नङ्गेन् चिअःम् एपेरङ

२४१

एन् लेकन् सुगड़ तञः
ओकोए उकुकिःअ रे
हए रे हए रे तञ् रे
हए रे ओकोए हिड़िकिःअ
हए रे हए रे तञ् रे

नलिता गो इदितन् रे
ओकोए लेल् लिःअरे
हए रे हए रे तञ् रे

२४०

हम यों घुल-मिल गये
(कि) मन आज बदल लें।
जीवन-भर हम नहीं भूलेंगे,
हम सलाम-जुहार करना नहीं भूलें ।

(यहाँ) दुःख है, (यहाँ) सुख है,
भूख भी है, जाड़ा भी है ।
हम एक दूसरे का सुख-दुःख कहें-सुनें,
हम सलाम-जुहार करना नहीं भूलें ।

हम एक ही जाति के हैं,
हम ही कुटुम्ब-परिवार हैं ।
एक दूसरे की हम सुधि लें,
हम सलाम-जुहार करना नहीं भूलें ।

काशीनाथ कहते हैं
(कि) दृष्टि रखेंगे, हसेंगे, बोलेंगे ।
जीवन-भर हम हिल-मिलकर रहें,
हम दो दिन के लिए क्यों झगड़ें ?

२४१

इस तरह के सुन्दर सलोने को
कौन चुरा ले गया ?
हाय रे, हाय रे, हाय रे !
मुझे किसने ठग लिया !
हाय रे, हाय रे !

हे ललिता, जो ले गया है
उसे किसने देखा है ?
हाय रे, हाय रे, हाय रे !

हए रे ओकोए उकुकिःअ
हए रे हए रे तञ् रे

सोबेन् गोपिन् ऐनोअबु
दोल नमिअबु रे
हए रे हए रे तञ् रे
हए रे ओको दिसुम् तिअ
हए रे हए रे तञ् रे

बुदु बाबु कुलीअबु
अएः लेल् लिअरे
हए रे हए रे तञ् रे
एन्ते अएः इदिबुअरे
हए रे हए रे तञ् रे

२४२

डड़ि होर हटिअ
गगरि चटु दःम अगु
अमः दो गो छएल
निद सिङ्गि अमदोम् नकिःसुपिद
अमः दोगो छएल

लुतुर् जपः सए सुनुपिद्
चपुकेनम् चपुकेन
अमः दोगो छएल
सुपिद् दो बाते बिउरकन
अमः दो गो छएल

सुपिद्रेचिरे जीतम्
बा रेचिरे रसिक
अमः दो गो छएल

उसे किसने हिला दिया ?
हाय रे, हाय रे, हाय रे !

हम सब गोपियाँ चलें
और चलकर उसे खोजें ।
हाय रे, हाय रे, हाय रे !
वह किस देश को चला गया ?
हाय रे, हाय रे, हाय रे !

हम बुदू बाबू से पूछें
(क्योंकि) जाते समय उन्होंने देखा था ।
हाय रे, हाय रे, हाय रे !
हमलोगों को वही ले जायेंगे ।
हाय रे, हाय रे, हाय रे !

२४२

डाड़ी के रास्ते
गगरी भरने जाती हो ।
तुम्हारा छैलापन (भी खूब है) ।
तुम रात-दिन खोंपा ही सजाती रहती हो,
तुम्हारा छैलापन (भी खूब है) ।

कान से सटा तिरछा-सा जूड़ा
बार-बार छूती रहती हो ।
तुम्हारा छैलापन (भी खूब है) ।
तुम्हारा खोंपा फूलों से ही भरा है,
तुम्हारा छैलापन (भी खूब है) ।

क्या तुम्हारा मन खोंपे में है ?
क्या तुम्हारे प्राण फूलों में हैं ?
तुम्हारा छैलापन (भी खूब है) ।

डड़ि दः रे अम्दोम् लेपेल डम्बुल
अमः दोगो छएल

२४३

ने दिसुम् तल रे
अंथा जोनोम् होबलेन्
आ हो, आ हो
समड़ोम् सोमए सेनोःतन् दो

तीरे मुदम् बोरे बोरे
होटोःरे मन्दुलि सोर
आ हो, आ हो
ओड़ोः सकोम सखा सड़ितन् दो

कदल हो दरुलेक
हेलो हेलोम् सेनकद
आ हो, आ हो
पड़िअ किचिरि ओरङ्तन् दो

२४४

लंकापति जपः रे
सुरुपनखाएः कजितन
ओ दद, हए, दद
चिनःञ् इनिअमेअ
बरिअ कोड़ होन्किङ्लोःते
इसु सुगड़ कुड़िहोन् मेनइः सोङ्गे रे

बोः रेदो जोटोकिङ् तोलन
तीरे दो आः सार किङ् सबन
ओ दद, हए दद,

डाड़ी के पानी में तुम अपनी छाया निहारती हो,
तुम्हारा छैलापन (भी खूब है)।

२४३

इस दुनिया में
हमारा जन्म व्यर्थ ही हुआ।
हाय, हाय !
सोने के समान समय चला जा रहा है।

तुम्हारे हाथ में अंगूठी झकझका रही है,
(और) गले में मन्दुली चमचमा रही है।
हाय, हाय !
तुम्हारी चूड़ियाँ मधुर आवाज कर रही हैं।

तुम कदली-वृक्ष के समान
हिलती हुई चलती हो।
हाय, हाय !
तुम्हारा आँचल हवा में उड़ रहा है।

२४४

लंकापति के सामने
शूर्पणखा कह रही है।
हाय, हे भाई !
मैं तुमको क्या बताऊँ,
दो युवकों के साथ
एक बहुत सुन्दर स्त्री है।

उनके सिर पर जटा है
और हाथ में धनुष-बाण पकड़े हैं।
हाय, हे भाई !

बिरकिङ् होनोरतन
बरिअ कोड़ होन्‌किङ् लोःते
इसु सुगड़ कुड़िहोन् मेनङः सोङ्गे रे

राओन राजाएः लन्दतन
सुरुपनखाएः कजितन
ओ दद, हए दद
मूँ किङ् हेद किञ
बरिअ कोड़ होन् किङ्लोःते
इसु सुगड़ कुड़ि होन मेनङः सोङ्गे रे

बुदु बाबु कजितन
बेस गे गोम कुजिलेद
ओ दद, हए दद
जीकिङ् दुकुकिञ
बरिअ कोड़ होन् किङ्लोःते
इसु सुगड़ कुड़िहोन् मेनङः सोङ्गे रे

२४५

गड़ जपः लोअ सुब
मेरोम् कोएः गुपितन
लेल् जङः लेल् जङः लोः
दोन्दो तोर्स किःअ मङ नोलिता

ओकोए मेने मरे मरे
ओकोए मेने धरे धरे
लेल् जङः लेल् जङः लोः
दोन्दो तोर्स किःअ मङ नोलिता

बुदु बाबु कजितन
राओन सीताएः इदि किःअ

वे जंगल-जंगल घूम रहे हैं।
दो युवकों के साथ
एक बहुत सुन्दर स्त्री है।

(यह सुनकर) रावण राजा हँस रहा है
(और) शूर्पणखा कहती जाती है—
हाय, हे भाई !
उन्होंने मेरी नाक काट ली।
दो युवकों के साथ
एक बहुत सुन्दर स्त्री है।

बुदु बाबू कहते हैं—
तुमने अच्छा ही कहा।
हाय, हे भाई !
उन्होंने मेरे दिल को दुखा दिया।
दो युवकों के साथ
एक बहुत सुन्दर स्त्री है।

२४५

नदी के किनारे गूलर वृक्ष के नीचे,
(सीता) बकरी चरा रही है (थी)।
देखते-ही-देखते,
हे सखी ! उसको उठा लिया।

किसी ने 'मारो-मारो' कहा।
किसी ने 'धरो-पकड़ो' की आवाज लगाई।
(लेकिन) देखते-ही-देखते
हे सखी, उसको उठा लिया।

बुदू बाबू कहते हैं,
रावण सीता को हर ले गया।

लेल् जइः लेल् जइः लोः
दोन्दो तोर्‌स किःअ मइ नोलिता

२४६

जम्बुबानेः कजितन
जोतो गड़ि सेनोःपे
इस दिरि बुरु अउते
समुन्दर थोलेअबु इनते
राम लखन प्रभु हुकुम्‌ते

सोबेन् बीर को खुसजन
इन कजि अएओम्‌ते
सेनोअबु सोबेन् लङ्कात
लेलेअबु लङ्कापुरी मेद्‌ते
रामलखन प्रभु हुकम्‌ते

जेनए बीरेः खुड़िल्‌तन
दोल दोल मेन्ते
सोनोअबु उत्तर दिसुम्‌ते
अगुइअबु बुरु दिरि बोओः ते
रामलखन प्रभु हुकुम्‌ते

हनु बीरेः बिरिद्‌जन
राम राम मेन्ते
उत्तर दिसुम् बुरु अउते
बुदु बाबू दुरङ् तन् इनते
रामलखन प्रभु हुकुम्‌ते

२४७

जेतए बुरु जेलए दिरि
दुपिलनको जोतो गड़ि

देखते-ही-देखते
हे सखी ! (उसको) उठा लिया।

२४६

जामवन्त कह रहे हैं,
बन्दरो, तुम सभी जाओ,
मिट्टी, पत्थर और पहाड़ लाने के लिए।
हम उससे समुद्र बाँधेंगे
प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से।

सभी वीर प्रसन्न हुए
यह बात सुनकर।
हम सभी लंका जायेंगे,
(और) अपनी आँखों से लंकापुरी को देखेंगे
प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से।

कोई-कोई वीर उछल रहा है
चलो, चलो, कहते हुए।
हम उत्तर दिशा की ओर चलें
(और) पत्थर-पहाड़ सिर पर लायें
प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से।

वीर हनुमान् उठे
राम-राम कहते हुए
(और) पत्थर लाने के लिए उत्तर की ओर चले।
इसीलिए, बुदु बाबू गीत गा रहे हैं
प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से।

२४७

कोई पहाड़ और कोई पत्थर—
सभी बन्दर सिर पर लिये हुए हैं।

मोद्रे हुण्डिन् जन्
घड़ि घड़ि सोबेन् गड़ि
रामगे नुनुम्तन्
बीरको बिर्को अगुतन्

जेतए बीरेः सुसुन्तन
जेतए जेतए लन्दतन
खुसते हिजुःतन
दोल दोल दोलबु मइ
मेन्ते कजितन्
बीरको बिर्को अगुतन्

मुइः लेक (को) सेनोःतन
रिम्बिल् लेक (को) लेलोःतन
बीर् को हिजुःतन्
सिङ् बोङ्गः डम्बुल्ते भइ
दपल् गिड़ि जन्
बीरको बिर्को अगुतन्

सोबेन् बीरको सेटेर्जन
गोट दिसुम् उम्बुल् जन
नुबः लेलोःतन्
बुदु बाबू लेल्ते तबु
धन्द गिड़िजन्
बीरको बिर्को अगुतन्

२४८

रघुबरेः खुसजन
नल नील हुकुम्केन
समुन्दर तोल्ते बिरिद्जन

सभी इकट्ठे हो गए।
बार-बार सभी बन्दर—
राम का ही नाम ले रहे हैं।
(सभी) वीर पहाड़ ला रहे हैं।

कोई वीर नाच रहा है,
कोई-कोई हँस रहे हैं।
(सभी) प्रसन्न होकर आ रहे हैं।
चलो, चलो, चलो,
कहते हुए चल रहे हैं।
(सभी) वीर पहाड़ ला रहे हैं।

वे चीटियों के समान चल रहे हैं
(और) बादल के समान दिखाई दे रहे हैं।
(सभी) वीर आ रहे हैं।
(वे) भगवान् की परछाहीं से
ढक गये हैं।
(सभी) वीर पहाड़ ला रहे हैं।

सभी वीर पहुँच गये,
सारा देश (उनकी) छाया से ढक गया।
(चारों ओर) अँधियारी छा गई।
बुदु बाबू यह देखकर
अचम्भे में पड़ गये!
वीर पहाड़ ला रहे हैं।

२४८

रामचन्द्रजी खुश हो गए।
उन्होंने नल-नील को आज्ञा दी।
वे दोनों समुन्दर बाँधने उठे,

बीरकिङ् सेनोः जन्
दः चेतन् रेकिङ् तिङुन् जन

बीर बिर्को तुल्तन
बुरु दिरि ओम्तन
लेङ्ग ती ते नल नील तेल्तन
बीरबिङ् थोलेतन्
दः चेतन् बुरु उपल्तन्

सोबेन् बीर को मकुअओजन
लेङ्ग ती ते तेल्तन
हनु बीर् मोन्रेः गोसाजन्
बीर किङ् तोलेतन्
समुन्बर होर बइतन्

हनु बीरेः खींस जन
उत्तर दिसुम्तेः रुअड़जन
मरङ् मरङ् बुरु कोएः पटुब्तन्
बीरकिङ् तोलेतन्
बुदु बाबू दुरङ् बइतन्

२४९

पयार—
हनु बीरेः खींस जन
उत्तर दिसुम्तेः रुअड़जन
मरङ् मरङ् बुरु कोएः पटुब्तन
ऊद्लेकए तुद्तन्
सलुकिद् लेकएः चपद्तन
बुरुचेतन् बुरु तिरिङ् तन्

ओदोङ् बुरु दुपिलन
अदोङ् बुरु मालाकन

वे दोनों वीर चले गये
(और) पानी के ऊपर खड़े हो गये।

वीर पहाड़ उठा रहे हैं—
पहाड़ और पत्थर दे रहे हैं,
नल-नील बायें हाथ से (उसे) ले रहे हैं।
वे दोनों वीर (समुन्दर) बाँध रहे हैं,
पानी के उपर पहाड़ तैर रहे हैं।

सभी वीरों को आश्चर्य हुआ
कि (नल-नील) बायें हाथ से ले रहे हैं।
(यह देख) वीर हनुमान् को गुस्सा आया,
वीर (नल-नील) समुन्दर बाँध रहे हैं,
वे समुद्री रास्ता बना रहे हैं।

वीर हनुमान् बिगड़ गये
(और) उत्तर दिशा की ओर लौट गये।
वे बड़े-बड़े पहाड़ उखाड़ रहे हैं,
वीर (नल-नील) समुन्दर बाँध रहे हैं।
बुदु बाबू गीत बना रहे हैं।

२४६

वीर हनुमान् बिगड़ गये,
वे उत्तर दिशा की ओर लौट गये।
वे बड़े-बड़े पर्वत उखाड़ रहे हैं,
(पहाड़ों को) वे खुखड़ी के समान उखाड़ रहे हैं
(और) कुमुद फूल की तरह रौंद रहे हैं।
पहाड़-पर-पहाड़ लाद रहे हैं।

कुछ पहाड़ों को वे सिर पर लिये हुए हैं,
कुछ को उन्होंने माला की तरह लटका रखा है।

ऊब् ऊब्ते बुरु होएः तोलकन्
हनु उपुन् हिसिलाख बुरु होएः अगुतन्
बीर उपुन् हिसि लाख बुरु होएः अगुतन्

भयंकारेः मूर्तिन्‌जन
हनु बीरेः बिरिद्‌जन
नल नील खोंसने बुलकन्
हनु उपन् हिसि लाख बुरु होएः अगुतन्
बीर उपुन् हिसि लाख बुरु होएः अगुतन्

खोंसने बीरेः हिजुःतन
उपुन् कोसरे मण्डतन
होएओ गम ले‍ सड़ितन
हनु उपुन् हिसि लाख बुरु होएः अगुतन्
बीर उपुन् हिसि लाख बुरु होएः अगुतन्

रामदल बीर को कजितन
ओकों बीरेः हिजुःतन
बुदु बाबू रामगुन दुरङ्तन
हनु उपुन् हिसि लाख बुरु होएः अगुतन्
बीर उपुन् हिसिलाख बुरु होएः अगुतन्

२५०

हनु बीरेः अइउम्केन
साड़ोको होरे तेअर्‌जन
होएओ होन् एन्‌रेः तिङ्गुन्‌जन्
खोंसने सरः चड्‌िकेन
चड्‌िकेअतेः कोटन्‌जन
बुरु चेतन् बुरु थेरतन्
सोबेन् गुण्ड गिड़िजन्

उन्होंने सारे बालों में पहाड़ बाँध लिया है।
हनुमान् अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं,
वीर अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।

भयंकर दृश्य धारण कर
हनुमान् तैयार खड़े हैं।
(यह देख) नल-नील क्रोध से तिलमिलाये हुए हैं।
हनुमान् अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं,
वीर अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।

वीर क्रुद्ध होकर आ रहे हैं,
और चार-चार कोस पर अपना कदम रख रहे हैं।
आँधी-पानी की तरह आवाज हो रही है।
हनुमान् अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं,
वीर अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।

राम के दल के बीर कह रहे हैं,
कौन वीर आ रहा है ?
बुदु बाबू राम का गुण गा रहे हैं।
हनुमान् अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं,
वीर अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।

२५०

(जब) हनुमान् ने सुना
(कि) रास्ता तैयार हो गया,
तब वे पवन-पुत्र उसपर खड़े हो गये
(और) क्रोध से उछल पड़े।
उछलकर उन्होंने अपना शरीर झकझोरा
(जिससे) पहाड़-पर-पहाड़ फेंका जाने लगा,
(और) सब कुछ टूट-फूट गया।

हुहुङ्कारेः सब्द केन
सोबेन् बीर को तब्ध जन
बोङ्गः होड़ो विङ्को ऐकेलतन्
चिक जन चिक जन
मेन्ते सोबेन् कजितन्
चमत्कार सुइन्रे सड़िजन्
लुतुर् तलि गिड़िजन्

जेतए जेतए कजितन
बुरुबोङ्गः ओणाकन
चडलिजङ् रे अएःगे नमकन्
जेतए जेतए कजितन
ओको बीरेः गरजन्केन
जेतए जेतए सुइन्रे सड़िजन्
मेन्ते सोबेन् कजितन्

निअ कजि कुलिमेन्ते
सेनोअनु राजदुअरते
बमणे मुनि राजाएः दुबकन्
लेल्तनको पोथी पाञ्जि
अएओमे अबु निअकजि
मेन्ते बुदु बाबू सेमोःजन्
मनरे दिलरे खुसीजन्

२५१

पयार—
श्रीराम रघुबर
ओड़ो बीर लखन कुओंर
बर हग बीर्किङ् हिअकन्
सिब बोङ्गः थापना मेन्ते

(हनुमान् ने जब) हुंकार-शब्द किया,
तब सारे वीर स्तब्ध हो गये ।
सभी देवता और नाग डर से काँपने लगे ।
क्या हुआ, क्या हुआ,
कह कर सब पूछने लगे ।
शून्य (आकाश) में चमत्कार से आवाज हुई,
(जिससे) कान सुन्न हो गये ।

कोई-कोई कह रहा है
(कि) बुरुबोङ्ग (पर्वत) के देवता बिगड़ गये हैं ।
नाकुन में वही दिखाई दे रहा है ।
कोई-कोई कह रहा है
कि कोई वीर गर्जन कर रहा है
कोई कह रहा है—शून्य में आवाज हुई,
ऐसे ही सभी कह रहे हैं ।

इस बात को पूछने के लिए
हम राजद्वार चलेंगे ।
वहाँ ब्राह्मण, मुनिगण और राजा बैठे हुए हैं
और पोथी और पंजी देख रहे हैं ।
हम यह बात सुनेंगे—
कहकर बुदु बाबू भी वहाँ चले गये
और अपने मन और दिल में खुश हुए ।

२५१

श्रीराम रघुवर
और वीर लक्ष्मणकुमार—
दोनों वीर बन्धु आये हुए हैं
(वे) शिव की स्थापना के लिए

हिअकनकिङ् सोड़ोको मुड़िते
हरे हरे हरे किङ् नतुम्तन्

रंग—

बोङ्ग मुनि बीर् को दुबकन्
रामलखन सिबकिङ् सेबतन्
घड़ि घड़ि घड़ि
बोओः चेतन् मुड़ि
मधु गुड़किङ् दुलेतन हो
अहो गुरु अब सिब बोङ्ग
मेन्ते सेबतन हो
अहो गुरु अब सिब बोङ्ग

अम् प्रभु श्री भोगोबान्
अमः उम्बुल् तेहोज् जीदकन्
भुवन मण्डल
चेतनो पाताल्
सोबेनको इतुअन हो
अहो गुरु अक सिब बोङ्ग
मेन्ते सेबतन हो
अहो गुरु अब सिब बोङ्ग

निअ कजि प्रभुञ् बिन्तीतन्
अञः मोन आसा पूर्नो तम्
देबी सीता सती
लङ्कापुर पति
इदि तिअएः रावन हो
अहो गुरु अब सिब बोङ्ग
मेन्ते सेब तन हो
अहो गुरु अब सिब बोङ्ग

वे सड़क की छोर पर आये हुए हैं
(और) 'हरे-हरे' बोल रहे हैं।

वहाँ देवता, मुनि और वीर बैठे हुए हैं
(और) राम-लक्ष्मण शिव की पूजा कर रहे हैं।
वे हर घड़ी, बार-बार
शिवजी के सिर पर
मधु और गुड़ ढाल रहे हैं।
हे गुरु पिता, हे शिव देवता!
कहकर पूजा कर रहे हैं
हे गुरु पिता, हे शिव देवता!

आप ही श्रीभगवान् हैं,
आपकी ही कृपा से हम जी रहे हैं।
इस भुवन-मण्डल में,
आकाश और पाताल में
सभी आपको जानते हैं।
हे गुरु पिता, हे शिव देवता!
कहकर पूजा कर रहे हैं
हे गुरु पिता, हे शिव देवता!

प्रभु, मैं एक बात की प्रार्थना कर रहा हूँ
(कि) मेरे मन की आशा पूर्ण कर दो।
देवी सती सीता को
लंका के पति
रावण ने चुरा लिया है।
हे गुरु पिता, हे शिव देवता
कहकर पूजा कर रहे हैं।
हे गुरु पिता, हे शिव देवता!

बुदु बाबू तबु दुरङ्तन्
तड़एकः तल रे सरनकन्
समणोम् लङ्कापुरी
एन् सीता सुन्दरी
पिचले सेनोः तन हो
अहो गुरु अब सिब बोङ्गः
मेन्ते सेब तन हो
अहो गुरु अब सिब बोङ्गः

२५२

पयार—
राम लखन दुबकन्
मंत्री जात्रा लेल्तन्
सोबेन् बीर को महाखुस जन्
नुनुमेअबु राम राम मेन्ते
सेनोअबु कुलि कुलिते
सोबेन् बीर को निअगे कजितन्

रंग—
सोबेन् बीर को सम्पोड़ेन्जन्
हनु बीरेः बिरिदजन्
राम राम मेन्ते
दो भइ दो भइ लङ्काते
राम राम मेन्ते
अएअर् तएओम् सोबेन् बीर
एन् बितर् रे रघुबीर
राम राम मेन्ते
सीता सती पिच ते
राम राम मेन्ते

बुदु बाबू गीत गा रहे हैं
(और) राम के चरणों में शरण लिये हुए हैं ।
हम स्वर्ण-लंका को
उसी सीता सुन्दरी का
पीछा करने के लिए जा रहे हैं ।
हे गुरु पिता, हे शिव देवता !
कहकर पूजा कर रहे हैं
हे गुरु पिता, हे शिव देवता !

२५२

राम-लखन बैठे हैं
और मन्त्री-जामवन्त शकुन देख रहे हैं ।
सभी वीर बहुत खुश हुए ।
(कह रहे हैं) हम राम का नाम लेकर
रास्ता पूछते हुए चलेंगे ।
सभी वीर यही कह रहे हैं ।

सभी वीर तैयार हो गये ।
वीर हनुमान् (भी) उठ गये ।
राम-राम कहते हुए,
चलो, लंका को चलें,
राम-राम कहते हुए ।

सभी वीर आगे-पीछे चल रहे हैं
(और) उनके बीच में रामचन्द्रजी हैं ।
राम का नाम लेते हुए
वे सती सीता की खोज में चले,
राम-राम कहते हुए ।

जेतए बीरेः खुड़िल्तन
जेतए जेतए सबकन
राम राम मेन्ते
सुसुन् तनको मोसते
राम राम मेन्ते

रामायन रे ओलकन
बुड़ु बाबू दुरङ्तन
राम राम मेन्ते
सेटेर जनको लङ्काते
राम राम मेन्ते

२५३

पयार—
रघुबरेः दुबकन
जम्बु मंत्री कजितन
निअ कजि अञ् दोञ् कजितन्
अङ्गद हनुमान
सोबेन बीरते अकिङ् मरङ् जन्
इनमेन्ते अकिङ् सरदार जन्

आए ओमोपे हो, सोबेन बीर को निअ कजि
जे कजि ते हिअकन एन् कजि
महाप्रभु हुकुमन्ते अञ्दोञ् कजितन्
अङ्गद हनुमान
सोबेन् बीरते अकिङ् सुबजन्

सेनो अबु हो, लङ्कापुरी लड़ाई मेन्ते
सम्पोड़ेन्पे तबु सिङ्गरेन्पे
हरिअबु मगिअबु दिसुम् अबोम्ते

कोई-कोई वीर उछल रहा है,
कोई-कोई एक दूसरे को (हाथ में) धरा हुआ है।
राम-राम कहते हुए
सभी एक साथ नाच रहे हैं,
राम-राम कहते हुए।

रामायण में (जो कुछ) लिखा हुआ है,
(उसी को) बुदु बाबू गा रहे हैं।
राम राम कहते हुए
वे (वीर) लंका को पहुँच गये,
राम राम कहते हुए।

२५३

श्रीराम रघुवर बैठे हुए हैं
(और) मन्त्री जामवन्त कह रहे हैं—
मैं यह बात बता देना चाहता हूँ
(कि) अंगद और हनुमान्
सभी वीरों में श्रेष्ठ निकले,
इसलिए वे दोनों ही सरदार बने।

सभी वीर यह बात सुन लें।
जिस बात के लिए हम आये हुए हैं
महाप्रभु की आज्ञा से मैं वही कह रहा हूँ।
अंगद और हनुमान्
सभी वीरों में वे मूल निकले।

(अब) हम लंकापुर को लड़ाई करने के लिए चलेंगे।
तुम सब तैयार हो जाओ और सज जाओ,
हम उस (रावण) को देश से बाहर मार भगायेंगे।

अङ्गद हनुमान
सोबेन् बीरते अकिङ् सुबजन्

खुसजन हो, सोबेन् बीरको अएओम्ते
खुड़िल्तन को रसिकते
दोल दोल दोलबुमेन्ते मोसते बिरिद्जन
अङ्गद हनुमान
सोबेन् बीरते अकिङ् सुबजन्

कजितनएः हो, बुदु बाबू दुरङ्ते
हरिअबु दिसुम् अनोम्ते
दलिअबु मगिअबु सोबेन् होन् होपोन्ते
अङ्गद हनुमान
सोबेन् बीरते अकिङ् सुबजन्

२५४

जम्बु बानेः कजितन
हतु मुलि कबु सेन
एल रे दोल रे
लङ्कापुरी कठिनन् दिसुम् दो

असुर् तेगे दिसुमन
रावन राजाएः राजाकन
एल रे दोल रे
बोङ्ग बुरु कको मनतिङ् दो

सदोम् उरिः होड़ो गड़ि
ओड़ोः मेरोम् केड़ा मिड़ि
एल रे दोल रे
सोबेन् ज़िलु सोबेन् को जोम्तन दो

अंगद और हनुमान् ,
सभी वीरों में वे मूल निकले ।

यह बात सुनकर सभी वीर प्रसन्न हुए
(और) खुशी से उछलने लगे ।
चलो, चलो, कहते हुए वे एक साथ उठे ।
अंगद और हनुमान् ,
सभी वीरों में वे मूल निकले ।

(यही बात) बुदु बाबू गीत में कह रहे हैं,
हम इस (रावण) को देश से बाहर करेंगे।
छोटे-बड़े मिलकर हम उसे मारेंगे, काटेंगे ।
अंगद और हनुमान् ,
सभी वीरों में वे मूल निकले ।

२५४

(मन्त्री) जामवन्त कह रहे हैं
(कि) हम गाँव के नजदीक नहीं जायेंगे ।
हे भाई, हे भाई,
लंकापुरी बहुत भयानक देश है ।

वह असुरों से ही भरा हुआ है
(और) रावण उसका राजा है ।
हे भाई, हे भाई,
वे पूजा-पाठ नहीं करते।

घोड़ा, बैल, मनुष्य, बन्दर
और बकरी, भैंस और भेड़
हे भाई, हे भाई,
हर प्रकार का मांस वे खाते हैं ।

बुदु बाबुइ कजितन
सोबेन बीर को गोसोजन
एल रे दोल रे
जोतो गड़ि हपे गिड़िन् जन् दो

२५५

पयार—
भगवानेः कजितन
इसु दिन् बु होबजन
असुर दुसमान को कको लेलोः तन्
इलि जिलुको जोम् तन्
निद सिङ्गिको बुलकन्
अबु हिअकनः कको इतुअन्

रंग—
अङ्गद बीरेः दुबकन
जम्बु मंत्री कजितन
बाबू सम्पोड़ेन् मे
समोड़ोम् लङ्कापुरीते जू हो सेनोः मे
बाबू अम्हो सेनोः मे

इसुदिन् बु होबजन
जेतए कको इतुअब
बाबू सम्पोड़ेन् मे
राजा दोरोजाते एन्ते सेनोः मे
बाबू अम् हो सेनोः मे

सीता देबी ओकोरिअ
मेनः इअ चि बङ्ग इअ
बाबू सम्पोड़ेन् मे

बुदु बाबू कहते हैं
(कि यह बात सुनकर) सभी वीर डर गये।
हे भाई, हे भाई,
सभी बन्दर बिलकुल चुप हो गये।

२५५

भगवान् (श्रीराम) कह रहे हैं
(कि) हमारे आये बहुत दिन बीत गये,
(फिर भी) बेहूदे असुर दिखाई नहीं देते।
मांस-मदिरा खाते हैं,
दिन-रात मतवाला बने रहते हैं।
हमारे यहाँ आने का इन्हें पता तक नहीं है।

वीर अंगद बैठा है
(और) मन्त्री जामवन्त कह रहा है।
हे बाबू, तैयार हो जाओ।
तुम सोने की लंकापुरी को जाओ,
हे बाबू, तैयार हो जाओ।

हमलोगों के आये बहुत दिन हो गये,
(किन्तु) इस बात को कोई भी नहीं जानता।
हे बाबू, तैयार हो जाओ,
तुम राजा के दरवाजे पर हो आओ।
हे बाबू, तैयार हो जाओ।

सीतादेवी कहाँ है ?
है या नहीं है ?
हे बाबू, तैयार हो जाओ।

अपन् जोतो कजि कुड़िको कुलि मे
बाबू अम् हो सेनोः मे

बुदु बाबू दुरङ्तन
अङ्गद बीरेः सेनोः जन
बाबू सम्पोड़ेन् मे
एन्रेअः नीला खेला सोवेन् लेले मे
बाबू अम् हो सेनोः मे

२५६

पयार—
अङ्गद बीरेः सेनोःजन
लङ्कापुरीः सेटेरजन
होन् कुड़िको बोरोते निरतन्
मरङ् होड़ोको कजितन
ओड़ोः गड़ि हिजुः लेन
राजा दोरोजा तेः सेनोःतन्

रंग—
जे गड़ि हिजुःलेन
लङ्कापुरीः ओण्डोरकेन
एन गड़ि ओडोएः हिअकन
दो भइ दोबु लेल
राजा दोरोजारेः दुबकन्

ओकोरे होएः चङ्किकेन
निमिन् दुर्तेः हिअकन
गड़ि जति कको बोरोतन्
दो भइ दोबु लेल
राजा दोरोजा रेः दबकन्

अपनी बातों का पता स्त्रियों से लगाओ।
हे बाबू, तैयार हो जाओ।

बुदु बाबू गा रहे हैं
(कि) वीर अंगद चले गये।
हे बाबू, तैयार हो जाओ,
तुम वहाँ की लीला-कौतुक देख आओ।
हे बाबू, तैयार हो जाओ।

२५६

वीर अंगद चला गया,
वह लंकापुरी पहुँच गया।
स्त्रियाँ और बच्चे डर के मारे भाग चले।
बड़े लोग कह रहे हैं,
(कि) बन्दर फिर आया है,
(और) राजा के दरवाजे में जा रहा है।

जो बन्दर (पहले) आया था
(और) लंकापुरी को जला गया था,
वही बन्दर फिर आया है।
हे भाई, चलो, देखें,
वह राजद्वार पर बैठा हुआ है।

वह कहाँ से उछला था
(कि) हमारे देश में पहुँच गया।
बन्दर की जाति बड़ी निडर होती है।
हे भाई, चलो, देखने चलें,
वह राजद्वार पर बैठा हुआ है।

सीतादेबीः अउ तःइअ
नेसोकनेः चिकबुअ
सोबेन् होड़ोको निअगे जितन्
दो भइ दोबु लेल
राजा दोरोजा रेः दुबकन्

अङ्गद बीरेः दुबकन
बुदु बाबू दुरङ्‌तन
बोरो बोरोते होड़ोको हिजुःतन्
दो भइ दोबु लेल
राजा दोरोजा रेः दुबकन्

२५७

पयार—
मंदोदरी अयुम्‌केन
अंगद बीरेः हिअकन
होड़ो गड़िते दिसुम पेरेः जन
निअ कजि कुलि मेन्ते
सेनोः तनएः राजा तः ते
मंदोदरी रानी बिन्तीतन

रंग—
रावण राजा बीर दुबकन
मंदोदरी रानी बिन्तीतन
अहो प्रभु गोम्के लंकेसर
निअ कजि प्रभुञ् अयुमन
इन कजि गोम्केञ् हिअकन
कुड़म् रोओड़तन कजि अयुम्‌ते
हिअकनएः राम लंकाते
सीता सती देबी पिच ते

वह (रावण) जो सीता देवी को लाया,
(इसके लिए) इस बार (यह बन्दर) क्या करेगा ?
सभी लोग इसी की चर्चा कर रहे हैं।
हे भाई, चलो, देखने चलें,
वह राजद्वार पर बैठा हुआ है।

वीर अंगद बैठा हुआ है।
बुदु बाबू कह रहे हैं,
(कि) लोग डरते-डरते आ रहे हैं।
हे भाई, चलो, देखने चलें,
वह राजद्वार पर बैठा हुआ है।

२५७

(जब) मन्दोदरी ने सुना
(कि) वीर अंगद आया हुआ है।
(और) नर-वानरों से देश भर गया है।
(तब) इस बात को पूछने के लिए
वह राजा (रावण) के पास जाती है
(और) रानी मन्दोदरी विनती करती है।

वीर रावण राजा बैठा हुआ है
(और) रानी मन्दोदरी विनती कर रही है—
हे प्रभु लंकेश्वर !
मैंने यह बात सुनी है।
इसी बात को कहने के लिए आई हूँ।
इस बात को सुनकर मेरी छाती सूख रही है !
(कि) राम लंका आये हुए हैं
और सती सीता की खोज कर रहे हैं।

राम लखन तः ते लंकापति
इति तुकाइअलङ् कुलवती
निअ कजिगोम्के अञ्दोञ् बिन्तीतन
कलङ् प्रभु एपरेङ
योद्धा वीर को हिअकन
जी हो एकेलतन कजि अतुम्ते
हिअकनएः राम लंकाते
सीता सती देव पिच ते

अएः हेके श्री भगवान्
अएअः नतुम् रघुवर राम
बोङ्ग, होड़ो, बिङ् सोबेन् को इतुअन
सोर्गो मोञ्चो पाताल दिसुम्
जोप तन् को राम नुतुम्
अएः खुशतन बिन्ती भगति ते
हिअकनए राम लंकाते
सीता सती देबी पिच ते

नलनील वीर जम्बुबान्
जोतो गड़ि को पेरेःअकन्
अङ्गद बीर सिङ् दुअर रेः दुबकन्
बुबु बाबू तबु दुरङ्तन्
लङ्का ओण्डोर गड़ि रुअड़कन्
होड़ोको निर्तन् नुतुम् अए ओम्ते
हिअकनएः राम लङ्काते
सीता सती देबी पिचते

२५८

रावन राजाएः लन्दकेन
लन्द लन्दनेः कजितन

हे लंकापति, राम-लखन के पास
हम उस कुलवन्ती को पहुँचा दें ।
हे स्वामी, मैं इसी बात की विनती कर रही हूँ —
(कि) हम उनसे झगड़ा नहीं करेंगे ।
बड़े-बड़े वीर योद्धा आये हैं ।
यह बात सुनकर हृदय काँप रहा है ।
राम लंका आये हुए हैं
और सती सीता की खोज कर रहे हैं ।

वे स्वयं प्रभु भगवान् हैं
(और) उनका नाम रघुवर राम है ।
देवता, नर और नाग सभी इस बात को जानते हैं ।
स्वर्ग, पाताल और दुनिया के लोग
उनका नाम जपते हैं ।
वे भक्ति-वन्दना से खुश होते हैं ।
राम लंका आये हुए हैं
(और) सती सीता की खोज कर रहे हैं ।

नल नील और वीर जामवन्त
सभी बन्दर (लंका में) भरे हुए हैं ।
वीर अंगद सिंहद्वार पर बैठा है ।
बुदु बाबू गा रहे हैं
(कि) लंका जलानेवाला बन्दर फिर आया है ।
लोग उसका नाम सुनकर ही भाग रहे हैं ।
राम लंका आये हुए हैं
और सती सीता की खोज कर रहे हैं ।

२५८

रावण राजा हँसा
(और) हँसते-हँसते कहने लगा—

मन्दोदरी प्रम्दोम् बोरोतन्
अञ् दोञ् धन्दजन्
ओको वीर लङ्कातेः हिअकन्

नलनील जोतो गड़ि
जोम्तनको बकरकुड़ि
इन्कु चि रे बीरेम् कजितन्
अञ्दोञ् छन्द जन्
ओको बीर लङ्कातेः हिअकन्

होड़ो गड़ि सदोम् मिडि
इन जिलुलोःञ् जोम्तन् मडि
दिनकि हो अम्गेम् उतुतन्
अञ्दोञ् छन्द जन्
ओको बीर लङ्कातेः हिअकन्

बुदु बाबू बिन्ती जःइअ
कुड़ि कजि गोम्के हेके निहन
कुड़ि कजि तेचिम् बोरोतन
अञ् दोञ् छन्द जन्
ओको बीर लङ्कातेः हिअकन्

२५६

पयार—
मन्दोदरी रानी कजितन
रावन राजाएः ओङ्कजन
कजि अएओम्ने अञ् होञ् कुङ्किजन्
जे प्रभु जोनोम् तःइअ
होड़ो मेन्तेः कजिअःइअ
ठोर केदञ् मोउत सेटेर जन्

मन्दोदरी, तुम जो डर रही हो
इस बात से मुझे आश्चर्य हो रहा है।
कौन वीर लंका में आया है ?

नल-नील जितने बन्दर हैं,
वे बेर खाते हैं,
क्या तुम उन्हीं को वीर कहती हो ?
मुझे आश्चर्य हो रहा है
(कि) कौन वीर लंका आया हुआ है ?

आदमी, बन्दर, घोड़े और भेड़
इन्हीं के मांस से तो हम भात खाते हैं।
प्रतिदिन तुम्हीं तो (उन्हें) पकाती हो।
मुझे आश्चर्य होता है
(कि) कौन वीर लंका आया हुआ है ?

बुद्धु बाबू (रावण से) कह रहे हैं
कि हे प्रभु, यह औरतों की बात है।
क्या तुम औरतों की बातों से डरते हो ?
मुझे आश्चर्य होता है
(कि) कौन वीर लंका में आया हुआ है ?

२५६

रानी मन्दोदरी कह रही है
(कि) रावण राजा पागल हो गया।
(उसकी) बात सुनकर मैं पागल हो गई।
जिस प्रभु ने उसे जन्म दिया,
उसी को वह मनुष्य कहता है।
मैं जान गई कि (उसकी) मौत आ गई है।

रंग—

बेद रे ओलकन

एन्दिन् सेटेरजन

इनते हिअतिङ्ते अज्दोज् बलएतन्

निद सिङ्गिः मेद्ते मेद्दः जोरोतन्

पयार—

रावन राजाए खोंसजन

सिङ् दुअर् रेः दुबजन

गेल मोचते मोसतेः कजितन्

मोलोङ् तबु फलाओजन

होड़ो गड़ि को पेरेःअकन

सीता सती देबी इदिको हिअकन

रंग—

काली देवी सत्या जन

इनते को हिअकन

अहो दुण्डिनपे सोबेन् होन् हग

अहो जोम्कोअबु होड़ोगड़ि सोबेन् तेग

पयार—

मेघनाथ मैंसासुर

ओड़ोः जोतो बीर असुर

नुतुम् नुतुम् बीर को हुण्डिन् जन्

लेक्तन को समा रे

अङ्गद बीर तल रे

लङ्कापति दुबकन् पन्ति रे

रंग—

ओकोए हेके मेन्ते

कपजितन को हयेते

(जो) वेद में लिखा है,
वह दिन पहुँच गया।
इसी चिन्ता से मैं आफत में पड़ी हूँ।
रात-दिन आँखों से आँसू झर रहे हैं।

रावण राजा क्रुद्ध हो गया
और सिंहद्वार पर बैठ गया।
वह दसों मुख से एक साथ कहने लगा —
हमलोगों का भाग्य खुल गया
(कि) आदमी और बन्दर भर गये हैं,
जो सीता सती को ले जाने के लिए आये हैं।

काली देवी सत्य निकली,
इसीलिए वे आये हैं।
सभी भाई-बन्धु जमा हो जाओ,
हम सब मिलकर आदमी और बन्दरों को खायेंगे।

मेघनाथ महिषासुर
और सभी राक्षस-वीर
नामी-नामी वीर जमा हो गये।
वे सारा दृश्य देख रहे हैं।
अंगद वीर बीच में (बैठा) है
और लंकापति कतार में बैठा है।

यह बन्दर 'कौन है' कहकर,
(लोग) फुसफुसाकर पूछ रहे हैं।

ओकोरेनिः ओकोए हेके कोतेः हिअकन
ओकोए हेके लंकापति पन्ति रेः दुबकन

पयार—

अङ्गद बीरेः बिरिद्‌जन
बिरिद्‌के अतेः कजितन
ने सभारेन् जोतोको अएओमेपे
सोबेन् बीर असुर्‌को
अञः कटतो को
दिसुम् अतोम्‌ते तुल् गिड़ि तपे

रंग—

बुदु बाबू कजितन
जूइआ बिरिह पे
निअरेगे लोलोअ पेड़ेः तपे
बोरे जूइआ बिरिहपे

२६०

सोबेन् बीरको हुण्डिन् जन
अको अको तको कपजितन
गड़ि कट लेल्‌मेद् रे
चिक लेक सबेअबु समा रे
गड़ि कट लेलेमेद् रे

रावन राजा गोम्‌के तबु
निअ कजि कुलीअबु
गड़ि कट लेल् मेद् रे
अञ् दो कञः लन्दाञको सभा रे
गड़ि कट लेलेमेद् रे

कहाँ से आया है, कहाँ आया है,
कौन है, जो लंकापति की पाँति में बैठा है।

अंगद वीर उठा
और उठकर कहने लगा--
इस सभा के सभी लोग सुनें --
हे वीर राक्षसो !
तुम मेरे हाथ-पैर
इस देश से बाहर फेंक दो।

बुदु बाबू कहते हैं—
राक्षसो, जाओ उठो,
इसी में तुम्हारी शक्ति दिखाई देगी,
(इसलिए) जाओ, जल्दी जाओ।

२६०

सभी वीर जमा हो गये,
वे आपस में बातचीत करने लगे—
बन्दर के पैर को देखते हुए
हम सभा में किस तरह पकड़ेंगे।
बन्दर के पैर को देखते हुए (कैसे पकड़ेंगे)।

रावण राजा, जो हमारा स्वामी है,
उससे यह बात पूछेंगे।
बन्दर के पैर को देखते हुए,
'मैं नहीं छूता, सभा में हँसी होगी।'
बन्दर के पैर को देखते हुए (कैसे पकड़ेंगे)।

जः लेरे गड़िजति
सेनोअ तबु जतिपति
गड़ि कट लेल्मेद् रे
कको दुब जति कुपुल् पन्ति रे
गड़िकट लेल्मेद् रे

बुदु बाबू कजितन
कजि तबु हेंके इन
गड़िकट लेल्मेद रे
बिचारेपे मोने होड़ो मोनेरे
गड़िकट लेल्मेद् रे

२६१

रावन राजाएः हुकुमकेन
मेघनाथ बीर बिरिद्जन
कट तुल कको दड़िजन्
गिड़ः तेको हेन्दे गिडिजन्
कट तुल् कको दड़िजन्

सोबेन् बीर को तुल्केन
जेतए कको दड़िजन्
कट तुल् कको दड़िजन्
सोबेन् बीर को गोसो गिड़िजन्
कट तुल् कको दड़िजन्

लङ्कापतिः लेल्तन
मोनेरेः बिचारतन
कट तुल् कको दड़िजन्
मोनेरे अङ्गद लन्दतन्
कट तुल् कको दड़िजन

बन्दर के पैर को (जानते हुए यदि) पकड़ेंगे,
तो हमारी जाति नष्ट हो जायगी।
बन्दर के पैर को देखते हुए (यदि पकड़ेंगे),
तो जातिवाले साथ नहीं बैठेंगे ।
बन्दर के पैर को देखते हुए (कैसे पकड़ेंगे) ?

बुदु बाबू कहते हैं
(कि) बात तो यही है ।
बन्दर के पैर को देखते हुए
पाँच आदमी मिलकर विचार करो ।
बन्दर के पैर को देखते हुए (किसे पकड़ेंगे) ?

२६१

रावण ने आज्ञा दी,
(तब) मेघनाथ वीर उठ खड़ा हुआ।
(लेकिन) कोई भी पैर नहीं उठा सका ।
सभी का चेहरा लाज से काला पड़ गया,
कोई भी पैर नहीं उठा सका ।

प्रत्येक वीर ने (उठाने की) कोशिश की,
लेकिन कोई भी समर्थ नहीं हुआ ।
कोई भी पैर नहीं उठा सका ।
सभी वीर बिलकुल मुरझा गये ।
कोई भी पैर नहीं उठा सका ।

लंकापति यह देख रहा है
(और) मन में सोच रहा है
(कि) कोई भी पैर नहीं उठा सका ।
अंगद मन में हँस रहा है ।
कोई भी पैर नहीं उठा सका ।

सोबेन् बीर को चबजन
लङ्कापति बिरिद्‌जन
कट तुल् कको दड़िजन्
बुदु बाबू दुरङ् बइतन्
कट तुल् कको दड़िजन्

२६२

पयार—
रावन राजाए मायाकेन
रावन तेको पेरे:अकन
अङ्गद बीर मोन्रेः विचारतन्
अएः हेके मायाधर
इतुअनको देसान्तर
उपुन्बेद रे इनगे ओलकन्

अङ्गद बीरेः कजितन
इसु रावनेञ् लेल्तन
लेल्तेञ् धन्दजन्
ओकोए हेके अनः अब लङ्का महाराज
बाबु अहो दुबुराज

मन्दोदरीः अणदिकेन
अएःगेञ् नमतन
ओको सइ रेः दुबकन्
जोतो रावनेञ् लेल्तन हेन्दे हेन्दे साज
बाबू अहो दुबुराज

नेइमेन्ते कञ् ठोओरन
मोएओद् रावनेञ्र इतुअन
बेदरे ओलकन
ओकोतेको हिअकन चिकन् कनिकाज
बाबू अहो दुबुराज

सारे वीर समाप्त हो गये,
(तब) लंकापति स्वयं उठ खड़ा हुआ।
कोई भी पैर नहीं उठा सका।
बुदु बाबू गीत बना रहे हैं
(कि) कोई भी पैर नहीं उठा सका।

२६२

रावण राजा ने माया फैलाई,
(लगा कि) सारी लंका रावण से ही भरी हुई है।
वीर अंगद मन में सोचता है
(कि) यही मायावी है,
(जिसे) सारी दुनिया जानती है।
(इसी के विषय में) चारों वेदों में लिखा हुआ है।

वीर अंगद कहता है
(कि) मैं बहुत-से रावण देखता हूँ।
देखकर आश्चर्य में पड़ा।
तुम्हारा पिता लंका महाराज कौन है,
हे बाबू दुबराज ! (मुझे बता दो)।

(जिसने) मन्दोदरी से शादी की है,
मैं उसी को ढूँढ़ रहा हूँ।
वह किधर बैठा है ?
मैं सभी रावणों को काले पहिरावे में देख रहा हूँ।
हे बाबू दुबराज ! (मुझे बता दो)।

मैं यह रहस्य नहीं जानता,
मैं तो एक ही रावण को जानता हूँ,
(जिसके बारे में) वेद में लिखा है।
(इतने रावण) कहाँ से आये हैं, क्या काम है ?
हे बाबू दुबराज ! (मुझे बता दो)।

मोएओद् एङ्ग अनेक अपु
अञ्दोञ् लेल्तन्
बुदु बाबू कजितन
चिकलेक सुसरतन निमिनङ् धिराज
बाबू अहो दुबुराज

२६३

रावन राजाएः कजितन
अञ् ओकोए कएः ठोओरन
इनते अनएः कजितन्
बिरिद् मे ग मेघनाथ
सबिःमे ग मेघनाथ
हुरङ् गिड़ि तइमे
गड़ि बीरेः बइअकन्

अएः हेंके गड़िजति
बनोःतको जतिपति
हतुरे जोतोको सुसुन्तन्
बिरिद्मे ग मेघनाथ
सबिः मे ग मेघनाथ
हुरङ् गिड़ि तइमे
गड़ि बीरेः बइअकन्

ओड़ः दुअर कको बइअन
बिर बिर को होनोर्तन
दरु रेको चङ्किबड़न्तन्
बिरिद्मे ग मेघनाथ
सबिःमे ग मेघनाथ
दुरङ्गिड़ि तइमे
गड़ि बीरेः बइअकन

एक माँ और अनेक पिताओं को
मैं यहाँ देख रहा हूँ।
बुदु बाबू कहते हैं कि
एक रानी इतने राजाओं की सेवा कैसे करती है ?
हे बाबू दुबराज ! (मुझे यह बता दो)।

२६३

रावण राजा कहता है
(कि अंगद) यह नहीं जानता कि मैं कौन हूँ,
इसलिए ऐसा कहता है।
हे मेघनाथ, उठो,
हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो,
(और) उठाकर फेंक दो।
बन्दर वीर बनने चला है !

यह तो बन्दर जाति का है,
जिसकी जाति-पाँति का ठिकाना नहीं है,
(जो) गाँव-गाँव नाचते रहते हैं।
हे मेघनाथ, उठो,
हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो,
(और) उठाकर फेंक दो।
बन्दर वीर बनने चला है !

ये घर-द्वार तो बनाते नहीं,
जंगल-जंगल घूमा करते हैं,
पेड़ पर उछलते-कूदते रहते हैं।
हे मेघनाथ, उठो,
हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो,
(और) उठाकर फेंक दो।
बन्दर वीर बनने चला है !

हटिङीअबु ओड़ः ओड़ः
जोमिअबु होन्गण
बुदु बाबू निअ कजितन
बिरिद्मे ग मेघनाथ
सबिःमे ग मेघनाथ
हुरङ् गिड़ि तइमे
गड़ि बीरेः बइअकन्

२६४

अङ्गद बीरेः तलिकेन
रावन राजाएः तुबिद्जन
बोःरे मुकुट तलरे गिड़िजन्
अङ्गद बीर हलङ् हलङ् हुरङ्गिड़ितन्
रामदल बीर को लेल्तन्

होएओ लेक सड़ितन
बिजिर् बिजिर् जुलेतन
रामसभा तल रे उइउःजन्
चिअ चिकनः हेके मेन्ते कजितन्
लेल्ते बीर को छन्द जन्

सोबेन् बीर को भकुअओजन
बिभीसनेः कजितन
निअकजि अज्दोज् इतुअन्
रावनराजा अङ्गद बीरलोः अन्रे लड़इतन्
टुपि नेरे उइउः जन्

सोबेन् बीरको लेल्तन
एब सोमए रेः सेटेर्जन
अङ्गद बीर राम होएः जोअरतन्

हम इसे घर-घर बाँटेंगे
(और) सभी मिलकर खायेंगे।
बुदु बाबू यही कहते हैं
(कि) हे मेघनाथ, उठो,
हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो,
और उठाकर फेंक दो।
बन्दर वीर बनने चला है !

२६४

वीर अंगद ने ताल ठोका,
रावण राजा मुँह के बल गिर पड़ा
(और) सिर के मुकुट जमीन पर बिखर गये।
वीर अंगद उन्हें उठा-उठाकर फेंक रहा है।
राम-दल के वीर यह देख रहे हैं।

वे मुकुट हवा की तरह बज रहे हैं
(और) झिलमिल-झिलमिल चमक रहे हैं।
वे राम की सभा में गिरे।
(लोग) कहने लगे, कौन-सी चीज है ?
वीर देखकर चकित होने लगे।

(जब) सभी वीर आश्चर्य में पड़े,
(तब) विभीषण कह रहे हैं—
मैं यह रहस्य जानता हूँ
कि अंगद वहाँ रावण से लड़ रहा है
(और) उसकी टोपी यहाँ गिरी।

सभी वीर यह देख रहे हैं।
उसी समय वह (अंगद) वहाँ पहुँचा ;
वीर, अंगद राम को प्रणाम कर रहा है।

अन् रेअः समाचारको जोतोएः कजितन्
बुदु बाबू दुरङ्तन्

२६५

बिर कन्दर उनुणु केते
राड़ दोड़ सोम् केते
ओते अड़ि बु बड़केद
चिक मेन्ते
रेङ्गेः तनबु आदिवासी को
चिक मेन्ते

कमि उदम् सियुः चलुः
चिमिन् कोस्टोबु नम जद
केड़ उरिः तेबु कमितन
चिक मेन्ते
रेङ्गेः तनबु आदिवासी को
चिक मेन्ते

बब सुरगुञ्ज होड़ेः
रम्बड़ मसुरी खसारी
चिमिन् गुन तबु होबतन
चिक मेन्ते
रेङ्गेः तनबु आदिवासी को
चिक मेन्ते

बै दिसुम्रे बलदेव सिंह
लेकन् दोण्डो मुण्डा को
सीधा सादा गे मेनःबुअ
एनमेन्ते
रेङ्गः तनबु आदिवासी को
एनमेन्ते

और वहाँ का सारा समाचार कह रहे हैं।
बुदु बाबू यही गीत गा रहे हैं।

२६५

जंगल और कन्दराओं को धँसाकर
(और) नदी-नालों को बराबर करके
हमने जमीन और डाँड़-मेड़ बनाया।
(लेकिन न जाने) किस कारण से
हम आदिवासी भूखे हैं,
(न जाने) किस कारण से।

काम, उद्यम और जोतने-कोड़ने में
हम कितना कष्ट पाते हैं।
हम काड़ा और बैलों की मदद से काम करते हैं।
(लेकिन न जाने) किस कारण से
हम आदिवासी भूखे हैं,
(न जाने) किस कारण से।

श्वान सुरगुजा, कुल्थी,
उरद, मसूर और खेसारी,
हम कितना-कितना पैदा करते हैं!
(फिर भी न जाने) किस कारण से
हम आदिवासी भूखे हैं,
(न जाने) किस कारण से।

इस देश में बलदेव सिंह की ही तरह
हम मुण्डालोग अज्ञान हैं;
और सीधे-सादे हैं।
इसी कारण से
हम आदिवासी भूखे हैं,
इसी कारण से।

२६६

हतु हतु टोला टोला
बिरसा कजि बीरबलङ्
बिरसा कजि लेटेम् लुटुइ:तन
बिरसा कजि रनुअन्गेअ

ने दिसुम् तल रे हो
सेणते सम्पोड़ोन्पे
ओल् पढ़ओते दोड़ोमो सिङ्गरेन्पे
बिरसा कजि हेड़ेमन्गेअ

ने कलिकाल रे हो
कलते दिसुम् टेकओअकन
कल सेणते दिसुम् सिङ्गरकन
बिरसा कजि रे अड़न्गेअ

बलदेव सिंह दोए: कजितन
सेणते होड़ोमो पेरे:अकन
मुण्डा जातिरे अए:गे तयोमकन
बिरसा कजि गोनोङन्गेअ

२६७

राँची रे डिपु मेन:
सयोबेको तइन्तन
दइ गो, दइ गो
असम् दिसुम् सेनो: सनतन्रे

रेलगाड़ी हिजु:लेन
होयो लेक दौड़िजद
दइ गो, दइ गो
असम् दिसुम् ने:गे तेब:तन्रे

२६६

गाँव-गाँव (और) टोले-टोले में
बिरसा की वीरता की बात,
बिरसा की मीठी-मीठी बात
दवा बन गई है।

इस देश के बीच
विद्या से अपना साज करो।
पढ़-लिखकर शरीर का श्रृंगार करो।
बिरसा की (यह) बात सुखद लगती है।

इस कलिकाल में
कल (मशीन) से देश टिका हुआ है।
मशीन की बुद्धि से देश का श्रृंगार हुआ है।
बिरसा की बात शीतल करनेवाली है।

बलदेव सिंह कहता है,
मैं अज्ञान से भरा हूँ।
मुण्डा जाति में पीछे पड़ा हूँ,
बिरसा की बात मूल्यवान् है।

२६७

राँची में डिपू है
(वहाँ) साहब लोग रहते हैं
हे दीदी, हे दीदी
(मुझे) आसाम देश जाने की इच्छा होती है।

रेलगाड़ी आ गई,
हवा के समान दौड़ रही है।
हे दीदी, हे दीदी
आसाम देश पहुँच रहा है।

असम् दिसुम् तेबः लेन
हुड़िङ् ओड़ः नमजन
दइ गो, दइ गो
सेतगते कमिलङ् उड़ुः तन रे

२६८

ओको हतु कुड़िहोन्
निरे सेने गोम् सेनकद
निरेतन् मइ,
नेते दोरे होर बनोग

नेअ दो भइ बिर होर
नेअ दो मई डड़ि होर
निरेतन् मइ
नेते दोरे होर बनोग

बिर रेदो कुल मेनइ
डड़ि रेदो बिङ् मेनइ
निरेतन् मइ
नेते दोरे होर बनोग

२६९

ने हतु तल रे
गोलञ्चि बा बालेन
इएल छोकड़ी दो बाएः गुनुतन
लेल्केतेञ् दन्दगिड़िजन

कट रे दो अन्दुमेनः
मयङ् रेदो पडिअकिचिरि
पड़िअकिचिरिदो ओटङ्तन
लेल्केतेञ् दन्दगिड़िजन

आसाम देश पहुँच गया,
एक छोटा-सा मकान मिल गया।
हे दीदी, हे दीदी
सवेरा होते ही काम की चिन्ता लग गई।

२६८

हे लड़की, तुम किस गाँव की रहनेवाली हो ?
तुम रास्ते में दौड़ती हुई जा रही हो।
ओ भागनेवाली लड़की,
इस तरफ तो रास्ता नहीं है।

हे लड़की, यह जंगल का रास्ता है,
हे लड़की, यह डाड़ी का रास्ता है।
ओ भागनेवाली लड़की !
इधर तो रास्ता नहीं है।

जंगल (के रास्ते) में बाघ है,
(और) डाड़ी (के रास्ते) में साँप है।
ओ भागनेवाली लड़की !
इधर तो रास्ता नहीं है।

२६९

इस गाँव के बीच
गुलाइची का फूल खिला हुआ है।
एक छोकरी फूल गूँथ रही है।
उसे देखकर मुझे विस्मय हो रहा है।

उसके पैर में पैरी है
और कमर में पड़िया साड़ी है।
पड़िया साड़ी फहर रही है,
उसे देखकर मुझे विस्मय हो रहा है।

होटोः रेदो मुंग मेनः
बोओःरेदो बा मेनः
सुपिद्चेतन् बा बियुरकन
लेल्केतेञ् दन्द गिड़िजन

२७०

लेलेमे सामन्त हले
ने दशा सङ्कट काले
अञ्दोञ् चिक जन
मरङ् लेक चःलोम्मेनः
मिलि मिलितन
चिकन् इपिल् तुरकन

चिकनःते चिकजन
पाछे धर्म हानिजन
अञ्गे सिदजन
ग्रहेर पीरा होगकन
फण्ड मृत्युजन
चिकन् इपिल् तुरकन

ओकोनेअ सेनोःअबु
चिकलेक बञ्चओःअबु
सिङ्बोङ्गः ध्यान
नुतुमेपे यह राम राम
नुतुम्ते मरङ्
चिकन् इपिल् तुरकन

अहो हरि अहो बाबा
निद सिङ्गि अम्गेञ् सेबा
भरोसा अमगः

उसके गले में मूँगे की माला है
और सिर पर फूल (खोंसे) है।
जूड़े के चारों ओर फूल भरे हैं,
उसे देखकर मुझे विस्मय हो रहा है।

२७०

हे सामन्त, देखो,
इस संकट-काल में यह दशा है !
मैं तो क्या हो गया।
लम्बी पूँछवाला—
झिलमिलाता हुआ
कौन-सा तारा उगा हुआ है ?

क्या से क्या हो गया ?
शायद कोई धर्म-हानि हो गई है।
मुझे ही पहले फल भोगना पड़ा।
ग्रह की पीड़ा लगी है,
(लोगों की) मृत्यु हो रही है।
वह कौन-सा तारा उगा हुआ है।

हमलोग कहाँ जायेंगे
(और) कैसे बचेंगे ?
सिङ् बोङ्गा का ध्यान करो
और राम का नाम लो।
राम-नाम बहुत बड़ा है।
कौन-सा तारा उगा हुआ है ?

हे भगवान्, हे पिता,
हम रात-दिन तुम्हारी सेवा करेंगे।
हमें तुम्हारा ही भरोसा है।

कजितनए नवधन
अम:ले ध्यान
चिकन् इपिल् तुरकन

२७१

चिमेन्ते चिकजन
इपिल् को च:लोम्जन
एनमेन्ते सोबेन् होड़ोको विवादजन रे
ने कलोम् हाय चिकजन रे

बेस बेकार बिचार बनो:
चेतन् रेगे खींस मेन:
ओको ओको हतुरे जीको उपडतन रे
ने कलोम् हाय चिकजन रे

पुथि पञ्जी रे रकब्जन
ने कोलम् बेजञ् दृकुमेन:
ओ सिङ् बोङ्गः अब अम्गे इतुअन रे
ने कलोम् हाय चिकजन रे

हग होन्को विवाद जन
इसु ओड़ो: अतिजन
नवधन ने कलोम् बेजञ् बोरोतन रे
ने कलोम् हाय चिकजन रे

२७२

सोड़ोको दोरे बइअकन
मेणेद् अटेदकन
रेलगाड़ी एन्रे सेसेन्तन
लेल् लेल्तेञ् अकदन्दजन

नवधन कहता है—
हम तुम्हारा ही ध्यान करते हैं।
कौन-सा तारा उगा हुआ है।

२७१

क्या से क्या हो गया ?
तारों की पूँछ निकल रही है,
इसलिए सबलोग (आपस में) लड़ रहे हैं।
हाय, इस वर्ष क्या हो गया ?

लोगों को भले-बुरे का विचार नहीं है,
ऊपर क्रोध भरा हुआ है।
किसी-किसी गाँव के लोग तो जान लेने को तैयार हैं :
हाय, इस वर्ष क्या हो गया ?

पोथी-पन्नों में लिखा हुआ है
(कि) इस वर्ष बहुत दुःख है।
हे ईश्वर पिता, तुम्हीं जानते हो।
हाय, इस वर्ष क्या हो गया ?

भाई-बन्धु सब लड़ रहे हैं,
यह बात बहुत बढ़ गई है।
नवधन कहते हैं कि इस वर्ष बहुत डर लग रहा है।
हाय, इस वर्ष क्या हो गया ?

२७२

सड़क बनी हुई है
(उसपर) लोहा बिछा हुआ है।
उसी पर रेलगाड़ी चलती है।
इसे देख-देखकर मुझे आश्चर्य होता है !

जलकर्‌रे जिलिमिलि
जहाज दो चलओतन
दः चेतन्‌ रेंगे उपलकन
लेल्‌ लेल्‌तेञ्‌ अकबन्दजन

सिर्मं रेदो अपिरकल
हुहुड्‌करेः सड़ितन
चेणे लेक अपिर्‌ बिडरतन
लेल्‌ लेल्‌तेञ्‌ अकदन्दजन

टेलीग्राफ टेलीफोन
रेडियो ते कजि सेसेन्‌तन
बलदेव सिंह इपएः डोण्डो गेअ
लेल्‌ लेल्‌तेञ्‌ दन्द गिड़िजन

२७३

सेन्‌ लेनञ्‌ सिब मण्डपते
एन्‌ बोङ्गः सेबा मेन्ते
होसोड़ो कजि अहो गतिञ्‌
कहोञ्‌ इतुअन
इपएः कजिकोम्‌ कजितन
गोम्‌के बिङ्‌तेञ्‌ किरिअन
इपएः कजिकोम्‌ कजितन

होड़ोको दोरे होसोड़ो मेअ
एन चिरेम्‌ पतिअन
अमः किरिअ अहो गतिञ्‌
क होञ्‌ सेनकन
इपएः कजिकोम्‌ कजितन
गोम्‌के बिङ्‌तेञ्‌ करिअन
इपएः कजिकोम्‌ कजितन

समुद्र (में पानी) झिलमिला रहा है,
इसपर जहाज चलता है।
वह पानी के ऊपर इतराता है,
उसे देख-देखकर आश्चर्य होता है !

आकाश में हवाई जहाज
हुंकार की आवाज करता है।
चिड़िया की तरह उड़ता फिरता है,
उसे देख-देखकर आश्चर्य होता है !

टेलीग्राफ, टोलीफोन
(और) रेडियो से बात आती-जाती है।
बलदेव सिंह (कहते हैं कि वह) मूर्ख हैं,
उसे देख-देखकर आश्चर्य होता है !

२७३

मैं शिव-मण्डप गया हुआ था,
उसी देवता की पूजा के लिए।
हे प्रिय, मैं झूठी बात नहीं जानता,
नहीं जानता।
तुम व्यर्थ की शंका कर रही हो,
प्रिय, मैं साँप की कसम लूँगा,
तुम व्यर्थ की शंका कर रही हो।

लोग तुम्हें ठगेंगे,
(तो) क्या तुम उनकी बातों पर विश्वास करोगी।
तुम्हारी कसम, हे प्रिय!
मैं कहीं नहीं गया था।
तुम व्यर्थ की शंका कर रही हो।
प्रिय, मैं साँप की कसम लूँगा, ।
तुम व्यर्थ की शंका कर रही हो।

बुदु बाबू कजि तन
दिनकिहोञ् सेबातन
अम् नतिन् अहो गतिञ्
अञ् दोञ् जीदकन
इपएः कजिकोम् कजितन
गोम्के बिङ्तेञ् करिअन
इपएः कजिकोम् कजितन

२७४

करम् चण्डुः लेल्जन
इलिओग तेअर जन
अञ्लेल् हिजुःअचि कको हिजुःअ
तिसिङ्ते कको लेलोः अ
ओ न भड़ मेन्ते जेतएकको उड़ुःअ
तिसिङ्ते कको लेलोःअ

सिङ्गि हग मेनःकेअ
सेन्कोःअतेबु अगुलिअ
मेन्तेओ जेतए कको उड़ुःअ
तिसिङ्ते कको लेलोःअ
ओ न भड़ मेन्ते जेतएकको उड़ुःअ
तिसिङ्ते कको लेलोःअ

●

बुदु बाबू कहते हैं
(कि) मैं दिन रात (तुम्हारी ही) सेवा करता हूँ।
तुम्हारे लिए ही, हे प्रिय !
मैं जीवित हूँ।
तुम व्यर्थ की शंका कर रही हो
प्रिय, मैं साँप की कसम लूँगा
तुम व्यर्थ की शंका कर रही हो।

२७४

करम का महीना आ गया,
हँड़िया भी तैयार हो गया।
मुझे देखने आयेंगे या नहीं आयेंगे।
आजतक दिखाई नहीं पड़े,
इस बात को कोई नहीं सोचता।
आजतक दिखाई नहीं पड़े।

भाई लोग बहुत-से हैं
'जाकर उसे ले आवें',
यह कोई नहीं सोचता।
आजतक दिखाई नहीं पड़े,
इस बात को कोई नहीं सोचता,
आजतक दिखाई नहीं पड़े।

●

जरगा

सिङ्गितुरोः होर रे
सिङ्गि बोङ्गः सीतन दुदुगरतन[1]
चण्डुःमुलः डरे रे
चण्डुबोङ्गः खरतन कों असितन

१. गाने के समय दूसरी और चौथी पंक्तियाँ दुहराई जाती हैं और एक बोल 'हएरी' जोड़ा जाता है।

ज़रगा

सूरज उगने के रास्ते में
सूरज देवता हल जोत रहे हैं,
(जिससे) धूल उड़ रही है ।
चाँद निकलने के रास्ते में
चाँद देवता खेत बना रहे हैं,
जिससे कुहासा छाया हुआ है ।

२७५

जोनोम् कोरोम् दिपिल रेम्
अङ्गिकर तद [(२) हएरी]।
अमः नुतुम् भगोअन
निद सिङ्गिञ् अगुइअ

भेद लुतुर कट तो
मूँ मोचम् बइतःञ
मेहनतिकेनम् भगोअन
चिमिने चिमिन् दो

उम्बुलिञ्मे चतोमिञ् मे
अलोमे बगेञ
हिरञ् मे कोचोगिञ् मे
अलोमे रड़ञ

२७६

सुकन् बुरु होरते
सङ्ग हो दिले दोङ्गोब
मरङ् सिलि डरे ते
सरु हो रिसि रिसिअ

सङ्ग हो दिले दोङ्गेब
सङ्ग हो उरलङ् मे
सरु हो रिसि रिसिअ
सरु हो पटुबलङ् मे

सङ्ग होञ् उरेकेन्
सङ्ग हो कगे ते बगो
सरु होञ् पटुब्केन
सरु हो बगे ते बगो

२७५

(हे भगवन्,) जन्म देने के समय ही
हमको स्वीकार कर लिया।
हे भगवन्, हम तुम्हारा नाम
रात-दिन लेते रहेंगे।

(हे भगवन्,) तुमने आँख, कान, पैर, हाथ,
नाक और मुँह बनाया है
हे भगवन्, तुमने परिश्रम किया,
कितना-कितना परिश्रम किया !

हमको अपनी छाया में रखो
(हे भगवन्,) हमको छोड़ मत दो।
तुम हमारी देखभाल करो
तुम हमको मत छोड़ो।

२७६

सुकन पहाड़ के रास्ते पर
शकरकन्द की लम्बी-लम्बी लताएँ लहरा रही हैं।
बड़े पहाड़ के रास्ते पर
सारू की छितरी पत्तियाँ गनगना रही हैं।

शकरकन्द (जो) लहरा रहा है,
(उस) शकरकन्द को कोड़ लो।
सारू जो गनगना रहा है,
(उस) सारू को उखाड़ लो।

मैं शकरकन्द कोड़ रहा था,
लेकिन शकरकन्द नहीं मिलता।
मैं सारू उखाड़ रहा था,
लेकिन सारू नहीं मिलता।

२७७

लुबुज बुरु चेतन् रे
ने लुनुकुइः जोनोः दो
जन्त बड़े लतर् रे
ने लमः केओः दो

ओकाएगे जोः तेअ
ने लुनुकुइः जोनोः दो
चिमएगे केओःतेअ
ने लमः केओः दो

मुण्ड कोगे जोःतेअ
ने लुनुकुइः जोनोः दो
सन्तकोगे केओःतेअ
ने लमः केओः दो

२७८

नइग नइग एअङ्
ओको होड़ो गोड़ेः तिङ्गुअकन
नइग नइग अपङ्
चिमए परजा गोड़ेः जपगकन

लेलि लेलि पेन्दो गोड़े
लखि अर लछिमिकिङ् तिङ्गुअकन
चिनइ चिनइ मेन्दो गोड़े
खिति अर किरिसिकिङ् जपगकन

खड़तन रेअड़तन
लखि अर् लछिमिकिङ् एलबोलोबेन
जेरेतन लोलोतन
खिति अर किरिसिकिङ् एल सोड़ोबेन्

२७७

लुबजा पहाड़ के ऊपर
झाड़ू बनाने की लुनुकुइ (घास) है।
जनता घाटी के नीचे
घर चिकनानेवाला लामा (फल) है।

किसके झाड़ू देने के लिए है
यह झाड़ूवाली लुनुकुइ घास ?
किससे चिकनाने के लिए है
यह घर चिकनानेवाला लामा ?

यह मुण्डाओं के झाड़ू देने के लिए है
यह झाड़ूवाली लुनुकुइ।
यह सन्तालों के चिकना करने के लिए है
यह चिकनानेवाला लामा।

२७८

हे माँ, देखो तो,
कौन आदमी खड़ा है ?
हे पिता, पहचानो तो,
कौन आदमी सटा हुआ है ?

देखने से मालूम होता है,
लक्ष्मी खड़ी है।
पहचानने से मालूम होता है,
कृषि (की देवी) खड़ी है।

जाड़ा पड़ रहा है, ठण्ड पड़ रही है,
लक्ष्मी, घर के अन्दर आओ।
धूप पड़ रही है, गरमी पड़ रही है,
कृषि, घर के अन्दर आओ।

२७९

कुण्डम् रे सलन्दिरे
कदल्लेकन् कुड़िहोन् तिङ्गुअकन
कुण्डम् रे सलन्दिरे
जम्बिर लेकन् एरहोन् जपगकन

लेलि लेलि मेन्दो गोड़े
लखि अर लछिमिकिङ् तिङ्गुअकन
चिनइ चिनइ मेन्दो गोड़े
खिति अर किरिसिकङ् जपगकन

रबङ्तन रेअड़तन
लखि अर् लछिमिकिङ् एलबोलोबेन्
जेटेतन लोलोतन
खिति अर् किरिसिकिङ् एल सोड़ोबेन्

गोण दो बइअकन
लखि अर् लछिमिकिङ् एलबोलोबेन्
कोट दो बिलकन
खिति अर् किरिसिकिङ् एल सोड़ोबेन्

२८०

बुरुरेः गमलेद
अलो मइनम् उदुबेअ
बेड़ रेः रम्पि लेद
अलो मइनम् चुण्डुलेअ

अलो मइनम् उदुबेअ
मसुरिलङ् हेरेअ
अलो मइनम् चुण्डुलेअ
कलड़िलङ् परिरेअ

२७६

पिछवाड़े की पिण्डी पर
केले के समान एक स्त्री खड़ी है ।
पिछवाड़े की पिण्डी पर
जम्बीरा के समान एक स्त्री खड़ी है ।

देखते-देखते पता चला
(कि) लक्खी (लक्ष्मी) खड़ी है ।
पहिचानते-पहिचानते मालूम हुआ
कि खेती कृषि (की देवी) खड़ी है ।

शीत और ठण्ड पड़ रही है,
हे लक्खी (लक्ष्मी), घर में घुस जाओ ।
धूप और गरमी पड़ रही है,
हे खेती (कृषि), अन्दर चली आओ ।

गोहार घर बना हुआ है
हे लक्खी (लक्ष्मी), घुस जाओ ।
कोठा बिछा हुआ है
हे खेती (कृषि), चली आओ ।

२८०

पहाड़ पर पानी बरसा,
हे युवती, मत बताओ ।
तराई में वर्षा हुई,
हे लड़की, मत इशारा करो ।

हे युवती, मत बताओ,
हमलोग मसूर बोयेंगे ।
हे लड़की, मत इशारा करो,
हमलोग कलाई (दाल) छींटेंगे ।

मसुरिलङ् हेरलेद
मसुरि दो चिओ मिओतन
कलड़ि लङ् पसिर् लेद
कलड़िदो रेओं चेओंतन

२८१

ओरे एअङ् ओरे अपङ्
गड़ दः तेञ् अतुतन
ओरे एअङ् ओरे अपङ्
नइम दः तेञ् बुअलेतन

ओरे एअङ् ओरे अपबङ्
डुटु लेकञ् अतुतन
ओरे एअङ् ओरे अपङ्
मुटु लेकञ् बुअलेतन

मरे बबु मरे बछ
गड़ कड़े रे सबे दड़िन् मे
मरे बबु मरे बछ
नइम नचल रे रुचब दड़िन् मे

ओरे एअङ् ओरे अपङ्
गड़ कड़े दो सिदे जन
ओरे एअङ् ओरे अपङ्
नइम नचल दो चङ्गड़ जन

२८२

डिण्डतन् जर्मतन्
बोङ्गः चेतन् गोड़े सुनुम् लिङ्गितन्
डिण्डतन् जर्मतन्
कट लतर् गोड़े पोल सड़ितन

हमने मसूर बोये थे,
मसूर अंकुर दे रहा है।
हमने कलाई छींटी थी,
कलाई जम रही है।

२८१

हे माँ, हे बाप,
मैं नदी की धारा में बह रहा हूँ।
हे माँ, हे बाप,
मैं नदी के पानी में उतरा रहा हूँ।

हे माँ, हे बाप,
मैं लकड़ी के कुन्दे की तरह बहा जा रहा हूँ।
हे माँ, हे बाप,
मैं लकड़ी की गाँठ की तरह उतरा रहा हूँ।

हे बेटा, हे बच्चा,
नदी के कास को पकड़कर बचो।
हे बेटा, हे बच्चा,
नदी की घास को पकड़कर सँभलो।

हे माँ, हे बाप,
नदी का कास तो टूट गया।
हे माँ, हे बाप,
नदी की घास तो उखड़ गई।

२८२

(जब) कुँवारापन होता है
(तब) सिर से तेल चूता है।
(जब) जवानी होती है,
(तब) पैर की अंगूठी बजती है।

ओड़:जन् दुअर् जन्
किड़कि दुअर गोड़े बोङ्ग बोलोअ
ओड़:जन् दुअर जन्
राजा टक गोड़े देन दुकुअ

ओड़:जन् दुअर् जन्
बोओः चेतन् गोड़े सुनुम् अञ्जेदजन्
ओड़जन दुअर्जन
कटलतर् गोड़े पोल होसोर जन्

२८३

एङ्गम् रच अपुम् रच
जोजो सकम् उरुड़ुतन
एङ्गम् रच अपुम् रच
उलि सकम् गसरेतन

मरे मइन जोगे लेकम्
जोजो सकम् उरुड़ुतन
मरे मइन टप लेकम्
उलि सकम् गसरेतन

तरकोचञ् जोगेकेन
तरकोच उरुड़ुतन
तर कोचञ् टपकेन .
तर कोच गसरेतन

२८४

गड़ जपः जपःते
कदलको रोअतद
नइम नसि नसि ते
जम्बिरको पोअतद

(जब) घर-द्वार हो गया,
(तब) खिड़की के रास्ते भूत घुसता है।
(जब) घर-द्वार हो गया,
(तब) राजा को कर देने में कष्ट होता है।

(जब) घर-द्वार हो गया,
(तब) सिर का तेल सूख गया।
जब घर-द्वार हो गया,
(तब) पैर की अंगूठी खिसक गई।

२८३

माँ के आँगन में, बाप के आँगन में
इमली की पत्ती गिर रही है।
माँ के आँगन में, बाप के आँगन में
आम की पत्ती झड़ रही है।

हे बेटी, झाड़ू दे दो
इमली की पत्ती को, जो गिर रही है।
हे बेटी बहार दो
आम की पत्ती को, जो झड़ रही है।

एक तरफ झाड़ू दिया,
(तो) दूसरी तरफ (पत्ती) गिरकर भर गई।
एक किनारे बुहारा,
(तो) दूसरे किनारे (पत्ती) भर गई।

२८४

नदी के किनारे-किनारे
केला रोपा गया है।
नाली के किनारे-किनारे
जम्बीरा लगाया गया है।

कदलको रोअतद
कदल दो डिण्ड जन
जम्बिरको पोअतद
जम्बिर दो जर्‌मजन

डिण्ड कुड़ि रोअलेद
कदल दो डिण्डजन
जर्‌म कोड़ पोअलेद
जम्बिर दो जर्‌म जन

२८५

डोंएस होर सान् दो
सान् सेले बोलेअ
कुकुर होर सकम् दो
सकम् रिति पितिअ

सान् सेले बोलेअ
मगे लेगे मोनिञ
सकम् रिति पितिअ
ह़ेगे लेगे सनञ

सान् सेले बोलेअ
दिअ लेक ज़ुलोअ
सकम् रितिपितिअ
डुब लेक पुड़ुगोअ

दिअ लेक ज़ुलोः रेंओ
सुकुलको मेनेअ
दुबलेक पुड़ुगोः रेंओ
ज़ोरोअको मेनेअ

केला जो रोपा गया है,
(वह) केला बंझा हो गया।
जम्बीरा जो लगाया गया है,
(वह) जम्बीरा बंझा हो गया।

कुँवारी लड़की ने लगाया था
(इसलिए) केला बंझा हो गया।
अविवाहित लड़के ने लगाया था
(इसलिए) जम्बीरा बंझा हो गया।

२८५

डोएसा के रास्ते में लकड़ी—
लकड़ी कितनी सीधी-सीधी है।
कुकरा के रास्ते में पत्ती—
पत्ती कितनी अच्छी-अच्छी है।

लकड़ी सीधी-सीधी है,
लकड़ी को काट लेने की इच्छा होती है।
पत्ती अच्छी-अच्छी है,
पत्ती को तोड़ लेने को जी चाहता है।

सीधी-सीधी लकड़ी
दिया के समान जलती है।
चिकनी-चिकनी पत्ती
कटोरा के समान दोना बनाती है।

दिया के समान जलने पर भी
कहते हैं कि धुआँ निकल रहा है।
कटोरे के समान दोना बनाने पर भी
कहते हैं कि चू रहा है।

अञ् दुकु नङ्गेन् गे
सुकुलको मेनेअ
अञ् नन्दोड़ नङ्गेन् गे
जोरोअ को मेनेअ

२८६

जेटे सिङ्गि तेबःलेन
जेटे दुड़ ओटङ्लेन
जर्गि दः तेबः लेन
जर्गि लोसोद पसिर् लेन

ओकोएगे सीतन
जेटे दुड़ ओटङ्लेन
चिमएगे खरतन
जर्गि लोसोद् पसिर् लेन

गतिम् गे सीतन
जेटे दुड़ ओटङ्लेन
सङ्कम् गे खरतन
जर्गि लोसोद् पसिर् लेन

२८७

सोमए सोमए सोमए रे
हएरे सोमए सेनोःतन
नुसड़ नुसड़ नुसड़ रे
हएरे नुसड़ बिरिद्तन

ससङ्, सुनुम् नकिः सुपिद्
हएरे सोमए सेनोः तन
अन्दु, सकोम् सक साड़ी
हएरे नुसड़ बिरिद् तन

हमको दुःख देने के लिए ही—
कहते हैं कि धुआँ निकल रहा है।
हमको सताने के लिए ही—
कहते हैं कि चू रहा है।

२८६

गरमी का दिन पहुँच चुका,
गरमी की धूल उड़ने लगी है;
बरसात का मौसम पहुँच गया,
बरसात का कीचड़ छिटकने लगा है।

कौन हल चला रहा है,
(जिससे) गरमी की धूल उड़ने लगी है।
कौन पट्टा मार रहा है,
(जिससे) बरसात का कीचड़ उछलने लगा है।

तुम्हारा साथी ही हल चला रहा है,
(जिससे) गरमी की धूल उड़ रही है।
तुम्हारा संगी ही पट्टा मार रहा है,
(जिससे) बरसात का कीचड़ उछलने लगा है।

२८७

समय ! समय ! समय !
हाय, समय चला जा रहा है।
जवानी ! जवानी ! जवानी !
हाय, जवानी बीत रही है !

हल्दी, तेल, कंघी, चोटी
हाय, समय चला जा रहा है।
पएरी, चूड़ी, सखा, साड़ी
हाय जवानी बीत रही है !

एअङ् गोड़े बपरि गोड़े
हएरे सोमए सेनोः तन
एअङ् गोड़े बपरि गोड़े
हएरे नुसड़ बिरिद् तन्

२८८

सुकन बुरु होर ते
चिको सेके सेके अज बपुड़ि
मरः सिलि डरे ते
मेरे को रोलो रोलोएअज बपुड़ि

सुकन् बुरु होर ते
जिकि सेके सेके अज बपुड़ि
मरः सिली डरे ते
हर्मु रोलो रोलोए अज बपुड़ि

दोलतेबु लेलेलिअ
जिकि सेके सेकेअज बपुड़ि
मरे तेबु चिन लिअ
हर्मु रोलो रोलोए अज बपुड़ि

२८९

बुरु दिसुम कुड़िको
बुरु लमः खण्ड तेकोअ
गड़ दिसुम् कोड़ को
दिरि कड़कोम् फिरितेकोअ

दोलतेबु लेलेकोअ
बुरु लमः खण्ड तेकोअ
दोलतेबु चिनकोअ
दिरि कड़कोम् फिरितेकोअ

हाय माँ, हाय बाप !
समय चला जा रहा है ।
हाय माँ, हाय बाप !
जवानी बीत रही है ।

२८८

सुकन पहाड़ के रास्ते पर
हे पिता, क्या 'सेके-सेके'-सी आवाज में बज रहा है ।
बड़ी चट्टान के मार्ग में
हे पिता, क्या 'रल-रल' की आवाज में बज रहा है ।

सुकन पहाड़ के रास्ते मे
हे पिता, सेही 'सेके-सेके' करके बज रहा है ।
बड़ी चट्टान के मार्ग में
हे पिता, हरमू 'रल-रल' की आवाज कर रहा है ।

चलो, हम देख आयें,
सेही 'सेके-सेके' करके बज रहा है ।
चलो, देख आयें,
हरमू 'रल-रल' करके आवाज कर रहा है ।

२८९

पहाड़ी देश की स्त्रियाँ
पहाड़ी लमः को तलवार बनाये रहती हैं ।
नदी के किनारे के पुरुष
पहाड़ी केकड़े को ढाल बनाये रहते हैं ।

चलो, हम देखने चलें,
(जो) पहाड़ी लमः को तलवार बनाये रहती हैं ।
चलो, हम पहचान आयें,
जो पहाड़ी केकड़े को ढाल बनाये रहते हैं ।

अले दोले लेल्‌केन
बुरु लमः खण्ड तेकोअ
अले दोले चिनकेन
दिरि कड़कोम् फिरितेकोअ

२६०

बिर् दो बिर् दो लोको तन
कुल बेग निरे निरे मे
गड़ दो गड़ दो अञ्जेद्‌तन
अएर बेग होजोर होजोरे मे

सार कपिमेअको
कुल बेग निरे निरे मे
ढाकि डटोम् मे अको
अएर बेग होजोर होजोरे मे

२६१

सिसिक बुरु रे
सिसिकएः गमएअ
जम् जम्‌क बेड़ रे
जम् जम्‌कए रम्पिअ

सिसिकए गमएअ
ओको रेलङ् सुरुन
जम् जम्‌कए रम्पिअ
चिमए रेलङ् दनङेन

एङ्गम् रच तुड़ुसि
तुड़ुसि रेलङ् सुरुन
अपुम् रच बरङ्गः
बरङ्गः रेलङ् दनङेन

हमने तो देख लिया,
(जो) पहाड़ी लमः को तलवार बनाये रहती हैं।
हमने तो पहचान लिया,
(जो) पहाड़ी केकेड़े को ढाल बनाये रहते हैं।

२९०

जंगल तो जल रहा है,
हे बाघ, जल्दी-जल्दी भागो !
नदी तो सूख रही है,
हे अएरा (मछली), जल्दी-जल्दी भागो !

लोग तुमको छेद-काट देंगे,
हे बाघ, जल्दी-जल्दी भागो !
लोग तुमको टोकरी में भरकर ले जायेंगे,
हे अएरा, जल्दी-जल्दी भागो !

२९१

सिसिका पहाड़ पर
जोर से पानी बरस रहा है।
जमका घाटी में
जोर से आँधी चल रही है।

जोर से पानी बरस रहा है,
(तो) हम दोनों कहाँ बचेंगे !
जोर से आँधी चल रही है,
(तो) हम दोनों कहाँ छिपेंगे !

तुम्हारी माँ के आँगन में तुलसी है,
हमलोग तुलसी के नीचे बचेंगे।
तुम्हारे बाप के घर में बराँगू (फूल) हैं,
हमलोग बराँगू (फूल) के नीचे बचेंगे।

एङ्गञ् रच तुङ्ुसि
जोजोरो गेअ
अपुञ् रच बरङ्गु
लिलिङ्गि गेअ

२६२

हेसः चुटि गोङ्कोर सलु
रिदे लेकएः ओरोङेअ
बड़े लतर बड़ेज पिउङ्
तकुइलेकएः बनमेअ

रिदेअ चिः ओरोङेअ
रिदे लेकएः ओरोङेअ
तकुइ अचिः बनमेअ
तकुइ लेकएः बनमेअ

दोल तेबु लेलेलिअ
रिदे लेकए ओरोङेअ
दोल तेबु चिनलिअ
तकुइ लेकए बनमेअ

अले दोले लेलेलिअ
रिदे लेकए ओरोङेअ
अले दोले चिन लिअ
तकुइ लेकए बनमेअ

२६३

बोलेमे उरु बोलोमे
डण्डः ओड़ः लेम-लेम् निर्ज बोलोमे
सोड़ोमे उरु सोड़ोमे
चतोम् रोसोम् चाम् चाम् होजोर सोड़ो

माँ के आँगन में तुलसी है,
(किन्तु) वह तो चूता है ।
बाप के घर में बराँगू है,
(लेकिन) वह तो चूता है ।

२६२

पीपल के ऊपर का सालू (पक्षी)
पीसने की जैसी आवाज करता है ।
बड़ के नीचे का पिउङ् (पक्षी)
तकुए के समान भनभनाता है ।

पीसता है या आवाज करता है ?
पीसने की आवाज जैसी लगती है ।
तकुआ चलाता है या भनभनाता है ?
तकुए की आवाज जैसी लगती है ।

चलो, हम देख आयें,
(जो) पीसने की जैसी आवाज करता है ।
चलो, हम पहचान आयें,
(जो) तकुए के समान भनभनाता है ।

हमने तो उसे देख लिया,
(वह) पीसने की जैसी आवाज करता है
हमने तो उसे पहचान लिया,
(वह) तकुए की जैसी आवाज में भनभनाता है ।

२६३

घुस जाओ, भँवरा, घुस जाओ ।
लकड़ी की छपरी में जल्द घुस जाओ ।
समा जाओ, भँवरा, समा जाओ ।
बाँस की छपरी में जल्दी समा जाओ ।

बोलो दोरेञ् बोलोअ
चिक लेक गोड़ेञ् निर्ज बोलोअ
सोड़ो दोरेञ् सोड़ोअ
मेरेको लेक गोड़ेञ् होजोर सोड़ोअ

चिक लेकञ् बोलोअ
तर कोच रे फिमिनिञ् दो
सोड़ो दोरेञ् सोड़ोअ
तर कोच रे होञ्जरिञ् दो

२६४

कुन्दरु कुन्दरु रे
कुन्दरु ओमोन् लेन
सेअड़ि सेअड़ि रे
सेअड़ि बुसड़ लेन

चिको दः ते
कुन्दरु ओमोन् लेन
मेरे को गम ते
सेअड़ि बुसड़ लेन

जर्गि दः ते
कुन्दुरु ओमोन् लेन
असड़ गम ते
सेअड़ि बुसड़ लेन

जुड़ि जुड़ि गे
कुन्दुरु ओमोन् लेन
जोत जोत गे
सेअड़ि बुसड़लेन

घुसने को तो घुसेंगे,
लेकिन, किस तरह घुसेंगे।
समाने को तो समायेंगे,
लेकिन, किस तरह समायेंगे।

किस तरह घुसेंगे,
एक कोने में छोटे भाई की पत्नी है।
किस तरह समायेंगे,
दूसरे कोने में मेरा ससुर है।

२९४

कुन्दुरु, कुन्दुरु,
कुन्दुरु उगा था।
सेअड़ि, सेअड़ि,
सेअड़ि जमा था।

किस पानी से
कुन्दुरु उगा था ?
किस पानी से
सेअड़ि जमा था ?

बरसात के पानी से
कुन्दुरु जमा था।
असाढ़ के पानी से
सेअड़ि जमा था।

जोड़ा-जोड़ा ही
कुन्दुरु उगा था।
पाँति-पाँति ही
सेअड़ि जमा था।

२९५

ओकोरे लिपि रे
लिपि, ओड़ः लङ् दो
चिमए रे लिपि रे
लिपि, रोसोम् लङ् दो

नयल्-गड़ रे
लिपि, ओड़ लङ् दो
डेल बुरुरे
लिपि, रोसोम् लङ् दो

चेतन् रिम्बिल् दो
लिपि, गुले गुले
लतर् लारि दो
लिपि, अलए बलए

तिकिन् सिङ्गि दो
लिपि, गम लेद
तर सिङ्गि दो
लिपि, रम्पि लेद

नयल्-गड़ दो
लिपि, लेअङ् जन्
डेल बुरु दो
लिपि, चड़ङ् जन

२९६

निकु दोरे दो, निकु दोरे दो
अगमरि को चिको गेओन गेओन
निकु दोरे दो, निकु दोरे दो
दरोम्-दः कोयिको लेपलड़िअ

२६५

कहाँ, हे लिपि,
हमारा घर है ?
कहाँ, हे लिपि,
हमारा आश्रय है ?

हराई की नाली में
हे लिपि, हमारा घर है।
ढेले के पहाड़ पर
हे लिपि, हमारा आश्रय है।

ऊपरी बादल
हे लिपि, उमड़-घुमड़ रहा है।
निचला बादल
हे लिपि, व्याकुल हो रहा है।

दोपहर में ही
हे लिपि, पानी बरस गया।
तीसरे पहर ही,
हे लिपि, व ाा हो गई।

हराई की नदी,
हे लिपि, बह गई।
ढेले का पहाड़,
हे लिपि, गल गया।

२६६

ये सब, प्रिय, ये सब
क्या ये घों-घों करनेवाले घाटो पक्षी हैं ?
ये सब, प्रिय, ये सब,
क्या ये फद्फदाते हुए बरसाती द्रोम् पक्षी हैं ?

उदुबकोपे, उदुबकोपे
जोजोको जुम्बुलए उदुबकोपे
चुण्डुलकोपे, चुण्डुलकोपे
उलिको अम्बरए चुण्डुलकोपे

कको सुकुजन, कको सुकुजन
जोजोको जुम्बुलए कको सुकुजन
कको नपएजन, कको नपएजन
उलिको अम्बरए कको नपएजन

२६७

एकसिको पिड़ि रे
सेङ्गेल् दः दोएः गमलेद
तेरसिको बदि रे
बण्ड जेटेः रम्पिलेद

इचः बा कुड़िकिङ्
लोओ चोटेः लेन
मुरुद बा कोड़किङ्
बल चोटेः लेन

२६८

होरते ओको कुड़ि सेनकद
पी-पी गोड़े पोल सड़ितन
डरेते चिमएकोड़ होजोरकद
जम् जम् गोड़े टुइल सड़ितन

होरते गतिञ् कुड़ि सेनकद
पी-पी गोड़े पोल सड़ितन
डरेते सङ्गञ् कोड़ होजोरकद
जम् जम् गोड़े टुइल सड़ितन

इन्हें बता दो, इन्हें बता दो,
इनको इमली का झुण्ड बता दो।
इन्हें बता दो, इन्हें बता दो,
इनको आम की अमराई बता दो।

इन्हें पसन्द नहीं आया, पसन्द नहीं आया,
इन्हें इमली का झुण्ड पसन्द नहीं आया।
इन्हें पसन्द नहीं आई, पसन्द नहीं आई,
इन्हें आम की अमराई पसन्द नहीं आई।

२९७

एकासी मैदान में
आग की वर्षा हुई थी।
तेरासी घाटी में
धूप बरसी थी।

इचा-फूल-सी दो युवतियाँ
उस आग में झुलसते-झुलसते बचीं।
पलाश-फूल-से दो युवक
उस ज्वाला में जलते-जलते बचे।

२९८

रास्ते से कौन लड़की चली है,
जिसके पैर की अंगूठी बज रही है ?
रास्ते से कौन युवक चला है,
जो टुइला बजा रहा है ?

रास्ते से प्रेयसी चली है,
जिसके पैर की अंगूठी बज रही है।
रास्ते से प्रिय चला है,
जो टुइला बजा रहा है।

ओतोङि गे मानेञ
पी-पी गोड़े पोल सड़ितन
जरेन्गे सनञ्
जम् जम् गोड़े टुइल सड़ितन

२९९

सिङ्गि तुरोः होर रे
ओको होड़ो सीतन, दुदुगरतन
चण्डुः मुलुः डरे रे
चिमए होड़ो खरतन, कोंअसितन

सिङ्गि तुरो होर रे
सिङ्गि बोङ्गः सीतन, दुदुगरतन
चण्डु मुलुः डरे रे
चण्डुः बोङ्गः खरतन, कोंअसितन

दोलतिबु लेल्लिअ
सिङ्गि बोङ्गः सीतन, दुदुगरतन
दोलतिबु चिनलिअ
चण्डुः बोङ्गः खरतन, कोंअसितन

३००

बुरुतेञ् सेन्केन
बुरुचेतन् लुदम् बा गोले-दुरङ
हतुतेञ् रुअड़लेन
हतुतल केओर बा लन्दजगर

दोलतिबु लेल्लिअ
बुरुचेतन् लुदम् बा गोले-दुरङ
दोलतिबु चिनलिअ
हतुतल केओर बा लन्दजगर

उसका पीछा करने की इच्छा होती है,
जिसके पैर की अंगूठी बज रही है ।
उसके पीछे जाने को जी चाहता है,
जो टुइला बजा रहा है ।

२९९

सूरज उगने के रास्ते में
कौन आदमी हल जोत रहा है, जिससे धूल उड़ रही है ?
चाँद उगने के मार्ग में
कौन आदमी खेत बना रहा है, जिससे कुहासा छाया हुआ है ?

सूरज उगने के रास्ते में
सूरज देवता हल जोत रहे हैं, जिससे धूल उड़ रही है ।
चाँद उगने के मार्ग में
चाँद देवता खेत बना रहे हैं, जिससे कुहासा छाया हुआ है ।

चलो, हम देख आयें
सूरज देवता हल चला रहे हैं, जिससे धूल उड़ रही है ।
चलो, हम पहचान आयें
चाँद देवता खेत बना रहे हैं, जिससे कुहासा छाया हुआ है ।

३००

मैं जंगल गया था,
(वहाँ) पहाड़ पर लुदम-फूल सिसकारी मारता और गाता है ।
मैं गाँव में लौट आया,
(वहाँ) गाँव के बीच केवड़ा-फूल हँस-बोल रहा है ।

चलो, चलकर देखें,
जो पहाड़ पर लुदम-फूल सिसकारी मारता और गाता है ।
चलो, चलकर देखें,
जो गाँव में केवड़ा हँस-बोल रहा है ।

३०१

दइ न निर दइ
कुइलि साड़ी ते साड़ीन् मे
दइ न निर दइ
रङ्ग पएलते पएलन् मे
दइ न निर दइ
गतिम् को सेनोःतन
दइ न निर दइ
सङ्गम्को बिरिदतन

दइ न निर दइ
इन्दि दोको रकब्केद
दइ न निर दइ
जतर दोको हड़गुकेद

३०२

बोङ्ग बुरु रेग एअङ्
बोङ्ग बा दोग
राजा बेड़ रेग अपङ्
राजा डलि दोग

तर मोंए तेअ एअङ्
बोङ्ग बा दोग
तर डलितेअ अपङ्
राजा बा दोग

हलङ् लेकामे मइन
बोङ्ग बा दोन
तुम्बल् लेकामे मइन
राजा बा दोन

३०१

हे नीरा दीदी,
कुइली साड़ी पहन लो।
हे नीरा दीदी,
लाल आँचल लगा गो।

हे नीरा दीदी,
तुम्हारी सखियाँ जा रही हैं।
हे नीरा दीदी,
तुम्हारी सखियाँ जा रही हैं।

हे नीरा दीदी,
लोग इन्द चढ़ा रहे हैं।
हे नीरा दीदी,
लोग यात्रा उतार रहे हैं।

३०२

हे माँ, देवता के पहाड़ पर,
हे माँ, पूजा का फूल है।
हे पिता, राजा की तराई में,
हे पिता, राजा का फूल है।

हे माँ, कुछ पूजा के फूलों में कली लगी है।
हे माँ, पूजा का फूल है।
हे पिता, कुछ राजा-फूल खिला हुआ है।
हे पिता, राजा का फूल है।

हे बेटी, पूजा के फूल को चुनकर देखो।
हे बेटी, पूजा का फूल है।
हे बेटी, राजा-फूल को उठाकर देखो।
हे बेटी, राजा-फूल है।

गुतु लेकामे मइन
बोङ्गा बा दोन
गलङ् लेकामे मइन
राजा बा दोन

३०३

ओकेरे मइनम् इनुङ्केन
किचिरि दो दुड़जन
चिमएरे मइनम् खेलड़िकेन
गमछ दो रङ्गजन

गोओट तलरेञ् इनुङ्केन
किचिरि दो दुड़जन
कड़कितल रेञ् खेलड़ि केन
गमछ दो रङ्ग जन

३०४

गतिञ् को सेनोःतन
देन एर पिटि उडुङञ्मे
सङ्गञ्को बिरिद्तन
देन एर हड़क पयरञ्मे

पिटिरेदो ओनोल्बोतोएः
देन एर पिटि उड़ुङञ्मे
हड़करेदो रङ्ग पगरि
देन एर हड़क पयरञ्मे

पिटि रेओञ् लेल्केन
पिटि रेओ बनोःअ
हड़क रेओञ् चिनकेन
हड़क रेओ बनोःअ

हे बेटी, पूजा के फूल को गूँथ लो।
हे बेटी, पूजा का फूल है।
हे बेटी, राजा-फूल का गुच्छा बना लो।
हे बेटी, राजा-फूल है।

३०३

हे लड़की, तुम कहाँ-कहाँ खेलती रही,
(जो) तुम्हारा कपड़ा मैला हो गया ?
हे लड़की, तुम कहाँ-कहाँ नाचती रही,
जो तुम्हारा गमछा रँग गया ?

मैं जानवरों के झुण्ड में खेलती रही,
(जिससे) मेरा कपड़ा धूमिल हो गया।
मैं जानवरों की कतार में नाचती रही,
जिससे मेरा गमछा रँग गया।

३०४

हमारे साथी जा रहे हैं,
हे प्रिये, पेटी निकाल दो।
हमारे संगी निकल रहे हैं,
हे प्रिये, हड़का खोल दो।

पेटी में पाढ़वाला करचा है,
हे प्रिय, पेटी निकाल दो।
हड़का में रंगीन पगड़ी है,
हे प्रिये, हड़का खोल दो।

पेटी को देखा,
पेटी में (पाढ़वाला करचा) नहीं है।
हड़का को देखा,
हड़का में (रंगीन पगड़ी) नहीं है।

३०५

सुकन् बुरु डेरे सङ्ग
कन मिसिञ् कन इपिसिन्
मरङ्सिलि सेतोम् दः
कन मिसिञ् कन बपसङ्

सिउःकोदो हिजुःअकन
कन मिसिञ् कन इपिसिन्
चलुःकोदो सेटेरकन
कन मिसिञ् कन बपसङ्

हिअतिङ्गे सनञ
कन मिसिञ्कन इपिसिन्
चकतिङ्गे सनञ
कन मिसिञ् कन बपसङ्

३०६

सेएल् कुटि रे तिकिचौलि
अमेचि मइ जोमेकेद
चञ्चड़िरे दुअड़ जिलु
अमेचि मइ हबेकेद

सेत चोअएः बोलोकेन
सेत चोअएः जोमेकेद
पुसि चोअएः सोड़ोकेन
पुसि चोअएः नबेकेद

अम्गे मइन जोमेकेद
सेतरेगेम् चिटतन
अम्गे मइन हबेकेद
पुसिरेगेम् सुबतन

३०५

सुकन पहाड़ का डेरे सकरकन्द
हे बहन, वह सीझता नहीं।
बड़े पहाड़ के सामने का पानी,
हे बहन, वह गरम होता नहीं।

हलवाले तो आ गये हैं,
(पर डेरे सकरकन्द) हे बहन, वह सीझता नहीं।
कोड़नेवाले तो पहुँच गये हैं
(पर झरने का पानी) हे बहन, गरम होता नहीं।

मुझे चिन्ता होती है
कि (सकरकन्द) सीझता नहीं।
मुझे सोच होता है
कि (पानी) गरम होता नहीं।

३०६

ओखली में चावल था
हे लड़की, क्या तुमने खाया?
चँचरा के ऊपर हारिल (पक्षी) का मांस था,
हे लड़की, क्या तुमने खाया?

कुत्ता घुसा था,
कुत्ते ने ही खा लिया।
बिल्ली ढूँढ रही थी,
बिल्ली ही खा गई।

हे लड़की, तुम्हींने खाया है,
(लेकिन) कुत्ते को दोष दे रही हो।
हे लड़की, तुम्हींने खा लिया है,
(लेकिन) बिल्ली को दोषी बना रही हो।

३०७

कुंड़बए कुंड़बए रे दद
कुंड़बए कोरे इंदि दो
मुड़म मुड़म रे दद
मुड़म कोरे जतर दो

कुँड़बए कोरे इंदि दो
होलरेको इंदिकेद
मुड़मकोरे जतर दो
होन्देर रेको जतरकेद

होलरेको इंदिकेद
पुड़ुःकोले लेलेलेद
होन्दरे रेको जतरकेद
मण्डकोले चिनलेद

३०८

हतु मइन लिटि लिटि
हतु मइनम् बगेजद
दिसुम् मइन लयकोय
दिसुम् मइनम् रड़जद

मोदे किअ सिन्दुरिते
हतु मइनम् बगेजद
बरे थड़ ससड़्ते
दिसुम् मइनम् रड़जद

३०९

नकु नकु एअङ्
ओको होड़ोको गोड़े हिजुःअकन
नकु नकु अपङ्
चिमए प्रजाको गोड़े सेटेरकन

३०७

हे भाई, कुँड़बए में,
हे भाई, कुँड़बए में इन्दी होता है।
हे भाई, मुड़मा में,
हे भाई, मुड़मा में जतरा होता है।

कुँड़बए में इन्दी होता है,
लोग कल ही कर चुके।
मुड़मा में जतरा होता है,
लोग परसों ही कर चुके।

इन्दी तो लोग कल ही कर चुके,
हमलोगों ने पत्तलों को देखा था।
जतरा तो परसों ही कर चुके,
हमने पंजों को देखा था।

३०८

हे बेटी, सुन्दर सलोना गाँव,
हे बेटी, तुम गाँव को छोड़ रही हो।
हे बेटी, हरा-भरा देश,
हे बेटी, तुम देश को छोड़ रही हो।

हे बेटी, एक कीया सिन्दूर से,
हे बेटी, तुम गाँव को छोड़ रही हो।
हे बेटी, दो थाली हल्दी से,
हे बेटी, तुम देश को छोड़ रही हो।

३०९

ये लोग, माँ, ये लोग,
माँ, कौन आदमी आये हुए हैं ?
ये लोग, पिता, ये लोग,
पिता, कौन प्रजाजन पहुँचे हुए हैं ?

निकु दोन मइन
अम्लेल्को हिजु:अकन
निकु दोन मइन
अम् चिनको सेटेरकन

उकुतञ्मेग एअङ्
सिम्कुसुलिरे उकुतञ्मे
दनङ् तञ्मेग अपङ्
मेरोम् गुदुड़िरे दनङ् तञ्मे

३१०

कुच-मुच कुन्दुरु
कुच केसेद् तदिञ कुन्दुरु
नणि नणि पलण्डु
नणि कोटोङ् तदिञ पलण्डु

चिको मेनेतेगे
कुच केसेद् तदिञ कुन्दुरु
मेरेको मेनेतेगे
नणि कोटोङ् तदिञ पलण्डु

जीगे बड़े सुकुजन
कुच केसेद् तदिञ कुन्दुरु
कुड़म् बड़े रेअड़जन
नणि कोटोङ् तदिञ पलण्डु

३११

सिरिरेन परगनारेन
सिरिरेन होड़ोको
सिरिरेन परगनारेन
परगना रेन प्रजा को

हे बेटी, ये लोग
तुमको देखने आये हुए हैं।
हे बेटी, ये लोग
तुमको जानने पहुँचे हुए हैं।

(तब) हे माँ, मुझे छिपा दो,
मुझे मुरगी के घरौंदे में छिपा दो।
(तब) हे पिता, मुझे छिपा दो,
मुझे बकरी के घर में छिपा दो।

३१०

हे कुण्डली मारे हुए कुन्दुरु,
तुमने हमको घेर रखा है।
हे लतराते हुए पलाण्डु,
तुमने हमको लपेट लिया है।

हे कुन्दुरु, किसलिए
(तुमने) हमको घेर रखा है ?
हे पलाण्डु, क्यों
(तुमने) हमको लपेट लिया ?

तुम्हारे जी में यही अच्छा लगा,
(जिससे) हमको घेर रखा है।
(इसी से) तुम्हारा जी ठण्डा हुआ,
जिससे हमें लपेट लिया।

३११

सिरि के लोग, परगना के लोग
हाय, सिरि के लोग।
सिरि के लोग, परगना के लोग
हाय, परगना की प्रजा।

सिरिरेन् होड़ोको
मण्डि कको जोजोम
परगनारेन् प्रजाको
इलिकको नुनुअ

मण्डि कको जोजोम
चउलितेगे ओमकोपे
इलि कको नुनुअ
मयतेगे चेदकोपे

३१२

पिडिङ्गिः पिड़िङ्गिःरे दद
दिरि पिडिङ्गिः चेतन रे
चउर चउर रे दद
हस चउर लतर रे

अञः सोमए तइकेन्रे
दिरि पिड़िङ्गिः चेतन् रे
अञः नुसड़ तइकेन् रे
इस चउर लतर रे

अञः सोमए सेनोःजन
दिरि पिड़िङ्गिः हन्दिड़िजन
अञः नुसड़ बिरिद्जन
इस चउर लन्दुब्जन

३१३

एङ्गञ्किङ् अपुञ्किङ्
सोना कजि गोड़े कनिअञ्बेन्
हगञ्किङ् बरेञ्किङ्
रूपा बकण गोड़े बकगाञ्बेन

सिरि के लोग
भात नहीं खाते हैं ।
परगने की प्रजा
हड़िया नहीं पीती है।

भात नहीं खाते हैं
(तो) चावल ही दे दो ।
शराब नहीं पीती है
(तो) उबालकर ही दे दो ।

३१२

हे दादा, चबूतरा—
ऊपर पत्थर का चबूतरा (देखो) ।
हे दादा, चौरा—
नीचे मिट्टी का चौरा (देखो) ।

जबतक मेरा समय था
ऊपर पत्थर का चबूतरा (देखने लायक था) ।
जबतक मेरी जवानी थी
नीचे मिट्टी का चौरा (देखने लायक था) ।

मेरा समय चला गया
पत्थर का चबूतरा गिर गया ।
मेरी जवानी चली गई
मिट्टी का चौरा ढह गया ।

३१३

हे माँ, हे बाप,
मुझे सोने की बात सुनाओ ।
हे भाई, हे बन्धु,
मुझे रूपे का वचन कहो ।

मरे बबु मरे बछ
मएनो लेकगे कजि इतुन्मे
मरे बबु मरे बछ
सुग लेकगे बकण सरिन्मे

हएरे एगञ् हएरे अपुञ्
मएनोलेक दो कगे इतुओः
हएरे एगञ् हएरे अपुञ्
सुगलेक दो कगे सरिओः

३१४

ओरे एअङ् ओरे अपङ्
सोल्कुटिरे गोड़े तिङ्ग्ुतुकञ्बेन्
ओरे एअङ् ओरे अपङ्
कड़ब डण्डिरे गोड़े जपः तुकञ्बेन

ओरे एअङ् ओरे अपङ्
सेएल् कुटि दोग बिउरेतन
ओरे एअङ् ओरे अपङ्
कड़ब डण्डि दोग सेकोरेतन

३१५

कोचे कुड़ुम्ब तिलए लोसोर्
दः दो दः सेके सेके अजबरेञ्
कोचे कुड़ुम्ब तिलए लोसोर्
दः दो दः रोलो रोलो अजबरेञ्

दः सेके सेके बरेञ्
दः दो चिबु चिकयज बरेञ्
दः रोलो रोलो बरेञ्
दः दो मेरेबु रिकयज बरेञ्

हे बाबू, हे बेटे,
तुम मैना की तरह बात करना सीखो ।
हे बाबू, हे भाई,
तुम सुग्गे की तरह बोलना सीखो ।

हे माँ, हे बाप,
मैना की तरह बात करना नहीं आता ।
हे भाई, हे बन्धु,
सुग्गे की तरह बोलना नहीं आता ।

३१४

हे माँ, हे बाप,
मुझे ओखली के पास खड़ा कर दो ।
हे माँ, हे बाप,
मुझे हल की मूठ पकड़ा दो ।

हे माँ, हे बाप,
ओखली घूम रही है ।
हे माँ, हे बाप,
हल की मूठ उलट रही है ।

३१५

टेढ़े कुड़ुम्बा और झूमते हुए तिलए वृक्ष के पास
पानी 'सेके-सेके' करके बहता है ।
टेढ़े कुड़ुम्बा और झूमते हुए तिलए वृक्ष के पास
पानी 'रोलो-रोलो' करके झरता है ।

हे भाई, पानी जो 'सेके-सेके' बहता है,
हम उसे क्या करें ?
हे भाई, पानी जो 'रोलो-रोलो' झरता है,
उसे हम क्या करें ?

दः सेके सेके बरेञ्
दः दो चउलि चपितेज बरेञ्
दः रोलो रोलो बरेञ्
दः दो तबेन् बुरम्तेज बरेञ्

३१६

जू ज जलिया जू सेनोःमे
भला जलिया जू सेनोःमे
मरे ज जलिया मरे बिरिद्मे
भला जलिया मरे बिरिद्मे

जू ज जलिया अङे तन
भला जलिया अङे तन
मरे ज जलिया तुरेतन
भला जलिया तुरेतन

जू ज जलिया एङ्गम् एरङ्तन्
भला जलिया एङ्गम् एरङ्तन्
मरे ज जलिया अपुम् सेगेद्तन्
भला जलिया अपुम् सेगेद्तन्

जू ज जलिया रच जोगेमे
भला जलिया रच जोगेमे
मरे ज जलिया गुरिः गिड़ीमे
भला जलिया गुरिः गिड़ीमे

३१७

डण्डः ओड़ः लेएम् लेएम्
नेतेः लेक जोजोरो
चतोम् रोसोम् चोओम् चोओम्
नेतेः लेक लिलिङ्गिः

हे भाई, पानी जो 'सेके-सेके' बहता है,
उससे चावल धोया जाय।
हे भाई, पानी जो 'रोलो-रोलो' झरता है,
उससे चिउड़ा भिगोया जाय!

३१६

जाओ जलिया, जाओ,
जलिया, जाओ, चले जाओ।
जाओ जलिया, जाओ,
जलिया, जाओ, उठ जाओ।

जाओ जलिया, भोर हो रहा है,
जलिया, भोर हो रहा है,
जाओ जलिया, सूरज उग रहा है।
जलिया, सूरज उग रहा है।

जाओ जलिया, तुम्हारी माँ गाली दे रही है,
जलिया, तुम्हारी माँ गाली दे रही है।
जाओ जलिया, तुम्हारा बाप बिगड़ रहा है
जलिया, तुम्हारा बाप बिगड़ रहा है।

जाओ जलिया, आँगन बुहारो।
जलिया, आँगन बुहारो।
जाओ जलिया, गोबर फेंको
जलिया, गोबर फेंको।

३१७

लम्बा-लम्बा घर
देखो, ऐसा चू रहा है।
गोल-गोल घर
देखो, ऐसा झर रहा है।

सउड़ि चि बनोःअ
नेतेः लेक जोजोरो
बड़ोअर चि बनोःअ
नेतेः लेक लिलिङ्गि

सउड़िओ तइकेन
सउड़िले अकिरिङ्केद
बड़ोअरो तइकेन
बड़ोअरले खेजकेद

मोद्बिता लाइः नङ्गेन्
सउड़िले अकिरिङ्केद
चपुतुनुम् मोच नङ्गेन्
बड़ो अरले खेजकेद

३१८

लुदम् बा लुदुगइः
ओकोतेम् तन
तड़ए बा तपिर्सः
चिमएतेम् तन

लुदम् बा लुदुगुइः
सुसुन्तेम् तन
तड़ए बा तपिर्सः
करम्तेम् तन

लुदम् बा लुदुगुइ
अलोम् ऐजरेङ्
तड़ए बा तपिर्सः
अलोम् सेपेगेद

क्या खर नहीं है,
(जो) इस तरह चू रहा है।
क्या बड़वार (घास) नहीं है,
जो इस तरह झर रहा है।

खर था,
(लेकिन) हमने खर बेच दिया।
बड़वार था,
(लेकिन) हमने बड़वार बेच दिया।

एक बित्ता पेट के लिए
हमने खर बेच दिया।
एक छोटे से मुँह के लिए
हमने बड़वार बेच दिया।

३१८

लुदम-फूल के समान (खिली हुई)
तुम कहाँ जा रही हो ?
तड़ए-फूल की तरह खिली हुई
तुम कहाँ जा रही हो ?

लुदम-फूल की तरह खिली हुई
तुम नाचने के लिए जा रही हो।
तड़ए-फूल की तरह खिली हुई
तुम करम के लिए जा रही हो।

लुदम-फूल के समान
तुम झगड़ा मत करो।
तड़ए-फूल की तरह
तुम बखेड़ा मत करो।

३१६

केरकेट डिञ्चुअ
ओको मुलितेलङ्
केरकेट डिञ्चुअ
चिमए मुलितेलङ्

केरकेट डिञ्चुअ
हतुमलि तेलङ
केरकेट डिञ्चुअ
दिसुम् मुलि तेलङ

हतुतल तेलङ
लिक होलङ् ओलेअ
दिसुमतल तेलङ
पुथि होलङ़ पड़ओअ

३२०

लुकुज बुरु चेतन् रे
ने लुकुइः जोनोः दो
जन्तबेड़ लतर रे
ने लमः केयोः दो

ओकोएगे जोजोःतेअ
ने लुकुइः जोनोः दो
चिमएगे केयोःतेअ
ने लमः केयोः दो

मुण्ड कोगे जोजोःतेअ
ने लुकुइः जोजोः दो
सन्त कोगे केयोः तेअ
ने लमः केयोः दो

३१६

केरकेटा और भुजंग पक्षी (राय कर रहे हैं),
हमलोग किस ओर.जायेंगे ?
केरकेटा और भुजंग पक्षी (सोच रहे हैं),
हमलोग किधर निकलेंगे ?

केरकेटा और भुजंग पक्षी (राय कर रहे हैं),
हम गाँव की ओर जायेंगे।
केरकेटा और भुजंग पक्षी (सोच रहे हैं),
हम देश की ओर जायेंगे।

हम गाँव की ओर जायेंगे।
(और) पत्र लिखेंगे।
हम देश की ओर जायेंगे।
(और) पोथी पढ़ेंगे।

३२०

लुकुजा पहाड़ के ऊपर
यह झाड़ूवाला लुकुइ घास है।
जन्ता पहाड़ की तराई में
यह चिकना करनेवाला लमः है।

कौन साफ करेगा
इस लुकुइ घास से ?
कौन चिकना करेगा
इस लमः फल से ?

मुण्डा लोग झाड़ू करेंगे
इस लुकुइ घास से।
सन्ताल लोग चिकना करेंगे
इस लमः फल से।

३२१

ओकोरे बिन्दि रे
बिन्दिम् इनुङ्केन
चिमएरे बिन्दिरे
बिन्दिम् खेलड़िकेन

हटिअ तलरे
बिन्दम् इनुङ्केन
गोओंट तलरे
बिन्दिम् खेलड़िकेन

टुपः होन्ते
बिन्दिम् इनुङ्केन
हटः होन्ते
बिन्दिम् खेलड़िकेन

टुपः होन् दो
बिन्दि चेचः जन
हटः होन् दो
बिन्दि रोचोद्जन

३२२

होर रे मेरलि
अम्चि मइ तेरेतद् मेरलि दो
डरे रे करकट
अम्चि मइ कोटेः तद्कर्कट दो

अञे गे च तेरेतद
एङ्गञ्कोञ् तेरे नम्तन
अञे गे च कोटेः तद
अपुञकोञ् कोटेः नम्तन

३२१

कहाँ, हे बिन्दी,
तुम खेलती थी ?
कहाँ, हे बिन्दी,
तुम खेलती थी ?

सड़क के बीच,
हे बिन्दी, तुम खेलती थी।
मवेशियों के झुण्ड में,
हे बिन्दी, तुम खेलती थी।

एक छोटी टोकरी से,
हे बिन्दी, तुम खेलती थी।
एक छोटे सूप से,
हे बिन्दी, तुम खेलती थी।

(तुम्हारी) छोटी टोकरी,
हे बिन्दी, वह फट गई।
(तुम्हारा) छोटा सूप,
हे बिन्दी, वह टूट गया।

३२२

रास्ते पर मेराली,
हे बेटी, क्या तुमने फेंक दिया ?
मार्ग में करकटा,
हे बेटी, क्या तुमने फोड़ दिया ?

हाँ, मैंने ही फेंका है
(क्योंकि) मैं अपनी माँ की खोज कर रही हूँ।
हाँ, मैंने ही फोड़ा है,
(क्योंकि) मैं अपने बाप को ढूँढ़ रही हूँ।

कनमइम् नमेकोअ
लिटिः लिटिः होरतेकोअ
कनमइम् चिनकोअ
लटङ्कोयम् डरे तेकोअ

कनमइम् नमेकोअ
दिरितेको तेनेन्जन
कनमइम् चिनकोअ
जनुम्तेको रमेन्जन

३२३

मुन्दम् दुदुल सेकेर
तेरे मुन्दम् दुलञ्मेज गतिञ्रे
नकिः बइ दुलिअ
बा नकिः बइअञ्मेज सङ्गञ्रे

दुल्दोरेञ् दुलमेअ
कांसा पीतल रोचोद्जन गतिञ्रे
बइदोरेञ् बइअमेअ
ननचरिः हुलःजन सङ्गञ्रे

क ओमे सेणगे
कांसा पीतल रोचोद्जनम् मेनेगरिञ्रे
क चेदे मोनेगे
ननचरिः हुलः जनम्मेने सङ्गञ्रे

●

हे बेटी, उनको तुम नहीं पाओगी,
वे धूल-भरे रास्ते से चले गये।
हे बेटी, उनको तुम नहीं पाओगी,
वे कीचड़-भरे मार्ग से चले गये।

हे बेटी, तुम उन्हें नहीं पाओगी,
वे पत्थर से ढक गये।
हे बेटी, तुम उन्हें नहीं पाओगी,
वे काँटों से घिर गये।

३२३

हे अंगूठी बनानेवाले सकेरा,
मुझे हाथ की अंगूठी बना दो।
हे कंघी बनानेवाले दुलिया,
मुझे फूलोंवाली कंघी बनाकर दो।

(अंगूठी) मैं बना देता,
(किन्तु) काँसा-पीतल चटक गया।
(कंघी) मैं बना देता,
(किन्तु) पतली तीली टूट गई।

देने की इच्छा नहीं है
(इसीलिए) काँसा-पीतल चटकने की बात कहते हो।
देने का मन नहीं है,
(इसीलिए) पतली तीली टूटने की बात कहते हो।

❋

जपि*

ओकोतेको सेनोःतन
कपि जिलिब-जिलिब
चिमएतेको बिरिद्तन
सार् सिणए सोणोएअ

---

* जरग गीतों की तरह ही जपि गीतों में गाने के समय पद की द्वितीय एवं चतुर्थ पंक्तियाँ दो बार दुहराई जाती हैं ।

जीप

वे कहाँ जा रहे हैं,
जो फरसा चमका रहे हैं ?
वे किधर निकल रहे हैं,
ज़ो तीर सनसना रहे हैं ?

३२४

मरङ् बुरु दिअ सेङ्गेल्
जिलिब्केन् जिलिब्केन
हुड़िङ् बुरु मदि मरसल्
जोलोब्केन् जोलोब्केन

ओकोएगे दिअतद
जिलिब्केन जिलिब्केन
चिमएगे मरसल् तद
जोलोब्केन जोलोब्केन

बुरुबिङ् दिअतर
जिलिब्केन् जिलिब्केन
सङ्सुड़ि मरसल् तद
जोलोब्केन् जोलोब्केन

३२५

ददय बुरु तिरिल्
ददय रुकुअलङ् मे
ददय बड़े तरोब्
ददय दङ्सिअलङ् मे

ददय इसु सिबिल
ददय रुकुअलङ् मे
ददय पुरः हेड़ेन
ददय दङ्सिअलङ् मे

३२६

सेन्देर कोड़को
कपि जिलिब् जिलिब्
करेङ्ग कोड़को
सार सिणए सोणोय

३२४

बड़े पहाड़ पर दीये की रोशनी
झिलमिल-झिलमिल कर रही है।
छोटे पहाड़ पर ज्योति
टिमटिमा रही है।

किसने दीया जलाया है,
(रोशनी) झिलमिल-झिलमिल कर रही है।
किसने रोशनी की है,
जो टिमटिमा रही है।

पहाड़ी साँप ने दीया जलाया है,
(जिसकी रोशनी) झिलमिल कर रही है
समसुड़ी साँप ने रोशनी की है,
जो टिमटिमा रही है।

३२५

हे दादा, पहाड़ के केवन्द (फल) को,
हे दादा, झहरा दो।
हे दादा, तराई के तरोब (फल) को
हे दादा, भरभरा दो।

हे दादा, केवन्द, बहुत स्वादिष्ठ है,
हे दादा, झहरा दो।
हे दादा, तरोब, बहुत मीठा है,
हे दादा, भरभरा दो।

३२६

शिकारी लोग
बलुवा चमका रहे हैं।
तीरन्दाज लोग
तीर सनसना रहे हैं।

ओकोतेको सेनोःतन
कपि जिलिब् जिलिब्
चिमएतेको बिरिद्तन
सार सिणए सोणोय

सेन्देरको सेनोःतन
कपि जिलिब् जिलिब्
करेङ्गको बिरिद्तन
सार सिणए सोणोय

३२७

जो डुडुरि जोलेन
बा पिन्दर बालेन
मोयोद्गे जोलेन
बरिअगे बालेन

सेन्देरको हुलःकेद
करेङ्गको चङ्गड़केद
सुबरेको हुलःकेद
चुटिरेको चङ्गड़केद

३२८

होन्मेदोन सेन्देरएःसेन्केन
होन्मेदोनएः रुअड़लेन
गगमेदोन करेङ्गएः बिरिद्केन
गगमेदोनएः अचुरलेन

होन्मेदोन सुकुरि बोरोते
होन्मेदोनए रुअड़लेन
गगमेदोन जिकिको चिरिते
गगमेदोनए अचुरलेन

होन्मेदोन तुजिअञ् मेन्दो बनोः
होन्मेदोनएः रुअड़लेन

लोग कहाँ जा रहे हैं,
जो बलुवा चमका रहे हैं ?
लोग किधर निकल रहे हैं,
जो तीर सनसना रहे हैं ?

लोग शिकार को जा रहे हैं,
जो बलुआ चमका रहे हैं।
लोग तीर चलाने जा रहे हैं,
जो तीर सनसना रहे हैं।

३२७

फलनेवाला डुडुरी फला था।
फूलनेवाला पिन्दर फूला था।
एक ही फल लगा था।
दो ही फूल लगे थे।

शिकारियों ने तोड़ लिया।
शिकारियों ने छिनगा लिया।
जड़ से ही तोड़ लिया।
धड़ से ही छिनगा लिया।

३२८

तुम्हारा लड़का शिकार को गया था,
(लेकिन) तुम्हारा लड़का लौट आया।
तुम्हारा बच्चा शिकार को गया था
(लेकिन) तुम्हारा लड़का वापस आ गया।

तुम्हारा लड़का, सूअर के डर से,
तुम्हारा लड़का, लौट आया।
तुम्हारा लड़का, सेही के डर से,
तुम्हारा लड़का, वापस आया।

तुम्हारा लड़का, तीर मारें, सो तो नहीं (किया)
तुम्हारा लड़का लौट आया।

गगमेदोन तेरङिअञ् मेन्दो बनोः
गगमेदोनएः अचुरलेन

३२६

गड़ गड़ते
लङदोएः बिअनएः बोयोन
नड़ नड़ते
दोब दोएः तिपरएः तोपोर

तुञि कीपे
लङ् दोए बिअनएः बोयोन
तेरङ्लीपे
दोबदोए तिपरएः तोपोर

तुञ् किःअले
लङ् दोए बिअनए बोयोन
तेरङ्किःअले
दोब दोए तिपरएः तोपोर

३३०

जितिअ जतरा
जितिअ लेल्केन्को
जितिअ जतरा
जतरा चिनकेन्को

जितिअ लेल् लेल्ते
दः दोएः गमलेद
जतरा चिन चिनते
होयोदोएः रम्पिलेद

लुमे जन दो
लुमम् किचिरि
रेअड़ जन दो
पचोन् पड़िअ

तुम्हारा लड़का, पत्थर मारें, सो तो नहीं (किया)
तुम्हारा लड़का वापस आया।

३२९

नदी के किनारे
लङ् पक्षी सनसना रहा है।
नाले के किनारे से
दोबा पक्षी थपक-थपक चला जा रहा है।

तीर मारो
सनसनाते हुए लङ् पक्षी को।
पत्थर मारो
थपकते हुए दोबा पक्षी को।

हमने तीर मारा
सनसनाते हुए लङ् पक्षी को।
हमने पत्थर मारा
थपकते हुए दोबा पक्षी को।

३३०

जितिया और जतरा।
ये जितिया देखनेवाले हैं।
जितिया और जतरा।
ये जतरा देखनेवाले हैं।

जितिया देखते-देखते
पानी बरसने-लगा।
जतरा देखते देखते
आँधी चलने लगी।

भींग गया
रेशम का कपड़ा।
भींग गया
रंगीन पड़िया।

तसि लेकामे
सिङ्को बिरेरे
पिति लेकामे
कड़े को लदड़ि रे

तसि तसिते
चेचःजन दो
पिति पिति ते
निअरजन दो

३३१

सेन्देरदोको केड़केद गोसञ्
कञ् सेनोःअ सेन्देर गोसञ्
करेङ्ग दोको केड़केद गोसञ्
कञ् बिरिद करेङ्ग गोसञ्

उतुइ रेदो उतुइमे कुड़ि
रोओड़ मिण्डि जिलु उतुइमे कुड़ि
रसीरेदो रसीमे कुड़ि
कटइ अड़ः रसीमे कुड़ि

३३२

लेलोःअ लेलोःअ
चि दरु लेलोःअ
चिनओःअ चिनओःअ
मेरे दरु चिनओःअ

लेलोःअ लेलोःअ
कित दरु लेलोःअ
चिनओःअ चिनओःअ
तलि दरु चिनओःअ

फैला दो
वृक्षों की झाड़ में ।
पसार दो
कास के ऊपर ।

फैलाते-फैलाते
(कपड़ा) फट गया ।
पसारते-पसारते
(कपड़ा) फट गया ।

३३१

हे गोसाईं, शिकार करने के लिए सबको कहा गया,
(लेकिन) हे गोसाईं, मैं शिकार को नहीं जाऊँगा ।
हे गोसाईं, शिकार करने के लिए लोगों से विनती की गई,
(लेकिन) हे गोसाईं, मैं शिकार को नहीं चलूँगा ।

तुमको मांस पकाना ही हो,
तो भेड़ का सूखा हुआ मांस ही पका दो ।
तुमको झोल बनाना ही हो,
तो कटइ साग का झोल बना दो ।

३३२

दिखाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है
कौन-सा पेड़ दिखाई दे रहा है ?
दिखाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है
कौन-सा पेड़ दिखाई दे रहा है ?

दिखाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है
खजूर का पेड़ दिखाई दे रहा है ।
दिखाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है
ताड़ का पेड़ दिखाई दे रहा है ।

जतरा*

डिण्ड रेदो कुड़ि जर्म रेदो
बन्दरेन् बुदुलेकम् मेचेर् मेचेर्
हेबेअन् रेदो कुड़ि हतरन् रेदो
जोअकन् नणि लेकम् लिड़ जोपोद्

---

* गाने के समय पद की अन्तिम पंक्ति के बाद एक बोल 'लेलेरे एइ एइ एइ धारे रे राधे रे' सम्मिलित किया जाता है।

जतरा

जवानी में, क्वारेपन में, हे युवती
तुम तालाब की पोठी मछली की तरह फुदकती चलती थी।
गोद में जब बच्चा आ गया (और) पीठ पर बँध गया,
तुम फली हुई लता की तरह झुक गई।

३३३

उम न उम मण्डि रेङ्गेतन
चिकयञ बोयो चटु रपुद्जन्
उम न उम दः तेतङ् तन
चिकयञ बोयो तुम्ब रोचोद्जन

ओकोतःअते पठि बबएः नम् औलेद
होन्को दोको लन्दबड़तन
चिमए सःअते टण्डः इलिः नम् औलेद
गणको दो को रसिकतन

३३४

गड़ गेन रे कङ्कि
चोके चि बरुण्डम् लोड़ोतन
नड़ पड़ रे बक
चोके चि बरुण्डम् लोड़ोतन

३३५

जन्त टोडङ् रे किन्दु सिङ्
बुगिलेक हिसिरकन् कुड़िकेः बगे किअ
जन्त टोडङ् रे किन्दु सिङ्
बुगिलेक सकोमकन कुड़ि केः रड् किअ

जू मइ रे बुइ रे रुअड़ मे
बुगिलेक हिसिरकन् कुड़िकेः बगेकिअ
जू मइ रे बुइरे अचुर मे
बुगिलेक सकोमकन कुड़िके रड़ किअ

३३६

दोलबु कुड़ि को
ओको टोनङ् सङ्गबु उर

३३३

हे माँ, भूख लगी है।
क्या करूँ बेटा, घड़ा फूट गया।
हे माँ, प्यास लगी है।
क्या करूँ बेटा, तूम्बा चटक गया।

कहाँ से चटई का धान खोजकर लाया,
लड़के हँस-बोल रहे हैं
कहाँ से हँड़िया खोजकर लाया,
बच्चे खुश हो रहे हैं।

३३४

नदी के किनारे, हे कङ्कि पत्ती,
तुम मेढ़की या मेढ़क का घात लगाये हो।
नाले के पास हे कङ्कि पत्ती,
तुम मेढ़की या मेढ़क का घात लगाये हो।

३३५

जन्त टोडङ् (गाँव) में किन्तु सिंह ने
माला पहने हुई सुन्दर स्त्री को छोड़ दिया।
जन्त टोडङ् (गाँव) में किन्तु सिंह ने
पहुँची पहने हुई सुन्दर स्त्री को त्याग दिया।

हे बेटी जाओ, लौट जाओ,
माला पहने हुई सुन्दर स्त्री को छोड़ दिया।
हे बेटी, जाओ, लौट जाओ,
पहुँची पहने हुई सुन्दर स्त्री को त्याग दिया।

३३६

हे युवतियो, चलो,
किस जंगल में जाकर हम कन्द कोड़ें ?

दोलबु कुड़िको
चिमए टोनङ् सरुबु उर
कबुअः कोड़को
टोनङ् बितर् कुल दुबकन्
कबुअः कोड़को
टोनङ् बितर बन दुबकन

३३७

नेते टोनङ् नेते मर्च
कुल अर् मिण्डि किङ् ओपोततन
नेते टोनङ् नेते मर्च
कुल अर् मिण्डि किङ् ओपोड़ेःतन

तल निद अदिङ् निद
कुल अर् मिण्डि किङ ओपोततन
तल निद अदिङ् निद
कुल अर् मिण्डि किङ् ओपोड़ेःतन

३३८

नङ् रेन् होड़ोको
हतुको दुबकेद
नङ्रेन् प्रजाको
दिसुम् को दुबकेद

हतुको दुबकेद
पिड़िलोयोङ्को बइकेद
दिसुम्को दुबकेद
अड़िकुण्डिको बइकेद

३३९

ने कुड़ि ओकोतः तिअ
गुड़लु रुड़ुङ् मेनः गेअ

हे युवतियो, चलो
किस जंगल में जाकर हम मूल उखाड़ें ?

हे युवको, हम नहीं जायेंगे,
(क्योंकि) जंगल के भीतर बाघ बैठा हुआ है।
हे युवको, हम नहीं जायेंगे,
(क्योंकि) जंगल के भीतर भालू बैठा हुआ है।

३३७

इस जंगल में, इस मैदान में
बाघ और भालू लड़ रहे हैं।
इस जंगल में, इस मैदान में
बाघ और भालू झगड़ रहे हैं।

आधी रात तक, मध्य रात तक
बाघ और भालू लड़ते रहे हैं
आधी रात तक, मध्य रात तक
बाघ और भालू झगड़ते रहे हैं।

३३८

पुरखे लोगों ने
गाँव को बसाया।
पूर्वज लोगों ने
देश को बसाया।

गाँव को बसाया
टाँड़ दोन को बनाया।
देश को बसाया
खेत दोन को बनाया।

३३९

यह स्त्री कहाँ चली गई,
गोंदली कूटना बाकी ही है।

ने कुड़ि जतरा तिअ
गड़ुलु रुड़ुङ् मेनः गेअ

३४०

हुड़िङ् हुड़िङ् बडिङ् कुड़ि
ओकोतःरे गोड़े भेजएः सबेन
ओकोएतःरे खग् जिलपि
इनिः तः रे भेजएः सबेन

३४१

हए डिण्ड सोमए
कोरे सोमए सेनोःतन
हए डङ्गुअ ओसड़
कोरे ओसड़ बिरिद्तन

यह स्त्री जतरा चली गई
गोंदली कूटना बाकी ही है।

३४०

मेरी छोटी भतीजी
कहाँ इसका सहारा होगा ?
जिसके पास तलवार चमकती है
उसी के पास सहारा होगा ?

३४१

हाय, कुँवारापन का समय,
समय कहाँ चला जा रहा है ?
हाय, जवानी का समय,
समय कहाँ चला जा रहा है ?

●

खड़न्दि

नुबः दिसुम्रेगे दिअ मसकल्जनरे
एगेः जन ओड़ः दिअ तमः रे

खद्योत

अन्धकार के देश में दीया प्रकाशित हो गया।
तुम्हारे घर का दीया बुझ गया।

३४२

अञ् दो अञ् सेनोःतन उम
लदेना कोलोःञ् सेनोतन उम
अञ्दो अञ् बिरिदृतन उम
बएपारी कोलोञ् बिरिदृतन उम

कचिबिटिम् बोरोय, बिटि
पुण्डि सदोम् बिजिर बिजिर
कचि बिटिम् चिरिअ, बिटि
मएला सदोम् दोपोल् दोपोल्

३४३

इमिन् दिन दो उम
रसि पुड़ु: रसि खल्गिम् मेनकेद
नाः दो उम
मिअद पुड़ु: मिअद् खल्गिगे

३४४

क बबु बलेः तेम
क बबु लिण्डुङ् तेम
नयल् मुटु लेक बबुम् हरे चबतन
बियुर् सेकोर तेअ बबु कुड़िम् दगतन

३४५

जुलतन दिअ जुलतनरे
सङ्गिन् रेगे दिअ जुलतनरे
मसकल्तन मदि मसकल्तनरे
सङ्गिन् रेगे मदि मसकल्तनरे

मसकल जन दिअ मसकल जनरे
नुबः दिसुम्रेगे दिअ मसकल् जनरे

३४२

हे माँ, मैं जा रही हूँ, हे माँ,
लदना बैलवालों के साथ जा रही हूँ ।
हे माँ, मैं जा रही हूँ, हे माँ
मैं व्यापारियों के साथ जा रही हूँ ।

बेटी, क्या तुम नहीं डरोगी,
सफेद चमकदार घोड़े से ?
बेटी, क्या तुम नहीं डरोगी,
भूरे मस्त घोड़े से ?

३४३

इतने दिन तक तो, हे माँ,
तुमने दोने में रस (हँड़िया) माँगा ।
अब तो, हे माँ,
एक ही दोना, एक ही दोना शेष रह गया ।

३४४

हे बाबू, तुम छोटे नहीं हो
हे बाबू, तुम बच्चे नहीं हो ।
तुम हल के समान घिस रहे हो,
चारों ओर घूम-फिरकर तुम स्त्री की खोज में हो ।

३४५

जल रहा है, दीया जल रहा है,
दूर में ही दीया जल रहा है ।
फैल रही है, ज्योति फैल रही है,
दूर से ही ज्योति फैल रही है ।

जल उठा, दीया जल उठा ।
अन्धकार के देश में दीया जल उठा ।

एगेः जन ओड़ः दिअ तमःरे
गोण ओड़ दिअ एगेःजन रे

३४६

जमड़ बितर् रे इपिड़िपियुङ् जुल्तन
जिलि मिलि जकमकए जुलतन
जमड़ बितर् रे फूलबिअ रङ्गः साड़ी जुलतन
जिलिमिलि जकमक जुलतन

३४७

जुड़ि जुड़िलङ् तइकेन गतिञ्
जुड़ि सुतम् टोटःजन गतिञ्
तिसिङ् दोरेम् बगे किदिञ गतिञ्
होरगे क अरिदोअरे गतिञ्

३४८

जोमे बलको जोमेपे (२)
दिरि रुगुड़ि मण्डि बलको जोमेलेकापे
नूइ बलको नूइपे (२)
कुण्डरेअः इलि बलको नू लेकापे

जोम् दोले जोमेअ (२)
सोना लेकन् कजि तबु तइनोःक
नू दोले नूइअ (२)
रूप लेकन् बकग तबु तइनोःक

३४९

ने पुतम् रनः दो (२)
सेरेङ् चेतन लतराते गुगुचुइः मेनेअ
ने पुतम् रनः दो (२)
एङ्गः अपु बङ्को लेक गुगुचुइः मेनेअ

बुझ गया, तुम्हारे घर का दीया बुझ गया ।
तुम्हारे गोहार-घर का दीया बुझ गया ।

३४६

झमरा के नीचे जुगनू चमक रहा है ।
झिलमिल जगमग चमक रहा है ।
झमरा के नीचे विवाह की रंगीन साड़ी चमक रही है ।
झिलमिल जगमग चमक रही है ।

३४७

हे प्रिये, हम दोनों जोड़ी-जोड़ी थे,
हे प्रिये, जोड़ा सूत टूट गया ।
हे प्रिये, आज तो तुमने मुझे छोड़ दिया
हे प्रिये, अब तो मुझे कोई रास्ता ही नहीं दिखाई देता ।

३४८

हे मेहमानो, तुम खाओ, तुम खाओ
पत्थर के कंकड़ की तरह भात, हे मेहमानो, खाओ ।
हे मेहमानो, तुमलोग पीओ ।
कुण्डे में रखा हुआ हँड़िया तुमलोग पीओ ।

खाने को तो खायेंगे
(लेकिन) सोने की तरह हमारी बात रहनी चाहिए ।
पीने को तो पीयेंगे
(लेकिन) रूपे की तरह हमारी बात रहनी चाहिए ।

३४९

इस पण्डुक की बोली !
चट्टान के ऊपर औ नीचे 'गुगुचु-गुगुचु' बोलता है ।
इस पण्डुक की बोली !
विना माँ-बापवाले की तरह 'गुगुचु' बोलता रहता है ।

ने पुतम् रनः दो (२)
हग-बरे बङ् को लेक गुगुचुइः मेनेअ
ने पुतम् रनः दो (२)
कुदुम् कुमुल् बङ्को लेक गुगुचुइः मेनेअ

३५०

मेतमेअको, मेतमेअको
चरिः ओकम् चटग, मेतमेअको
मेतमेअको, मेतमेअको
पुड़ुःओकम् तुकुइःअ, मेतमेअको

मेतमेअको, मेतमेअको
रचओकम् जोजोग, मेतमेअको
मेतमेअको, मेतमेअको
गुरिःओकम् गिड़िअ, मेतमेअको

३५१

सिङ्गिदोएः तुर् लेन, उम
कोड़ होन् दोएः जोनोम् लेन उम, (२)
चण्डुःदोएः मुलुःलेन उम,
कुड़िहोन् दोए उपन्लेन, उम (२)

कोड़ होन्दोएः जोनोम्लेन उम
गोण दो उजड़जन, उम (२)
कुड़िहोन्दोए उपन् लेन, उम
गोण दो पेरेःजन, उम (२)

३५२

होर रः डिम्बु बा दो (२)
उम न बालेगे सनञ (२)
डरे रः जम्बिर बा दो (२)
उम न डलिलेगे सनञ (२)

इस पण्डुक की बोली !
विना भाई-बहनवाले की तरह 'गुगुचु' बोलता है ।
इस पण्डुक की बोली !
विना वंश-कुटुम्बवाले की तरह 'गुगुचु' बोला करता है ।

३५०

लोग तुमको कहते हैं, लोग तुमको कहते हैं ।
तुम तीली भी नहीं चीरती, ऐसा तुमको कहते हैं ।
लोग तुमको कहते हैं, लोग तुमको कहते हैं ।
तुम दोना भी नहीं सीती हो, ऐसा तुमको कहते हैं ।

लोग तुमको कहते हैं, लोग तुमको कहते हैं ।
तुम आँगन भी नहीं बुहारती, ऐसा कहते हैं ।
लोग तुमको कहते हैं, लोग तुमको कहते हैं ।
तुम गोबर भी नहीं फेंकती, ऐसा कहते हैं ।

३५१

हे माँ, (जब) सूरज उगा,
(तब) लड़का पैदा हुआ ।
हे माँ, (जब) चाँद उगा,
(तब) लड़की उत्पन्न हुई ।

हे माँ, (जब) लड़का पैदा हुआ,
(तब) गोहाल उजड़ गया ।
हे माँ, जब लड़की पैदा हुई,
(तब) गोहाल भर गया ।

३५२

रास्ते का डिम्बु फूल,
हे माँ, फूल खोंस लेने की इच्छा होती है ।
रास्ते का जम्बिरा फूल,
हे माँ, फूल पहनने का मन करता है ।

बा दोरेम् बाय (२)
बबुरे दिकु सिपइको ससब (२)
डलि दोरेम् डलीअ (२)
बचरे राजा सिपइ को ससब (२)

●

फूल खोंस तो लोगे,
(लेकिन) दिकू सिपाही तुम्हें पकड़ लेंगे।
फूल पहन तो लोगे,
(लेकिन) राजा के सिपाही तुम्हें पकड़ लेंगे।

●

परिशिष्ट

मुण्डारी के कुछ शब्द

संज्ञा

अ-आ

अड़ि	मेड़
अपरोब्	पंख
अपु	पिता
अयुब	रात
अरिल्	ओला
असकल्	एक पक्षी
आः	धनुष

इ-ई

इकिर	दह
इचः	चिंगड़ी मछली
इतिल्	चरबी
इपिल्	तारा
इलि	हँड़िया
ईम्	हृदय
ईल्	पंख

उ-ऊ

उटु	एक साग
उतु	तरकारी
उम्बुल्	छाया
उरिः	गाय-बैल
उलि	आम
ऊब्	बाल
ऊर्	चमड़ा

ए

एङ्ग	माता
एटेकेः	एक वृक्ष
एदेल	सेमल-वृक्ष
एर	औरत, पत्नी

ओ

ओड़ः	घर
ओड़े	एक चिड़िया
ओते	धरती
ओपद्	डाल

क

कउः	कौवा
कजि	बात
कट	पैर
कड़कोम्	केकड़ा
कड़े	कास
कतु	छुरी
कद्सोम्	कपास
कपि	बलुआ
कमण	कम्बल
करम्	एक वृक्ष
कलुः	दोना
कलुटि	मुरगी
किकिर	पणडुबी पक्षी
किमिन्	बक
किलि	गोत्र

कुड़म्	छाती
कुड़ि	स्त्री
कुड़ुम्ब	एक वृक्ष
कुण्डम्	पिछवार
कुद	कठफोड़वा पक्षी
कुद	जामुन
कुम	मामा
कुल	बाघ
केअद्	एक पक्षी
केयोः	खपरैल
केरकेट	एक पक्षी
कोंअसि	कुहासा
कोकोर	उल्लू
कोदे	मड़ुआ
कोदोम्	कदम्ब-वृक्ष
कोलोम्	खलिहान

ग

गड़ि	बन्दर
गण्डु	पीढ़ा
गति	साथी, प्रिय
गिडः	लाज
गितिल	बालू
गुङ्गु	पत्तियों की ओढ़नी
गुन्दुलि	गोंदली
गेले	बाली
गोम्के	मालिक

च

चउलि	चावल
चटु	धड़
चण्डुः	चाँद
चतोम्	छाता
चरिः	तीली
चिपि	पोठी मछली
चुङ्गिः	बीड़ी
चुरिन्	चुड़ैल
चेंगे	पक्षी
चोके	मेढ़क
चोड	चेंग माछ

ज

जङ्	हड्डी
जदुर	एक नाच
जनुम्	काँटा
जर्गि	बरसात
जिअ	दादी
जिकि	सेही
जिलु	मांस
जी	दृश्य
जीर्	दलदल
जुड़ि	साथी
जेटे	धूप
जेरे	गोंद
जोअ	गाल
जोजो	इमली
जोजोः	झाड़ू
जोबेल	दलदल
जोल	चढ़ाई

ट

टटि दीया
टुइल एकतारा
टुङ्कि टोकरी
टुण्टि एक चींटी
टेम्प लकड़ी का टुकड़ा जिससे फल गिराया जाता है।
टोटे तीर
डण्ड: लाठी
डिम्बु एक फल
डुटु लकड़ी का बड़ा टुकड़ा
डुण्डु ढोंड़ साँप
डुलिक ढोलक
डूर एक पक्षी
डेडेब् गोरैया चिड़िया
डोड़ो गोंगरा

त

तयन् मगर
तयर खीरा
तरीब् पियार
तिरिल् केवन्द (फल)
ती हाथ
तेतङ् प्यास
तोअ दूध

द

द: पानी
दद बड़ा भाई
दरु वृक्ष
दिरि पत्थर
दुदुगर आँधी
दुमङ् माँदर
दुरङ् गीत
देअ पीठ

न

नकि: कंघी
नणि लता
नयल् हल
निद रात
नुब: रात
नोलद् कालिख

प

पटि चटाई
पिड़ि मैदान
पीटि बाजार
पुतम् पण्डुक
पुसि बिल्ली
पेड़े: ताकत
पेड़ मेहमान
पोल पैर की अंगूठी
पोटोम् पोटली

ब

बब धान
बयर् रस्सी
बरु कुसुम (वृक्ष)
बा फूल
बिण्ड नेठो

बिर	जंगल
बुरु	पहाड़
बुलुङ्	नमक
बोओः	सिर
बोङ्गा	देवता
बोण्डोल्	करेया की पूँछ

म

मएनो	मैना (पक्षी)
मण्डि	भात
मदुकम	महुआ
मनि	सरसों
मर्सल्	प्रकाश
मिरु	सुग्गा
मिसि	बहन
मन्दम्	अंगूठी
मेणेद्	लोहा
मेद्	आँख
मेरोम्	बकरी
मोंए	कली
मोच	मुँह
मोलोङ	कपाल

र

रवङ्	जाड़ा
रम्बड़	ऊरद
रिचि	बाज
रिम्बि	आकास
रुतु	बाँसरी
रेङ्गोः	भूख
रेएद्	जड़
रो	मक्खी
रोला	हरीतकी

ल

लचो	ओंठ
लद्	रोटी
लिजः	कपड़ा
लिपि	एक पक्षी
लुतुर	कान
लूदम्	एक फूल
लेण्डद्	जोंकटी
लोसोद्	कीचड़

स

सकम्	पत्ती
सङ्गिन्	दूर
सङ्गेन्	कोंपल्
सदोम्	घोड़ा
सर्जोम्	साखू
ससङ्	हल्दी
सार्	तीर
सिङ्बोङ्गा	सूरज देवता, भगवान्
सिङ्गि	दिन, सूरज
सिम्	मुरगी
सिर्म	आकाश, वर्ष
सुकु	कद्दू : सुख
सुड़	कोंपल
सुनुम	तेल

सुपिद्	खोंपा	**हतु**	गाँव
सेङ्गेल	आग	**हपनुम्**	युवती
सेत	कुत्ता	**हपुः**	एक पक्षी
सेन्देर	शिकार	**हिसिर्**	माला
सेपेड़ेद्	युवक	**हुन्दि**	एक फूल
सोअन्	गन्ध	**हेसः**	पीपल
सोसो	भेलवा	**होञ्जर**	श्वसुर
		होरोः	गला, गरदन
ह		**होड़ो**	आदमी
हइ	मछली	**होन्**	बच्चा
हड़म्	बूढ़ा	**होयो**	हवा
		होर	रास्ता

सर्वनाम

पुरुषवाचक

	एकव०		द्विव०		बहुव०	
उत्तमपु०	**अञ्**	मैं	**अलिङ्**	हमदोनों (श्रोता-रहित)	**अले**	हमलोग (श्रोता-रहित)
			अलङ्	हमदोनों (श्रोता-सहित)	**अबु**	हमलोग (श्रोता-सहित)
मध्यमपु०	**अम्**	तुम	**अबेन**	तुमदोनों	**अपे**	तुमलोग
अन्यपु०	**अएः**	वह	**अकिङ्**	वे दोनों	**अको**	वे लोग

संकेतवाचक

न, **नि**, **ने**	यह	**अन्**, **इन्**, **एन्**	वह (निकट)	**हन्**, **हिन्**, **हेन्**	वह (दूर)

प्रश्नवाचक

ओको कौन (विशेषण के रूप में) **ओकोअ** कौन (अप्राणीवाचक) **ओकोनिः** कौन (प्राणीवाचक)

विशेषण

अरः	लाल	मरङ्	बड़ा
अटमट	घनघोर	रेपो	चिपका हुआ
कुब	टेढ़ा	लण्डिअ	आलसी
गोसो	सूखा हुआ	सङ्गिन्	दूर
जिलिङ्	लम्बा	सुगड़	सुन्दर
निरल	अच्छा	सोबेन्	सब
पण्डु	पीला	हड़द्	तीता
बङ्क	टेढ़ा	हुड़िङ्	छोटा
बुगिन्	अच्छा	हेड़ेम्	मीठा
बेरेल्	कच्चा	हेन्दे	काला

क्रिया

अकिरिङ्	बेचना	एरङ्	गाली देना
अगु	लाना	ओटङ्	उड़जाना
अड़गु	उतरना	ओत्	देना
अड़न्दि	शादी करना	ओल्	लिखना
अतिङ्	चरना	कमि	काम करना
अतु	बह जाना	किरिङ्	खरीदना
अयुम्	सुनना	कुड़िल्	उछलना
असि	माँगना	कुदओ	दौड़ाना
इतु	जानना	गम	बरसना
इनुङ्	खेलना	गितिः	सोना
उड़ुः	सोचना	गुतु	गाँथना
उदुब्	बनाना	गुपि	चराना
उचः	गिराना	गेद	काटना
उर	कोड़ना	गोए	मारना
उरुड़ु	झरना	गोद्	तोड़ना
एकेल	हिलना	गोसो	मुरझाना

चङ्गड़	तोड़ना	**नम्**	जाना
चिपुद्	मुट्ठी में रखना	**निर्**	भागना
चुण्डुल्	संकेत करना	**नुर**	झरना, चूना
चेचः	बरबाद करना	**नेद्**	रँगना
चेपे	चूसना	**नोङ्**	खाना
चोः	चूमना	**पटुब्**	उखाड़ना
जलतिङ्	उड़ना	**पण्डिल्**	बिखर जाना
जिर्	झलना	**पद**	लात मारना
जुल	जलाना	**पिन्तर्**	फैलाना
जेरेद्	जोड़ना	**पुटिः**	झरना
जोअर्	नमस्कार करना	**पेरेः**	मरना
जोम्	खाना	**पोण्डे**	गन्दा करना
जोरो	टपकना	**बइ**	बनाना
टण्ड	पैर पसारना	**बगे**	छोड़ना
टिपिउल्	उपलाना	**बिद**	गाड़ना
टुण्ड	लाठी टेकना	**बिरिदे**	उठना
टेकाओ	सँभालना	**बुल्**	मत्त हो जाना
टोण्डोम्	गाँठ बाधना	**बेः**	थूकना
तम्	मारना	**बोतोङ्**	डराना
तिङ्ग	खड़ा होना	**बोरो**	डरना
तुर	उगना	**मः**	काटना
तेर	फेंकना	**मत**	बढ़ना
तोप	ढकना	**मुलि**	सीधा करना
तोल्	बाँधना	**मेन्**	कहना
दण	खोजना	**मोः**	धुआँ करना
दिर	अकड़ना	**रकब्**	चढ़ना
दुपिल्	सिर पर ढोना	**रिकब्**	बन्द करना
दुब्	बैठना	**रुअड़**	लौटना
दुरङ्	गीत गाना	**रेः**	लूटना
दुल्	ढालना	**रोअ**	रोपना

लन्द	हँसना	**सुसुन्**	नाचना
लिङ्गि	बहना	**सेन्**	चलना, जाना
लु	परोसना	**सोबोः**	भोंकना
ले	गलना	**हड़गु**	उतारना
लेल्	देखना	**हिजुः**	आना
लो	जलना	**हुदुमा**	फेंकना
सन	चाहना	**हेर**	बुनना
सम्पोड़ो	श्रृंगार करना	**होनोर**	घूमना
सिदुब्	गाड़ना	**होरो**	रक्षा करना

अव्यय

ओड़ोः	और	**चिअःचि**	क्योंकि
क	नहीं	**चिमिनङ्**	कितना
कोतः	कहाँ	**चेनः**	क्या
चए	अथवा	**बदकम्**	लेकिन
चि	क्या	**मेन्दो**	लेकिन
		लेक	तरह

विभक्तियाँ

ते	से	(करण कारक)
अते	से	(अपादान कारक)
नङ्गेन्, **नङ्गेन्ते**, **मेन्ते**	के लिए	(सम्प्रदान कारक)
अः, **रः**	का	(सम्बन्ध कारक)
रे	में	(अधिकरण)
हे, **हइ**, **आ**	हे	(सम्बोधन)

प्रत्यय

(काल)

जद्	वर्त्तमानकालसूचक	(कर्मवाच्य)	कर्ममूलक
जन्	पूर्णभूतकालसूचक	(कर्मवाच्य)	कर्त्तामूलक
ज	भविष्यकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	
तद्	आसन्नभूतकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	कर्ममूलक
तन्	वर्त्तमानकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	कर्त्तामूलक
त	भविष्यकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	
केद्	पूर्णभूतकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	कर्ममूलक
केन्	पूर्व पूर्णभूतकालसूचक	(कर्त्तृवाचक)	कर्त्तामूलक
के	भविष्यकालसूचक	(कर्त्तृवाचक)	
लेद्-लः	पूर्व पूर्णभूतकालसूचक	(कर्त्तृवाचक)	कर्ममूलक
लेन्	पूर्व पूर्णभूतकालसूचक	(कर्मवाच्य)	कर्त्तामूलक
ले	भविष्यकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	
अकद्	आसन्नभूतकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	कर्ममूलक
अकन्	आसन्नभूतकालसूचक	(कर्मवाच्य)	कर्त्तामूलक
अक	भविष्यकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	
अद्	पूर्व पूर्णभूतकालसूचक	(कर्त्तृवाचक)	कर्ममूलक
अन्	पूर्व पूर्णभूतकालसूचक	(कर्त्तृवाचक)	कर्त्तामूलक
अ	भविष्यकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	
कोः	भविष्यकालसूचक	(कर्त्तृवाच्य)	

ध्वन्यात्मक और गुणात्मक शब्द

केरो-केचो	करकराना
गस-गस	झरझराता हुआ
गिदर-गोदोर	झूमता-सा
गिपल-गोपोल	सजा हुआ
गुले-गुले	गहरा-गहरा

चड़द्-चुड़ुद्	चौंकता हुआ
चप-चुड़ि	कीचड़-भरा
चिरि-बिरि	परपराता हुआ
जड़म्-जड़म्	झमझमाता हुआ
जिड़िब्-जिड़िब्	झुन-झुन
जोलो-मोलो	चिकना-चुपड़ा
जोलोब्-जोलोब्	चमकता हुआ
टिउल-टिउल	पूँछ हिलाता हुआ
डले-कले	बेचारापन
डुङ्गुर-मुङ्गुर	अकेलापन
तिपर्-तोपोर	सजा हुआ
तिञ्जर-तोञ्जोर	झूलता हुआ
दिले-दोङ्गेब्	खिला हुआ
पिसिर्-पिसिर्	फिसफिसाता हुआ
बिअन्-बोचोन्	आश्चर्यमय
किजिर-बलङ्	चमकीला
मोगो-मोगा	महमहाता हुआ
मोचो-मोचो	हँसता हुआ
रिति-जिति	छोटी पत्तियोंवाला
रिबि-रिबि	छोटे फूलों का झरना
रट-पट	झाड़ियों का जलना
रिगि-मिगि	पंक्तिबद्ध
रोलो-रोलो	लगातार आँसू टपकना
लेके-लेओङ्	झूमता हुआ
लिदि-लिदि	भारी
लय-कोय	थका हुआ
लिटिब्-लिटिब्	धड़कता हुआ
लोबो-लोबो	भरा हुआ
लिमड्-लोमोङ्	झूलता हुआ

लेसे-लेसे	भरा हुआ
लेटेम्-लेटेम्	लटकता हुआ
लिटिः-लोपोङ्	धूल-भरा
लटङ्-कोयङ्	कीचड़-भरा
लिटि-लिटि	धूल-धूसर
सरि-सरि	पंक्तिबद्ध
सारे-सारे	सुरसुराता हुआ
सेले-बोले	सजा-सँवारा
सुरु-सुटु	भींगा हुआ
सिणए-सोणोए	टनटनाता हुआ
सिले-सिले	सिरसिराता हुआ
सट-सटि	दनदनाता हुआ

●

सहायक ग्रन्थ-सूची

पुस्तकें :

१. इन्साइक्लोपीडिया-इण्डिका—श्रीनगेन्द्रनाथ ।
२. ग्राम-साहित्य—पं० रामनरेश त्रिपाठी ।
३. ट्राइबल आर्ट ऑव मिडिल इण्डिया—डॉ० वैरियर एलविन ।
४. दी ब्लू-ग्रोव—डब्ल्यू० जी० आर्चर ।
५. दी बैगा—डॉक्टर वैरियर एलविन ।
६. धीरे बहो गंगा—श्रीदेवेन्द्र सत्यार्थी ।
७. पृथ्वीपुत्र—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ।
८. प्रतीक—श्रीदेवेन्द्र सत्यार्थी ।
९. ब्रजलोक-साहित्य का अध्यन—डॉक्टर सत्येन्द्र ।
१०. मुण्डा दुरंग—डब्ल्यू० जी० आर्चर ।
११. मुण्डाज ऐण्ड देयर कण्ट्री—श्रीशरच्चन्द्र राय ।
१२. रेस एलिमेण्ट्स इन इण्डियन पोपुलेशन—डॉ० बी० जी० गुहा ।
१३. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया—सर जॉर्ज ग्रियर्सन ।
१४. हमारी आदिम जातियाँ—श्रीभगवानदास केला और श्रीअखिल विनय ।

पत्रिकाएँ :

१. अवन्तिका, पटना ।
२. आजकल, दिल्ली ।
३. मैन इन इण्डिया, राँची।
४. लोकवार्त्ता, टीकमगढ़ ।